Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृति-अर्चन

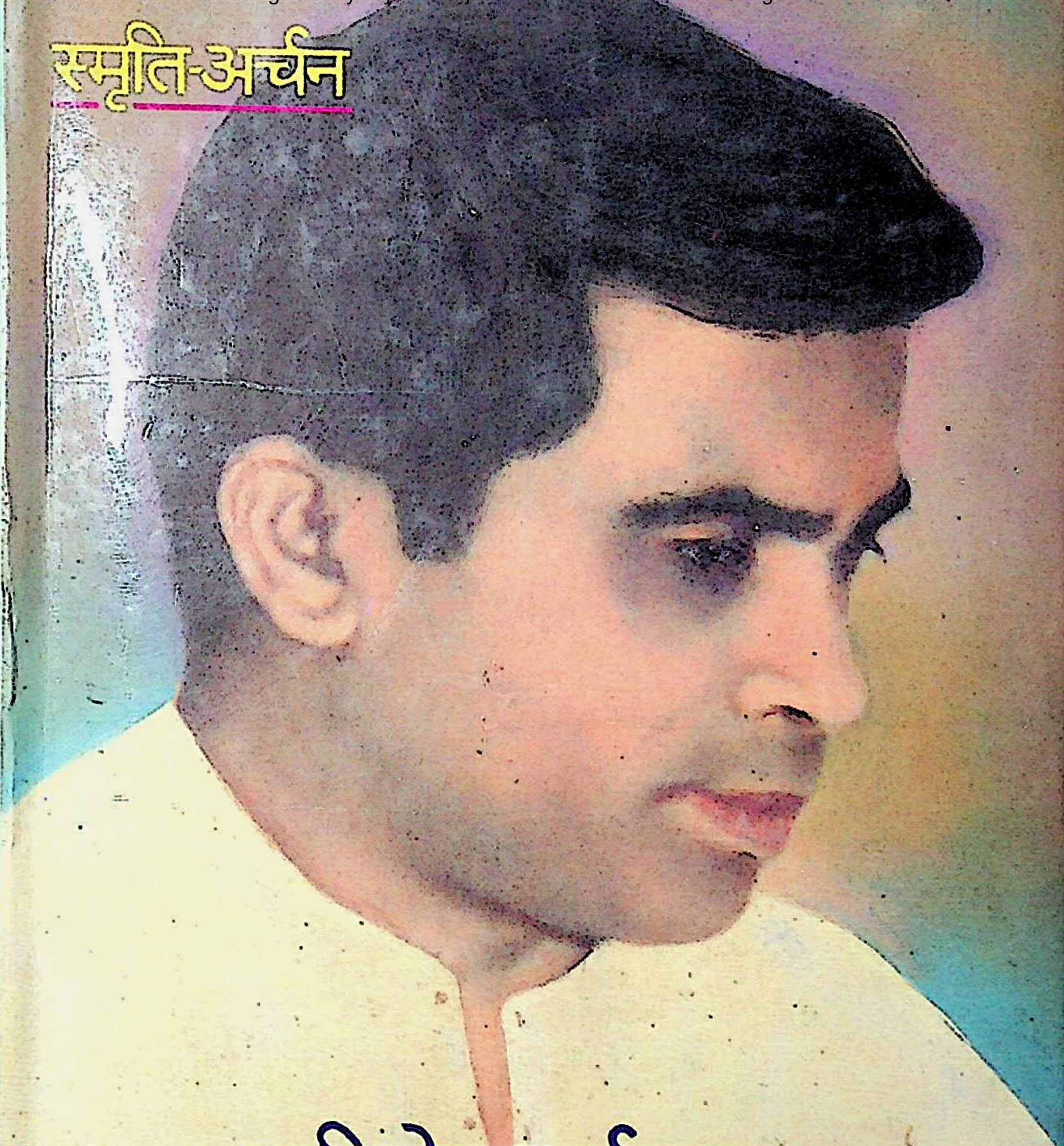

स्मृतिशेष आर्यपुरुष

पं. रामनारायण शास्त्री

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

. . . . समाज-सेवा के साथ-साथ साहित्य-सेवा को भी शास्त्रीजी ने अपने जीवनानुष्ठान के रूप में अंगीकृत किया था। वैदिक व्याख्या से संवलित उनकी साहित्यिक रचनाएँ आज भी एक साथ ज्ञानोन्मेषक और उत्प्रेरक बनी हुई हैं। उनका साहित्य-चिन्तन भी समाज-चिन्तन से अनुबद्ध था। उन्होंने अपने साहित्यिक संस्कार से अक्षर-जगत् में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई थी। अवश्य ही, वह पूर्णतः सारस्वत पुरुष थे। . . . .

– श्रीरंजन सूरिदेव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

9.1 V2
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि पाणिनि प्रज्ञा अनुसन्धान केन्द्र
तिथी
पु०सं० 2317
भारती पुस्तकालय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृतिशेष
आर्यपुरुष पं० रामनारायण शास्त्री

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथि
पु०सं० 2817
भारती पुस्तकालय

सम्पादक

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

[पूर्व-सम्पादक : 'परिषद्-पत्रिका']

सम्प्रेरणा

आचार्या डॉ० प्रज्ञा देवी

जिज्ञासु-स्मारक

पाणिनि कन्या महाविद्यालय

वाराणसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक :
जिज्ञासु-स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय
तुलसीपुर, वाराणसी-२२१०१०

प्राप्तिस्थान :
१. आचार्या, जिज्ञासु-स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय, तुलसीपुर, वाराणसी-२२१०१०
२. श्रीमती ईश्वरी आर्या, शास्त्री-भवन, ३/१४, पथ-सं०११, पं० रामनारायण शास्त्री मार्ग, राजेन्द्रनगर, पटना-८०००१६

© श्रीमती ईश्वरी आर्या

प्रथम संस्करण : खृष्टाब्द : १९९६, विक्रमाब्द : २०५३

मूल्य : १७५.००

मुद्रक :
विष्णु प्रेस
कतुआपुरा, वाराणसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2817

प्रकाशकीय

शास्त्री-स्मृति-ग्रन्थ के प्रकाशन का भार जीवन के अपराह्ण में मेरे अशक्त कन्धों पर आयेगा, इसकी लेश-मात्र भी कल्पना मुझे नहीं थी । स्मृति-ग्रन्थ के प्रकाशन की योजना इसके महनीय आश्रय पं. रामनारायण शास्त्रीजी के निधन के वाद, वहुत पहले ही वनी थी । उनके मित्रों और शुभानुध्यायियों के पास पत्र भेजकर स्मृति-ग्रन्थ के लिए लेख, संस्मरण आदि मेरे ज्येष्ठ पुत्र अभिजित काश्यप, कनिष्ठ पुत्र अमिताभ कश्यप और पुत्री अलका शर्मा द्वारा एकत्रित किया गया था ।

सन् १९७८ ई. में शास्त्रीजी बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक वनाये गये थे । यह उनके संघर्षमय जीवन की एक क्रोशशिलात्मक उपलब्धि थी । किन्तु, एक सप्ताह बाद ही उनके जीवन का अप्रत्याशित अवसान हो गया ! लोग उनका स्वागत भी नहीं कर पाये थे कि यह दुःखद घटना घट गई । उनके लिए बधाई-पत्रों का आना समाप्त भी नहीं हुआ था कि शोक-पत्रों के आने का सिलसिला शुरू हो गया । घर में परिवार के सभी लोग उस हर्ष और उल्लास की घड़ी का भरपूर आनन्द भी नहीं ले पाये थे कि दारुण शोक की घड़ी आ गई । ऐसी मानसिक उथल-पुथल और बिखराव की स्थिति में उन सारे पत्रों को संकलित कर रखना कठिन था । मुझे प्रसन्नता है कि मेरे दोनों पितृहीन पुत्रों ने, मानसिक रूप से आहत होकर भी, उन संभी पत्रों को सँजोकर रखा ।

शास्त्रीजी के जीवन-काल के भी बहुत सारे पत्र थे, जिन्हें ढूँढ़कर संग्रह करना, उनकी अस्तव्यस्त 'दैनन्दिनी' को पढ़कर उनके जीवन के कार्यों एवं घटनाओं को आकलित करना एक दुरूह कार्य था । फिर, एक ऐसे व्यक्तित्ववाले कर्मशील पुरुष की दिनचर्या को आकलित करना, जिसका समग्र जीवन यायावर हो, बड़ा ही श्रमसाध्य था । उनके बिखरे कागजों एवं फाइलों का अम्बार था । उनमें से चुनकर आकाशवाणी-वार्त्ता, निबन्ध, मित्रों के पत्र आदि को मैंने एकत्रित किया है । उनका जीवन-वृत्त भी उनके सुहृज्जनों एवं गुरुजनों से पूछ-पूछकर प्राप्त इतिवृत्तों के आधार पर लिखा है ।

किन्तु, स्मृति-ग्रन्थ की सारी योजना काल की निराली गति से ठप पड़ी थी । लगता है, यह योजना किसी प्रेरक व्यक्तित्व की बाट जोह रही थी । सन् १९९३ ई. में पाणिनि कन्या-महाविद्यालय, वाराणसी की विदुषी आचार्या डॉ. प्रज्ञा देवीजी एवं उनकी अन्वर्थनामा अनुजा आचार्या मेधा देवीजी का मेरे पटना के राजेन्द्रनगर-स्थित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवास पर आगमन हुआ । उन्होंने शास्त्री स्मारक ट्रस्ट का पुस्तकालय देखने की इच्छा व्यक्त की, जो मेरे आवास में ऊपर की मंजिल पर है । उन्होंने ही 'स्मृति-ग्रन्थ' प्रकाशित करने की योजना को शीघ्र कार्यान्वित करने की प्रेरणा दी और अपना पूर्ण सहयोग देने की भी आश्वस्ति प्रदान की । इसी क्रम में पुण्यश्लोक शास्त्रीजीके सम्बन्ध में डॉ. प्रज्ञा देवीजी ने एक लघु संस्मरण-पुस्तिका का सम्पादन कर प्रकाशित भी किया । उन्होंने वृहत् 'स्मृति-ग्रन्थ' यथाप्राप्त सामग्री को एकंत्रित कर प्रकाशित करने का संकल्प किया था । परन्तु, मेरे दुर्भाग्यवश प्रज्ञावती वहिन डा. प्रज्ञा देवीजी असमय ही इस धराधाम को छोड़कर चली गईं ।

हर्ष का विषय है कि उनके सारे अपूर्ण कार्यों को पूर्ण करने के लिए उनकी अनुजा आचार्या मेधा देवीजी कृतसंकल्प हुईं । धैर्य में हिमालय जैसी उन्होंने मुझे ढाढ़स और भरोसा देकर आशान्वित किया । 'स्मृति-ग्रन्थ' की सारी सामग्री उनके पास पड़ी ही थी । उन्हें प्रेस में दिया और मई-जून की तपती दुपहरी में मेरे साथ बैठकर इसका प्रूफ देखा और सबको व्यवस्थित करके छपाई का कार्य शुरू कर दिया ।

'स्मृति-ग्रन्थ' की अन्तरंग और बहिरंग प्रस्तुति पुण्यश्लोक शास्त्रीजी के अभिन्न मित्र डा. श्रीरंजन सूरिदेवजी के सारस्वत सहयोग से सम्पन्न हुई है । उन्होंने मेरे आग्रह को मूल्य देकर इस ग्रन्थ के सम्पादन का भार स्वीकार कर मुझे निश्चिन्त कर दिया । मैं हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इनका आभार स्वीकार करती हूँ ।

आचार्या मेधाजी ने जिस तत्परता से मुझे स्नेहिल सहयोग और वैदुष्यपूर्ण परामर्श दिया, उसके लिए उन्हें धन्यवाद देने को मेरे पास शब्द नहीं हैं ।

अपने दोनों स्वस्तिमान् पुत्रों एवं स्वस्तिमती पुत्री अलका शर्मा को मैं हृदय से वात्सल्य-सिक्त धन्यवाद देती हूँ, जिन्होंने इस सारस्वत महायज्ञ में अपने श्रम की समिधा इस चिरसंकल्पित श्रद्धायज्ञ की पूर्णाहुति के निमित्त पितृयज्ञ मानकर सुलभ किया ।

विष्णु प्रेस के अधिस्वामी भाई कालीनाथजी का भी मैं धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के मुद्रण में अपेक्षित उत्तमता का विनियोग किया ।

मैं सर्वोपरि पुण्यश्लोक शास्त्रीजी की दिव्यात्मा के प्रति श्रद्धानत हूँ, जिनकी मधुर स्मृति ही अब मेरे जीवन का सम्बल है ।

ईश्वरी आर्या

शास्त्री-भवन
पं. रामनारायण शास्त्री मार्ग
राजेन्द्रनगर, पटना–८०००१६ (बिहार)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राग्वचन

पुण्यश्लोक पं. रामनारायण शास्त्रीजी का पार्थिव शरीर यद्यपि स्मृतिशेष हो गया, तथापि वह अपनी यशःकाया से अशेष बने हुए हैं । वह सुकृति और सुकीर्त्ति, दोनों से एक साथ सम्पन्न थे । कर्म के तो वह प्रतिरूप थे, इसलिए कर्मठता उनका सहज धर्म बन गई थी, जिसे वह मानव-सेवा अथवा मानवता का पर्याय मानते थे । इस दृष्टि से वह मानवंतावाद के परम उपासक एवं पुरुषार्थवाद के प्रवल समर्थक थे । 'न दैन्यं न पलायनम्' ही उनका जीवन-मन्त्र था ।

अभावों और संघर्षों से जूझते हुए भी शास्त्रीजी बराबर अदीन होकर जिये । वह समग्रतः वैदिक थे, इसलिए मानव और राष्ट्र की उत्कर्ष-साधना के सनातन सन्देशवाहक वेद-वचनों का अनुपालन आजीवन करते रहे । वह सक्रिय समाज-सेवा के लिए, महर्षि दयानन्द के अमृत-सिद्धान्त के समर्थक आर्यसमाज से सम्बद्ध हो गये थे । वह अपनी ऊर्जस्वल प्रतिभा से आर्यसमाज के शिखर-पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हुए । समाज-सेवा और समाज-सुधार का उपदेश करते-करते वह स्वयं उपदेश बन गये थे । वह केवल परोपदेश-कुशल नहीं थे, स्वयं भी उसका आचरण करते थे, इसलिए उनके प्रवचन अतिशय प्रभावकारी और प्रेरक होते थे । अपनी उपदेशप्रियता से उन्होंने महोपदेशक की गरिमा आयत्त की थी । सचमुच, उनके समान, वैदिक मन्त्रों की समाजपरक व्याख्या करनेवाले धुरन्धर वक्ता आज विरल ही हैं । निश्चय ही, उनके महाप्रयाण से समाज के एक राष्ट्रीय स्तर के कल्याण-मित्र पुरोधा का अत्यन्ताभाव हो गया है !

समाज-सेवा के साथ-साथ साहित्य-सेवा को भी शास्त्रीजी ने अपने जीवनानुष्ठान के रूप में अंगीकृत किया था । वैदिक व्याख्या से संवलित उनकी साहित्यिक रचनाएँ आज भी एक साथ ज्ञानोन्मेषक और उत्प्रेरक बनी हुई हैं । उनका साहित्य-चिन्तन भी समाज-चिन्तन से अनुबद्ध था । उन्होंने अपने साहित्यिक संस्कार से अक्षर-जगत् में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई थी । अवश्य ही, वह पूर्णतः सारस्वत पुरुष थे ।

पुण्यश्लोक शास्त्रीजीने सरकारी सेवा के क्षेत्र में भी उत्तम स्थान अर्जित किया था । बिहार-सरकार की राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शिक्षा-संस्था बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में, जिसके आद्यसंचालक कूटस्थ साहित्यमनीषी आचार्य शिवपूजन सहाय थे, एक क्षेत्रीय शोध-सहायक के रूप में पदस्थापित हुए और वहाँ के सर्वोच्च निदेशक-पद पर विराजित हुए। परिषद् के हस्तलिखित पोथी-अनुसन्धान-विभाग की एक-एक मूल्यवान् सामग्री आज भी शास्त्रीजी की संग्रहप्रियता, शोधानुशीलन-पटुता और विलक्षण शेमुषी की त्रिवेणी के तीर्थोपम महत्त्व का साक्ष्य उपस्थित कर रही है। वह जहाँ भी रहे, पांक्तेय और धुरिकीर्त्तनीय बने रहे।

इस प्रकार, कर्मावतार शास्त्रीजी सच्चे अर्थ में अभिनन्दनीय कर्मयोगी थे। प्रस्तुत स्मृति-ग्रन्थ का आक्षरिक आयोजन उनकी वरेण्यता के अभिनन्दन के निमित्त ही किया गया है, जो उनके सम्मान की स्मृति-रक्षा के लिए उन्हें श्रद्धाभाव से समर्पित है। जो जीवन भर निष्परिग्रह बना रहा, उसकी स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए इससे बढ़कर और कोई परिग्रह-रहित माध्यम नहीं हो सकता था। एक अक्षरोपासक के लिए अक्षर के अलावा अन्य कोई भी वस्तु उपादेय नहीं हो सकती। शब्दपुरुष अपने शब्दों में ही शश्वत्प्रतिष्ठ रहता है। महर्षि व्यास का वचन भी है :

दिवं स्पृशति भूमिं च शब्दः पुण्येन कर्मणा।
यावत् स शब्दो भवति तावत्पुरुष उच्यते॥

(महाभारत : वनपर्व)

इस स्मृति-पर्व के प्रस्तुत पुण्यतम आक्षरिक आयोजन का समस्त श्रेय पुण्यश्लोक शास्त्रीजी की तद्गतप्राणा धर्मपत्नी श्रीमती ईश्वरी आर्याजी को है, जिन्होंने उनके लोकान्तरित हो जाने के बाद उनकी समस्त आक्षरिक कृतियों को संगृहीत और सुरक्षित रखा, जिनका इस स्मृति-ग्रन्थ के रूप में प्रस्तवन सम्भव हुआ। शास्त्रीजी मेरे सारस्वत सुहृद् थे। सम्पादन के व्याज से मुझे भी इस स्मृति-यज्ञ में सम्मिलित होकर अक्षर-तर्पण का जो सौभाग्य प्राप्त हुआ, वह श्रीमती आर्याजी की सुजनता का ही सौम्य प्रतीक है।

-श्रीरंजन सूरिदेव

पी.एन. सिन्हा कॉलोनी
भिखनापहाड़ी, पटना-८००००६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ शब्दों की ख़ोज में

विचारों से लबालब भर चुकी हूँ, कुछ कहना चाहती हूँ, पर क्या कहूँ? कुछ शब्दों की खोज में हूँ, जो मुझे इस समय मिल नहीं पा रहे हैं।

ओजस्विता के धनी यशस्वी महापुरुष पं० रामनारायण शास्त्री के महाप्रयाण के पन्द्रह वर्षों के पश्चात् उनकी पुण्यस्मृति में यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है। यह विलम्ब निश्चय ही मन में खेद उत्पन्न कर रहा है। अभिनन्दनीयों के अभिनन्दन में इतना विलम्ब कथमपि उचित नहीं कहा जा सकता। अबतक स्व० शास्त्रीजी पर एक बृहत् 'श्रद्धांजलि-ग्रन्थ' आर्यसभाओं, संगठनों के माध्यम से प्रकाशित हो जाना चाहिए था, पर उसका भी न होना पूज्य-पूजा के प्रति हमारी उपेक्षा एवं आलस्य-भाव को ही सम्पुष्ट करता है। जो नर अपने कृतित्व और व्यक्तित्व की अमिट छाप कालरूपी शरीर पर सदैव के लिए अंकित कर दिया करते हैं, उनके विषय में कुछ न कहने से उनका यश कदापि धूमिल नहीं होता, परन्तु समय की गति में हम पीछे अवश्य हो जाते हैं। अभी गत वर्ष दिसम्बर, १९९४ ई० के अन्त में मैं कार्यवश पटना जाने पर आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भी गई, तो यह देखकर दुःख हुआ कि बिहार की धरती पर ही जनमे इन आर्य-नरवीर का एक भी चित्र दीवार पर नहीं है। अपने प्रेरणापुंज दिवंगतों की स्मृति को हम कैसे इतना शीघ्र भुला देते हैं, यही आश्चर्य है।

श्रद्धेय शास्त्रीजी ५२ वर्ष की स्वल्पायु में ही इस असार संसार को छोड़कर चले गये। वे कठोर परिश्रमी एवं कर्मठ पुरुष थे। किसी के प्रातिभ तेज को सहन करने में अक्षम लोग प्रायः बौद्धिक लोगों के साथ प्रतिकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करते ही रहते हैं। शास्त्रीजी अपने स्तर के बौद्धिक ही नहीं, सूक्ष्मदर्शी विवेचक भी थे, अतः उनका जीवन भी ऐसी परिस्थितियों से घिरा ही रहता था। ऐसी बातों से मनुष्य की कार्यक्षमता का हनन तो बहुत होता है, पर समाज में व्याप्त इस अनिवार्य सत्य को टाला भी कैसे जा सकता है, कोई भी नहीं टाल पाया है।

शास्त्रीजी का व्यक्तित्व बहु-आयामी था। कभी उन्हें हम देश-सुधारक के रूप में राजनीति के मंच पर देख सकते हैं, तो कभी ओजस्वी सिद्धान्तवादी प्रबल तार्किक के रूप में वैदिक़ धर्म के मंच पर एवं कभी राष्ट्रभाषा का हित-सम्पादन करने में एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारक तथा चिन्तक के रूप में हिन्दी के मंच पर। इस त्रिपथगा में प्रवाहित उनका जीवन इतना व्यस्त था कि वे अपने घर परिवार को भी प्राय: भूले रहते थे। उनकी विवेकशीला साध्वी धर्मपत्नी **श्रीमती ईश्वरी देवीजी आर्या** राजकीय शैक्षिक सेवा में रहते हुए भी समूचे घर की देख-रेख से लेकर बच्चों के लालन-पालन, शिक्षण तक किया करती थीं। शास्त्रीजी दूसरों के लिए अपने को गला देने में ही अपना सुख मानते थे, पर ऐसे लोगों को कहाँ लोग समझ पाते हैं? वे कितनी बार आर्यसमाज के कार्यों से बाहर जाते और खाली हाथ आकर घर पर खड़े हो जाते थे, तब रिक्शे का व्यय भी घर से लाकर उनकी धर्मपत्नी ही दिया करती थीं। ऐसी परिस्थितियों के लिए मान्या **बहिन ईश्वरी देवीजी** पहले से ही प्राय: मार्ग-व्ययादि जुटाकर तैयार रहती थीं।

शास्त्रीजी जैसे धुन के धनी दीवाने थे, वैसा उदाहरण विरला ही देखने को मिलेगा। इन संस्मरणों के छपने से पूर्व जब मैंने बहिन ईश्वरी देवीजी से प्रस्तुत पुस्तक में छपने के लिए परिवार के साथवाला शास्त्रीजी का चित्र माँगा, तो वे बोलीं–"ऐसा चित्र तो मेरे पास कोई भी नहीं है, जिसमें बच्चों के सहित शास्त्रीजी हों। उन्होंने कभी फोटो खिंचवाया ही नहीं, उन्हें समय ही कहाँ था? एक बार मैंने हड़बड़ी में अपने साथ उनकी एक फोटो जिद से करा ली थी, बस वही एकमात्र साथ का फोटो मेरे पास है।" उनका यह उत्तर सुनकर मैं हैरान हो गई कि ऐसे भी अद्भुत लोग होते हैं, जब कि आज लोगों की जान एलबम सजाने के लिए फोटो पर टिकी रहती रहती है। संस्कार एवं कर्त्तव्यों की तो नाममात्र भी परवाह नहीं होती, पर शास्त्रीजी के प्राणों में तो वैदिक धर्म का मणिमय मनका पिरोया हुआ था, उन्हें इन भौतिक बातों की सुध कहाँ थी?

दीन-दुखियों को देखकर कलप उठना, सबकी बात ध्यान से सुनकर कार्य में अविलम्ब तत्पर हो जाना ये उनके अद्भुत गुण थे कि जिससे उन्हें आत्मतृप्ति तो होती ही रही होगी, पर वे कितनी बार इससे छले भी जाते थे, फिर भी वे इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं करते थे।

समाज के प्रति उनकी पीड़ाएँ बिखरी हुई थीं। अपने देश की भाषा-समस्या पर वे बड़ी गहराई से सोचते थे। भारतीय भाषाओं के विकास के समक्ष अँगरेजी भाषा आड़े आये, इसका वे सदैव प्रबल विरोध करते रहे। वे मानते थे कि रानीतिक स्वार्थ एवं हठ ने ही इस भाषा-समस्या को उलझा रखा है। ऋषि दयानन्द का यह कथन पूर्ण सत्य है कि राष्ट्र में मातृभाषा को सम्मान मिलना चाहिए। संस्कृत भाषा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी एकमात्र वरेण्य उपास्य भाषा है। उसके विकास के लिए सर्वदा सर्वविध प्रयत्न होना चाहिए। प्रायः वे इन उद्‌गारों को व्यक्त किया करते थे। वे देवभाषा संस्कृत के लिए क्या करना चाहते थे, इस सम्बन्ध में उनकी दुःखद मृत्यु के अनन्तर जब उनकी धर्मपत्नी उनके निजी पुस्तकालय को सुरक्षित करने की दृष्टि से उसे झाड़ने-पोछने लगीं, तो कागज के तीन चुटके ऐसे मिले, जिनमें संस्कृत के विकास में स्वयं उनके द्वारा किये जानेवाली योजनाओं का दिग्दर्शन था। उन चुटकों में लिखित विषय इस प्रकार हैं :

"समस्त भारतीय भाषाओं का स्रोत संस्कृत है। संस्कृत के प्रचार-प्रसार के काम में अभी भारत सरकार सचेष्ट है। संस्कृत के सामने कई समस्याएँ हैं। संस्कृत पढ़ाने के लिए सम्पन्न घरों के लोग अपने बच्चों को नहीं भेजते हैं। हम संस्कृत के चार संस्थान खोलना चाहते हैं, जिनमें अनुसन्धानादि के कार्य होंगे।"

उन चुटकों में लिपि के सम्बन्ध में भी कुछ लिखा हुआ मिला, जो इस प्रकार है:

"एक लिपि के निर्माण की भी समस्या थी। भारतीय भाषाओं को एक लिपि में व्यक्त किया जाये। मातृभाषा तो होती है, किन्तु मातृलिपि नहीं है, एक लिपि होने से सभी भाषाएँ एक दूसरे के निकट आ जाती हैं। इनकी एक शब्दावली की रचना की जा रही है।"

चुटके की इस भाषा को कठिनता से ही पढ़ा गया। संस्कृत के प्रति अपने स्वर्गत पति की इन भावनाओं को जान श्रीमती शास्त्री निश्चय कर बैठीं कि "अपने स्वर्गत पति की आकांक्षा के अनुसार अपना स्वोपार्जित समस्त स्वत्व संस्कृत के विकास के निमित्त ही लगाऊँगी", फलतः 'श्रीशास्त्री स्मारक ट्रस्ट' बनाकर उन्होंने प्राचीन पुस्तकों के सुरक्षार्थ एक पृथक् प्रकोष्ठ का निर्माण कराया है, जिसमें अनुसन्धानात्मक कार्य होते रहें।

श्रद्धेय शास्त्रीजी के निजी पुस्तकालय के सम्बन्ध में भी यहाँ कुछ लिख देना चाहती हूँ। मैं अभी इन्हीं दिनों जब केवल एक दिन के लिए पटना गई थी, तब शास्त्रीजी के पुस्तकालय को ध्यान से देखने का अवसर मिला। कितना सुव्यवस्थित, कितनी स्वच्छता, कहीं धूल का कण भी नहीं। पुस्तकों के ढंग से बने हुए कार्ड एवं सूची-पत्र देखकर हैरानी हुई। एक विद्याव्यसनी का यही तो लक्षण है कि वह अपनी पुस्तकों को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर ढंग से सजा-सँवारकर रखे, पर शास्त्रीजी के निधन के १५ वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी ऐसे अलभ्य चुटके, हस्तलेख एवं पुस्तकें सुरक्षित सजी-सँवरी रखी हों, यह उनकी जागरूक पत्नी का ही तो कमाल है। पुस्तकालय के एक-एक पन्ने में स्व. शास्त्रीजी की स्मृति को निहारती हुई बहिन ईश्वरीजी उनको सुव्यवस्थित करने में सदैव तत्पर रहती हैं। आज आर्यसमाज के धूल-भरे पुस्तकालयों को देखकर एक वितृष्णा होती है। आर्यों को सीखना चाहिए ऐसे स्थानों में जाकर कि कैसे पुस्तकों का सम्मान किया जाता है। वस्तुतः शास्त्रीजी का गृह, गृह न होकर 'शास्त्री स्मारक भवन' ही है।

यह एक विचित्र संयोग है कि २४ जनवरी, १९२६ ई. माघ कृ. चतुर्दशी, वि. सं. १९८३ को जिस दिन शास्त्रीजी का जन्म हुआ, ठीक उसी दिन को उनकी मृत्यु का दिन भी भगवान् ने चुन लिया। इसे क्या कहा जाये? २४ जनवरी की रात्रि में शास्त्रीजी को कुछ विशेष कष्ट था, डॉक्टर ने मार्फिया का इंजेक्शन दिया, फलतः वे सो गये। गहन रात्रि में उनके बिस्तर के पास बैठी उनकी धर्मपरायणा पत्नी ईश्वरी देवीजी ने तन्द्रिल स्थिति में एक दुःस्वप्न देखा– **'तेरी दुनिया उजड़ चुकी है।'** आँख खुलने पर शास्त्रीजी के सिर पर हाथ रखा, तो देखा सचमुच अन्धकार ने उनका सब कुछ लूट लिया है। बिस्तर पर अब शास्त्रीजी नहीं, केवल उनका पार्थिव शरीर है। यह कैसी मृत्यु!! निकटवर्त्ती स्वजन तक समीप न आ सके, वस्तुतः उन्हें जाने की बड़ी शीघ्रता थी, वे चले गये। विधाता के न्याय पर इसके सिवाय यहाँ क्या कहा जा सकता है कि वे यशःशरीर से सदैव अजर-अमर रहेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक की प्रकाश्य सामग्री ५ मार्च को मुझे उस समय उपलब्ध हुई, जब मैं ९ अप्रैल से होनेवाले अपने विद्यालयीय विविध कार्यक्रमों में अतिव्यस्त थी और कुछ अस्वस्थ भी थी। इस सामग्री में १५ वर्ष पूर्व के लिखे लेखों की झेरॉक्स कॉपी (बहिन ईश्वरी देवीजी के लेख को छोड़कर) ही मुझे प्राप्त हुई, जिनमें कतिपय लेखों के अक्षर कट गये थे, जिन्हें पढ़ पाना बहुत कठिन था। फलतः, प्रेस कॉपी नई तैयार की और प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। जैसे-तैसे व्यस्तताओं के बीच यह कार्य सम्पन्न हो गया, यह उस प्रभु की महती कृपा है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में जितना भी व्यय हुआ है, वह सब मान्या बहिन ईश्वरी देवीजी ने ही **'पं. श्रीरामनारायण शास्त्री स्मारक ट्रस्ट, पटना'** से लाकर मुझे प्रदान किया है, तदर्थ उनका धन्यवाद है। यतः पुस्तक का समस्त व्यय बहिनजी के द्वारा हुआ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, अतः नियमतः इस पुस्तिका के पुनः प्रकाशनादि का सर्वाधिकार भी बहिन ईश्वरी देवीजी (धर्मपत्नी : स्व. पं. रामनारायण शास्त्रीजी)के अधीन ही सुरक्षित रहेगा।

इतने स्वल्प समय में पुस्तक का ठीक मुद्रित हो पाना तो अति कठिन कार्य था, किन्तु प्रिय बहिन मेधाजी के सहयोग ने इसे सुकर बना दिया, इसके लिए प्रिय बहिन का साधुवाद है। इस पुस्तिका के हस्तलेखों की प्रतिलिपि आदि के कार्य बड़े मनोयोग से बेटी धारणा (आचार्य अन्तिम वर्ष) ने किये हैं। इस सेवा-भावना हेतु उसे मेरा आशीर्वाद है। ईश्वर करे, यह पुत्री स्वस्थ चिरायुष्य प्राप्त करे।

विष्णु प्रेस के मालिक श्रीकालीनाथजी ने इतनी तत्परता से यह कार्य पूर्ण किया, तदर्थ उनका भी धन्यवाद है। *

प्रज्ञा देवी
आचार्या
पाणिनि कन्या-महाविद्यालय
वाराणसी

फाल्गुन कृ. त्रयोदशी
बोधरात्रि पर्व, वि. सं. २०५०
१०.३. ९४.

* सुश्री प्रज्ञा देवी के सम्पादन में पूर्व-प्रकाशित 'शास्त्री-स्मृति-पुस्तिका' के लघु संस्करण (सन् १९९४ ई०) से यथावत् साभार।— सं०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमुख

इस महनीय स्मृति-ग्रन्थ की प्रथम सम्प्रेरिका पूजनीया आचार्या डॉ० प्रज्ञा देवीजी के विगत ६ दिस. १९९५ ई० को दुःखद अवसान होने के पश्चात् अब उनकी प्रथम पुण्यतिथि तथा विद्यालय की रजत-जयन्ती ६, ७, ८ दिस. १९९६ ई० के अवसर पर इसे तैयार कर लोकार्पण करने की घड़ी हमें एक विचित्र अनुभूति से जोड़ रही है। जहाँ कार्य पूर्ण हो जाने का अपार सन्तोष-सुख है, वहीं इसे पूज्या बहिनजी की आँखें न देख पाईं, इसकी वेदना भी बहुत पीड़ित कर रही है।

कार्य को परखकर उसमें पूरी प्रसन्नता से जुट जाना, सही मूल्यांकन कर लेना यह पू. बहिनजी का अनुपम गुण था। जितना स्नेह-सम्मान पू. बहिनजी ने निश्छलहृदया गुणवती श्रद्धेया बहिनजी श्रीमती ईश्वरी आर्याजी को दिया, उसकी मैं प्रत्यक्षदर्शी हूँ। मुझे पू. बहिनजी की उस गुणोदधि की गहनता की थाह पाना तो कठिन है, किन्तु उनकी इच्छाओं को, योजनाओं को पूर्ण करने की कृतनिश्चयी मैं पीडादायिनी प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते हुए भी इसे उपेक्षित नहीं कर सकी। अहोभाग्य था मेरा कि इसमें समय लगाया। मुझे यशःप्रथित श्रद्धेय पं. श्रीरामनारायण शास्त्रीजी के प्रत्यक्ष दर्शन का सौभाग्य नहीं मिला, किन्तु उनकी प्रेरक जीवन-गाथा के विभिन्न आयामों को ग्रन्थ की तैयारी करते-करते जो पढ़ा-देखा, उसने ऐसे अद्भुत वाग्मिता-प्रतिभा के धनी के प्रति मुझे श्रद्धानत कर दिया। साथ ही बार-बार श्रद्धेया बहिनजी श्रीमती ईश्वरी आर्याजी के प्रति मन आभारी हो उठंता था कि उन्होंने श्रद्धेय शास्त्रीजी की सम्पूर्ण महनीयता को उजागर करके आर्य-जगत् के लिए बड़ा उपादेय कार्य किया है। आगे आनेवाली पीढ़ी के लिए यह जीवन-वृत्तान्त उत्साहप्रद और प्रेरक बनेगा। किस प्रकार आर्यसमाज के दीवाने बनकर उन्होंने सब जगह तहलका मचा दिया, यह भूलने की चीज नहीं। न मान की परवाह थी, न अपमान की। सरल हृदय, निरभिमान और मिशन को समर्पित। आह, ऐसे व्यक्तित्व अब कहाँ देखने को मिलेंगे !

इस स्मृति-ग्रन्थ का लघु संस्करण पाणिनि कन्या-महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर पू. बहिनजी ने सन् १९९४ ई० में बड़ी तत्परता से निकाला था। उस समय उनके लिखे उनके हृदयगत गरिमामय भावों को नितान्त आवश्यक समझते हुए मैंने उसे इसमें समाविष्ट कर दिया है। इस सूचना की सार्थकता के लिए ही मैंने यह 'आमुख' ससम्मान प्रस्तुत किया है, अन्यथा औचित्य ही क्या था?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के समक्ष उपस्थापित इस ग्रन्थ के सम्पूर्ण सौष्ठव का श्रेय सम्मान्य सम्पादक डॉ० श्रीरंजन सूरिदेवजी को जाता है, जिन्होंने साहित्यिक शैली में सब कुछ देखकर इसे सपरिश्रम परिष्कृत-संवर्धित किया है। ग्रन्थ छपते समय गम्भीर अस्वस्थ होकर भी उन्होंने ध्यान नहीं हटाया और 'प्राग्वचन' लिखकर उसे पूर्णता प्रदान की है। सर्वोपरि श्रेय तो हमारी मान्या बहिन श्रीमती ईश्वरी आर्याजी को है, जिन्होंने अपने हृदय के प्रत्येक तन्तु को प्रतिक्षण इसमें नियुक्त किया है, पूरा तन-मन-धन लगा दिया है। उनके त्यागमय सरल समर्पित गुणों ने ही हम सबको बाँधा है, इस कार्य की मूल श्रेयोभागिनी वे ही हैं। धन्य थे शास्त्रीजी ! कि 'जो घर जारे आपना चले हमारे साथ' के अपने स्वभावानुसार ही हमारी बहिनजी उन्हें शान्त निःस्पृह धैर्यशालिनी गृहिणी के रूप में प्राप्त हुईं। आज के युग के लिए वस्तुतः ऐसा आदर्श दाम्पत्य-जीवन अनुकरणीय है, प्रेरक है। अलमतिविस्तरेण !

विनीता

मेधा देवी

आचार्या

६ दिसम्बर, १९९६ ई० पाणिनि कन्या-महाविद्यालय, वाराणसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-क्रम

१. जीवन-वृत्त : पं० रामनारायण शास्त्रीजी : १–१६

मांगलिक उद्‌गार : १. सुखदेव आजाद / १७; २. आचार्य मधुकरलाल गोस्वामी / १८; ३. वाल्मीकि मिश्र / १९।

२. परिजन-कथा : सारस्वत बन्धुओं के संस्मरण : २०–१७७

पुण्यश्लोक रामनारायण शास्त्री : पं० छविनाथ पाण्डेय / २०; प्रिय शिष्य रामनारायण शास्त्री : डॉ० वीरेन्द्र श्रीवास्तव / २३; दो अधूरी इच्छाएँ : एक संस्मरण : महाकवि पं० केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' / २८; पं० रामनारायण शास्त्री : नियति का क्रूर परिहास : पारसनाथ सिंह / ३४; अविस्मरणीय महान् व्यक्तित्व : डॉ० श्रीमती शारदा वेदालंकार / ३८; रामनारायण शास्त्री : एक संस्मरण : रामानन्द शर्मा / ४०; राष्ट्रचेता : पं० रामनारायण शास्त्रीजी : डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव / ४३; सांस्कृतिक कर्मयोगी : रामनारायण शास्त्री : डॉ० जितेन्द्र सहाय / ४७; रामनारायणजी : एक संस्मरण : महाकवि रमण / ५२; मधुरभाषी प्रेरक व्यक्तित्व : शास्त्रीजी : कृष्णवल्लभप्रसाद नारायण सिंह / ५४; अनन्य कर्मठ पुरुष : शास्त्रीजी : रामसिंह भारतीय / ५५; उन्हें स्वर्गीय कैसे कहें? : कृष्णकान्त सिंह / ५७; अविस्मरणीय समाजसेवी विद्वान् : शास्त्रीजी : शंकरदयाल सिंह / ५८; पं० रामनारायण शास्त्री : एक संस्मरणीय पुरुष : रामावतार शास्त्री / ६१; अपराजेय संघर्षशील व्यक्तित्व : बटुकजी : सनत्कुमार शर्मा / ६७; आर्यवीर पण्डित रामनारायण शास्त्री : कैलाशपति मिश्र / ७०; सर्वजनप्रिय एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व : शास्त्रीजी : भोलानाथ झा / ७२; पं० रामनारायण शास्त्री और सरस्वती शिशु-मन्दिर : राधामोहन सिंह / ७३; मेरे प्रिय, आत्मीय और श्रद्धेय : शास्त्रीजी : नरसिंह बैठा / ७७; संस्मरणीय व्यक्तित्व : शास्त्रीजी : रामलखन सिंह यादव / ८६; कर्मठ तपस्वी तूने छीना है विधाता! (कविता) : उत्तमचन्द शरर / ८९; आपात स्थिति में अखिलभारतीय विद्यार्थी-परिषद् को शास्त्रीजी का सहयोग : सुशीलकुमार मोदी / ९०; शास्त्रीजी का अक्षय व्यक्तित्व : स्वामी हरिनारायणानन्द / ९३; वे हिन्दीमय थे : प्रो० डॉ० रामकृपाल सिंह / ९३; भावांजलि : (कविता) : तपस्वी आर्य / ९६; अनुज रामनारायणजी : स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती / ९७; पं० रामनारायण शास्त्री आर्य-जगत् के प्रतिनिधि थे : ओमप्रकाश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यागी, सांसद / १००; प्रतिभावान् वाग्मी पं० रामनारायण शास्त्रीजी : पं० शिवकुमार शास्त्री, सांसद / १०१; देश के इतिहास की एक अमूल्य निधि : शास्त्रीजी : रामगोपाल शालवाले / १०३; आर्यकुलगौरव पं० शास्त्रीजी : डॉ० दुखन राम / १०४; अतीत गौरव के साकार पुजारी : पं० रामनारायण शास्त्री : आचार्य रमेशचन्द्र अवस्थी / १०९; अविस्मरणीय व्यक्तित्व : पं० रामनारायण शास्त्री : प्रो० उमाकान्त उपाध्याय / ११३; श्रद्धांजलि (कविता) : विद्यासागर पाण्डेय / ११६; कर्मयोगी श्रीरामनारायण शास्त्री : स्वामी ओमानन्द सरस्वती / ११७; शास्त्रीजी की पावन स्मृति में : स्वामी अग्निवेश / १२०; सहज दयालु शास्त्रीजी : डॉ० वशिष्ठ शिव बलसे / ११२; बहुमुखी प्रतिभा के धनी : शास्त्रीजी : आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री / १२६; पं० रामनारायण शास्त्री : एक विनत श्रद्धांजलि : डॉ० प्रज्ञा देवी / १२८; महाविद्वान् पं० रामनारायणजी शास्त्री : स्वामी धर्मानन्द सरस्वती / १३१; सिद्धान्तवादी लौह-व्यक्तित्व : ऋषिमुनि सिंह / १३३; सच्ची श्रद्धांजलि : ईश्वरी प्रसाद प्रेम / १३६; वाणी के जादूगर : शास्त्रीजी : उत्तमचन्द शरर / १३८; प्रजापति को दी आहुति मौन क्यों? : उत्तमचन्द शरर / १४०; अनुपमेय व्यक्तित्व : शास्त्रीजी : पं० रामदयालु शास्त्री / १४१; शान्ति और प्रसन्नता की प्रतिमूर्ति : शास्त्रीजी : प्रो० ओमप्रकाश ब्रह्मचारी / १४३; वह सम्माननीय व्यक्ति : रामशंकर सिंह / १४७; रामनारायण शास्त्री : स्मृति-तर्पण : निर्मल मिलिन्द / १४९; नौकरशाही की हृदयहीनता के शिकार : शास्त्रीजी : 'हुंकार' साप्ताहिक से आकलित / १५१; आर्यनेता पं० रामनारायणजी शास्त्री की मधुर स्मृति में : शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थ-महारथी / १५४; अनोखे व्यक्तित्व के स्वामी : शास्त्रीजी : अमरेन्द्र सिन्हा पत्रकार / १५५; मेरे पथ-प्रदर्शक : पं० रामनारायण शास्त्री : अशोक कुमार गुप्त / १५७; मेरे गृहपति मेरे उदारमना शास्त्रीजी : ईश्वरी देवी / १६४; मेरे स्नेहवत्सल पिता : पं० रामनारायण शास्त्री : डॉ० (श्रीमती) अलका शर्मा / १६९; श्रीरामनारायण शास्त्री : ए ट्रिब्यूट (अँगरेजी में) : डॉ० फणीभूषण प्रसाद / १७१; ए स्कॉलर टु रिमेम्बर : दि लेट श्रीरामनारायण शास्त्री (अँगरेजी में) : आर० बालचन्द, वरिष्ठ पत्रकार / १७३; पण्डित रामनारायण शास्त्री एज़ ए न्यू हिम (अँगरेजी में) : प्रो० धीरेन्द्र प्रसाद वर्मा / १७५।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. शास्त्रीजी की अप्रकाशित रचनाएँ (आकाशवाणी–वार्त्ता एवं अन्य निबन्ध) : १७८–२८६

पुराणों में चन्द्रमा के विविध रूप / १७८: जयतु बँगलादेशः (संस्कृत में) / १८५; माघे सन्ति त्रयो गुणाः (संस्कृत में) / १८९; स्वाधीनता तस्याः उपलब्धिश्च (संस्कृत में) / १९२; बिहार के सन्त साहित्यकार : श्रीलक्ष्मीनाथ गोसाईं / १९४; महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्मा / १९९; बिहार के एक साहित्यिक स्तम्भ : श्रीमथुराप्रसाद दीक्षित / २०३; कलम का जादूगर चल बसा! / २०६; बुद्ध और बौद्धमत का वैज्ञानिक अध्ययन एवं बौद्ध विहारों में शिल्प और उद्योग / २१०; वसन्तपंचमी : एक सांस्कृतिक त्यौहार / २१८; नागपंचमी : नागपूजा / २२३; मगही मुहावरे / २२९; कहावतों में लोकजीवन / २३३; सिन्धु और हिन्दू / २३७; सन्ध्या क्यों और कैसे? / २४५; बंगाल-बिहार का सीमान्त संघर्ष / २४७; भास के नाटक / २५४; गीता में समाजवाद / २६३; फैशन बनाम विदेशीपन / २६७; वेदों में इतिहास / २७१; विज्ञान और अन्धविश्वास / २७५; गोपाष्टमी / २७८; देश की राष्ट्रीय एकता / २८१; दुश्मन को जीतने के उपाय / २८३; भारत के सांस्कृतिक रत्न / २८५।

४. शास्त्रीजी की दिनचर्या के दो पड़ाव : २८७–३१०

१. बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् : २८७–२९३; २. आर्यसमाज : २९३–३१०

५. शास्त्रीजी : पत्रों के वातायन से : ३११–३४७

अभिनन्दन-पत्र : ३४८

६. शुभकामनाएँ : ३५१–३५८

७. शोक-संवेदना के पत्र : ३५९–३७२

८. शोक-प्रस्ताव : ३७३–३८३

९. जीवन-यात्रा की क्रोशशिलाएँ : ३८४–३८९

१०. परिशेष : ३९०–४०१

धुन के धनी : आचार्य रामनारायण शास्त्री : क्षेमचन्द्र सुमन / ३९०; शास्त्रीजी : मेरे जीवन की अविस्मरणीय धरोहर : डॉ० सी० पी० ठाकुर / ३९४

शास्त्रीजी को अँगरेजी में प्राप्त पत्र / ३९६–४०१

११. चित्रावली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० रामनारायण शास्त्री
आविर्भाव : २४ जनवरी १९२६
तिरोभाव : २४ जनवरी १९७८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

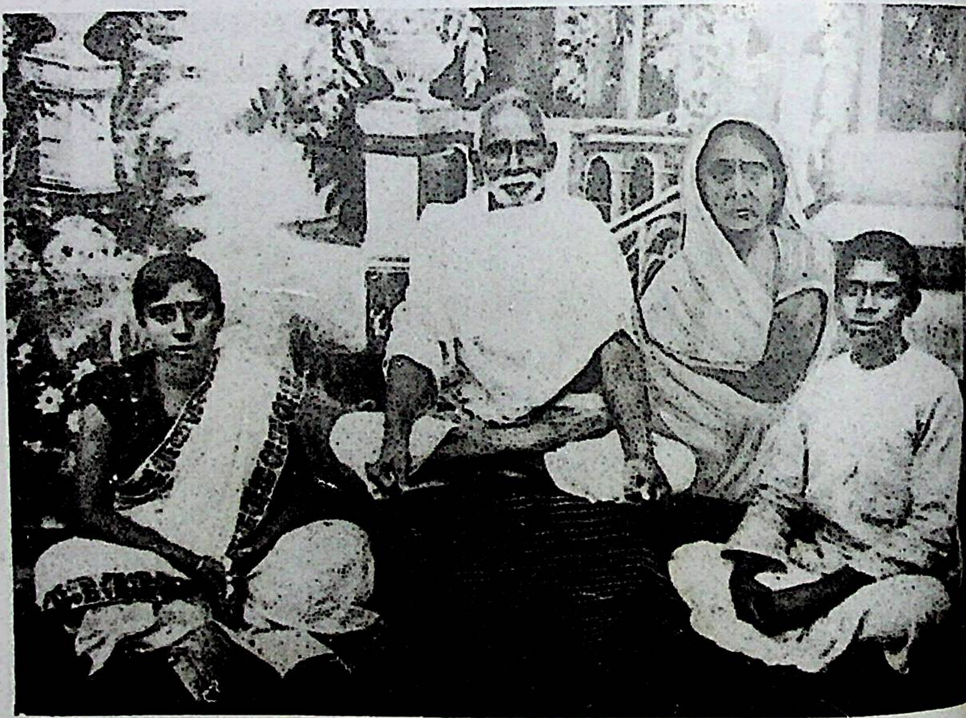

बालक रामनारायण शास्त्री अपनी मातृश्री (श्रीमती राजगद्दी देवी), पितृश्री (श्रीलालजी शर्मा) और बड़ी बहन सुश्री शारदा देवी के साथ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-वृत्त : पं० रामनारायण शास्त्रीजी

वंश, जन्म एवं परिचय :

पं० रामनारायण शास्त्रीजी के पूर्वज छपरा जिले के गुठनी ग्राम के निवासी थे। गुठनी ग्राम से श्रीअतवल राय चिन्तामणिचक ग्राम में आकर बसे। इन्हीं अतवल राय के वंश में चिन्तामणि सिंह का जन्म हुआ था, जिनके नाम पर ही इस गाँव का नाम चिन्तामणिचक रखा गया। चिन्तामणिचक ग्राम बाढ़ प्रखण्ड के मोकामा में स्थित है, जो पटना से नब्बे किलोमीटर पूरब गंगा नदी के मनोरम तट पर बसा है।

कहा जाता है कि चिन्तामणि सिंह बड़े प्रतापी और तेजस्वी थे। इन्हीं के वंश में उमेदनारायण सिंह, जयमंगल सिंह और लालजित सिंह पैदा हुए। लालजित सिंह के एक पुत्री और दो पुत्र हुए। बड़े पुत्र का नाम सत्यनारायण और छोटे पुत्र का नाम रामनारायण था। पुत्री भाइयों में बड़ी थी और उसका नाम शारदा देवी था।

रामनारायणजी के पिता लालजित सिंह गाँव के प्रतिष्ठित सम्पन्न जमीन्दार थे। धन-सम्पत्ति अपार थी, किन्तु उनको सन्तान का सुख नहीं था। उन्होंने तीन शादियाँ कीं, फिर भी सन्तान की प्राप्ति नहीं हुई। अत: इस अपार धन-सम्पत्ति का उत्तराधिकारी कौन होगा, इसकी चिन्ता उन्हें व्यथित करने लगी। निराश होकर उन्होंने अपना धन सामाजिक कार्यों में खर्च करना शुरू किया। बहुत सारी जमीन बेच डाली एवं कुछ धन उन्होंने सामाजिक संस्थाओं को दान कर दिया। इस प्रकार वे समाज-सेवा के कार्यों में लगकर नि:सन्तान होने के दु:ख को भुलाने का प्रयास करने लगे। उनकी दो पत्नियाँ रोगग्रस्त होकर पहले ही चल बसी थीं। तीसरी पत्नी राजगद्दी देवी थीं। ये दोनों पति-पत्नी धर्म में आस्था रखते थे और लोकसेवा में सदा तत्पर रहते थे। किन्तु दोनों के अन्तर में एक व्यथा, एक कचोट थी। सच ही है कि गार्हस्थ्य-जीवन की पूर्णता सुयोग्य सन्तान की प्राप्ति ही है।

अपने सूने घर-आँगन में वह एक चहकते-किलकते शिशु का सपना सदा देखा करते और परम पिता परमात्मा से अपनी गोद भरने के लिए प्रार्थना किया करते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा जाता है कि हृदय की पुकार भगवान् अवश्य सुनते हैं, उनके यहाँ देर हो सकती है, किन्तु सुनवाई निश्चित है। उनकी लीला कोई नहीं समझ सकता है। कहाँ किस रूप में उनकी कृपा प्राप्त होगी, यह कहना कठिन है।

दु:खी-व्यथित इस दम्पति के साथ भी कुछ ऐसी ही एक अनहोनी घटना घटी। अचानक एक दिन एक साधु गाँव का भ्रमण करते हुए उनके घर पधारे, जैसे वह भगवान् का ही रूप हों। उन्होंने उनका विधिवत् पूजा-अर्चना एवं सेवा-सत्कार किया और अपने दालान पर ही ठहराया। उनसे उन्होंने अपने हृदय की व्यथा-कथा कह सुनाई। साधु उनकी सेवा-भावना से अति प्रसन्न थे। सन्तान की कामना पूर्ण होने के लिए साधु ने उन्हें सलाह दी कि प्रतिदिन आप विधिपूर्वक चार बजे प्रात: जगकर गंगास्नान करके गंगा नदी के जल में खड़े रहकर भगवान् भास्कर की आराधना करें, तत्पश्चात् गंगाजल लेकर बाबा परशुराम को चढ़ाकर ही अन्न ग्रहण करें । अपना अधिक समय पूजा-जप और ध्यान में लगायें। साधु उनको राह दिखाकर विदा हो गये। तबसे नित्य-नियमत: कई वर्षों तक वे साधु की बताई विधि से गंगास्नान कर सूर्योपासना करते पुन: गंगाजल लेकर बाबा परशुराम के मन्दिर में जल चढ़ाते और तब अन्न-जल ग्रहण करते।

इस घटना के कुछ समय बाद उनकी यह तपस्या फलीभूत हुई और प्रथम पुत्री शारदा देवी का जन्म हुआ। फिर कुछ वर्षों के बाद दो पुत्रों की प्राप्ति हुई। इनमें छोटे पुत्र रामनारायण ने २४ जनवरी, १९२६ ई० को जन्म लिया। इस प्रकार उनका सपना साकार हुआ।

बाबू लालजित सिंहजी को अब अपने बच्चों के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा की चिन्ता हुई। वे अपने दोनों पुत्रों को तेजस्वी, यशस्वी और विद्वान् बनाना चाहते थे। गाँव का वातावरण उन्हें इस कार्य में बाधक लगता था। उनके कुछ हितैषी लोगों ने भी यही सलाह दी कि बड़े होने पर वे अपने पुत्रों को बाहर पढ़ने के लिए भेज दें। उनके तीनों बच्चों में सबसे छोटे पुत्र रामनारायण में कुछ विलक्षण प्रतिभा की झलक बचपन से ही दिखाई देती थी।

पारिवारिक स्थिति :

लालजित सिंहजी ने बच्चों के जन्म के पूर्व ही निराश होकर अपनी बहुत सारी सम्पत्ति बेचकर दानादि में खर्च कर दी थी, फिर भी उनके पास काफी धन-सम्पदा थी, जिससे वे अपने पुत्रों को सुयोग्य बनाने में सक्षम थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के कारण उनके घर का वातावरण ही बदल गया। धन की कमी नहीं थी, भगवान् एवं सत्कर्मों में आस्था थी, फिर क्या था, यदा-कदा पूजा-पाठ, कथा आदि मांगलिक कार्यों का आयोजन होता रहता था। प्रतिदिन पाँच ब्राह्मणों को भोजन कराते और दान-दक्षिणा दिया करते। अब उनका अधिक समय साधु सन्तों की संगति में बीतने लगा। सन्तों-विद्वानों का साथ और सुकर्मों में लगन मनुष्य के जीवन पर चमत्कारी प्रभाव डालते हैं। बाबू लालजित सिंह का जीवन ही बदल गया। उनको कभी-कभी अशुभ होनेवाली अनहोनी बातों का भी आभास हो जाता था।

एक बार की घटना है—उनके घर में चोर आया, वह जैसे ही कुछ सामान लेकर भागना चाहता था कि वह अन्धा हो गया, उसे दिखाई नहीं पड़ रहा था। वह रात भर घर में ही छिपा रहा। सुबह उसकी आँख ठीक हो गई। दाई के आने पर झाड़ू लगाते समय वह पकड़ा गया। उसे अपना अपराध समझ में आ गया। वह रो पड़ा तथा क्षमा-याचना करने लगा। लोगों ने भी इसे भगवान् की कृपा समझकर चोर को कुछ धन देकर छोड़ दिया और पुनः उसने इस प्रकार चोरी नहीं करने की प्रतिज्ञा ली।

इसी प्रकार एक बार लालजित बाबू अपने पुत्रों के साथ सो रहे थे और बाहर के दालान से कोई दो बैल ले जा रहा था। नींद में उनको स्वप्न दिखाई दिया कि कोई उनका बैल ले जा रहा है। शीघ्र उनकी नींद खुल गई और बाहर आकर देखा, तो सच ही उनके दोनों बैलों को कोई ले जा रहा था। उन्होंने उन्हें छुड़ा लिया। इस प्रकार उन्होंने अनुभव किया कि कोई अदृश्य शक्ति के द्वारा ही इनकी विपत्ति के समय रक्षा होती रहती है। फलस्वरूप, मूर्त्ति-पूजा पर से उनका विश्वास जाता रहा। ये निराकार भगवान् में विश्वास करने लगे। उनके कई मित्र आर्यसमाजी थे, जिनके सम्पर्क में आकर उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन की कहानी सुनी और ये आर्यसमाजी बनकर मूर्त्ति-पूजा का खण्डन करने लगे। अब उनके मन की वह इच्छा अधिक बलवती हो गई कि पुत्र को विद्वान् क्रान्तिकारी और देशभक्त बनाना चाहिए।

यह वह समय था, जब महात्मा गान्धी देश को आजाद करने हेतु गाँव-गाँव में घूम-घूमकर अँगरेजी सरकार के विरोध में प्रचार कर लोगों को संगठित कर रहे थे। वे इस गाँव में भी आये और उनसे प्रभावित होकर लालजित सिंहजी भी काँग्रेस के सदस्य बनकर आजादी की लड़ाई में सहभागी बन गये। इन सब परिस्थितियों का रामनारायण के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। ये सब घटनाएँ इनके भविष्य-निर्माण की आधारशिला बनीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-दीक्षा :

श्रीलालजित सिंह का जीवन एक नये मोड़ पर पहुँच चुका था। वे अब कृतसंकल्प हो गये कि अपने बच्चों को गाँव के वातावरण से दूर किसी ऐसी संस्था में भेजा जाये, जहाँ विद्योपार्जन के साथ ही उनका संस्कार बदले और वे चरित्रवान् बनें। अबतक उनके पुत्र पाँच-छः वर्ष के हो चुके थे। दैवयोग से उन्हीं दिनों श्रीरामानन्द शर्मा (हिन्दी के प्रख्यात लेखक एवं दक्षिण भारत में हिन्दी-प्रचार के लिए गान्धीजी के सहयोगी) लखीसराय (मुँगेर-बिहार) के चित्तरंजन-आश्रम में एक विद्यालय का संचालन कर रहे थे। श्रीरामानन्द शर्मा समस्तीपुर जिले के पुनास गाँव के निवासी थे। उनका सम्बन्ध श्रीजनार्दन सिंह (चिन्तामणिचक) से था। श्रीलालजित बाबू ने अपने बच्चों को अध्ययन के हेतु श्रीरामानन्द शर्मा के पास लखीसराय में पहुँचा दिया, वहीं इन दोनों की प्रारम्भिक शिक्षा आरम्भ हुई । उन्होंने कहा मैं बच्चों पर विशेष ध्यान देने की व्यवस्था करा दूँगा। बस, लालजित सिंह को अपने पुत्रों को अध्ययन हेतु बाहर भेजने का सुयोग मिल गया। लखीसराय मोकामा से एक-दो स्टेशन आगे है। ये अति प्रसन्न हुए कि इतनी घोर तपस्या से प्राप्त पुत्रों के अध्ययन की व्यवस्था गाँव के निकट ही हो गई, जहाँ वे अपनी इच्छा और सुविधा के अनुसार जाकर मिल सकते हैं। वहाँ से उनको आसानी से यदा-कदा समाचार भी प्राप्त हो सकता था। आश्रम के अधिकारी अपने ही लोग थे, अतः वे पूर्ण निश्चिन्त हो गये। उनके उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करने लगे।

वहाँ आश्रम में सबके परिचित होने के कारण दोनों बच्चों को घरेलू वातावरण मिला। ये बालसुलभ क्रीडाओं के साथ अपनी पढ़ाई करने लगे। दोनों की देख-रेख, पालन-पोषण समान होने पर भी बड़े भाई सत्यनारायण पढ़ने में उदासीन दिखे। खैर! 'होइहैं सोइ जो राम रचि राखा।' एक माता-पिता की सन्तान, समान रहन-सहन में पले होने पर भी सबका भाग्य अलग-अलग होता है। मनुष्य को उसके अपने सत्कर्मों एवं दुष्कर्मों का ही फल जीवन में मिलता है और उसी के अनुसार उसे जीवन में सुख-सुविधा मिलती है।

चित्तरंजन-आश्रम में उतनी छोटी आयु में ही बालक रामनारायण में विलक्षण प्रतिभा की झलक दीखने लगी। शिक्षक इनसे प्रसन्न रहने लगे। ये सभी के प्रिय पात्र बन गये। आगे भविष्य में इन्हें जो बनना था, उसके लक्षण स्पष्ट होने लगे। पढ़ाई से इन्हें जब भी अवकाश मिलता, ये अपने वय के छोटे साथियों को एकत्रित करके जुलूस निकालते, भारतमाता की जय के नारे लगाते। अनुशासनप्रियता के प्रति झुकाव उसी समय से इनमें देखा जाता था;

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि इनका सारा क्रिया-कलाप विद्यालय-परिसर में ही होता था। अन्य बच्चे खेलकूद में अपना समय लगाते और ये एक नये ही ढंग के खेल खेलते। छुट्टियों में जब ये गाँव आते, तब भी इनका यही सिलसिला चलता। गाँव के अपने उम्र के बच्चों को इकट्ठा करके उनके बीच भाषण देना और छोटी-छोटी बातों को समझाना चलता रहता।

लखीसराय-आश्रम में प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने के वाद इन दोनों भाइयों को बिहटा में स्वामी सहजानन्दजी सरस्वती के आश्रम में भेज दिया गया। अब इन बच्चों का तपोमय जीवन प्रारम्भ हो गया। लखीसराय-आश्रम में इन्हें घरेलू वातावरण के साथ खान-पान भी घर के समान प्राप्त था। स्वामीजी के आश्रम में वैसी छूट नहीं थी। सादा, नमक-रहित भोजन उनको मिलता था। इनके पिताजी के धैर्य और साहस की क्या प्रशंसा की जाये? अपने बच्चों को तेजस्वी-वर्चस्वी बनाने की उन्होंने ठान ली थी। अब तो जो भी उनको आश्रम में प्रतिकूल दीखता, उसका निराकरण वे स्वयं कर लेते। कठोर अनुशासन, सुसंचालित दैनिक क्रिया-कलाप तथा अध्ययन के प्रति सजगता तो उन्हें स्वयं ही पसन्द थी, केवल भोजन की व्यवस्था से वे सन्तुष्ट नहीं थे। अत: वहीं बिहटा आश्रम के निकट के किसी मिष्टान्न-भण्डारवाले को उन्होंने ठीक कर लिया, तथा उसे निर्देश दे दिया कि वह यदा-कदा उनके बच्चों को मिठाइयाँ और नमकीन आदि दिया करे। अब लालजित बाबू सप्ताह में या पन्द्रह दिनों पर अवश्य बिहटा आश्रम जाया करते। बच्चों से मिलकर उनका समाचार लेते। मिठाईवाले को मिठाइयों की कीमत देते। यह क्रम कुछ वर्षों तक चला। बड़े भाई सत्यनारायण का मन आश्रम के इस कठोर अनुशासन से उचट गया। वे पिता से सदा घर लौटने की बात करते। पढ़ाई में उनका मन नहीं लगता और अध्यापक भी उनसे असन्तुष्ट रहते। छोटे भाई रामनारायण ने अपनी कार्यकुशलता, सेवापरायणता से आश्रम के लोगों का तथा स्वामीजी का मन जीत लिया। विद्यालय में इनकी अलग पहचान बन गई। इतनी कम उम्र में ही ये स्वामीजी के विश्वासपात्र बन गये।

उस समय देश में आजादी के लिए अँगरेजी-सरकार के विरोध में खिलाफत आन्दोलन चल रहा था। उसी समय स्वामीजी किसान-आन्दोलन का भी नेतृत्व कर रहे थे। सरकार की नजरों से बचकर लोग अन्दर-अन्दर ही देश की आजादी के लिए भी काम कर रहे थे। स्वामीजी के आश्रम में भी गुप्त रूप से अँगरेजी-सरकार के विरोध में कार्य होता था। विभिन्न स्थानों में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने आश्रम पर किये गये गुप्त क्रियाओं की सूचना तथा निर्देश-पत्र भेजा जाता था।

अँगरेजी-सरकार को बिहटा आश्रम में किये गये इन कार्यों पर शक हो गया और आश्रम की चिट्ठियाँ सेंसर होने लगीं। आश्रम की सारी चिट्ठियाँ अब पहले पोस्ट आफिस में गोरे अफसर पढ़ते। जो उनके प्रतिकूल होता, उसे फाड़कर फेंक देते और बाकी को गन्तव्य स्थान में भेज देते।

अब स्वामीजी बड़ी कठिनाई में पड़ गये। अन्य स्थानों से सम्पर्क करने का मार्ग सोचने लगे। तभी उन्हें छोटे रामनारायण का ध्यान आया, जो उनके विश्वासपात्र और प्रिय पहले ही बन चुके थे। उन्होंने सोचा, बालक होने के कारण इनपर किसी को शक नहीं होगा। इस प्रकार इतनी कम आयु में बालक रामनारायण स्वामीजी के विश्वस्त पत्रवाहक बन गये। अब स्वामीजी अपने गोपनीय पत्रों को इन्हीं के द्वारा भेजा करते।

एक बार की घटना है कि एक गुप्त चिट्ठी कलकत्ता भेजनी थी। स्वामीजी चिन्ता में पड़ गये। किन्तु उत्साही बालक रामनारायण ने यह भार अपने ऊपर लेकर स्वामीजी को चिन्ता-मुक्त कर दिया। वे पत्र लेकर बड़े आत्मविश्वास के साथ कलकत्ता प्रस्थान कर गये। किसी प्रकार कलकत्तावालों को इसकी सूचना भेज दी गई, वे स्टेशन पर इन्हें लेने आये। किन्तु पहचान नहीं होने के कारण रामनारायणजी उनको नहीं मिले। ये स्वयं उस बड़े शहर में निर्भीकतापूर्वक बिना किसी विघ्न-बाधा के अपने गन्तव्य स्थान को खोजकर पहुँच गये। कलकत्ता के लोग ऐसे दुस्साहसपूर्ण कार्य के लिए इतने छोटे बालक को आया देखकर आश्चर्यचकित हो गये। रामनारायणजी वहाँ भी सबके प्रिय पात्र बन गये। स्वामीजी के विश्वस्त होने के कारण उन लोगों को भी इनपर पूर्ण विश्वास हो गया। उन्होंने अपने कुछ स्थानीय गोपनीय कार्यों को भी इनसे कराया। वहाँ के दर्शनीय स्थानों को दिखाकर, स्वामीजी के पत्र के जवाब के साथ इनको विदा किया। ये सुरक्षित वहाँ से पत्र लेकर बिहटा आश्रम में वापस आ गये।

इस प्रकार के साहसिक कार्यों के करने से इनमें काफी आत्मविश्वास भर गया। अब ये बड़े से बड़े कार्य को करने में भी हिचकते नहीं थे। इतनी कम उम्र में इतनी सूझ-बूझ और अध्ययन में लगन होने के कारण सभी शिक्षक इन्हें पुत्रवत् स्नेह करने लगे। इस प्रकार, आश्रम-जीवन में ही अपनी अद्भुत प्रतिभा से आश्रमवासियों को चकित कर ये आगे की पढ़ाई हेतु गुरुकुल, देवघर (वैद्यनाथधाम) चले गये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-जीवन :

रामनारायणजी के पिताजी ने पुनः अपने दोनों पुत्रों को गुरुकुल, वैद्यनाथधाम में प्रवेश करा दिया। यहाँ से इनका गुरुकुलीय जीवन प्रारम्भ हुआ। गुरुकुल का जीवन भी बड़ा अनुशासित होता है। चंचल प्रकृति के बच्चों का वहाँ टिकना असम्भव होता है।

बालक रामनारायण को यहाँ आकर कोई विशेष कष्ट नहीं हुआ। ये तो स्वभाव से ही गम्भीर और शान्त प्रकृति के अध्ययनशील थे। यहाँ इनको भोजन में नमक का प्रतिबन्ध नहीं था। सामान्य रूप से भोजनादि में नमक का प्रयोग होता था। बिहटा आश्रम में इन्हें कष्ट था तो एक ही कि वहाँ नमक रहित भोजन बनता था।

यहाँ गुरुकुल में भी कुछ ही दिनों के पश्चात् रामनारायणजी शिक्षकों एवं साथियों के बीच एक मेधावी छात्रों की श्रेणी में प्रसिद्ध हो गये। इनकी उम्र भी अब बढ़ने लगी थी। यह गुरुकुल एक मनोहर प्राकृतिक रमणीय वातावरण में स्थित है। ऊँची-नीची पथरीली भूमि, आसपास के जंगलों में हरे-भरे वृक्षों का शीतल वितान बड़ा ही मनोमोहक है। खाली समय में ये घण्टों ऐसे पथरीले टीलों पर बैठे मनन-चिन्तन किया करते। इस सौन्दर्यमय प्राकृतिक परिवेश की ही यह अनुपम देन थी कि अपने अल्प वय में ये भावुक, संवेदनशील बन गये। किसी की पीड़ा, दुःख और असमर्थता को देखकर शीघ्र विचलित हो जाना इनका स्वभाव बन गया। इस एकान्त-चिन्तन ने इनमें अपने अध्ययन के विषयों को गम्भीरतापूर्वक सोचने-समझने की क्षमता भर दी, जो भविष्य में इनके लिए वरदान सिद्ध हुआ। पढ़ते तो सभी हैं, किन्तु गहन विषयों के मूल तत्त्वों को आत्मसात् कर लेना एक प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति से ही सम्भव है। सबसे बड़ा चमत्कार तो तब होता था, जब ये उन गूढ़ विषयों को सरलतम विधि से नया रूप देकर प्रांजल भाषा में जनता के सामने रखते थे। धीरे-धीरे ये भाषण-कला में प्रवीण हो गये। गुरुकुल के अधिष्ठाता पं० जगन्नाथ शास्त्री, पं० वीरेन्द्र श्रीवास्तव आदि इनके आचार्य थे। इन विद्वान् सदाचारी आचार्यों के शिक्षा-सान्निध्य ने इन्हें कर्मनिष्ठ, आचारनिष्ठ और देशभक्त बना दिया।

स्वाधीनता-आन्दोलन : सक्रिय योगदान :

संयोग से उस समय तक देश को आजाद करने का अभियान तेजी पर पहुँच गया था। रामनारायणजी भी अध्ययन के साथ-साथ आजादी के आन्दोलन में सम्मिलित होने लगे। अपने साथियों को देशभक्ति पर भाषण देकर इन्हें भी अपने साथ कर लिया। छात्रों को साथ लेकर जुलूस निकालना, रेल की पटरी उखाड़ना, नारे लगाकर अँगरेजी-सरकार को परेशान करना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनका काम हो गया। इन कृत्यों के कारण अँगरेजी-सरकार भी इनपर कड़ी निगाह रखने लगी। अब ये अपना वेष और नाम बदलकर काम करने लगे, और अपना नया नाम रामनगीना सिंह रख लिया। अपने साथियों में इसी नाम से प्रसिद्ध हो गये। इस प्रकार, अपने इन क्रान्तिकारी कामों के कारण कभी-कभी जेल भी जाते, किन्तु अपनी चतुराई से ये बाहर आने में सफल हो जाते। जेल के अधिकारी भी इतनी कम उम्र के देशभक्त युवक के प्रति सहानुभूति रखते तथा इनको कम से कम कष्ट देते।

रामनारायणजी को दुमका जेल में स्थानान्तरित कर दिया गया। किन्तु, इनमें तो देशभक्ति की ज्वाला जल रही थी। ये वहाँ भी शान्त नहीं रहते थे। एक रात इन्होंने अद्भुत कार्य किया। सारे कैदियों को जमा करके एक दूसरे की पीठ पर खड़े हुए और जेल की छत तक पहुँचकर वहाँ तिरंगा झण्डा फहरा दिया। सुबह जेल के अधिकारियों को जब पता चला, तब उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। किन्तु जेल तो जेल ही होती है। वहाँ तो ऐसे अदम्य कार्यों को भी अक्षम्य अपराध माना जाता है तथा उसकी सजा निर्धारित होती है।

फलतः, सभी कैदियों को इकट्ठा करके बेंत लगाने की आज्ञा हुई। इस कार्य की सूझवाले कैदी को अतिरिक्त बेंत लगाने का आदेश हुआ।

जेल के अधीक्षक डॉ० ए० के० बराट आ खड़े हुए और सबपर बेतों की वर्षा होने लगी। कैदियों की पंक्ति में रामनारायण भी खड़े थे। डॉ० बराट की दृष्टि इनपर पड़ी। वे इस ओजस्वी-तेजस्वी-देशभक्त युवक को पुत्रवत् मानते थे। अपने गुणों के कारण ये उनके स्नेहपात्र बने हुए थे, इनपर उनका विशेष ध्यान रहता था। डॉ० साहब को यह समझते देर नहीं लगी कि ऐसी अनोखी सूझ रामनारायण की ही हो सकती है। जेल के कानून में वे बँधे इनको बेंत लगाने की बात सोचकर चिन्तित हो गये। जैसे-जैसे इनका नम्बर नजदीक आता जा रहा था डॉ० बराट का मन व्यथित होता जा रहा था। यदि साथियों में किसी ने इनका नाम ले लिया, तब और सजा देनी पड़ेगी।

किन्तु उसी समय दैवयोग से एक अनहोनी घटना घटी। डाकिया एक पत्र अधीक्षक महोदय को दे गया। बराट साहब ने पत्र खोला। उनके चेहरे पर प्रसन्नता और सन्तोष के भाव झलक पड़े। बात यह थी कि वह पत्र नहीं, रामनारायणजी को 'विद्यारत्न' उपाधि मिलने का प्रमाण-पत्र था, जो गुरुकुल, देबघर से देवघर जेल भेजा गया था, और वह वहाँ से पुनर्निदेशित होकर दुमका जेल पहुँचा था। उसमें रामनारायणजी की जन्मतिथि अंकित थी। उसके अनुसार इनकी उम्र बेंत लगाये जाने की उम्र की सीमा से कम थी। यह एक ऐसा अकाट्य ठोस प्रमाण था, जिससे डॉ० बराट ने इन्हें बेंत लगनेवालों की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंक्ति से अलग निकाल देने का आदेश दिया तथा पुनः ऐसी घटना नहीं दुहराने की शिक्षा देकर इन्हें इनके बैरक में भेज दिया।

कुछ दिनों के बाद रामनारायणजी जेल से छूटकर घर आ गये । किन्तु जेल से बाहर आते ही ये पूर्ववत् कार्यक्रम चलाने लगे । एक बार रात में अपने साथियों सहित रेल की पटरी उखाड़ रहे थे, उसी समय रात्रि पुलिस गश्ती वहाँ पहुँच गई, किन्तु चतुराई से ये धोती से पगड़ी बाँधकर खेत में काम करने लगे और जेल जाने से बच गये।

परन्तु अगले दिन पुलिस अपने पूरे दल-बल के साथ तीन-चार गाड़ी फोर्स लेकर गुरुकुल पहुँच गई। प्रधानाचार्य से तलाशी के लिए अनुमति लेकर गेट खुलवाने तक के समय को पाकर रामनारायणजी अपने दो-तीन साथियों-सहित पास के ही झाड़ियों से ढ्के एक नाले में छिप गये। विद्यालय की तलाशी से निराश होकर पुलिस जब आगे बढ़ी, तब ये झाड़ियों में पकड़े गये और पुनः जेल भेज दिये गये।

अब जेल में इनका नाम 'खतरनाक रामनारायण' के रूप में प्रसिद्ध हो गया। इनपर विशेष निगरानी रखी जाने लगी। वहाँ इन्हें कठोर यातनाएँ भुगतनी पड़ीं, फिर भी इन्होंने सरकार से माफी नहीं माँगी। इस प्रकार, इन्होंने आजादी की लड़ाई में सक्रिय योगदान किया।

उस समय गान्धीजी का सत्याग्रह-आन्दोलन तेजी से चल रहा था। अछूतों के उद्धार की ज्वलन्त समस्या उनके सामने थी। अछूतों को समाज की स्वाभाविक धारा से वे जोड़ना चाहते थे। अस्पृश्यता को समाप्त करके उस वर्ग को ऊपर उठाना चाहते थे। इसके लिए वे स्थान-स्थान पर दौरा कर रहे थे।

इसी क्रम में गान्धीजी एक बार गुरुकुल आये तथा जाँच करने के उद्देश्य से बोले—मैले की बाल्टी उठाकर जो गन्दे स्थान पर फेंक देगा, वही मेरा सच्चा शिष्य होगा। रामनारायणजी पीछे हटनेवाले नहीं थे। इन्होंने सफाई का यह कार्य बड़ी तत्परता से सम्पन्न किया और गान्धीजी के प्रिय शिष्य हो गये।

इतनी कम उम्र में ही इन्होंने बहुमुखी प्रतिभा के धनी बनकर गुरुकुल की 'विद्यारत्न' उपाधि के साथ ही साहित्यभूषण, काव्यतीर्थ, साहित्याचार्य, साहित्यरत्न आदि अनेक उपाधियाँ आयत्त कीं।

सामाजिक पक्ष :

सन् १९४५ ई० में रामनारायणजी बिहार-प्रतिनिधि सभा, बाँकीपुर, पटना चले आये। इस प्रकार १९४५ ई० में इनका विद्यार्थी-जीवन समाप्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ और आर्यसमाज की सेवाएँ प्रारम्भ हो गईं। भाषण-कला में ये गुरुकुल-जीवन से ही प्रवीण हो चुके थे। स्वाध्यायशील होने के कारण अपने कोर्स की पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य विषयों की पुस्तकें भी पढ़ा करते थे। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि ये विभिन्न विषयों में रुचि रखते थे। सामान्यत: देखा जाता है कि हर व्यक्ति की अपनी एक या दो विषयों में ही रुचि होती है तथा वे उसी विषय की पुस्तक पढ़ा करते हैं। इनके साथ ऐसी बात नहीं थी। फलस्वरूप इनका बहुमुखी विकास हुआ। जिस विषय पर भी कहा जाता, ये धारा-प्रवाह व्याख्यान देते थे। भाषणकला के साथ इनकी भाषा-शैली अद्भुत थी, जो श्रोताओं को मुग्ध कर देती थी। घूम-घूमकर आर्यसमाज का प्रचार करना, सभाओं का आयोजन करना, विशिष्ट व्यक्तियों का अभिनन्दन, समारोह आदि का प्रबन्ध करना इनका मुख्य कार्य हो गया। ये बिहार प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा में उपदेशक का कार्य करने लगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा में उपदेशक का कार्य करते समय ही इनपर अपने पिताजी की देख-रेख की, इलाज की समस्या आ गई। इनके पिताजी इनको छोड़कर अलग रहना नहीं चाहते थे। अत: आर्य प्रतिनिधि सभा में ही ये उनको रखते, दवा आदि का प्रबन्ध करते और जब बाहर प्रचार के लिए जाते, तब उन्हें भी साथ ले जाते। इससे पिता-पुत्र दोनों सन्तुष्ट रहते। एक बार १९४६-४७ ई० के बीच इनके पिताजी बहुत अस्वस्थ हो गये थे और ये अपने गाँव चिन्तामणिचक में ही थे। पिताजी की बीमारी का समाचार जानकर रामनारायणजी गाँव गये। डाक्टर को बुलाकर पिताजी को दिखाया, किन्तु वे ठीक नहीं हुए। उनका अपने गाँव में ही देहान्त हो गया।

२२-२३ फरवरी, १९४५ ई० को ही बिहार प्रान्तीय आर्य सम्मेलन करने का निर्णय करने को आर्यसमाज दानापुर में अन्तरंग सभा की बैठक हुई थी। यह बैठक अपने में बहुत महत्त्व रखती थी। इस बैठक में स्वामी ध्रुवानन्द (राजगुरु धुरेन्द्रशास्त्री) भी आये थे। इसी बैठक में राजगुरुजी से रामनारायणजी की भेंट हुई थी। राजगुरुजी की पैनी दृष्टि ने इनके उदीयमान चरित्र की प्रतिभा को पहचान लिया था। वे इन्हें बहुत मानने लगे और आर्यसमाज का कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने लगे। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए उन्हें एक ऐसे ही होनहार, मेधावी युवक की खोज थी। उन्होंने पटना सिटी आर्यसमाज के मन्त्री पं० वासुदेव शर्मा से मिलकर इनके विवाह की योजना बनाई। वे चाहते थे कि किसी आर्य परिवार की शिक्षित कन्या से इनका विवाह किया जाना ठीक होगा। यदि वह कन्या शिक्षण आदि कार्य में रत हो तो और अच्छा; तभी वह गार्हस्थ्य-जीवन की समता-विषमता का सारा बोझ अपने ऊपर लेने में सक्षम होगी। इस प्रकार रामनारायणजी निश्चिन्त होकर आर्यसमाज का कार्य करेंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गार्हस्थ्य-जीवन :

संयोगवश १९४७ ई० के दिसम्बर में पटना सिटी आर्यसमाज के उत्सव पर श्रीवासुदेव शर्माजी को अपने एक मित्र श्रीमोतीलाल आर्य से मिलने का अवसर मिला। श्रीमोतीलालजी ने पं० वासुदेव शर्माजी से अपनी पुत्री के विवाह की समस्या रखी। वे एक आर्य निरामिष परिवार की खोज में थे। पं० वासुदेव शर्माजी ने राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्रीजी से इन्हें मिलाया। राजगुरुजी के मन की बात पूरी हुई। उन्होंने पं० रामनारायण शास्त्रीजी से इसकी चर्चा की। रामनारायण शास्त्रीजी इसके लिए तैयार हो गये। इस प्रकार श्रीमोतीलालजी आर्य की पुत्री का विवाह राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्रीजी ने पं० रामनारायणजी शास्त्री के साथ करने की स्वीकृति दे दी।

१२ जुलाई, १९४८ ई० को पं० रामनारायण शास्त्रीजी का विवाह आदर्श दम्पति श्रीमोतीलाल आर्यजी एवं श्रीमती विन्दा देवीजी की सुपुत्री ईश्वरी आर्या से राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्रीजी के पौरोहित्य में पं० रामानन्द शास्त्री ने सम्पन्न कराया। श्रीमती ईश्वरी आर्या स्थानीय नारायणी कन्या विद्यालय में शिक्षिका के पद पर कार्यरत थीं। रामनारायण शास्त्रीजी पूर्ववत् ही आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार में उपदेशक का कार्य करते रहे। इनके गार्हस्थ्य-जीवन का शुभारम्भ हुआ। शास्त्रीजी निश्चिन्त होकर पूरी लगन और निष्ठा से आर्यसमाज के कार्य में जुट गये। महीने में बीस दिन ये प्रचार-हेतु बाहर जाया करते। इनके द्वारा आर्यसमाज के लिए की गई सेवाओं का ब्योरा 'शास्त्रीजी की दिनचर्या के दो पड़ाव' शीर्षक प्रकरण में पाठक आगे पढ़ेंगे। ७ जून, १९५० ई० में इनकी पुत्री अलका का जन्म हुआ। अब धीरे-धीरे गृहस्थी का बोझ बढ़ने लगा। इनको आर्यसमाज की सेवा करते हुए अन्य कोई आर्थिक स्रोत के खोजने की चिन्ता हुई। इस कार्य के लिए विभिन्न प्रेसों और साहित्यिक संस्थाओं में घूमने लगे।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् : प्रशासनिक कार्य :

फरवरी, १९५१ ई० की बात है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-भवन, कदमकुआँ में कोई साहित्यिक गोष्ठी चल रही थी, जिसमें आचार्य शिवपूजन सहाय आदि विद्वान् बैठे थे। श्रीरामनारायण शास्त्रीजी अपने काम की तलाश में घूमते हुए वहाँ पहुँचे। इनके मित्रों ने आचार्य शिवपूजन सहायजी से इनका परिचय कराया। शिवजी ने बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में इन्हें ९ फरवरी, १९५१ ई० से पारिश्रमिक के आधार पर क्षेत्रीय कार्यकर्त्ता के पद पर नियुक्त कर लिया।

शास्त्रीजी को विभिन्न स्थानों, गाँवों, मठों एवं पुस्तकालयों में जाकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्तलिखित पुरानी पोथियों की खोज का कार्य सौंपा गया। अतः महीने के बीस-पच्चीस दिन इन्हें प्रवास में बिताना पड़ता था।

अब इनका आर्यसमाज और बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् का कार्य समानान्तर रूप से चलने लगा। पटना में एवं पटना के बाहर भी इनके कितने ही भक्त प्रेमी परिवार हैं, जिनसे इन्हें आदर-सम्मान और प्रेम मिलने लगा। यह सब इनकी अति सामाजिकता का ही फल हुआ। किसी के दुःख में दुखी होकर उसे दूर करने का अथक प्रयास करना इनका स्वभाव था। पुरानी पोथियों की खोज में कभी-कभी ऐसे लोगों से भी भेंट हो जाती, जहाँ इन्हें तिरस्कार भी मिलता था। गया का मन्नूलाल पुस्तकालय, प्रयाग संग्रहालय, आरा, बक्सर, डुमराँव, सासाराम, मध्यप्रदेश, उड़ीसा आदि विभिन्न स्थानों में जाकर हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को लाना उनको पढ़कर विवरण तैयार करना, उनपर टिप्पणी लिखना आदि कार्य करने लगे। धीरे-धीरे बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में इन विषयों के ये अकेले ज्ञाता हो गये। ग्रन्थ-सम्पादन एवं पाठालोचन एक शुष्क और कठिन विषय है। विभिन्न विश्वविद्यालयों के कितने ही छात्र आकर इनसे शोध-सम्बन्धी परामर्श एवं निर्देश लिया करते थे।

हस्तलिखित पोथियों की खोज के सिलसिले में ये अब भारत के विभिन्न प्रान्तों में भी जाने लगे। भारत सरकार ने १९५४ ई० में प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों के महत्त्व को पहले-पहल समझा। लाहौर-निवासी पं० राधाकृष्ण के सम्पर्क में आकर भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में जाकर यह कार्य ये करने लगे। कलकत्ता के पं० अयोध्याप्रसादजी वैदिक रिसर्च स्कॉलर से, जो आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान् थे, ये मिले। पं० अयोध्याप्रसादजी के द्वारा कलकत्ता में प्राचीन हस्तलिखित पोथियों की खोज के कार्य में इन्हें बहुत परामर्श और सहयोग मिला। वे वैदिक-गणित विज्ञान के व्याख्याता थे। श्रीशास्त्रीजी ने पं० अयोध्या प्रसाद द्वारा प्रस्तुत की गई इस पुस्तक की रूपरेखा और भूमिका लिखी। टैगोर बिल्डिंग में भी हस्तलिखित पोथियाँ देखीं। यहाँ इन्होंने ग्यारह पोथियों का विवरण तैयार किया। राष्ट्रभाषा-परिषद् के सब अनुसन्धान-कार्यों को भी इनकी दैनन्दिनी से आकलित कर आगे एक अध्याय में दिया जा रहा है।

वैयक्तिक पक्ष :

१२ जून, १९५६ ई० को मंगलवार के दिन इनके ज्येष्ठ पुत्र अभिजित का और २४ फरवरी, १९५८ ई० को सोमवार के दिन छोटे पुत्र अमिताभ का जन्म हुआ। इस प्रकार इनके एक पुत्री और दो पुत्र हुए। अपने सभी बच्चों का संस्कार इन्होंने वैदिक रीति से आचार्य रामानन्द शास्त्रीजी के द्वारा कराया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् और आर्यसमाज के प्रचार हेतु रामनारायणजी को अधिक समय प्रवास में रहना होता था। बाहर का अनियमित जीवन, प्रतिकूल भोजनादि के कारण इनका स्वास्थ्य गिरने लगा।

आर्य-सम्मेलन आदि के आयोजन में इन्हें कठोर परिश्रम करना पड़ता था। इनके काम करने की शैली भी भिन्न थी। जो भी कार्य करते, ईमानदारी से, सुव्यवस्थित ढंग से करते।

आर्यसमाज एवं राष्ट्रभाषा-परिषद् के कार्य के साथ इन्हें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और राजनीति के कार्य में भी बहुत रुचि थी। चुनावों के समय स्व० प्रकाशवीर शास्त्रीजी आदि अपने क्षेत्रों में प्रचार हेतु उन्हें ले जाया करते थे।

वैदिक रीति से नामकरण, विवाह आदि संस्कार कराने का इनका ढंग निराला था। बिहार में तथा अन्य प्रान्तों में भी लोग इन्हें अपने पुत्र-पुत्री के विवाह-संस्कार कराने के लिए ले जाते थे। उन परिवारों पर आज भी इनके विद्वत्ता की गहरी छाप है। आज भी वे लोग इनके अभाव पर खेद व्यक्त किया करते हैं।

ये बचपन से ही गुरुकुल आदि में पढ़ने हेतु भेजे गये थे। माता के निकट रहने का अवसर इन्हें कम ही मिला था। इनकी माता इन्हें खूब मानती थीं। सन् १९६४ ई० में इन्होंने गान्धी मैदान में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया था। उसमें वे अति व्यस्त थे। पं० प्रकाशवीर शास्त्री, क्षेमचन्द्र सुमन आदि उच्च कोटि के विद्वान् भाग लेने आये थे। इनकी माताजी प्रायः इन्हीं के साथ रहती थीं। आर्य महासम्मेलन में भाग लेने इनके बड़े भ्राता भी गाँव से आये थे। माताजी इन्हीं के साथ गाँव चली गईं। कुछ दिनों के बाद जब ये गाँव गये, तब उनको साथ ले आये, वहाँ वे बहुत अस्वस्थ हो गई थीं। यहाँ डाक्टर-वैद्यादि से इलाज किया गया, किन्तु २८ सितम्बर, १९६४ ई०, सोमवार को वे इस असार-संसार को छोड़कर चल बसीं। माता के निधन के बाद श्रीविष्णुदेव नारायण एडवोकेटजी की धर्मपत्नी श्रीमती कैलाशवासिनी देवीजी को मातृ-तुल्य मानकर ये उनसे अति स्नेह करते थे। कैलाशवासिनी देवीजी आर्य विचार की बड़ी ममतामयी साध्वी महिला थीं। वे इन्हें पुत्रवत् स्नेह और वात्सल्य प्रेम दिया करती थीं। उनके परिवार से ये घनिष्ठ रूप से जुड़े थे। इनको उनसे अभिभावक-तुल्य संरक्षण भी मिलता था।

३ दिसम्बर, १९६५ ई० को इन्होंने अपने नये मकान शास्त्री-भवन में गृहप्रवेश का विधान वैदिक रीति से कराया। इस मकान के साज-सँवार में माता कैलाशवासिनी देवी एवं उनके परिवार का योगदान बड़े महत्त्व का है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी को अपने धर्मपुत्र शास्त्रीजी को मकान मिलने पर अपार हर्ष हुआ। गृह-प्रवेश यज्ञ में वे बड़े उल्लास से यथोचित स्नेहोपहार के साथ सम्मिलित हुईं।

किन्तु शास्त्रीजी को यह मातृसुख अधिक दिन तक नहीं मिल सका, जिसकी पीड़ा इन्हें व्यथित और उदास करती थी। माता कैलाशवासिनी देवीजी हृदयरोग से पीड़ित रहती थीं। १ जनवरी, १९७० ई० को उनका निधन हो गया। इस शोक समाचार को सुनकर इनका यह उद्गार इनकी दैनन्दिनी के पृष्ठों पर इस प्रकार अंकित है :

"आज नव-वर्ष का दिन मेरे दुर्भाग्य का दिवस है, इसलिए कि अपनी जननी जन्मदायिनी माँ के दिवंगता होने के बाद, जिनपर मैं मातृत्व का पूरा भरोसा रखे हुए था और जिन्हें पाकर मातृत्व-सुख से वंचित होकर भी मैं मातृत्व-सुख का पूर्ण आनन्द लेता था, जिनकी शरण में पहुँचने पर मैं अपने सुख-दुःख को भूल जाता था तथा जिनसे मेरी किसी भी प्रकार की गोपनीयता नहीं थी, अपनी उस माता (श्रीमती कैलाशवासिनी देवी) श्रीविष्णुदेव नारायण एडवोकेट की धर्मपरायणा पत्नी तथा श्रीमान् सुधीरनारायण एडवोकेट की माताजी को परमपिता परमात्मा ने हमेशा-हमेशा के लिए छीन लिया। वे पार्थिव शरीर से मुक्त हो गईं। प्रातः पौने तीन बजे के लगभग उनका देहान्त हो गया!"

ऐसा उद्गारं किसी अति संवेदनशील व्यक्ति के हृदय से ही निःसृत हो सकता है। अपने पड़ोसियों, मित्रों, सहकर्मियों के सुख-दुःख का खयाल रखना उनके हित के लिए प्रयत्नशील होना बहुत ही विरले लोगों में पाया जाता है।

शास्त्रीजी स्वयं सरल, मधुरभाषी और स्नेही प्रकृति के थे, किन्तु यह संसार तो विसंगतियों और विषमताओं के ताने-बाने से बना है। कभी-कभी अपने इस सरल विश्वासी स्वभाव के कारण ये घोर संकट में पड़ जाते थे। अपने ही लोगों से अपमानित होते थे, जिसकी पीड़ा इन्हें दुःखी और उदास कर देती थी। मन के दुःख का बोझ बड़ा घातक होता है। शास्त्रीज़ी की कर्मठता, तेजस्विता निर्भीकता औरों के लिए ईर्ष्या का कारण बन गई। आजकल अकारण परपीडा से प्रसन्न होनेवालों की दुनिया में कमी नहीं है।

आर्यसमाज हो अथवा अन्य कोई संस्था, जहाँ भी ये कुछ सुधार का कार्य करना चाहते, वहाँ आपस के विरोध के कारण इन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ता। तब भी अपने हृदय की विशालता तथा उदारता के कारण जब भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाज पर कोई संकट आता, लोग इन्हें बुलाकर ले जाते। ये सब कुछ भुलाकर आर्यसमाज पर अपनी जान देकर भी हर विपत्ति का सामना सहर्ष करने में जुट जाते।

ऐसा ही एक अवसर मठगुलनी आर्यसमाज में हुआ। ईसाइयों और आर्यसमाज के लोगों में संघर्ष हुआ। आर्यसमाज के लोगों ने उनकी बन्दूक छीन ली। पटना से सरकारी अधिकारी पुलिस लेकर आर्यसमाज में तलाशी करने के लिए जानेवाले थे। इसकी सूचना किसी प्रकार डॉ० दुखन रामजी को मिली। डॉ० साहब ने इन्हें बुलाया और इन्होंने रातों-रात वहाँ जाकर बन्दूक गंगा नदी में डाल दी। दूसरे दिन जब पुलिस गई, तब उसे तलाशी में कुछ नहीं मिला और सभी आर्य सदस्य छूट गये।

इस प्रकार, मर मिटने का साहसिक कार्य ये सदा करते ही रहते थे, फिर भी अपने तथाकथित हितैषियों के वैमनस्य की ज्वाला जलती ही रही। शास्त्रीजी उसमें तिल-तिल जलते और उनका स्वास्थ्य गिरता जाता।

२५ अप्रैल, १९७० ई० को इन्होंने अपनी कन्या अलका शर्मा का विवाह श्रीहरिद्वार शर्मा (जहानाबाद) के पुत्र श्रीअनिल रंजनजी से कर दिया। ऐसे मांगलिक अवसर पर भी इनको संघर्ष करना पड़ा था।

अस्तु! इनका गृहस्थी का जीवन अब बहुत आगे बढ़ चुका था। असहयोग और संघर्ष ने इनके हृदय को बोझिल बनाना प्रारम्भ कर दिया था। दुर्बल स्वास्थ्य, अनियमित दिनचर्या इनके शरीर को निरन्तर क्षीण और जर्जर कर रही थी। अब ये बहुत अस्वस्थ रहने लगे, किन्तु परिवार के द्वारा सामाजिक कार्यों में बाधा डालने के भय से अपने रोग और दुर्बलता को छिपाते रहे।

अगस्त, १९७७ ई० में ये बहुत बीमार हुए। डाक्टरों ने खान-पान में काफी पाबन्दी कर दी। दो-तीन महीने लगातार बीमारी का सिलसिला चलता रहा। ठीक होने पर भी डाक्टरों ने आराम से रहने के लिए कहा। दिसम्बर, १९७७ ई० में आर्यसमाज, बम्बई फोर्ट का निमन्त्रण-पत्र आया था। अपने गिरते स्वास्थ्य की उपेक्षा करके श्रीशास्त्रीजी उत्सव में बम्बई जाने को तैयार हो गये। इनका दृष्टिकोण था कि वहाँ जाने से सभी आर्यमित्रों से भेंट हो जायेगी।

बम्बई से लौटने पर १६ जनवरी, १९७८ ई० को राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक पद पर इनकी नियुक्ति हुई, जिसके लिए ये बहुत दिनों से प्रयत्नशील थे। इस शुभ समाचार के लिए इन्हें बधाई-पत्र मिलने लगे। साहित्यिक गोष्ठियों में सम्मान और अभिनन्दन की योजना लोग बनाने लगे। श्रीशास्त्रीजी को यह सुख देखना नहीं था। प्रभु की बलवती इच्छा के सामने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किसका बस चल सकता है। २३ जनवरी, १९७८ ई० की रात को श्रीशास्त्रीजी ऐसी ही एक साहित्यिक बैठक से लौटे थे। रात्रि का समय, कठोर सर्दी और दुर्बल शरीर! श्रीशास्त्रीजी को सर्दी लग गई। घर आने पर हृदय में भीषण पीड़ा हुई। डॉक्टर बुलाये गये और उपचार भी हुआ, किन्तु २ घण्टे बाद ही वह दुर्भाग्य की घड़ी आ गई। शास्त्रीजी सदा के लिए अपने परिवार और प्रेमीजनों को छोड़कर इस संसार से विदा हो गये। आर्यसमाज का वह दुर्धर्ष, ओजस्वी वक्ता, प्रचारक छिन गया। आज इतने वर्षों के बाद भी उनका कीर्त्ति गौरव हमारे लिए प्रेरणास्रोत बनकर बिलकुल ताजा नया प्रतीत होता है। उनका यश:शरीर ही मात्र हम सबके बीच विद्यमान है। 'कीर्त्तिर्यस्य स जीवति !'

प्रस्तुति : (श्रीमती) ईश्वरी आर्या

- *भारत सरकार का चरम लक्ष्य समता पर आश्रित समाज की स्थापना करना ।*
- *आर्थिक परिस्थितियों के दबाव के बिना प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक दृष्टि से उन्नति करने का अवसर रहेगा ।*
- *उपयुक्त शिक्षा का अवसर दिया जाय तो यह देश बड़े वैज्ञानिक, इंजीनियर और कुछ भी तैयार कर सकता है ।*
- *जब मैं छोटे बच्चों, जवान लड़कों और लड़कियों को भीख माँगते देखता हूँ तो मुझे घृणा होती है ।*
- *जब मैं देखता हूँ कि बच्चों के पास पर्याप्त कपड़ा नहीं है और उन्हें उचित भोजन नहीं दिया गया है तो मुझे दुःख होता है । क्योंकि मैं सोचता हूँ यदि यही हालत बनी रहने दी गई तो इससे कल के भारत के सौन्दर्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा ।*

—जवाहरलाल नेहरू

[शास्त्रीजी की दैनन्दिनी से आकलित]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांगलिक उद्गार : पावन परिणय-वेला पर

स्वागत है शत बार तुम्हारा,
मैं जाऊँ बलिहार।।
जल बिच शतदल तुल्य सरसते,
मघवा दे आशीष बरसते,
क्या लाऊँ उपहार।।
तेरा जीवन स्नेह-मगन हो,
नव-दम्पति का क्लेश-शमन हो
सुखी रहो सुकुमार।।
नित-नव उत्सव तेरे घर में,
सब सुख-सम्पत्ति तेरे कर में
यह अनुपम त्यौहार।।
तेरे यश की उड़े पताका,
उदित रहे पूनम की राका
मंगलमय परिवार।।
स्वागत है शत बार तुम्हारा,
स्वागत है शत बार।।

□ सुखदेव आजाद
१२-०७-४८

दीपे प्रज्ज्वलिते विनश्यति तमः किं दीपमात्रं तमः ?
तेजो यस्य विराजते स बलवान् स्थूलेषु कः प्रत्ययः ?
—वृद्धचाणक्यशतकम् : ११.३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१]

राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक नियुक्त होने पर :

सप्रेम श्रीराधा-स्मरण !
हार्दिक-शुभकामना !

नव पद पौरुष नव कहत,
निदेशक नव-न्याय।
अभिनन्दन अरमान युत,
भाषत मधु हरषाय।।
हे पण्डितवर ! ध्यानवर !
मन चित चीती छाप।।
श्रीरामनारायण शास्त्री जू,
शास्त्रगण गायो आप।
अबै सुन्यो संवाद यह,
सुता सुनावत याहँ।
'हृदय-कष्ट' भींज्यो मधु,
अनल चतुर्दिक धाहँ।।
ग्रहण करहुँ हे ज्ञानवर !
मधुकर चित्त संवाद।
निदेशक पद हित मधु,
शुभ-शुभ सुख आह्लाद।।

□ *आचार्य मधुकरलाल गोस्वामी*

सौजन्यधन्यजनुषः पुरुषाः परेषां दोषानपास्य गुणमेव गवेषयन्ति।
त्यक्त्वा भुजङ्गमविषाणि पटीरगर्भात् सौरभ्यमेव पवनाः परिशीलयन्ति।।

—*सुभाषितम्*

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२]

आज राष्ट्रभाषा-परिषद् के
नये निदेशक जय हो
रामनारायण शास्त्री की
बस कीर्त्ति सदा अक्षय हो
पटना का चिन्तामणिचक की
भूमि आज गर्वित हैं
बहुत दिनों पर पाई तुमने
निज निधियाँ अर्जित है
गई तपस्या की नरवाली,
देव दनुज औ नर की
पतझड़ के ही बाद पत्तियाँ,
मुस्काती तरुवर की
तुम साहित्यिक सेनानी तुम,
सब दिन हो अध्येता
अब्र बन जाओ निज प्रतिभा से,
सबके हृदय-विजेता।

□ *वाल्मीकि मिश्र*

१६-०७-७८

जरा देहं मृत्युः, हरति सकलं जीवितमिदम्।
सखे नान्यत् श्रेयः, जगति विदुषोऽन्यत्र तपसः।

—भर्तृहरि : वैराग्यशतकम्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिजन-कथा : सारस्वत बन्धुओं के संस्मरण

पुण्यश्लोक रामनारायण शास्त्री

❑ *पं० छविनाथ पाण्डेय*

रामनारायण शास्त्री से मेरा परिचय कब हुआ और कैसे हुआ, यह मुझे याद नहीं लेकिन मैं इतना कह सकता हूँ कि बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में तब उनका प्रवेश हुआ जब मैं उनसे पूर्ण परिचित था और मैंने उनकी नियुक्ति पर प्रसन्नता व्यक्त की थी; क्योंकि वे अधीती विद्वान् थे, संस्कृत-साहित्य का उन्होंने अच्छा अध्ययन किया था, वे मननशील और परिश्रमशील थे।

शास्त्रीजी से मेरा परिचय दिनानुदिन बढ़ता गया और घनिष्ठता में परिणत हो गया। शास्त्रीजी मेरा आदर करने लगे और मैं उनसे स्नेह करने लगा। इस सम्बन्ध का मैंने अनेक अवसरों पर लाभ भी उठाया। शास्त्रीजी में सबसे बड़ा गुण यह था कि वे स्वभाव के बड़े ही विनयशील और नम्र थे। जीवन में एक ही बार मैंने उन्हें क्रुद्ध होते और किसी से झगड़ते देखा और वह घटना मुझे आज भी याद है। बात यह है कि शास्त्रीजी की उत्कट इच्छा थी कि बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का एक वार्षिक अधिवेशन मोकामा में हो। मोकामा के निकट शास्त्रीजी का घर था इसलिये ये प्रलोभन स्वाभाविक था। पर सम्मेलन की स्थायी समिति स्वीकृति देने के लिए तैयार नहीं थी, मैं सम्मेलन का अध्यक्ष था। शास्त्रीजी ने अपनी इच्छा मुझसे प्रकट की वे जानते थे कि इस काम में मैं उनकी मदद अवश्य करूँगा; क्योंकि मेरा उनका ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया था कि जब कभी मैं किसी काम का बोझ उनपर लादता था तो वे बड़ी तत्परता और लगन से उसे पूरा करते थे। मैं भी उनके काम को सदा इसी तरह पूरा करने की कोशिश करता था। वे यह भी जानते थे कि मैं चाहूँगा तो सम्मेलन का अधिवेशन मोकामा में होकर ही रहेगा।

मैंने उन्हें सलाह दी कि सम्मेलन की आर्थिक अवस्था अभी पतली है, यदि आप २५००/- रु० सम्मेलन को देने का वचन दें तो अधिवेशन मोकामा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में सम्पन्न करने के लिए मैं स्थायी समिति को राजी कर लूँगा। शास्त्रीजी ने स्थायी समिति में यह बात कह दी और मोकामा में अधिवेशन करने का निर्णय सहज में हो गया। मैंने वादा को मात्र वादा समझा था, लेकिन शास्त्रीजी अपने वचन का पालन करने के लिये तत्पर थे। स्वागत समिति के प्रधानमन्त्री कामेश्वर शर्मा थे। उनका कहना था कि शास्त्रीजी ने वचन दिया था, वे ही उसे पूरा करें, स्वागत-समिति पर इसकी जिम्मेदारी नहीं। यही झगड़ने का कारण था।

शास्त्रीजी की विनयशीलता राष्ट्रभाषा-परिषद् में आदर्शस्वरूप थी। वे कभी किसी से उलझे नहीं। वे परिषद् में आते थे। चुपचाप अपनी कुर्सी पर बैठ जाते थे और अपने काम में लग जाते थे। फिर समय होने पर या उससे पहले भी चुपचाप उठकर चले जाते थे। शास्त्रीजी काम के पाबन्द थे, समय के नहीं। अनुसन्धान विभाग में दुर्लभ ग्रन्थों के संग्रह में उन्होंने सराहनीय काम किया। अनेक उपयोगी और दुर्लभ ग्रन्थों को उन्होंने खोज निकाला। उनमें से कई का सम्पादन भी उन्होंने स्व० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री के साथ किया, जो परिषद् से प्रकाशित है।

शास्त्रीजी पर आर्यसमाज का प्रभाव था। मैं कह सकता हूँ कि आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर उन्हें पूर्ण विश्वास था और आस्था भी। इसका उदाहरण उनका अपना विवाह है। वे बड़े ही कुलीन भूमिहार ब्राह्मण थे, लेकिन अपना विवाह उन्होंने अन्तरजातीय महिला से किया। मेरा परिचय उनकी पत्नी से भी है और स्वभाव से वे बड़ी नम्र और विनीत हैं। असवर्ण विवाह में जैसा प्राय: देखने में आता है कि कुछ दिनों के बाद ही पति-पत्नी में अनबन होने लगती है, लेकिन इसके विपरीत शास्त्रीजी का पारिवारिक जीवन अन्त तक अत्यन्त ही मधुर रहा।

शास्त्रीजी को हिन्दी से प्रगाढ़ प्रेम था। मैं जब-जब सम्मेलन का अध्यक्ष हुआ मैंने शास्त्रीजी को सम्मेलन का प्रचार-मन्त्री बनाया और इस पद की मर्यादा को शास्त्रीजी ने पूरी तरह निभाया। अध्यक्ष के नाते मैंने जब-जब सम्मेलन के प्रचारक का भी काम सौंपा, शास्त्रीजी ने अपनी सुविधा या असुविधा का खयाल नहीं किया और उस काम को पूरा करने के लिए उठ खड़े हुए। हिन्दी के लिए उनके हृदय में जो आग जलती थी उसका उत्कट प्रमाण मुझे उर्दू विरोधी आन्दोलन के समय मिला। इस आन्दोलन में सरकार के खिलाफ मोर्चा लेना था। शास्त्रीजी सरकारी नौकरी में थे, लेकिन उन्होंने परिणाम की लेशमात्र चिन्ता नहीं की, वे जुट गये हिन्दी के समर्थन और उर्दू

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विरोध में। कई सभाओं में उन्होंने खुलकर उर्दू की सरकारी नीति के विरोध में भाषण किये।

सन् १९७८ में शास्त्रीजी राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक बनाए गए। मैं नहीं चाहता था कि यह पद शास्त्रीजी को दिया जाय; क्योंकि अन्य बातों के साथ वे हृदय-रोग से भी पीड़ित थे। कई बार दौरे के शिकार हो चुके थे। राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक को जितना परिश्रम करना पड़ता था, उसे उनका पीड़ित हृदय बर्दाश्त नहीं कर सकता था। इस नियुक्ति को रोकने का मैंने भरसक प्रयास किया। इस सिलसिले में मैंने यहाँ तक कह दिया था कि शास्त्रीजी की इस पद पर नियुक्ति बहुत बड़ी दुर्घटना होगी और हुआ भी वही। शास्त्रीजी की नियुक्ति निदेशक के पद पर ता० १६ जनवरी १९७८ को हुई और ता० २३-१-७८ को सहसा हृदयगति के रुक जाने से उनका देहावसान हो गया!

उस समय मैं बिहार से बहुत दूर उत्तरप्रदेश के अपने पैतृक गाँव में वायु-परिवर्त्तन के लिए चला गया था। मुझे इस बात का खेद और सन्ताप रहा कि अन्तिम समय में अपने उस सुहृद् और शुभचिन्तक को अन्तिम श्रद्धांजलि नहीं दे सका।

परमपिता उनकी आत्मा को सद्गति दें।

●

- *"यदि संघर्ष-शक्ति नष्ट हो जाये, तो जीवन ही समाप्त हो जायेगा। यदि आप में संघर्ष करने की शक्ति है तो किसी न किसी प्रकार जीवित रह सकते हैं।"*

—नेहरू

- *"शिक्षा को सरकारी नौकरी प्राप्त करने का साधन न समझकर क्षमता उत्पन्न करने का साधन समझें। क्षमता के बल पर ही छात्र अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं।"*

—नेहरू

[शास्त्रीजी की दैनन्दिनी से आकलित]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिय शिष्य रामनारायण शास्त्री

□ डॉ० वीरेन्द्र श्रीवास्तव

कालीकट विश्वविद्यालय की अतिथिशाला में अभ्यागत आचार्य (विजिटिंग प्रोफेसर) के रूप में मैं ठहरा हुआ था। ६-२-७८ को डाकिये ने आकर डॉ० बजरंग वर्मा, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् पटना का ३-२-७८ का पत्र दिया। पत्र में लिखा था—'आपके जाने के बाद पं० रामनारायण शास्त्री ने परिषद्-निदेशक का पदभार ग्रहण किया था। कुल एक सप्ताह ही उस पद पर रहे और दिनांक २३ जनवरी की रात को अकस्मात् हृदय की गति रुक जाने के कारण दिवंगत हो गए। उनके निधन से पूरा परिषद्-परिवार मर्माहत है। जीवन कितना क्षणभंगुर है, उनकी अकस्मात् मृत्यु से उसका फिर, गहरा अहसास हो आया। कितना दुःखद है, आप स्वयं अनुभव करेंगे।' इस अप्रत्याशित समाचार को पढ़ते ही मैं स्तब्ध रह गया और दुख-सागर में निमग्न हो गया। दिसम्बर, १९७७ ई० के प्रथम सप्ताह में कालीकट जाने से पूर्व मैं परिषद्-कार्यालय में गया था और मिलने के लिए रामनारायण शास्त्री के बैठने की जगह पर भी पहुँचा था। ये मेरा दुर्भाग्य था कि वे उस समय कहीं बाहर थे। कालीकट से उनके विषय में डॉ० बजरंग वर्मा से पूछा था और उसका उत्तर उपर्युक्त था। मैं अतीत की स्मृतियों में खो गया और मेरी आँखों के सामने बालक रामनारायण से प्रबुद्ध युवक रामनारायण के अनेक चित्र एक के बाद एक करके घूम गए। यह भाग्य की कितनी बड़ी विडम्बना थी कि अपने अथक अध्यवसाय और स्वाध्याय के बल पर जीवन में संघर्ष करके अपने लक्ष्य के उच्चतम सोपान पर जब वे आरूढ़ हुए, परिषद् के निदेशक बने, विधाता ने इस लोक से उन्हें उठा लिया। मुझे इसका सदा अफसोस रहेगा कि मैं अपने प्रिय शिष्य को न तो उसकी उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दे पाया और न उसकी अन्तिम विदाई पर उपस्थित होकर शोक प्रकट कर पाया। अपने कुछ संस्मरण ही निवेदन कर सन्तोष की साँस ले रहा हूँ।

गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथधाम प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षा पद्धतियों के समन्वय के आधार पर विद्यार्थियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य के आदर्श पर विद्यार्थियों को अपने आश्रम (छात्रावास) में दस वर्ष तक निरन्तर रहकर प्राचीन संस्कृति और संस्कृत वाङ्मय का, अँगरेजी और आधुनिक विषयों का हिन्दी के माध्यम से अध्ययन करना पड़ता है। योग्य कर्त्तव्यपरायण शिक्षकों का ये दायित्व रहता है कि वे छात्रों की बराबर देख-रेख करें, उनको न केवल पुस्तकीय शिक्षा ही दें, अपितु उनका चरित्र-निर्माण भी सहज रूप में होने दें। वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीयता और नैतिकता के वातावरण में यह संस्था पनपती रही है। सन् १९३६ से १९४३ तक इस संस्था के आचार्य होने का मुझे सौभाग्य मिला था। वहाँ के मेरे अनेक शिष्य विभिन्न क्षेत्रों में जनता की सेवा करते रहे हैं। रामनारायण शास्त्री भी उनमें से एक यशस्वी शिष्य रहे हैं। अपने प्रवेशकाल से ही उन्होंने अपने गुरुओं का ध्यान अपनी ओर कुछ विशिष्टताओं से आकृष्ट कर लिया था। पढ़ने में रुचि और सेवा-कार्य में दक्षता विशेष उल्लेखनीय है। पाणिनीय व्याकरण से लेकर संस्कृत के अनेक महाकाव्यों तक का गम्भीर अध्ययन, वैदिक-साहित्य के प्रमुख अंशों का पारायण और तत्सम्बन्धी विषयों का हिन्दी और संस्कृत में लेखन उनको सदा प्रिय रहा। उनकी भाषण-शक्ति भी उत्तरोत्तर वृद्धि करती गई। वे न केवल हिन्दी में, अपितु संस्कृत में भी धारावाहिक ओजस्वी वक्तृता के लिये प्रसिद्धि पाने लगे। गुरुकुल के वार्षिकोत्सवों पर आयोजित संस्कृत सम्मेलनों में अपनी वक्तृता से विद्वानों को मुग्ध कर पारितोषिक के पात्र बनते रहे।

वार्षिकोत्सव या अन्य समारोहों में उपस्थित अतिथियों की सेवा-शुश्रूषा करना, देवघर (वैद्यनाथधाम) शहर में आयोजित आर्यसमाज की शोभायात्राओं में अग्रणी रहना और आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सालय में रोगियों की परिचर्या कर लेना ,नके व्यक्तित्व के विकास के अपरिहार्य अंग थे। अपने परिश्रम से उन्होंने बिहार संस्कृत एसोसियेशन की शास्त्री और साहित्याचार्य परीक्षा पास की। अपनी संस्था से (विद्यारत्न) उपाधि प्राप्त की। उनके शौर्य का अनायास प्रदर्शन एक बार हुआ जबकि एक लकड़बग्घा पास के जंगल से निकल आया। उन्होंने कुछ छात्रों को साथ लेकर उसका लाठियों और भालों से पीछा किया और मारकर आसपास की सन्त्रस्त ग्रामवासियों की प्रशंसा प्राप्त की।

अगस्त, १९४२ ई० का स्वतन्त्रता-आन्दोलन अब भी आँखों के आगे चलचित्र की तरह घूम जाता है। १० अगस्त को पटना में घटित दृश्यों का साक्षी बनकर और कदाचित् अपनी एम० ए० परीक्षा समाप्त कर मैं रेल से वैद्यनाथधाम पहुँचा। यह उन दिनों आखिरी ट्रेन थी जो उधर गई। उसके बाद तो 'भारत छोड़ो' के प्रबल उद्घोष ने जन-मानस को आक्रान्त कर दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेता जेलों में बन्द थे। ब्रिटिश-शासन का दमनचक्र तेजी पर था। पुलिस और सेना देशसेवकों को पकड़ने, यातना देने और उद्दण्ड भीड़ पर गोली चला देने में हिचक नहीं रही थी। ऐसी स्थिति में भी गुरुकुल वैद्यनाथधाम एक ऐसी संस्था रही, जिसके मुख्य-द्वार के ऊपर तिरंगा बराबर लहराता रहा। गुरुकुल के छात्र दिन भर आश्रम में रहते और सायंकाल का झुटपुटा अँधेरा होते ही तीन-चार झुण्डों में अपने बनाए हुए कार्यक्रम को पूरा करने निकल जाते। रामनारायण, रामदेव और रामस्वरूप ये तीन छात्र खास तौर से याद आ रहे हैं। ये 'ग्रुप-लीडर' थे। जसीडीह से मधुपुर तक की मेन लाइन में से कहीं भी पटरी उखाड़ना इनका काम था। ये कई बार तो पेट्रोलिंग-पार्टी, जिसमें जाल से अच्छी तरह घिरे इंजन पर अपनी मशीनगन और बन्दूकों से निशाना साधे सेना के जवान चढ़े रहते थे, की गोलियों का निशाना होते-होते बचे। इनको अपने सचेत करनेवाले साथियों से इशारा मिल जाता और ये तुरत पटरी छोड़कर पास के खेतों में धान रोपने में लग जाते। गड़े पौधों को उखाड़कर फिर से उन्हें रोपने का दिखावा करते हुए ये कौपीनधारी अर्धनग्न छात्र सचमुच के आदिवासी बन जाते। सबेरे सात बजते-बजते चुपके से आश्रम में घुस जाते। दिन में समय मिलने पर देश में हो रही उथलं-पुथल की क्रान्तिकारियों की अपनी ही मशीनरी से मिली सूचनाओं को साइक्लोस्टाइल या कार्बन प्रतियाँ बनाकर आसपास के गाँवों और देवघर के परिसर में पहुँचा देते। पढ़ने का तो एक आडम्बर मात्र था। शाम को नियमित रूप से खेल के मैदान में फुटबाल खेलते। प्रतिदिन का यही एक तरहं का प्रोग्राम था। अधिकारी रेलवे लाइन के उखड़ने से तो हैरान थे ही, डाकखानों को जलाने और रास्ते में डाकथैलों को लूटे जाने से और परेशान हो गए। एक दिन गुरुकुल वैद्यनाथ डाकखाने का थैला भी रास्ते में लूट लिया गया। देवघर विद्यापीठ और गुरुकुल वैद्यनाथ इस प्रकार की गतिविधियों के केन्द्र बने हुए थे। शहर में होने से विद्यापीठ पर तो वे अधिकारी बहुत-कुछ काबू पा गये, पर गुरुकुल वश में न आ सका। उन दिनों में दिन में हवाई जहाज की भी मदद जाँच-पड़ताल के लिए उस इलाके में ली जा रही थी। अनेक बार इन्होंने गुरुकुल पर से उड़ानें भरीं और तिरंगे को फहराता देखकर नीचे टोह लेने को झुके भी, परन्तु विद्यार्थियों को फुटबाल खेलता देखकर या विद्यालय-कार्य में व्यस्त देखकर निर्णय नहीं कर पाते थे कि माजरा क्या है और फिर आगे मधुपुर की ओर ऊँचा उठ जाते। रात को कई बार सेना के ट्रकों की घर-घर करती आवाज पास के गाँव तक पहुँचती सुनाई देती और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका सर्चलाइट भी पड़ जाता, परन्तु बरसात में कच्ची सड़क के बिगड़े रहने से और कुछ आतंक होने से भी ट्रक गुरुकुल तक नहीं आ पाए। ब्रिटिश अधिकारियों को निश्चय हो गया था कि गुरुकुल में पढ़ाई-लिखाई केवल धोखा है। ग्रुप-लीडरों के नाम उन तक किसी-न-किसी स्रोत से पहुँच भी गये।

एक रोज सहसा दिन में दो बजे सूचना मिली कि पुलिस की गाड़ियाँ गुरुकुल की ओर बढ़ रही हैं। विद्यार्थियों को आदेश मिल गया कि अपने आश्रम में यथास्थान चले जायें और ग्रुप-लीडर तथा कुछ अन्य बाहर से आए साथी भी आश्रम के किनारे के कमरे में दरवाजे के पास मौका निकलते ही भागने के लिये तैयार रहें। दो गाड़ियाँ मुख्य द्वार पर आकर रुकीं। एक मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारी के साथ राइफल लिये कई सिपाही भी उतरे। मैं थोड़ी दूर पर परिस्थिति का जायजा ले रहा था। मजिस्ट्रेट ने आकर कहा कि वे बाहर से आये कुछ उपद्रवियों को खोजने आए हैं। कुछ सिपाही द्वार पर लगे तिरंगे की ओर इशारा करके उसे उतारने के जोश में आगे भी बढ़े। छात्र अपनी जगहों को छोड़कर इसे न होने देने के लिये उतावले हो चले। मैंने मजिस्ट्रेट को स्पष्ट कह दिया कि यदि झण्डे पर हाथ लगाया, तो छात्र क्या करेंगे, इसका उत्तरदायित्व मेरा नहीं। वह स्थिति को बिगड़ने नहीं देना चाहता था। सिपाहियों को रोक दिया गया और मुझसे नम्रतापूर्वक कहा गया कि छात्रों को आश्रम में जाने के लिए कहें। कहने पर छात्र मान गए। अधिकारी मेरे साथ एक-एक कमरे का निरीक्षण करने लगे। इस बीच किनारे के द्वार से निकलकर ग्रुप-लीडर और उनके साथी भाग खड़े हुए। थोड़ी दूर पर जंगली पेड़ों से घिरा एक नाला था, उसी में उतरकर वे छिप गए। दुर्भाग्य यही रहा कि एक और लारी जो बिछड़ गई थी, आ निकली। उसके सिपाहियों ने भागते हुए छात्रों को देख लिया और लारी रोककर उन्हें पकड़ने को दौड़ पड़े। यह नहीं कि वे बड़े साहसी थे और डरते नहीं थे। डर तो उनमें भी समाया था कि कहीं नाले के मोड़ों में मार न खा जायें या शायद आन्तरिक देशभक्ति से झिझक भी रहे हों। जो कुछ हो, वे ज्यादा अन्दर नहीं घुसे, परन्तु रामनारायण अपने साथियों को छिपने की जगह बताता-बताता उनकी गिरफ्त में आ गया। उसे तथा साथियों को लेकर वे बड़ी खुशी से मजिस्ट्रेट के सामने आ खड़े हुए। इसे मजिस्ट्रेट ने अपनी यात्रा की सफलता समझी और पुलिस गाड़ी में गिरफ्तार किये व्यक्तियों को बैठाकर चलता बना। 'रामनारायण जिन्दाबाद!' के नारे उसका पीछा करते रहे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवघर की छोटी-सी विचाराधीन अपराधियों की जेल इस तरह की धर-पकड़ से पूरी तरह भर गई। देशभक्ति के तराने उठाना, जिन्दाबाद के नारे लगाना और ऊपर छत पर चढ़कर बाहर के लोगों को उकसाना उन लोगों का काम हो गया था। गुरुकुल के अन्य ग्रुप-लीडर भी देवघर में पकड़े गये और रामनारायण से जा मिले। कुछ दिनों के बाद तंग आकर शासकों ने उन सबको दुमका जेल भेज दिया। कुछ महीनों तक सजा काटकर वे रिहा हो गये। वे जेल में प्रसन्न रहे और अपने सदाचरण के लिये जेल-अधिकारियों के प्रशंसा के पात्र बने।

सन् १९४३ ई० में मैं विश्वविद्यालयीय सेवा में प्रविष्ट हो गया। श्रीरामनारायण अपना कोर्स पूरा करके और उपाधि प्राप्त करके सेवा-कार्य के अन्वेषण में लग गये। किसी सरकारी नौकरी का पाना आसान नहीं था। वे आर्य-समाज के अच्छे उपदेशक और प्रचारक सिद्ध हुए। आर्य-समाजें अपने उत्सवों में उन्हें आमन्त्रित करने में होड़ करने लगीं एवं उनके भाषणों पर अच्छी दक्षिणा बिदाई में देने लगीं। कभी-कभी मुझसे भेंट हो जाती। मुझे यह आकाशवृत्ति पसन्द न थी। सौभाग्य से मेरे मित्र स्व० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक बने। वे रामनारायण शास्त्री को पहले से भी जानते थे। मेरे अनुरोध पर परिषद् में अनुसन्धान-कार्य में सहायक के रूप में उन्हें नियुक्ति देकर डॉ० ब्रह्मचारी ने न केवल उनका कल्याण किया, अपितु जनता की सेवा का मार्ग भी उन्मुक्त कर दिया। किस परिश्रम से बिहार में लुप्त होती पुरानी पोथियों का उद्धार करके शास्त्रीजी ने साहित्य-जगत् की सेवा की और अपनी योग्यता से अन्त में परिषद् के निदेशक बने यह सर्वविदित है।

राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत, समाज-सेवा में तल्लीन, परकष्ट-निवारण में संलग्न, मृदु हास्य में संघर्ष की छाया समेटे, खादी का धोती-कुरता पहने प्रणाम करते हुए रामनारायण शास्त्री कैसे विस्मृत हो सकते हैं!

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो अधूरी इच्छाएँ : एक संस्मरण

□ महाकवि पं० केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'

स्वर्गीय पं० रामनारायण शास्त्रीजी से मेरा प्रथम परिचय कब हुआ था, यह ठीक से मुझे स्मरण नहीं है। लेकिन जब-जब उन्हें देखता, उनके हँसते हुए चेहरे को पढ़कर मुझे ऐसा लगता कि शास्त्रीजी से मेरा बहुत पुराना परिचय है। शायद ऐसा इसलिये लगता कि शास्त्रीजी के स्वभाव की यह विशेषता थी कि उनका अपनापन, अपना बने रहने का भाव दूसरों के व्यक्तित्व को अपने में इस प्रकार समेट लेता, अपने में इस प्रकार समाविष्ट कर लेता कि वहाँ छानबीन करने पर अपनापन के सिवाय कुछ नहीं मिलता। मुझे यह आज तक मालूम नहीं कि शास्त्रीजी पटना में कब से निवास करने लगे थे। मैं सन् १९१५, १९१६ के लगभग पटना आया। तब मैं स्कूल का विद्यार्थी था और पटना के स्कूल में दाखिला के लिये पिताजी के साथ आया। उन दिनों भी शास्त्रीजी को मैंने पटना शहर में कहीं नहीं देखा था।

कई वर्षों बाद मैं नगर के उन संस्थानों में आने-जाने लगा जहाँ वाचनालय होता, पढ़ने को पत्र-पत्रिकाएँ मिलतीं और सुनने को अच्छे-अच्छे भाषण मिलते, विद्वानों के दर्शन होते। जहाँ पिताजी रहा करते थे वहाँ से आर्य-समाज पुस्तकालय बहुत ही निकट था। नजदीक तो गुलाबबाग भी था लेकिन वहाँ कोई वाचनालय नहीं था, हाँ वहाँ बड़े-बड़े नेताओं के दर्शन हो जाते और उनके भाषण भी सुनने को मिलते। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, जगद् गुरु शंकराचार्य, पं० मदनमोहन मालवीय जैसे देश के जाने-माने नेताओं और विद्वानों के यहाँ दर्शन हुए थे। गुलाबबाग आजकल पटना शहर का एक मशहूर बाजार है।

आर्यसमाज-पुस्तकालय की ओर मैं सर्वाधिक आकृष्ट हुआ। उन दिनों हिन्दी के साप्ताहिकों में 'मतवाला' और मासिक पत्रिकाओं में 'माधुरी' की बड़ी चर्चा थी। हमने हिन्दी में तुकबन्दी करना शुरू कर दिया था और मतवाला तथा माधुरी में छपने भी लगा था। उन दिनों उनके दर्शन आर्यसमाज पुस्तकालय में हो जाते थे। यों तो हिन्दी के उन सारे प्रकाशनों (मासिक,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
त्रैमासिक, साप्ताहिक, पाक्षिक) की प्रतियाँ सम्पादकों की तथा प्रकाशकों की कृपा से हमें मिल जाया करती थीं; क्योंकि उनमें हम दोनों भाई (कमलजी प्रभातजी) छपा करते थे।

आर्यसमाज आरम्भ से ही हिन्दी का प्रबल समर्थक रहा है। समाज का आशीर्वाद लेकर प्रकाशित होने वाले कुछ पत्र काफी प्रसिद्ध थे जैसे आर्यमित्र, सम्पादक डॉ० हरिशंकर शर्मा, कविश्रेष्ठ नाथूराम शंकर शर्माजी के सपुत्र। भारत की अत्यन्त लोकप्रिय संस्था होने के कारण आर्यसमाज के प्रति उन दिनों जनता के हृदय में प्रबल आकर्षण था। इसलिए संध्या समय हम युवक विद्यार्थी तथा अन्य अनेक लोग बूढ़े, जवान आर्यसमाज के पुस्तकालय में पहुँच जाते थे और पुस्तकालय अध्यक्ष की कृपा से नये-नये अखबारों के दर्शन होते। मेरे चहेते सभी हिन्दी पत्र मुझे देखने को मिल जाते। इसलिए आर्यसमाज पुस्तकालय में मैं नियमपूर्वक जाने लगा था उन दिनों समाज के प्रांगण में पं० धुरेन्द्र शास्त्री, पं० बजरंग शर्मा आदि कई विख्यात जन सेवक आया करते थे। पं० धुरेन्द्र शास्त्रीजी (स्वामी ध्रुवानन्दजी) समाज के प्रसिद्ध नेता भी थे। शर्माजी आगे चलकर 'प्रान्तीय हिन्दू महासभा' के अध्यक्ष भी हो गये थे। इस माहौल में और इन व्यक्तियों के बीच भी मुझे पं० रामनारायणजी शास्त्री का दर्शन नहीं हुआ।

उन दिनों शायद मैं बी० ए० का विद्यार्थी था। बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद मैं सरकारी कर्मचारी बन गया। सरकारी सेवा में कई वर्ष बिता लेने के बाद मैंने एम० ए० और साहित्याचार्य की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। यह सम्भवतः सन् १९५० ई० की बात है। किसी प्रसंग में मुझे अपनी कुछ पुरानी कविताओं की प्रकाशन तिथि जानने की जरूरत पड़ी। अब तक पटना में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् की स्थापना हो चुकी थी। आचार्य शिवपूजन सहायजी परिषद् के निदेशक थे। मेरे सहृदय मित्र डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री भी बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से सम्बद्ध थे। बिहार सरकार के शिक्षा विभाग ने मुझे भी परिषद् की सामान्य समिति का सदस्य निर्वाचित कर लिया था। उन दिनों मेरा हार्डिंग रोड पर स्थित भवन नं० ३ में निवास था। वहाँ से बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के कार्यालय में कोई काम लेकर जाना अत्यन्त ही कष्ट साधक था। इस बीच बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के अन्य कौन हिन्दी साहित्यकार नियुक्त हुए, यह मुझे मालूम नहीं। सरकारी ड्यूटी के सम्बन्ध में मुझे प्रायः यात्रा पर जाना पड़ता था। बाध्यतः मुझे कार खरीद लेनी पड़ी। अपना वाहन हो जाने से शहर में भी यहाँ वहाँ जाने की सुविधा प्राप्त हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के कार्यालय में मैं आने जाने लगा। वहाँ परिचित अपरिचित अनेक मित्रों से भेंट हो जाती। कभी-कभी किसी मनोरंजक साहित्यिक परिचर्चा में भी भाग लेना पड़ता। इसी सिलसिले में मुझे आर्यसमाज पुस्तकालय की याद आई। वहाँ के पुस्तकालय में जाकर काम करने में किसी प्रकार की असुविधा न हो इसलिये भाई धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री ने शायद श्रीरामनारायण शास्त्रीजी से परिचय कराया। यहीं पहली बार शास्त्रीजी से मेरा परिचय हुआ। मैंने देखा स्व० शास्त्रीजी मुझे आर्यसमाज पुस्तकालय तक ले जाने में कितने उत्सुक थे। इसके बाद जब-जब परिषद् कार्यालय में आता तो शास्त्रीजी का दर्शन हो जाता और साहित्यिक परिचर्चाओं में उनसे विचार विमर्श का शुभ अवसर मिलता।

किसी साहित्यिक परिचर्चा में एक बार भागलपुर के प्रसिद्ध कवि भाई रामेश्वर झा द्विजेन्द्र ने प्रश्न उठा दिया था कि हिन्दी के किस कवि की कविता पुस्तक अँगरेजी सरकार ने जब्त की है। परिचर्चा में भाग लेने वाले कवियों, कहानीकारों और समीक्षा के नाम पर अनरगल बातें करनेवाले कुछ अधकचरे प्रोफेसर (उन्हें लेक्चरर ही कहना अच्छा होगा) भी उपस्थित थे लेकिन द्विजेन्द्रजी का प्रश्न ज्यों का त्यों बना रहा। कुछ साहसिक लोगों ने हरिऔधजी, निरालाजी और नवीनजी का नाम लिया लेकिन ये सब पतंगबाजी के नमूने थे। मैंने द्विजेन्द्रजी की ओर देखकर कुछ कहने की इजाजत चाही। द्विजेन्द्रजी का इशारा पाकर मैंने निवेदन किया था कि परिचर्चा के समय तक राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी की भारत-भारती ही एक मात्र ऐसी काव्य पुस्तक थी जिसे अँगरेजी सरकार द्वारा जब्त किये जाने का गौरव प्राप्त हो चुका था।

मेरे आसन ग्रहण कर लेने पर स्व० रामनारायण शास्त्रीजी ने भी एक प्रश्न उठाया। वह प्रश्न था—'क्या आदरणीय प्रभातजी अपनी काव्य-पुस्तक ज्वाला के विषय में कुछ कहने की कृपा करेंगे' मुझे आश्चर्य हुआ यह व्यक्ति जिससे मेरा परिचय अभी उसी दिन हुआ था, ज्वाला के विषय में कैसे कुछ जान गया। स्व० शास्त्रीजी मोकामा के रहनेवाले थे। स्व० दिनकरजी भी वहीं के (सिमरिया) रहने वाले थे। वहाँ के एक और व्यक्ति आगे निकल रहे थे। उनका नाम है श्रीकामेश्वर शर्मा कमल। उन दिनों श्रीकामेश्वर शर्मा जात-पाँत के पचरे में नहीं पड़े थे। मेरी कविताओं के प्रबल प्रशंसक थे। 'बिहार की शैली' शीर्षक देकर साप्ताहिक 'मतवाला' और मासिक पत्रिका 'गंगा' में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने कई लेख लिखे थे। वे मेरी उन कविताओं से भी परिचित थे, जो 'युवक' में प्रकाशित हो रही थीं, जिसे श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी और श्रीगंगाशरण सिंहजी ने सम्पादित किया था। मेरी इन कविताओं का एक संग्रह 'ज्वाला' मुद्रणार्थ प्रेस को दे दिया गया था। बिहार सरकार के गुप्तचर विभाग को इसकी सूचना मिल गई थी। उस पर अँगरेजी सरकार इन खौफनाक कविताओं को फैलने नहीं देना चाहती थी। इसलिए आदेश जारी किया कि 'ज्वाला' की प्रतियाँ जिस रूप में मिलें, प्रेस में ही पकड़ लिये जायँ।

गुप्तचर-विभाग और जिला पुलिस ने तत्परता से काम किया। फलस्वरूप 'ज्वाला' की सारी प्रतियाँ प्रेस में ही जब्त कर ली गईं। मुद्रक महोदय ने बड़ी सावधानी से ज्वाला की पाण्डुलिपि, 'प्रताप' के प्रतापी कवि नवीन की भी लिखित भूमिका प्रेस से हटा दी थीं। इसकी एक कहानी है जिसकी चर्चा 'ज्वाला' के नवीन संस्करण में श्रीगंगाशरण सिंह ने स्वयं की है। श्रीकामेश्वर शर्मा कमल इन घटनाओं से अवगत थे। उन्हीं से स्व० शास्त्रीजी ने वह कहानी सुनी होगी। उन दिनों ज्वाला की कविताओं की बड़ी चर्चा थी। चूँकि श्रीरामेश्वर साहब द्विजेन्द्र भी मेरे साथ छपने लगे थे। इसलिए ऐसी कल्पना असंगत न मानी जायेगी कि वे जान चुके थे अँगरेजी सरकार ने उसकी प्रतियाँ जब्त करा ली हैं। अस्तु यह तो बहुत पुरानी घटना है पर मेरे लिये सदा नवीन, मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि स्व० शास्त्रीजी से मेरी निकटता कब बढ़ी? परिषद् के पुस्तकालय में आचार्य शिवपूजन सहायजी हिन्दी की पुरानी पत्रिका का अच्छा संग्रह कर चुके थे। आर्यसमाज पुस्तकालय में भी ऐसा ही संग्रह था। उस पुस्तकालय में मैं सन् १९२४-२५ ई० से जाने लगा था और वहाँ एकत्र सामग्री के विषय में मुझे जानकारी थी। राष्ट्रभाषा-परिषद् में स्व० शास्त्रीजी से परिचित हो जाने पर एक दिन जब मैंने आर्यसमाज-पुस्तकालय में बैठकर अपनी पुरानी कविताओं की प्रकाशन तिथि खोजने की बात चलाई तो मैंने देखा कि मुझे हर तरह की सुविधा देने दिलाने के लिए शास्त्रीजी कितने विह्वल हो गये। नियत तारीख को वे मेरे पहुँचने के पहले ही आर्यसमाज पुस्तकालय में पहुँच चुके थे और पुरानी पत्र-पत्रिकाओं के बण्डल निकलवा रहे थे। ऊपर के हॉल में मेरे बैठने की व्यवस्था भी करवा दी थी। उस दिन तथा उसके बाद कई बार जब शास्त्रीजी से मेरी भेंट हुई। मैंने अनुभव किया कि मेरे जैसे वयोवृद्ध साहित्यकार से उनकी भेंट हो जाती, पर शास्त्रीजी स्वयं साकार साहित्य हो जाया करते, और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनीषी साहित्यकारों में साहित्य के प्रति जो सेवा का भाव अकुलाता रहता है, वही भाव शास्त्रीजी की आँखों में उनके हृदय में और उनकी वाणी में अकुलाने लगता। मुझे एक घटना स्पष्ट याद है कि पिछले जाड़े की बात है मुझे राँची की यात्रा करनी थी। उसके दो-तीन-दिन पहले मैं राष्ट्रभाषा-परिषद् चला गया। परिषद् के निदेशक का काम शास्त्रीजी सम्भाले थे, सरकार ने यह व्यवस्था कर दी थी। सरकारी विज्ञप्ति भी इस सम्बन्ध में निकल चुकी थी। लेकिन शास्त्रीजी ने कार्यालय प्रभार ग्रहण नहीं किया था, उस दिन मुझे परिषद् के कार्यालय में देखकर शास्त्रीजी बड़े चिन्तित हुए। निदेशक का कमरा बन्द था। उसमें ताला लटका हुआ था। शास्त्रीजी कल निदेशक का कक्ष खोलवाकर मेरे बैठने की व्यवस्था करवाना चाहते थे। उनकी परेशानी को देखकर किसी अधीनस्थ कर्मचारी ने सूचना दी कि निदेशक के कक्ष की चाभी अभी उस दिन तक भूतपूर्व निदेशक ने लौटाई नहीं थी। मेरे बार-बार कहने पर भी शास्त्रीजी ने मुझे कहीं इधर-उधर बैठने नहीं दिया न उनके चेहरे से उद्विग्रता की छाया मिटी। अस्थमा से पीड़ित मेरा शरीर, यह चाहता था कि मैं अतिशीघ्र कहीं भी बैठ जाऊँ। इसी समय मैंने देखा कि परिषद् के एक अधीनस्थ कर्मचारी वहाँ आये और उनके हाथ में बड़े तौलिया जैसी कपड़े लपेटी हुई कोई चीज थी। उन्होंने वह बण्डल शास्त्रीजी के हवाले कर दिया। शास्त्रीजी फिर मेरे पास आये और बड़े ही प्रेम भाव से उस कक्ष में ले गये जहाँ मुझे ऐसा लगा कि उन्होंने मेरे बैठने की व्यवस्था कर दी थी। कमरे में पहुँचने पर ज्यों ही मैंने बैठना चाहा, शास्त्रीजी ने रोक लिया उन्होंने तौलिया खोलकर एक ताजे फूलों की मोटी-सी माला निकाली और मेरे गले में डाल दिया। मेरे बार-बार मना करने पर भी शास्त्रीजी यह सब करते रहे, फिर एक बार मुझे उस दृष्टि से निहारा जिस दृष्टि से बेटा अपने बाप को निहारता है। बड़े प्यार और श्रद्धा और कुछ जल के कण उनकी आँखों में भरे हुए थे। मैं चाहता था कि शास्त्रीजी निदेशक कुर्सी पर मेरे सामने ही बैठें। लेकिन उस कमरे के ताले की चाभी ही नहीं थी। इसलिये निदेशक के रूप में शास्त्रीजी को कुर्सी पर अधिष्ठित मैं देख न सका। श्रीदामोदर मिश्र कुछ दूर तक मुझे पहुँचा कर परिषद् लौट गये। सारी बातों पर विचार करते हुए इलावर्त लौट आया। ठीक तीसरे या चौथे दिन मैं राँची की यात्रा पर निकला। मेरी पत्नी मेरे साथ थी। राँची में हम रेडियो स्टेशन के समीप अपने एक मित्र के साथ ठहरे थे। रेडियो स्टेशन के सूचना आफिसर श्रीमुरारीलालजी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राय: हम दोनों से मिलने आ जाया करते थे। एक दिन सन्ध्या समय ज्यों ही हम लोग टहल कर लौटे त्यों ही पास ही पड़े हुए टेलीफोन पर मेरी पुकार हुई। पुकारने वाले व्यक्ति श्रीमुरारीलालजी थे। टेलीफोन पर सम्पर्क स्थापित करने पर मुरारीलालजी ने आँसू भरे आवाज में सूचना दी कि श्रीरामनारायणजी शास्त्री चल बसे। यह सम्भवत: २४ जनवरी १९७८ ई० की बात है। मैं उच्च रक्तचाप से पीड़ित रहता हूँ। इसलिए कोई ऐसा सम्वाद या समाचार जिसका प्रतिकूल असर हो मुझ तक पहुँचने नहीं दिया जाता है। लेकिन टेलीफोन पर मैंने ही मुरारीलालजी से बात-चीत की थी और शास्त्रीजी का दुखद समाचार मैंने ही सुना था। मिनटों तक मेरी पत्नी मेरे पास में खड़ी मुझे ताकती रही। मेरी जब रुलाई आँखों को देखकर और टेलीफोन पर मुरारीलालजी की आवाज को सुन कर उन्होंने सब कुछ समझ लिया था। कमलाजी कन्धे से मुझे सँभाल कर वहीं खड़ी रहीं और अपने उद्‌गार को मैं मुरारीलालजी से लिखवाता रहा। मुझे आज भी बड़ा दु:ख है कि मैं स्व० शास्त्रीजी को बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक कक्ष में निदेशक की कुर्सी पर आसीन न देख सका। बाद में मुझे बतलाया गया कि शास्त्रीजी न मालूम क्यों मुझे माला पहनाकर निदेशक के रूप में मेरा आशीर्वाद लेना चाहते थे। उनकी यह इच्छा पूरी न हो सकी। मैं उन्हें निदेशक की कुर्सी पर देखना चाहता था। मेरी भी इच्छा पूरी न हो सकी।

●

- *वर्ण भेद नीति–"दक्षिण अफ्रीका वर्ण भेद नीति भारत की ज्वलन्त समस्या है और बहुत बड़े विस्फोट की आशंका है। विश्व के सभी श्वेतेतर उक्त नीति का विरोध करेंगे।"*

—श्रीमावलंकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० रामनारायण शास्त्री : नियति का क्रूर परिहास

❒ *पारसनाथ सिंह*

पण्डित रामनारायण शास्त्री का व्यक्तित्व बड़ा मोहक था। पराये को अपना बना लेने की उनमें नैसर्गिक कला थी। हमेशा प्रसन्नचित्त दिखाई पड़ते थे। हास्य-विनोद भी उनमें कम न था। किसी काम में उनका सहयोग स्वाभाविक होता था। उनके मित्रों की संख्या भी बहुत थी। मित्र के संकट में सद्भाव के साथ सहयोग करने को तत्पर दिखाई पड़ते थे। बड़ा ही लुभावना व्यक्तित्व था उनका।

शास्त्रीजी से प्रथम परिचय बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भवन में हुआ था। उस समय बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् कार्यालय उसी भवन में था। आचार्य शिवपूजन सहाय उन दिनों परिषद् के प्राण और निदेशक थे। जब कभी काशी से पटना आता, आचार्यजी के दर्शनार्थ सम्मेलन-भवन अवश्य जाता। वे बड़े प्रेम से मगही पान मँगाकर खिलाते थे और अपने सहयोगियों से परिचय कराते थे। धीरे-धीरे परिषद्-परिवार के सदस्यों से मेरा भी परिचय बढ़ता गया था। परिषद् से इतनी अधिक आत्मीयता हो गयी कि पटना आने पर परिषद्-परिवार के सदस्यों से मिले बिना में काशी लौटता नहीं था।

उन दिनों जर्मन विद्वान् रिचर्ड पिशल के प्राकृत व्याकरण का हिन्दी अनुवाद ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशी में मुद्रित हो रहा था। डाक्टर हेमचन्द्र जोशी ने जर्मन से उस पुस्तक का रूपान्तर हिन्दी में किया था। आचार्य शिवपूजनजी चाहते थे कि उस पुस्तक का प्रकाशन शीघ्रातिशीघ्र हो जाय। उनकी इच्छा के विपरीत प्रगति बहुत धीमी थी। शिवपूजनजी ने इस काम में सहयोग करने का 'अनुरोध' किया। 'अनुरोध' इसलिए कह रहा हूँ कि शिवजी इतने महान् थे कि अपने से छोटे से भी अनुरोध ही करते थे। मैंने भार उठा लिया।

उसी पुस्तक के विषय में तत्कालीन प्रकाशनाधिकारी श्रीअनूपलाल मण्डल से बातचीत कर रहा था। शिवजी भी वहीं थे। वहीं पण्डित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनारायण शास्त्री के प्रथम दर्शन हुए। उनका चेहरा जाना-पहचाना लगा किन्तु बातचीत का पहला मौका मिला। तब से शास्त्रीजी के निकट से निकटतम तक पहुँच गया। परिषद् में समवयस्कों की जो परिहास-गोष्ठी, चायपान-गोष्ठी होती, उसमें शास्त्रीजी भी रहते थे। उनकी जानकारी इतनी ज्यादा थी कि प्रसंग आने पर किसी व्यक्ति विशेष के पूरे खानदान का जीता-जागता चित्र खींच देते थे।

शास्त्रीजी में ऐसे कई अच्छे गुण थे जिनसे व्यक्ति अपने को जीवन और समाज में प्रतिष्ठित कर सकता था। ऐसे व्यक्ति के लिए सिफारिश की जरूरत नहीं होती। वे अपने को खींचकर आगे प्रस्तुत करनेवाले व्यक्ति थे। किसी को अपना हमदर्द बना लेना उनके लिए जितना आसान था दूसरों के लिए उतना कठिन होता। साहित्यिक और सामाजिक क्षेत्रों में उनका निडर प्रवेश था। आर्यसमाज के तो वे नेता ही थे। केवल नेता ही नहीं थे, आर्यसमाज में उनकी लोकप्रियता किसी बड़े आर्यसमाजी नेता से कम नहीं थी।

दिल्ली में शालवाले और प्रकाशवीर शास्त्री से जब कभी बिहार की बातें होती थीं, शास्त्रीजी का नाम अवश्य आ जाता था। उनकी कर्मठता और अदम्य उत्साह की लोग सराहना करते थे। कभी-कभी यह समझ पाना मेरे लिए कठिन होता था कि शास्त्रीजी परिषद्-परिवार के सक्रिय सम्मानित सदस्य हैं कि आर्यसमाज के। जहाँ भी जाते, तुरन्त अपने लिये स्थान बना लेते, यह उनकी खूबी थी। घनिष्ठता बढ़ने पर पूरे परिवार को अपना परिवार बना लेने की क्षमता उन्हीं में देखी।

परिषद् कार्यालय में अनेक अवसरों पर न जाने कितनी बातें हुई होंगी, किन्तु मेरे मन पर उनकी एक ही छाप पड़ी कि वे मेरे बड़े शुभ चिन्तक मित्र थे। जब कभी काशी की चर्चा होती, ऐसा लगता कि शास्त्रीजी को काशी के लोगों और वहाँ की जीवन-पद्धति के विषय में मुझसे अधिक जानकारी है। मैं कभी-कभी काशी के सनातनी विद्वानों की चर्चा करता तो वे बड़ी उत्सुकता से बातें सुनते थे।

हस्तलिखित ग्रन्थों के विषय में उनसे मुझे अनेक सूचनाएँ उपलब्ध हुई थीं। एक बार हलधर दासकृत 'सुदामाचरित' की चर्चा होने पर मैंने उनसे कहा कि मेरे पुस्तकालय में (श्री वेणी पुस्तकालय, तारणपुर, पो० लखनपार, पटना) भी एक प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ है जो ढाई सौ वर्ष का है। शास्त्रीजी उस ग्रन्थ को देखने के लिए इतने अधीर हो गये कि उनकी इच्छापूर्त्ति में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए समस्या बन गयी जब कभी भेंट होती, 'सुदामा चरित' का प्रसंग शुरू हो जाता। जब मैंने पुस्तक लाकर उनको दिया तब खामोश हुए और काम हो जाने पर उन्होंने बड़ी कृतज्ञता के साथ ग्रन्थ वापस किया।

'आज' का जब क्षेत्रीय कार्यालय पटना में खुला, शास्त्रीजी दाद देने दफ्तर में पहुँच गये। इस कार्यालय के खुलने की जितनी प्रसन्नता उनको थी, उतनी मुझे नहीं थी, लेकिन मुझे प्रोत्साहित करने के लिए दफ्तर पहुँच जाया करते थे। दस-पाँच मिनट नहीं, घण्टों बैठकर जमकर बातें करते थे, मैं उनकी बातों से ऊबता नहीं था। मैं अपना कार्य भी करता जाता था और उनकी बातों का रसपान भी करता जाता था।

एक दिन कार्यवश पुनपुन (पटना गया रेलवे लाइन का पटना से दूसरा स्टेशन) बाजार जाना पड़ा। रविवार का दिन था। बाजार में उस दिन चहल-पहल ज्यादा थी। मैंने इसका कारण जानने की कोशिश नहीं की; क्योंकि मुझे लौटने की जल्दी थी। इसी बीच मेरे पुराने मित्र रामेश्वरप्रसाद दिखाई पड़ गये। दौड़कर मेरे पास आये और कहा कि आर्यसमाज के जलसे में चलिये। पूछा कि कौन आनेवाले हैं? उन्होंने कहा—शास्त्रीजी। आर्यसमाज में शास्त्रियों की संख्या कम नहीं है, इसलिए मैंने कोई विशेष अभिरुचि प्रदर्शित नहीं की। जब उस मित्र ने अपनी घनिष्ठता बताने के लिए पण्डित रामनारायण शास्त्री का नाम बताया, तब मैं धर्म संकट में पड़ गया। कोई पन्द्रह मिनट बाद शास्त्रीजी आये। मिलते ही ऐसे लिपट गये मानों मैं ही वहाँ के आर्यसमाज का कार्यकर्त्ता हूँ। सभी कार्यकर्त्ता देखकर आश्चर्यचकित हो रहे थे। उन्होंने मेरी जब प्रशस्ति शुरु की तब मैंने हाथ जोड़कर उनसे छुट्टी ली क्योंकि आवश्यक कार्य से तुरन्त लौटना था। उनकी सभा में उपस्थित रहने में यद्यपि मैंने उनका आग्रह स्वीकार नहीं किया, तथापि उनकी सहृदयता से मेरा दिल-दिमाग दब गया था। ऐसे मित्र की पुण्यस्मृति से बल मिलता है।

संयोग की बात देखिए। जिस दिन वे बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक मनोनीत हुए, मैं उस दिन वाराणसी में था। तीन-चार दिन बाद जब मैं पटना लौटकर अपने कार्यालय में आया तब मुझे सूचना मिली कि शास्त्रीजी कल शाम को यहाँ आये थे और आपके लिए बन्द लिफाफा छोड़ गये हैं। खोला तो उसमें निदेशक पद पर उनकी नियुक्ति का शुभ समाचार और फोटो था। बधाई देने के लिए जब परिषद्-कार्यालय में फोन किया तब ज्ञात हुआ कि कार्यालय बन्द हो चुका है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन कार्यवश सूचना एवं जन सम्पर्क-विभाग में गया। वहीं बैठा था कि किसी ने सूचना दी कि अमुक व्यक्ति शास्त्रीजी की शव-यात्रा में बाँसघाट गये हैं। सुनकर सन्न रह गया। वहाँ का काम-काज छोड़कर बाँसघाट के लिए चल पड़ा। रास्ते में एक मित्र ने कहा कि अन्त्येष्टि हो गयी और शव यात्री लौट गये। मन मारकर लौट गया।

उस दिन पटना के समाचार पत्रों के कर्मचारियों की हड़ताल थी। कर्मचारियों का आग्रह था कि दफ्तर आज न खोला जाय। दफ्तर आकर मैंने फोन पर शास्त्रीजी के निधन का समाचार वाराणसी-कार्यालय को लिखा था। समाचार दूसरे दिन प्रथम पृष्ठ पर छपा। उनकी अन्तिम इच्छा की पूर्ति के लिए उनका फोटो भी छपवा दिया। नियति का यह कैसा क्रूर परिहास था कि शास्त्रीजी अपना प्रकाशित समाचार और फोटो देखने के लिए नहीं रह गये थे। उस पुण्यात्मा को शत-शत प्रणाम!

वेणी पुस्तकालय
तारणपुर, पुनपुन (पटना)

●

❑ *"मैं मुहल्ले और गाँवों के आधार पर मण्डल हिन्दी सभाएँ संगठित करना चाहता हूँ। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा घोषित होने के बाद भी कुछ देशविरोधी प्रवृत्तियाँ उर्दू को प्रादेशिक भाषा बनाने पर जोर दे रही हैं। उर्दू भाषा के विरुद्ध तो कुछ कहना नहीं हैं, पर मुस्लिम लीगी प्रवृत्ति वाले कुछ लोग इस्लाम और मुस्लिम संस्कृति के नाम पर उर्दू को हिन्दी की बराबरी का स्थान देने की जो कोशिश कर रहे हैं, उससे मुझे आपत्ति है। यह दुःख की बात है कि स्वतन्त्रता के बाद भी हमें अपनी भाषा पर प्रहार किया जाना देखना पड़ रहा है।"*

—टण्डनजी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविस्मरणीय महान् व्यक्तित्व

□ डॉ० श्रीमती शारदा वेदालंकार

स्वर्गीय पं० रामनारायण शास्त्री का जीवन आदर्श एवं सात्त्विक था। वे 'सादा जीवन, उच्च विचार' में पूर्ण आस्था रखते थे। इनका व्यक्तित्व आर्यत्व का प्रतीक था। वे आर्यसमाज के सच्चे सदस्य के रूप में यज्ञमय जीवन यापन करते थे। व्यक्तिगत सुख-सुविधा की उन्हें तनिक लालसा नहीं थी। वे कर्ममय जीवन व्यतीत करते रहे। वे 'बहुजनहिताय बहुजनसुखाय' के आदर्श के सच्चे प्रतिष्ठापक थे। शास्त्रीजी का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा से प्रतिभासित था। राष्ट्रभाषा हिन्दी, संस्कृत तथा आँग्लभाषा पर उनका समान अधिकार था। उनके सौम्य व्यक्तित्व में सत्य जागरूक था। वे अन्धविश्वास का सदैव त्याग करते रहे और रूढ़ियों का खण्डन करते हुए जाति-पाति के बन्धन को त्याग कर उन्होंने अपना अन्तरजातीय विवाह किया। इससे समाज में उनके प्रति अनेक आलोचनाएँ हुईं, किन्तु वे मन और मस्तिष्क से कर्मठ थे, अतः अपने विरोधियों की उपेक्षा करते रहे, फलतः जो व्यक्ति उनके सम्पर्क में आए, उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। स्वभाव से वे सरल एवं गम्भीर थे।

शास्त्रीजी वैदिक धर्म, साहित्य एवं संस्कृति के मर्मज्ञ अध्येता थे। मैंने आर्यसमाज के अनेक समारोहों में उनका सारगर्भित भाषण सुना और विषय की गहराई में जिस गम्भीरता से उनकी पैठ थी, उसे अनुभव किया। अनेक विवाह, उपनयन आदि संस्कारों में उनका पौरोहित्य बड़ा विद्वत्तापूर्ण एवं प्रभावोत्पादक होता था। वैदिक मन्त्र उन्हें कण्ठस्थ थे। वे अपनी व्याख्या संस्कार कराते हुए बड़ी सरल एवं मधुर शैली में किया करते थे। जिससे अशिक्षित व्यक्ति भी उनसे प्रभावित हो जाते थे।

वैदिक धर्म में पूर्ण आस्था रखते हुए वे एक ईश्वर में विश्वास रखते थे वेदों, उपनिषदों और वैदिक संस्कृति साहित्य एवं इतिहास का सम्यक् रूपेण उन्होंने पारायण किया था अतः भारतीय संस्कृति की महत्ता पर वे अप्रयास अपने विचार धाराप्रवाह शैली में अभिव्यक्त करने की क्षमता रखते थे। वे सच्चे अर्थ में 'आर्य' थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा-परिषद् के शोध-विभाग में शास्त्रीजी अनेक वर्षों तक कार्यरत रहे। अपने कार्यकाल में उन्होंने अनेक हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज की तथा उनका अलभ्य संचयन एवं संग्रह कर परिषद् के शोध-विभाग में संगृहीत किया। उन्होंने इतना महत्त्वपूर्ण कार्य किसी उच्च पद-प्राप्ति या यशः-अर्जन की लालसा से नहीं किया था। केवल वे माँ भारती के भण्डार को ही समृद्ध बनाने में संलग्न रहे। 'राष्ट्रभाषा का स्वस्थ विकास हो' यही उनका लक्ष्य था। इसी उद्देश्य से वे इस विभाग में कर्त्तव्यरत रहे। उनकी अप्रतिम प्रतिभा और अनुभव के धनी होने के नाते मृत्यु से पूर्व उन्हें राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक के पद पर नियुक्त किया गया, किन्तु दैवी विधान कुछ ऐसा हुआ कि वे अपनी अनवरत सेवा देने से पूर्व स्वर्गस्थ हो गये।

शास्त्रीजी का कार्यक्षेत्र मुख्यतः पटना ही रहा, किन्तु मौलिक पाण्डुलिपियाँ तथा अप्रकाशित लेखों के संग्रह में वे सतत प्रयत्नशील रहे और सुदूर प्रदेशों की यात्रा करते रहे। अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की खोज में उनका परिभ्रमण एवं परिदर्शन निरन्तर चालू रहा। जितनी अप्रकाशित शोध-सामग्री वे राष्ट्रभाषा-परिषद् के शोध-विभाग में एकत्रित कर गये हैं, उसका यथाशीघ्र प्रकाशन ही उनकी स्मृति को चिरस्थायी रखेगा।

शास्त्रीजी का व्यक्तित्व अनेक दृष्टियों से एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व है। बिहार प्रदेश तथा आर्यसमाज उन्हें कभी अपनी स्मृति से ओझल नहीं कर सकेगा। उनके दिवंगत होने से राष्ट्रभाषा तथा आर्यसमाज को जो क्षति हुई है वह अनेक वर्षों तक पूरी नहीं की जा सकेगी। उस महान् व्यक्तित्व की अमर स्मृति के प्रति मेरी स्नेहांजलि समर्पित है।

- *"मुक्ति से जीवन नहीं लौटता, यह कहना गलत है, उसे मुक्ति रूपी घर से सृष्टि के काम आने के लिए आना आवश्यक है, जो सन्त आते हैं, वे तो मुक्ति से ही लौटे जीव हैं।"*

[शास्त्रीजी की दैनन्दिनी से आकलित]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनारायण शास्त्री : एक संस्मरण

□ रामानन्द शर्मा

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'—प्रायः सही होता है। आज से पचास वर्ष पूर्व, जब मैं लखीसराय (मुँगेर-बिहार) के 'चितरंजन आश्रम' में एक राष्ट्रीय विद्यालय का संचालन कर रहा था, एक सज्जन अपने दो पुत्रों को आश्रम में प्रवेशार्थ मेरे सामने ले आए। छोटे रामनारायण को मैं बड़ी देर तक उस समय गौर से देखता रह गया था।

उस अबोध बालक में कुछ ऐसी खूबी थी, जो मेरी आँखों को बरबस रोक रही थी। गोल-मटोल गोरा चेहरा, आँखें छोटी-छोटी परन्तु बड़ी गम्भीर, ओंठ सटे हुए—जैसे संयम का आधिक्य, अंग सुपुष्ट.....

पिता ने कहा—इन्हें अपनी शरण में लीजिए और उचित शिक्षा दीजिए। मैं इन्हें चरित्रवान् देखना चाहता हूँ। हूँ तो गरीब, पर इन्हें चरित्र का धनी बनाना चाहता हूँ। ये और कुछ हों, न हों, पर अपने देश-धर्म को तो समझें...

उनसे मेरा कुछ परिचय था। वे चिन्तामनचक ग्राम के निवासी थे, जहाँ मेरी बहन रहती थी।

छोटे रामनारायण को देखकर कुछ असमंजस जरूर हुआ मुझे—इतना छोटा बच्चा माँ-बाप से अलग कैसे रह सकेगा इस आश्रम में, पर पिता के उत्साह ने मेरा वह संकोच दूर कर दिया, उसकी दृढ़ता तथा नियम-निष्ठा की बातें बताकर....

दोनों भाई आश्रम में रहने लगे। आश्रम में सुबह-शाम की प्रार्थना होती थी—जिसमें छोटे रामनारायण का उत्साह देखने लायक होता था। पढ़ने-लिखने में भी वह वैसा ही तत्पर था। जो पाठ पढ़ाया जाता, पूरी तैयारी से वह सुना देता था। सबेरे की प्रार्थना में घण्टी बजते ही वह सबसे पहले उठ जाता था। कड़ाके की सर्दी में भी वह जरा भी कतराता नहीं था। मिहनत के काम में भी वह वैसी ही बहादुरी दिखाता था। धीरे-धीरे उसकी आयु की अल्पता मेरी आँखों से दूर हो गई और आश्रम में उसने गर्व और गौरव का स्थान प्राप्त कर लिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितने वर्ष वह बच्चा उस आश्रम में रहा, आज मुझे ठीक याद नहीं। राष्ट्रीय संस्थाएँ उस समय आँधी-तूफान में चला करती थीं। सन् १९३१ ई० में मैं भी उड़ीसा चला गया और वह आश्रम भी अपना वह रूप खो बैठा।

हमारे छात्र भी बिखर गए। उनमें रामनारायण भी कहाँ गए, वर्षों इसका पता नहीं चला मुझे...

वर्षों बाद जब मैं मद्रास से लौटा, तब पटने में रामनारायण शास्त्री से भेंट हुई। उस समय वह बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के शोध-विभाग में काम करते थे। उस नए परिवेश में जब मेरा सम्बन्ध उनसे जुड़ा मैंने जब उनके ज्ञान का, उनकी योग्यता का, उनकी कार्य-क्षमता और उनकी लोकप्रियता का निकट से परिचय पाया, तब मेरे आश्चर्य, मेरे उल्लास और मेरे गर्व का कोई ठिकाना नहीं रहा....

रामनारायणजी आर्य-समाजी थे, किन्तु आर्य-समाजी जिस कट्टरता, जिस अक्खड़पन और उद्दण्डता के लिए समाज में विलक्षण बन जाते हैं, उसका कोई लक्षण मेरी नजरों में कभी नहीं दीख पड़ा।

सिद्धान्त के पक्के, अपने निर्णीत पथ से जरा भी डिगनेवाले नहीं, बाल बराबर भी नहीं, पर व्यवहार में ऐसा विनम्र, सेवा में ऐसा तत्पर, ऐसा कुशल और ऐसा शालीन कि आकर्षण का केन्द्र, जिसपर से नेत्र हटना ही नहीं चाहे...

व्यक्तित्व ऐसा विमल, दूसरों के सुख-दु:ख का ऐसा खयाल कि अपना दु:ख-सुख एकदम उपेक्षित, शरीर अस्वस्थ, पर फाइल बगल में दबाए निर्द्वन्द्व घूम रहे हैं—जाड़े में धूप में, वर्षा में झोपड़ी से लेकर ड्योढ़ी तक।

लगन का, कर्त्तव्य-बोध का, मित्रता के निर्वाह का ऐसा कट्टर अनुरागी कि अपने शरीर के प्रति, अपनी नितान्त आवश्यकताओं के प्रति भी वह दिव्य पुरुष अन्धा बन जाता था।

उसका आदर्श आदि कवि के शब्दों में ध्वनित हो उठा था—

कुलीनः सत्त्व-सम्पन्नः तेजस्वी चरितव्रतः।
राज्यहेतोः कथं पापमाचरेत् मद्विधो जनः॥

....मनस्वी, तेजस्वी, यशस्वी, मेधा-प्रतिभा के गम्भीर धनी रामनारायण शास्त्रीजी, एक दिन सहसा सुना कि नहीं रहे, जब कि मैं उन्हें बधाई का पत्र दे चुका था 'निदेशक' होने के उपलक्ष्य में—न कानों पर विश्वास हुआ, न उस पत्र पर ही जो टाटा से एक मित्र ने मर्मान्तक समाचार दिया था.....

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह विमल व्यक्तित्व चला गया असमय, जो बिसराए नहीं बिसरता है और जिसके बिना बिसूरना पड़ता है—

जो जला हो दीप बनकर
जगत् में हर दिन प्रति क्षण !
खोजता हूँ जब कहीं 'मनुजत्व' ऐसा
छवि उभरती है तुम्हारी, मन में विलक्षण

वह चला गया, जो सबसे 'अपना' लगता था, और जिसके बिना आज सब कुछ सपना-सा जान पड़ता है किसी दुखिया के स्वर में सुन पड़ता है वह दर्द—

तुम्हीं थे मेरे रहनुमा, तुम्हीं थे मेरे हमसफर !
तुम्हीं थे मेरी रोशनी, तुम्हीं ने मुझको दी नजर !!

जाने कितने व्यथित व्यक्ति आज उस रहनुमा, उस 'रोशनी' और उस 'नजर' की खोज में चुपचाप आँसू बहा रहे होंगे—जिनको रामनारायण शास्त्री की सहृदयता, सुहृदता तथा संगति का थोड़ा भी स्वाद मिला होगा...

फिर उनके परिवार की, उनके बाल-बच्चों की, उनके सगे-सम्बन्धियों की चर्चा कौन चलाए, जिनके वह एकमात्र आधार थे?

उनके वे 'अपने' उनके बिना आज कैसे हैं, किस दशा में हैं—इसे देखना, इसपर गौर करना, उनकी समुचित व्यवस्था करना तो उस 'समाज' और उस 'संस्था' का काम है—जिसके लिए शास्त्रीजी जिये और मरे.....

स्वतन्त्र राष्ट्र के जनवादी सत्ताधिकारी भी इसके लिए कम जिम्मेवार नहीं, जो जन-मन के मालिक माने जाते हैं। वे देखें कि जन-मानस का वह सच्चा सेवक और उसका वह अनाथ परिवार आज किस अवस्था में है....

मैं उनके सम्पन्न मित्र-मण्डल, उनके संगठित समाज और उनके सहयोगी बन्धुओं से अपील करूँगा कि शास्त्रीजी के नाम से एक ऐसा वेद-विद्यालय चलाया जाय, जो जनता में शोध-वृत्ति के साथ वैदिक ज्ञान की शिक्षा-दीक्षा दे सके....

शास्त्रीजी के सपूत अपने पिता के पुनीत यश में समुचित भागीदार होंगे, इसकी आशा की जा सकती है।

ग्राम : पुनास, समस्तीपुर (बिहार)

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रचेता : पं० रामनारायण शास्त्रीजी

□ डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

स्वतन्त्रता-सेनानी एवं संकल्प के धनी पुण्यश्लोक पं० रामनारायण शास्त्रीजी राष्ट्रचेता शोधमनीषी होने के साथ ही अपने-आपमें एक संस्था थे। अहर्निश अविराम कर्म उनका जीवन-दर्शन था। वह एक साथ समाजसुधारक, गवेषणापटु विद्वान् और प्रगतिशील विचारक थे। खादी की धोती, कुरता-बण्डी और कन्धे पर तहाई हुई किनारीदार सफेद चादर—यही उनकी सात्त्विकता का सूचक पावन परिधान था। परदु:खकातर शास्त्रीजी का कुसुम-कोमल व्यक्तित्व स्वभावत: विनोदी था। वह अपने परिवेश में स्वयं दिल खोलकर हँसते थे और दूसरों को भी हँसाते रहते थे। उनके साथ जुड़ी हुई अनेक अन्तरंग अनुस्मृतियाँ न केवल उनके जीवन्त व्यक्तित्व का अन्तर्दर्शन कराती हैं, अपितु अनुक्षण, पार्श्वभूमि में, उनके प्रतिरूप की उपस्थिति का आभास भी देती रहती हैं।

पुण्यश्लोक शास्त्रीजी आर्यसमाज के सूत्रधार नेता के रूप में सामाजिक दृष्टिकोण से वैदिक वाङ्मय के अप्रतिहत व्याख्याता और अखिलभारतीय स्तर के धुरन्धर वक्ता थे। संस्कृत और हिन्दी-जगत् की शोध-गवेषणा और अध्ययन-अनुसन्धान के क्षेत्र में उन्होंने स्पृहणीय प्रतिष्ठा अर्जित की थी। लोक-सेवापरायण शास्त्रीजी हृदय से संवेदनशील, व्यवहार से विनम्र, शिष्ट और शालीन होने के कारण अपरिचितों तथा प्रतिकूलतावादियों के साथ भी आत्मीयत्व और अनुकूलता स्थापित करने में सहज पटु थे। उनके अन्तस्तल की मुख्यधारा शोध-अनुशीलन की थी और उनका समाजसुधारक रूप उसी मुख्यधारा का शाखास्रोत था। उनका समाजसुधारवादी प्रवचन केवल परस्मैपदी नहीं था, आत्मेनपदी भी था। वह केवल परोपदेश ही नहीं करते थे, वरन् उसे अपने आचरण में भी उतारते थे। उन्होंने गुरुकुल में यथास्वीकृत प्रतिज्ञावश स्वयं अन्तरजातीय विवाह करके तथाकथित सामाजिकों के तीखे आरोपों और रूखे आक्षेपों को झेलने का अदम्य साहस दिखलाकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रान्तिकारी गौरव आयत्त किया था, जिससे उनका सामाजिक नेतृत्व सच्चे अर्थ में यथार्थोन्मुख आदर्श बन गया था।

कर्मठ और स्वाभिमानी शास्त्रीजी पुण्यश्लोक आचार्य शिवपूजन सहाय के संचालन-काल से ही बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग में क्षेत्रीय शोध-पदाधिकारी के रूप में, दो दशकों से अधिक समय तक पदस्थापित रहे। इस अवधि में उन्होंने अपनी अद्भुत प्रतिभा और सुतीक्ष्ण शोध-मनीषा का परिचय देते हुए सन्त सूरजदास-कृत 'रामजन्म', सन्त लालचदास-कृत 'हरिचरित', सन्त दरिया साहब—लिखित ग्रन्थों का संकलन 'दरिया-ग्रन्थावली' (द्वितीय ग्रंन्थ), 'हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (छह भाग) आदि ग्रन्थों के पाठ-सम्पादन और संशोधन-कार्य द्वारा शोध और पाठालोचन की दिशा में महनीय क्रोशशिला स्थापित की। शास्त्रीजी सारस्वत तथा सामाजिक कार्यों में सहज अभिरुचि होते थे । वह अपने-आपमें एक संस्था तो थे ही, साकार सन्दर्भ भी थे। शोध-सात्म्यवश वह अपने को 'गरीबदास' और 'लालचदास' कहकर परिषद् के सहयोगियों को अपने विनोदी व्यक्तित्व का परिचय देते थे। ज्ञातव्य है, 'गरीबदास' और 'लालचदास' हिन्दी की प्राचीन सन्त-परम्परा में पांक्तेय हैं।

साहित्य-सेवा की विभिन्न विधाओं में पत्रकारिता का विशिष्ट महत्त्व है। बहुप्रतिभ शास्त्रीजी ने इस क्षेत्र में भी अद्भुत प्रखरता और विलक्षणता प्रदर्शित की। 'संस्कृति' मासिक के सम्पादन द्वारा उन्होंने पत्रकारिता-कला का उच्चतर प्रतिमान उपस्थापित किया। वह लेखकों को लेख-साम्मानिक से भी परितुष्ट करते थे। निःशुल्क लेख छापना उनकी पत्रकारिता के सिद्धान्त के विरुद्ध था। उल्लेखनीय है कि इन पंक्तियों के लेखक को भी अपने लेखन-जीवन में सर्वप्रथम साम्मानिक राशि मासिक 'संस्कृति' से ही प्राप्त हुई थी। नये लेखकों को प्रोत्साहित करने और फिर शोधार्थियों के लिए शोध-सामग्री जुटाकर उन्हें मार्ग-दर्शन द्वारा कृतकार्य बनाने में शास्त्रीजी को सहज आत्मतोष होता था। उनकी हँसमुख आकृति पर इस परितोष की चमक बराबर बनी रहती थी और उनके जीवन के अन्तिम काल तक यह चमक कभी धुँधली नहीं हुई। स्वयं स्वाध्याय में लीन रहकर शोध-अध्ययन करनेवालों को सतत सहयोग करना—यही उनकी जीवन-प्रक्रिया बन गई थी।

बड़ी-बड़ी साहित्यिक-सामाजिक सभाओं और गोष्ठियों के आयोजन और संयोजन में उनकी विलक्षण व्यवहारपटुता प्रशंसनीय थी। परिषद् के सेवाकाल में भी यह एक साहित्यिक संगठन 'शरदिन्दु-गोष्ठी' के संचालक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहे। इसके अतिरिक्त भी वह अनेक साहित्यिक और सामाजिक संघटनों से सक्रिय रूप से सम्बद्ध रहे। निरन्तर कर्म-व्यस्तता ही उनका जीवन-धर्म था। अपनी भाषण-कला से विशाल से विशालतर सभाओं में सूचीपात-शान्ति स्थापित कर श्रोताओं को वशीभूत या मन्त्रमुग्ध कर लेना उनकी वाक्शक्ति की विपुल प्रभावकारिता का ही परिचायक था।

एक बार की घटना है—मुँगेर में बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन कविवर पं० मोहनलाल महतो 'वियोगी' की अध्यक्षता में आयोजित हुआ था। रात्रि में कवि-सम्मेलन के समय श्रोताओं की अपार अनियन्त्रित भीड़ किसी भी कवि को जमने ही नहीं देती थी। यहाँतक कि राष्ट्रकवि दिनकरजी जैसे सभाविजयी विराट् कवि को भी परेशानी अनुभव हुई थी। तभी पं० रामनारायण शास्त्रीजी ध्वनि-विस्तारक यन्त्र के सामने आये और उन्होंने ललकार-भरे भावोत्तेजक सिंहगर्जित स्वरों में अपनी वशीकरण-वाणी का प्रयोग किया, तो सारी सभा तूफान निकल जाने के बाद जैसी शान्ति में मग्न हो गई और फिर अखिलभारतीय स्तर के कवि-सम्मेलन का शानदार कार्यक्रम रात्रि के तीसरे पहर तक निर्बाध रूप से जमा रहा। शास्त्रीजी सचमुच धुरन्धर, वश्यवाक् और अप्रतिहत ओजस्वी वक्ता थे।

सन् १९७८ ई० की १६वीं जनवरी को शास्त्रीजी ने विभागीय प्रोन्नति के आधार पर बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद का प्रभार ग्रहण कर परिषद् के प्रशासनिक इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। ज्ञातव्य है, उनके पूर्व परिषद् में बाहर से ही विशिष्ट विद्वान् को बुलाकर निदेशक-पद पर बैठाने की परम्परा रही। शास्त्रीजी की ऊर्जस्वितापूर्ण प्रशासनकुशलता, सूझ-बूझ, वैचारिक क्रान्ति और कार्यक्षमता का अभी मंगलाचरण ही प्रारम्भ हुआ था कि २४ जनवरी को, निदेशक-पद की कुल आठ दिनों की स्वल्पावधि में ही वे गतायु हो गये और परिषद् के बहुमुख विस्तार की समस्त सम्भावनाओं और परिकल्पनाओं को अपने साथ समेट ले गये। अरुणोदय होते ही सूर्यास्त हो गया! अभी उन्हें इस चिरकांक्षित उपलब्धि के लिए बधाई ही मिल रही थी कि सहसा संसार से ही उनकी विदाई हो गई। नियति की निष्ठुरता का इससे बढ़कर और उदाहरण क्या होगा? निश्चय ही, शास्त्रीजी ने न केवल अपने वंश, अपितु सम्पूर्ण साहित्यिक-वंश को सनाथ किया था। समग्र हिन्दी-वाङ्मय उनसे गौरवान्वित था और रहेगा। शास्त्रीजी जैसे कालजयी व्यक्ति को ही दृष्टि में रखकर कहा गया है : 'कुलं पवित्रं जननी कृतार्था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसुन्धरा पुण्यवती च येन'। (अर्थात् वही मनुष्य धन्य है, जिससे कुल पवित्र, जननी कृतार्थ और धरती पुण्यवती हो जाती है।) पार्थिव दृष्टि से निरस्तित्व शास्त्रीजी ने कालपृष्ठ पर जो सारस्वत इतिहास उत्कीर्ण किया है, वह गीता की 'न हन्यते हन्यमाने शरीरे' उक्ति को अन्वर्थ करता है।

यह एक दुर्लभ संयोग ही है कि धन्यात्मा शास्त्रीजी की पुण्यतिथि और जन्मतिथि एक ही है। दिनांक २४ जनवरी को वे आविर्भूत हुए और उसी दिन तिरोभूत भी। इसलिए, उनकी जन्मतिथि और पुण्यतिथि की युगपत् स्मृति-रक्षा के लिए निर्मित 'शास्त्री-स्मारक-न्यास' का, राजनीति से सर्वथा दूर एक स्वतन्त्र सारस्वत व्यक्तित्व है और यह बिना किसी सरकारी साहाय्य एवं अनुदान के, आत्मनिर्भर रहकर साहित्यिक अभ्युत्थान के निमित्त अपने स्वीकृत उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। कहना न होगा कि इसका समस्त श्रेय पुण्यश्लोक शास्त्रीजी के योग्यतम पुत्र अभिजित काश्यप को है, जिन्होंने अपने पिता के सारस्वत ऋणशोध की दिशा में अनुकरणीय आदर्श उपस्थापित किया है।

प्राचीन ग्रन्थों और पाण्डुलिपियों के शोध का जब इतिहास लिखा जायेगा, तब उसमें एक शोधपुरुष के रूप में शास्त्रीजी का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक कर्मयोगी : रामनारायण शास्त्री

□ डॉ० जितेन्द्र सहाय

मनुष्यता कहाँ बसती है? व्यक्ति की सरलता में, उदारचेता की दुखती रगों में, परोपकारी के आचरण में, अहर्निश अविराम कर्म में, विद्वत्ता या प्रतिभा के सुवास में या दुनिया-भर के लिए लबालब प्यार बाँटने में। मनुष्यता स्वर्गीय रामनारायण शास्त्री में बसती थी, अपनी पूरी अस्मिता में, जहाँ ऊर्ध्वमुख सभी सम्भावनाएँ बहुत हद तक मनुष्यता की पहचान बन जाती थी, यानी शास्त्रीजी सरल, उदारचेता, परोपकारी, अविरामकर्मी, विद्वान् तथा सहृदय सब एक साथ थे और टूटते तारे की तरह अपनी लौ की लकीर खींचते हुए अन्तर्धान हुए थे। गेहुँए रंग का सुदर्शन आदमी—सफेद खादी धोती-कुरता पहने और कन्धे पर भव्य अंगवस्त्रम् रखे, तरल-तेजस्वी बड़ी-बड़ी आँखें भीतर भेद कर अपनी जगह बनाती हुई। इन्हीं शास्त्रीजी को बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में आज से बीस वर्ष पहले मैंने देखा था तथा जिन्होंने बड़ी गर्मजोशी से मेरे व्यंग्य-लेखन की सराहना की थी। मुझे तुलसीदास की अर्धाली याद हो आई थी—'जे पर भनित सुनत हरखाहीं, ते नर पुरुष बहुत जग नाहीं।'

चाणक्यनीति में एक श्लोक है, जिसमें एक योग्य पुरुष की तुलना सुवर्ण से की गई है। सुवर्ण के शुद्ध होने की परीक्षा जिस तरह रगड़कर, छेदकर, पीटकर तथा तप्त कर की जाती है, उसी तरह उत्तम पुरुष की पहचान दानशीलता, शील, गुण और कर्म से की जाती है :

यथा चतुर्भिः कनकः परीक्ष्यते निघर्षणच्छेदन-ताप-ताडनैः ।
तथा चतुर्भिः कनकः परीक्ष्यते दानेन शीलेन गुणेन कर्मणा ॥

यदि हम इस कसौटी पर बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के पूर्व निदेशक स्वर्गीय शास्त्रीजी के व्यक्तित्व को कसें, तो देखेंगे कि वह इन चारों गुणों से ज्योतित चौमुख दीपक थे। दान तो इनके संस्कार में था; क्योंकि वे आर्यसमाज में दीक्षित थे, जहाँ सम्प्रदान हवन-कल्प है, जो परोपकार का माध्यम बनकर लोकहित के यज्ञ को ज्योतिर्मय करता है। दर्शन, विज्ञान,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यावहारिक जीवन—सबका रूपान्तरण इस यज्ञ की प्रक्रिया में निहित है। पं० रामनारायण शास्त्रीजी गुरुकुल-परम्परा में शिक्षित पण्डित विश्वनाथ शास्त्री के शिष्य थे, जिन्हें मदनमोहन मालवीय ने काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय के संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष-पद के लिए आमन्त्रित किया था। किन्तु, पं० विश्वनाथ शास्त्री ने मालवीयजी के इस अनुरोध को इसलिए ठुकराया। कि ये ब्रह्मचर्य-आश्रम, गुरुकुल, देवघर के अधिष्ठाता थे और उससे उनका विरत होना सम्भव नहीं था। ऐसे त्यागी गुरु के प्रभाव में रामनारायणजी के भीतर की राष्ट्रीय चेतना को कोई झकझोर रहा था और 'वन्दे मातरम्', की तरंगें उनके हृदय में उठने लगीं थी। इधर राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पित करने की सुगबुगाहट के साथ आर्यसमाज के प्रभाव में उनका समाज-सुधारक रूप भी उभर आया था। फलस्वरूप, उन्होंने गुरुकुल की यथास्वीकृत प्रतिज्ञावश अन्तरजातीय विवाह करके अपने आध्यात्मिक शिल्पी पं० विश्वनाथ शास्त्री को कृतकृत्य किया तथा रूढ़िवादी समाज की रूढ़ियों को तोड़ने के लिए ललकारा। गुरुकुल से विदा लेने तक उनके भीतर जो स्रष्टा था, उसकी चिनगारी पत्र-पत्रिकाओं में छपे उनके लेखों में छिटकने लगी थी।

शास्त्रीजी का शील घृण्य को घृणा की निगाह से नहीं देखता था, न शत्रु को वैरभाव से, इसलिए उनके जीवन की सारी असहनीयता आप ही आप गायब हो जाती थी। अपने अधीनस्थ को भी वे विनम्रता के मधुपर्क से स्नेहसिक्त रखते थे। उनका शास्त्रपूत मन सच्चरित्रता का एक ऐसा मनोरम उद्यान था, जहाँ कटुता, द्वेष तथा ईर्ष्या के फूल खिल नहीं पाते थे। ऐसे भी वह किसी अनभीप्सित अवाप्ति की दौड़ में कभी शामिल नहीं हुए, जहाँ महत्त्वाकांक्षाएँ और महदिच्छाएँ असाधारण का अहंकार पैदा करती हैं। उनमें न कहीं कोई उत्पात था, न शीत ही। वह सदैव समरसता की ही भूमिका में रहते थे।

शास्त्रीजी विनोदमुखर व्यक्ति थे। मनोरंजन करते समय उनके 'मूड' और लहजे को, मिजाज और तेवर को जिसने देखा है, वही जानता है कि हास्य की चन्द्रिकोज्ज्वल खीर कितनी सुस्वादु और तृप्तिकर होती है। साहित्य की सर्जना या काव्य की रचना-प्रक्रिया पर जब चर्चा चलती, तब वह कहते थे—'कुछ ऐसा लगता है, जैसे रचना कोई रोग है और रचनाकार डॉक्टर, जो समीक्षा के नाम पर अपने अल्प ज्ञान और अटकलबाजियों की प्रदर्शनी लगा रहा है!' वे अपने विनोद से किसी के घाव पर मरहम भी खूब सहलाकर लगाते थे। किसी को यदि सरकार से कोई गिला रही, तो बड़े

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहज ढंग से कहते—'सब कुछ राजा की खुशी के अन्दाज में दिया जाता है, नियम की बात बेकार है।' भूख और खाने की बात चली, तो महाभारत के उस सन्दर्भ को उद्धृत कर दिया, जहाँ गान्धारी ने कृष्ण से भूख को 'कष्टात् कष्टतरं' कहा है :

वासुदेव जरा कष्टं कष्टं निर्धनजीवनम्।
पुत्रशोको महाकष्टं कष्टात् कष्टतरं क्षुधा ।।

शास्त्रीजी कमलपुष्प की तरह निरन्तर मुस्कान और सौरभ बाँटते थे। उसकी करुणाप्रवण आँखें प्रत्येक आर्त्तजन की दारुण परिस्थितियों में सहज ही नम हो जाती थीं।

शास्त्रीजी के गुण और कर्म एक-दूसरे के पूरक थे। उनके अन्तस्तल की मूलधारा साहित्य की थी। उसी साहित्यिक अभिरुचि को आकार देने के लिए जिस परिवेश को उन्होंने अपने साथ बाँधा, वह बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् का था। यहीं आचार्य शिवपूजन सहाय के संचालन-काल से ही हस्तलिखित ग्रन्थ-शोध-विभाग में वह क्षेत्रीय शोध-पदाधिकारी के रूप में दो दशकों से अधिक समय तक पदस्थापित रहे। इस अवधि में उन्होंने अपनी कर्मठता तथा सुतीक्ष्ण शोध-मनीषा का परिचय देते हुए सन्त सूरजदास-कृत 'रामजन्म', सन्त लालचदास-कृत 'हरिचरित', सन्त दरिया साहब—लिखित ग्रन्थों का संकलन 'दरिया ग्रन्थावली', हस्तलिखित पोथियों का विवरण (छह भाग) आदि ग्रन्थों का पाठ-सम्पादन और संशोधन-कार्य द्वारा शोध और पाठालोचन की दिशा में अपनी एक खास पहचान बनाई। शास्त्रीजी कर्म के पुजारी और स्वीकृत उद्देश्य के प्रति अत्यन्त निष्ठावान् थे। अत: उन्होंने सन्त-साहित्य के शोध से अपने को ऐसा बाँधा कि लोग उन्हें 'गरीबदास' और 'लालचदास' कहने लगे। किन्तु तीन हजार हस्तलिखित पोथियों, चार सौ सत्तर दुर्लभ पत्र-पत्रिकाओं, दो सौ सत्तर अलभ्य मुद्रित पुस्तकों तथा अनेक अप्राप्य पंचांगों का उन्होंने संग्रह कर उनके सम्पादन तथा संशोधन द्वारा परिषद् के शोधकार्य को स्पृहणीय रूप में समृद्ध किया। शोधपुरुष शास्त्रीजी के परिश्रम और शोधदृष्टि की प्रशंसा आचार्य शिवपूजन सहाय, आचार्य नलिन विलोचन शर्मा तथा पं० छविनाथ पाण्डेय ने प्रमाण-पत्र देकर की है। आचार्य शिवपूजन सहाय द्वारा सम्पादित 'बिहार का साहित्यिक इतिहास' की सामग्री के संकलन में शास्त्रीजी का अतिशय महत्त्वपूर्ण योगदान था। किन्तु एक व्यथा शास्त्रीजी को बराबर मथती रही कि शोध के कँटीले वन में मन रमाने से साहित्य की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुषमा को वे यथेच्छ हृदयंगम नहीं कर सके। ऐसे उन्होंने बहुत कुछ लिखा, पर कवि, कहानीकार या उपन्यासकार के रूप में वे प्रतिष्ठित नहीं हो पाये। हिन्दी-संस्कृत की अनेक मानद डिग्रियाँ पं० रामनारायण शास्त्रीजी के पास थीं, जिनके आधार पर उनकी विद्वत्ता सर्वमान्य थी तथा वह विश्वविद्यालय की पी—एच्० डी० उपाधि के शोध-प्रबन्धों के परीक्षक भी होते थे। किन्तु, वह अपनी रुचि के अनुकूल रस और राग से तृप्त होने की लालसा से प्राय: वंचित रहे। हाँ, इतना जरूर था कि स्वाध्याय में लीन रहकर वह शोधार्थियों को सतत सहयोग करते रहे। ऐसे विद्वान् शोध-सहयोगियों का आज अभाव होता जा रहा है।

साहित्य-सेवा में पत्रकारिता का भी विशिष्ट स्थान है। 'संस्कृति' मासिक पत्रिका के सम्पादन द्वारा उन्होंने पत्रकारिता के उच्चतम प्रतिमान स्थापित किये। साहित्य-क्षेत्र के कितने होनहार पौधों को उन्होंने निर्मल सारस्वत जल से सींचा। विश्राम कर रही बड़े लेखकों की लेखनी को भी मसि-कागद के मैदान में पुनः बड़े उत्साह से उतारा। शोधार्थियों के शोध-लेखों को परिष्कृत कर पत्रिका में स्थान दिया। साथ ही, लेखकों को 'पत्रम्-पुष्पम्' से सन्तुष्ट भी करते रहे।

पं० रामनारायण शास्त्रीजी साहित्यिक-सामाजिक सभाओं, गोष्ठियों और सेमिनारों के आयोजन कर, सामयिक विषयों पर चर्चा करवाकर, उन उपयोगी तथ्यों और विचारों को सामने लाये, जो रूढ़-परम्पराओं को तोड़ते और गतानुगतिक मूल्यों पर प्रहार करते हैं। उनकी साहित्यिक सभाओं में रचनाकार जागरित होते थे और उनकी रचनाधर्मिता को एक चुनौती का अहसास होता था। ऐसे वह अनेक साहित्यिक तथा सामाजिक संघटनों से सम्बद्ध थे तथा निरन्तर कर्मलीनता उनका जीवन-दर्शन था।

हिन्दी-संस्कृत के मंचवक्ताओं में विलक्षण विभूतियों की जो सूची बनेगी, उनमें शास्त्रीजी का नाम बहुत ऊपर रहेगा। भाषा की पारदर्शिता, उच्चारण की स्पष्टता, विषय की समीचीनता, शैली का सौन्दर्य, सर्वोपरि श्रोताओं को बाँध लेने की शक्ति उनकी भाषणकला के चमत्कार थे। वैदिक वाङ्मय के अप्रतिम व्याख्याता के रूप में तथा आर्य-समाज और भारतीय-संस्कृति के धुरन्धर प्रवक्ता के रूप में वह पूरे देश का भ्रमण करते रहते थे। अनुकूल विषय पर बोलते हुए उनकी बोटी-बोटी फड़क उठती थी और हथेली हवा में सौ-सौ चक्करदार वार करने लगती थी। संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में उनके भाषण की समान प्रांजलता थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रीजी भारतीय संस्कृति एवं भारतीयता के प्रति अत्यन्त अनुरक्त थे। भारतीयता केवल एक इतिहास-बोध न रहकर हमारे जीवन में रस-बस जाये, यह उनकी बराबर की चिन्ता थी। मनुष्य की संस्कृति आत्मशुद्धि, आत्म-उन्नयन और अन्धविश्वास या रूढ़िवादिता से मुक्ति का माध्यम है, यही उनकी मान्यता थी। आर्यसमाज की आचारसंहिता में हवन के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा था—'संस्कृति निरन्तर शोधन-प्रक्रिया है, अतः हवन की जरूरत है।'

सन् १९७८ ई० की सोलहवीं जनवरी को शास्त्रीजी विभागीय प्रोन्नति के आधार पर बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक पद की कुर्सी पर बैठे, जिसे उन्होंने आठ दिनों के बाद ही चौबीस जनवरी को सदा के लिए खाली कर दिया। परिषद् के प्रशासनिक इतिहास में प्रोन्नति से निदेशक बनने का एक नया अध्याय जोड़ने से जो उल्लास वहाँ के कर्मचारियों में था, वह उनके औचक लोकान्तरण से विषाद के पारावार में डूब गया।

यदि मैं अपने लेख को समाहृत करूँ तो कहूँगा कि पं० रामनारायण शास्त्रीजी अनेक विपरीत बिन्दुओं के समन्वय पुरुष थे। शिव के समीप मयूर, साँप और चूहे सब सह-अस्तित्व रखते थे। मयूर साँप को मार डालता है, साँप चूहे को खा जाता है। पर शिव के निकट सब शान्त हैं। शास्त्रीजी सह-अस्तित्व के, शान्ति के बम थे। आर्यसमाज में दीक्षित शास्त्रीजी निराकार ब्रह्म के उपासक थे। पर उनके लिए मन्दिर और मूर्त्ति वर्जित नहीं थे। वह आर्यत्व के गौरवबोध और भारतीयता के समर्थक थे। हिन्दी और संस्कृत की दोनों धाराएँ उनमें समानान्तर प्रवाहित थीं। परिवार और समाज उनके जीवन के दो तटबन्ध थे। वर्त्तमान और अतीत दोनों कालखण्डों में वह एक साथ जीते थे। इसलिए मैं उन्हें द्वन्द्व में बहुब्रीहिसमास और द्वैतवाद में अद्वैत दर्शन मानता हूँ। उर्दू के एक शेर से मैं यह श्रद्धार्पण समाप्त करता हूँ—

उसके कद का अन्दाजा किसी को नहीं है।
वो एक इंसान है, जो झुक के चलता है॥

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनारायणजी : एक संस्मरण

□ महाकवि रमण

सन्तों के शब्द में जिसे भगवान् की लीला कहते हैं, वह मेरी समझ में आजतक नहीं आ सका है। हर बात के लिए एक समय होता है, और जब उसमें व्यतिक्रम होता है, तब हम उसे 'भगवान् की लीला' कहकर अपने को समझाना चाहते हैं।

श्रीरामनारायण शास्त्री की मृत्यु अभी होनी नहीं थी, जहाँ हम जैसे पक्की उम्र के लोग अभी मौत की प्रतीक्षा कर रहे हों, वहाँ कच्ची उम्र में रामनारायणजी का चला जाना निःसन्देह एक तकलीफदेह बात है।

व्यक्तिगत रूप से मैं मृत्यु को एक यात्रा का अन्त मानता हूँ और जोक के उस शेर को बार-बार याद करता हूँ, जिसमें उसने कहा है :

जोक इस बहरे फना में, उम्र है किश्ती रवाँ।
जिस जगह पर जा लगी, वो ही किनारा हो गया।।

रामनारायणजी मेरे बहुत समीप आ गये थे। इसका कारण शायद यह था कि वे आर्यसमाजी थे और आज से बत्तीस साल पहले आर्यसमाजी ढंग से उन्होंने शादी की थी। शादी की रात शहर में भारी तनाव था। इसलिए उस अवसर पर पढ़े गए श्लोकों का अर्थ मैं नहीं समझ सका था। किन्तु हाल ७५ में मेरे बड़े लड़के की शादी उन्होंने ही कराई थी और तब मैं समझ सका कि हर रस्म और रिवाज के पीछे कितनी पवित्र भावनाएँ निहित हैं। बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को लेकर एक बार विवाद खड़ा हुआ। एक दल बनाकर हम लोग अनियमितताओं का विरोध करने लगे। रामनारायणजी हम लोगों के साथ थे। पीछे चलकर कुछ लोग भाग खड़े हुए; क्योंकि उन लोगों की जाति के एक पदाधिकारी के विरुद्ध भी मोर्चा लेने की बात उठ खड़ी हुई। मगर रामनारायणजी अन्त-अन्त तक मेरा साथ देते रहे। ऐसे थे वे जुबान और विचार के पक्के।

राष्ट्रभाषा-परिषद् में जब भी निदेशक का पद रिक्त हुआ, सचिवालय से अधिकारी इसपर आ जमते, चाहे वे हिन्दी जानते हों अथवा नहीं। यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनारायणजी का ही कमाल था कि लड़-झगड़कर वे निदेशक के पद पर बैठे और आज यह उन्हीं की कृपा का फल है कि निदेशक के पद पर श्रीश्रुतिदेव शास्त्री विराज रहे हैं। मगर, आदमी बहुत मुश्किल से अहसान कबूल करता है।

रामनारायणजी धीरमन्त विनम्र व्यक्ति थे। प्रभु के प्यारे हो गये—और हम लोग देखते रह गये। मैं स्वयं चाहता हूँ कि मेरी यात्रा समाप्त हो जाय। लोगों ने कहा था कि रमण चालीस नहीं पार करेंगे। ज्योतिषियों ने पचास कहा था। अब तिरसठ हो रहा है और यही कहना पड़ता है कि—

मेरी जिन्दगी एक मुसलसल सफर है,
जो मंजिल पे पहुँचा तो मंजिल बढ़ा दी।

●

- *"जहाँ हमें सत्य की उपलब्धि होती है, वहीं हमें आनन्द की प्राप्ति होती है। जहाँ हमें सत्य की पूर्णतया प्राप्ति नहीं होती, वहाँ आनन्द का अनुभव नहीं होगा।"*

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

- *"जिस आनन्द से समाज को उपकार न पहुँचे, वह उच्चादर्श का आनन्द नहीं।"*

—अरस्तू

- *"कला शब्द का व्यवहार आजकल इतना व्यापक हो गया है कि असुन्दर वस्तु एवं अकृत्यों के साथ भी जुड़ गया है। कविता की भाँति कला को भी व्याख्या के द्वारा सीमित नहीं किया जा सकता; क्योंकि सौन्दर्य और कला का क्षेत्र असीम है। ऐसी कोई वस्तु नहीं, जिसमें कला और सौन्दर्य का बोध न होता हो। कोई भी वस्तु न सुन्दर है, और न असुन्दर ही। दोनों भाव निरीक्षक की रसानुभूति पर अवलम्बित हैं। प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण अपना होता है। जो वस्तु एक की दृष्टि में सुन्दर है, वही दूसरे की दृष्टि में निन्द्य हो सकती है।"*

—मुनि कान्तिसागर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुरभाषी प्रेरक व्यक्तित्वः शास्त्रीजी

□ कृष्णवल्लभ प्रसाद नारायण सिंह

श्रीरामनारायणजी शास्त्री को मैं बहुत दिनों से संघ के एक स्वयंसेवक के रूप में देखता आ रहा था। साधारण-सा कद, सफेद खादी तथा कन्धे पर सादा अंगवस्त्र—यही उनका भेष था। बाद में मुझे पता लगा कि आर्यसमाज के ये माने हुए नेता तथा प्रकाण्ड विद्वान् हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तो ये एक निष्ठावान् स्वयंसेवक थे।

इतना विनीत तथा मधुरभाषी कि कोई बातचीत में यह नहीं पता लगा सकता था कि इस साधारण से दिखनेवाले व्यक्ति में कितना गहरा अध्ययन है।

वे लेखक, प्रचारक, सम्पादक तथा चोटी के समाज-सुधारकों में अन्यतम् थे।

इस छोटी अवस्था में उनकी मृत्यु से समाज को जो क्षति पहुँची है, उसकी निकट-भविष्य में पूर्त्ति सम्भव नहीं मालूम देती है।

राष्ट्रभाषा-परिषद् के अध्यक्ष-पद पर बिहार सरकार ने उन्हें जैसे ही बैठाया कि इसके विकास के सारे अरमान लिये हुए शास्त्रीजी चले गये!

शास्त्रीजी के जीवन से हिन्दू-समाज प्रेरणा ले—यही मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि है।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनन्य कर्मठ पुरुष : शास्त्रीजी

□ रामसिंह भारतीय

जब सन् १९७८ ई० की २४ जनवरी को सुबह-ही-सुबह मुझे टेलीफोन पर अज्ञात युवक ने यह दुःसमाचार दिया कि श्रीरामनारायण शास्त्री अब इस दुनिया में नहीं रहे, तब मुझे विश्वास नहीं हुआ; क्योंकि अभी तो उनकी अवस्था बहुत ही कम, कुल ५२ वर्ष की ही थी और यह अवस्था बहुत ही अल्प है, यह कहने की आवश्यकता नहीं।

यह टेलीफोन उनके सुपुत्र अभिजित और अमिताभ का था, इसलिए इस पर विश्वास करना ही था। किन्तु मुझे इस समाचार से गहरा दुःख हुआ और मेरे मन ने कहा—आज उनकी मृत्यु से हमारे बीच से एक कर्मठ पुरुष चला गया!

श्रीरामनारायण शास्त्री सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि-सभा, दिल्ली में उपमन्त्री बरसों से थे और उस सभा के काम में गहरी दिलचस्पी लेते थे। वैसे बाँकीपुर आर्यसमाज और आर्य-प्रतिनिधि-सभा-बिहार के कार्य-कलाप में उनकी खास दिलचस्पी रहती थी। यहाँ की राज्य की आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व मन्त्री थे और अब राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक का काम १४ जनवरी, १९७८ ई० से कर रहे थे। इस राज्य को उनकी सेवाओं की अभी बहुत आवश्यकता थी, किन्तु दैवयोग से वे नहीं रहे। मधुमेह के पुराने रोगी होने से उनके शरीर में घुन लग गया था और कदाचित् उसी से उनको हृदय-रोग का जोरदार दौरा हुआ, जो उनको ले गया। उनको इस रोग का यह दौरा इतना आकस्मिक था कि कोई वैद्य-चिकित्सक भी नहीं बुलाया जा सका और जो समीप थे, उनके आते-आते तो वे चले ही गये!

श्रीरामनारायण शास्त्री की प्रतिभा बहुमुखी थी। वह गुरुकुल, देवघर के स्नातक थे और भारतीय सभ्यता-संस्कृति से उनका अनुराग विशिष्ट था। उनका हिन्दू धर्म-ग्रन्थों का अध्ययन खासा था। उन्होंने अपनी योग्यता और प्रतिभा का उपयोग राष्ट्र और धर्म के लिए यथाशक्ति किया और समाज की अन्य कई रूपों में भी सेवा की।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि उनके कोई स्वतन्त्र मौलिक ग्रंथ नहीं हैं, तथापि उन्होंने बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् की प्रकाशित बहुत-सी पुस्तकों का योग्यतापूर्ण सम्पादन किया है, इस रूप में उनकी सेवाएँ सदा उल्लेखनीय रहेंगी।

मेरा शास्त्रीजी से जो परिचय था, वह आर्यसमाज के सभा-सम्मेलनों में भाग लेते समय का ही था और उनमें मैंने देखा कि एक तेजस्वी वक्ता और धर्म-प्रचारक के रूप में भी उभरे हैं। सन् १९७६ ई० में मैंने दानापुर में आपात स्थिति के दिनों में बिहार-राज्य-आर्य-समाज-शताब्दी-समारोह में बड़ी तन्मयता से काम करते उन्हें देखा था और मैं उस समारोह में उद्‌घाटनकर्त्ता के रूप में वहाँ जब गया, तब मैंने उनको बहुत समीप से देखने का अवसर पाया था।

अस्तु; श्रीरामनारायण शास्त्री यद्यपि हमारे बीच नहीं रहे, तथापि उनका यशःशरीर तो अब भी है ही। यहाँ मुझे यह सूक्ति याद आती है :

'यस्य कीर्त्तिः सजीवति।'

दैनिक
सम्पादक : 'प्रदीप', पटना

●

❑ *"सौन्दर्य वहाँ दृष्टिगोचर होता है, जहाँ हमारी आवश्यकता की पूर्त्ति होती है, परन्तु एकमात्र आवश्यकताओं की पूर्त्ति ही सौन्दर्य नहीं होता, जब आवश्यकता की पूर्त्ति के साथ हमारे हृदय को परम प्रसन्नता होती है, तब यह प्रसन्नता आवश्यकताओं के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु की द्योतक होती है। आवश्यकता की समाप्ति के बाद भी जो वस्तु अवशिष्ट रह जाती है, वही सौन्दर्य है।"*

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें स्वर्गीय कैसे कहें ?

□ कृष्णकान्त सिंह
(सदस्य : बिहार विधानसभा)

स्व० श्रीरामनारायण शास्त्री के बारे में जब कभी कुछ लिखने को सोचता हूँ, तब आँखें डबडबा आती हैं और मन भावनाओं से भर जाता है, फिर लेखनी जहाँ की तहाँ रुक जाती है। शास्त्रीजी से मेरा बड़ा ही अपनापन था। बहुत साल पहले जब उनसे परिचय हुआ, तब से लेकर उनकी आखिरी साँस तक हम अभिन्न रहे। ऐसा मृदुभाषी, ओजस्वी वक्ता एवं चरित्रवान् पुरुष बहुत कम मिलते हैं।

स्व० प्रकाशवीर शास्त्री एवं रामनारायण शास्त्री दोनों की याद एक ही साथ मुझे सताती है। दोनों बड़े मित्र थे और दोनों ही मेरे अभिन्न थे। मुझे क्या पता कि प्रकाशवीर शास्त्री की मृत्यु की खबर मुझे देनेवाले रामनारायण शास्त्री भी उनसे मिलने के लिए इतनी जल्दी हम लोगों को छोड़कर चले जायेंगे। सौजन्य शास्त्रीजी में कूट-कूटकर भरा हुआ था। जब कभी हमारी मुलाकात शास्त्रीजी से हुई, मैंने उन्हें एक-सा ही पाया। वर्षों एक साथ कई क्षेत्रों में काम करने का मौका और आनन्द हमें मिला।

शास्त्रीजी जब बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक के रूप में पदस्थापित किये गये, उससे मुझे कितनी खुशी हुई कि उसका अन्दाज मेरे सिवा कोई दूसरा कर नहीं सकता। जब मैंने उन्हें मुबारकबाद दिया, तब उन्होंने कहा—"मुझे कृपया लज्जित न करें। मैं अभी आपकी सेवा में हाजिर हो रहा हूँ आशीर्वाद हेतु।" वे आये भी मेरे यहाँ और जो गये सो फिर कभी न लौटे। भगवान् को मंजूर नहीं था कि वे हम सबके बीच और रहें। होता भी ऐसा ही है। अच्छे लोगों को भगवान् जल्द ही उठा लेते हैं। जो भी हो। हमें तो अब मन मारकर रहना ही है इस प्रार्थना के साथ कि भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और वे अपने कीर्तिकाय से अमर रहें।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविस्मरणीय समाजसेवी विद्वान् : शास्त्रीजी

□ शंकरदयाल सिंह

कभी-कभी स्मृतियों के खजाने में ऐसी घटनाएँ भी आकर जमा हो जाती हैं, जो भुलाये नहीं भूलतीं, हटाये नहीं हटतीं। जीवन-चेतना के फूल झरते हैं, लेकिन उनका पराग सदा-सदा के लिए बर्फ बनकर जम जाता है। ऐसी ही स्मृति है पं० रामनारायण शास्त्रीजी की।

वह शाम, पारिजात-प्रकाशन में आयोजित 'मुक्तकण्ठ अध्ययन-केन्द्र' की स्थापना का समारोह, अनौपचारिक उद्घाटन करने आये राष्ट्रभाषा के अनन्य प्रहरी श्रीगंगाशरण सिंह और उपस्थित हैं पटना के प्रमुख साहित्यकार, कलाकार, समाज-सेवी, विद्वद्जन और उसी में एक हैं रामनारायण शास्त्रीजी बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक। चेहरे पर सुपरिचित मृदु हास, वाणी में सन्तुलित गम्भीरता, मिलने-जुलने की अपनी परम्परागत शैली। छोटा भी हो तो क्या हुआ—नमस्कार की मुद्रा में शास्त्रीजी का हाथ पहले ही जुड़ जायेगा। वहीं शास्त्रीजी २३ जनवरी, १९७८ ई० की शाम, 'मुक्तकण्ठ अध्ययन-केन्द्र' की अनौपचारिक स्थापना पर हँस रहे थे, मुसकरा रहे थे तथा उपस्थित दोस्तों-मित्रों से इधर-उधर की बातों में तल्लीन थे।

पर कौन जानता था कि यही उनके जीवन की आखिरी सन्ध्या है।

समारोह के बाद जब सब जाने लगे, तब भी कुछ लोग वहाँ रुक गये, जिनमें शास्त्रीजी भी थे तथा बिहार-कांग्रेस के नेता श्रीरामलखन सिंह यादव भी। मैं जब रामलखन बाबू का परिचय शास्त्रीजी से कराने लगा, तब दोनों ठठाकर हँस पड़े और पहली बार यह पता चला कि दोनों साथ पढ़े हैं तथा स्वतन्त्रता-आन्दोलन के दिनों में एक साथ कई जोखिम भरी शामें इन्होंने बिताई हैं।

बातों का सिलसिला जब इधर-उधर से शुरू हुआ, तब रामलखनजी ने शास्त्रीजी से पूछा—क्योंजी, तुम ऐसे क्यों दीख रहे हो? यह मुरझाया-सा चेहरा! भला मैं तो तुम्हें पहचान ही नहीं सका।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पहली बार मैंने अन्दाज किया कि शास्त्रीजी का चेहरा सच में कहीं से सिकुड़ गया है, कान्ति कुछ मुरझा-सी गई है और आँखों की कोरों के अन्दर बिन्दु-चेतना कहीं इस प्रकार छटपटा रही है, जो बिना कहे भी सब कुछ कह दे।

'आप लोगों को पता नहीं होगा कि हम दोनों साथ पढ़े हैं। और रामनारायण जब बोलने लगता था, तब हजारों की भीड़ शान्त हो जाती थी। शेर की तरह इसकी आवाज गूँजती थी।'—रामलखनजी कह रहे थे और मुझे अच्छी तरह याद है कि अपनी आँखें चुराते हुए शास्त्रीजी ने इतना ही कहा था—'इधर कुछ अस्वस्थ-सा रहा बन्धु!'

किसे पता था कि उनकी वह अस्वस्थता जीवन-सन्ध्या की अखिरी कसक है।

शास्त्रीजी से मेरा परिचय पहली बार उन दिनों हुआ, जब सन् १९५७ ई० में पटना विश्वविद्यालय में एम० ए० का छात्र था। प्रायः उन दिनों बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में जाया करता था, जहाँ प्रान्त और देश के अनेक मनीषियों के दर्शन होते थे। आचार्य शिवपूजन सहायजी परिषद् के निदेशक थे और उन्होंने चुनकर परिषद् की ऐसी टोली बनाई थी, जिसमें कर्मठ और दृष्टिबोधवाले लोगों को जुटाया था, उसी में थे शास्त्रीजी। उन दिनों प्रायः शाम की बैठक बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-भवन में हुआ करती थी, जहाँ सामने की कुर्सी पर आचार्य नलिनविलोचन शर्माजी होते थे और उसके आसपास बिहार के साहित्यकारों की पूरी मण्डली। हम सब उस बैठक के एक अभिन्न अंग, शास्त्रीजी भी उनमें एक थे। बाद के दिनों में सम्मेलन में जमकर रस्साकशी हुई, उसमें अगले सिरे पर बराबर शास्त्रीजी मौजूद रहते थे।

उनका उदात्त व्यक्तित्व न दबना जानता था, न झुकना : लेकिन उसके साथ ही उनमें सबसे बड़ा गुण यह था कि मर्यादा तथा व्यक्तिगत सौहार्द का वे कभी परित्याग नहीं करते थे। विरोध अपनी जगह पर है—उसमें उनकी दृढ़ता झलकती थी, लेकिन दूसरी ओर व्यक्तिगत कटुता का उनके जीवन में कहीं प्रवेश नहीं था।

बाद में जब मैं संसद्-सदस्य बना और श्रद्धेय प्रकाशवीर शास्त्रीजी के घनिष्ठ सम्पर्क में आया, तब पूज्य रामनारायण शास्त्री ने मुझे और अपने करीब ले लिया। कारण, प्रकाशवीरजी और रामनारायणजी दोनों अन्यतम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्रों में थे—केवल आर्यसमाज के प्रखर और मुखर नेता होने के कारण ही नहीं, वरन् व्यक्तिगत उदारता, सामाजिक परिवेश और साहित्यानुरागी संस्कारों के कारण भी। कई बार प्रकाशवीरजी पटना में मेरे मेहमान होते तो रामनारायणजी भी घण्टों मेरे घर पर बैठे होते।

कितनी बड़ी विडम्बना है कि आज हमारे बीच इन दोनों शास्त्रियों में से कोई नहीं है। लगता है कि दोनों में जो आत्मिक और घनिष्ठ मैत्री थी, उसका निर्वाह करने दोनों चले गये। छोड़ गये हमें—यादों की परतों को ढोने के लिए, जिनका बोझ किसी मन्दराचल से कम नहीं होता है।

इधर मैं महसूस करता रहा हूँ कि पटना का साहित्यिक-सामाजिक जीवन उजाड़ और उदास-सा हो गया है। एक-एक कर अनेक साहित्य-महारथी हमें छोड़कर चले गये, जिनमें शास्त्रीजी की कसक मित्रों को तबतक सालती रहेगी, जबतक हम स्वयं उनके पास नहीं पहुँच सकते।

सोचता हूँ कि आखिर क्या है यह पीड़ा और यह आत्मदाह। विवेक कहता है कि आदमी आता है जाने के लिए, लेकिन मन नहीं स्वीकार करता है इसे—लगता है कि शास्त्र सब गलत हैं, कारण जानेवाले की स्मृतियाँ और भी सजीव होकर वृत्त बना लेती हैं और हम उसमें आबद्ध हो जाते हैं और हमारा विवेक अज्ञान बनकर हमीं पर हँसता है, इसलिए कि यादों की धरोहर में पले आँसुओं के स्रोत कभी नहीं सूखते।

कामता-सदन, बोरिंग रोड, पटना-१

●

❑ *"ऐसी कोई ऊँचाई नहीं, जहाँ नारी न चढ़ सके, ऐसा कोई स्थान नहीं, जहाँ वह न पहुँच सके। बार-बार अपराध करने पर भी वह क्षमा कर देती है। वह जब किसी बात पर अड़ जाती है, तब संसार की कोई भी शक्ति उसे डिगा नहीं सकती और न किसी की परवाह ही होती है। निराशा, उदासी, यातनाएँ, सभी मिलकर भी नारी के प्राणों में पलते प्रेम को नहीं छीन सकते।"*

—कार्लाइन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० रामनारायण शास्त्री : एक संस्मरणीय पुरुष

□ रामावतार शास्त्री

सन् १९४० ई० की बात है। उन दिनों मैं काशी विद्यापीठ का छात्र था। राष्ट्रीय आन्दोलन का सिपाही होने के नाते विद्या-अर्जन के साथ-साथ ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध छात्रों को संगठित करने का भी काम करना पड़ता था। ऐसा करने का माध्यम था छात्र फेडरेशन। कांग्रेस-आन्दोलन के साथ-साथ क्रान्तिकारी आन्दोलनों से भी थोड़ा सम्बन्ध था। विद्यापीठ तो इस प्रकार के आन्दोलनों का केन्द्र ही था। फलतः, १६ नवम्बर को दमन-विरोधी दिवस मनाने की तैयारी करने के सिलसिले में गिरफ्तार कर जेल में बन्द कर दिया गया। दो वर्ष की सजा सुनायी गयी। पर कुछ ही महीनों के बाद अपील पर सेशन जज की अदालत से रिहा हो गया। जेल से बाहर आते ही बनारस पानी-कल के मजदूरों के संगठन में लगना पड़ा। फिर क्या था, भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत मुझे बनारस जिला जेल में नजरबन्द कर दिया गया। करीब डेढ़ माह तक वहाँ रहने के बाद भारत सरकार के गृहसचिव मैक्सवेल के आदेश पर मुझे बनारस से निष्कासित कर बिहार में नजरबन्द कर दिया गया। इस आदेश के साथ मुझे बनारस जेल से लाकर कुछ दिनों तक पटना जिला जेल में रखा गया और बाद में रिहा कर दिया गया।

कहने को तो मुझे जेल से मुक्ति मिल गई। परन्तु मेरी गतिविधियों पर निगरानी रखने के लिए गुप्तचरों को तैनात कर दिया गया। मैं जहाँ कहीं भी जाता, वे छाया की तरह पीछा करते रहते। मेरे मित्रों, शुभचिन्तकों, समर्थकों को वे डराते धमकाते भी रहे। फलस्वरूप, लोग मुझे अपने पास बैठाने-उठाने से डरने लगे। कुछ लोगों ने तो मुझसे स्पष्ट कह दिया कि मैं उनके पास जाने-आने में परहेज करूँ। फलतः, मेरी परेशानियों का अन्दाज लगाया जा सकता है। इन्हीं परेशानियों के बीच एक दिन मैं नया टोला-स्थित बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में पहुँचा। वहाँ श्रद्धास्पद स्वामी अभेदानन्द सरस्वती के दर्शन हो गये। मैंने उनसे अपनी परेशानियाँ कह सुनाईं। सुनते ही वह अँगरेजी राज की हृदयहीनता पर अत्यन्त क्रुद्ध हुए। उन्होंने नया टोला-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थित आर्यसमाज-भवन में मेरे रहने की व्यवस्था कर दी। बिहार राज्य आर्य-प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन महामन्त्री भी इसके लिए राजी हो गये। इस प्रकार मैं आर्यसमाज में रहने तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में कुछ काम करने लगा। दोनों ने मेरे भोजन की व्यवस्था भी नया टोला के कंचन भवन होटल में कर दी, जहाँ आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्त्ता एवं अतिथि भोजन किया करते थे।

अँगरेजी राज के सी० आइ० डी० वालों को मेरा आर्यसमाज में रहना भी पसन्द नहीं आया। अतः उन लोगों ने स्वामीजी से मुझे वहाँ से हटा देने का अनुरोध किया। उनकी इस धृष्टता से कुपित होकर स्वामीजी ने उन्हें आर्यसमाज के अहाते से निकाल बाहर करवाया, जिसके फलस्वरूप वे पुनः वहाँ नहीं जा सके। ऐसी थी उन दिनों आर्यसमाज एवं उसके नेताओं की राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति।

आर्य प्रतिनिधि सभा में ही मेरी सर्वप्रथम मुलाकात प्रिय भाई एवं मित्र पं० रामनारायण शास्त्री से हुई। उनकी आत्मीयता और सौहार्दपूर्ण व्यवहार से मैं बड़ा ही प्रभावित हुआ। धीरे-धीरे मेरा परिचय उनसे बढ़ता गया। यह जानकर मुझे और प्रसन्नता हुई कि वह पटना जिलान्तर्गत मोकामा के निवासी हैं। उन दिनों प्रत्येक नौजवान में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ घृणा और विद्रोह की भावना का जगना स्वाभाविक था। फलतः इसने हम दोनों को और निकट ला दिया। इस परिचय को और गाढ़ा बनाने में स्व० स्वामी अभेदानन्द सरस्वती के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री ने विशेष भूमिका अ़दा की। श्रीकृष्णचन्द्रजी काशी विद्यापीठ में मेरे सहपाठी रह चुके थे। उन दोनों का परिचय और पहले से था; क्योंकि वे गुरुकुल में साथ रह चुके थे।

आर्यसमाज में रहने के कारण धार्मिक मतभेदों के बावजूद मैं अपने को उस परिवार का सदस्य समझने लगा था। ऐसे दानापुर का निवासी होने के कारण आर्यसमाज के सिद्धान्तों से मेरा कुछ लगाव रह चुका था; क्योंकि वहाँ आर्यसमाज का बड़ा जोर रहा है। आर्यसमाज ने स्वतन्त्रता-संग्राम में अपनी विशेष भूमिका भी अदा की है। फलस्वरूप प्रारम्भ में मेरे जैसे व्यक्तियों के लिए उसकी ओर आकर्षित होना स्वाभाविक था। जात-पाँत तोड़ने, छुआछूत का अन्त करने और मूर्त्ति-पूजा विरोधी उसके सिद्धान्तों से मैं विशेष रूप से प्रभावित था।

आर्यसमाज में रहने की अवधि में भाई रामनारायण शास्त्री से मेरी मुलाकात प्रायः रोज हो जाया करती थी। हम दोनों राजनीतिक मुद्दों पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार-विमर्श भी कर लिया करते। कभी-कभी गरमागरम बहस भी हो जाया करती। पर हम दोनों इस बात में एक मत थे कि अँगरेजी राज का खातमा होना चाहिए और राजसत्ता समाजवादियों के हाथ में होनी चाहिए। समाजवादी होते हुए भी मैं कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रभावित था और शास्त्रीजी जयप्रकाश नारायण की कांग्रेस समाजवादी पार्टी से। परन्तु कांग्रेस में हम दोनों प्रगतिशील एवं वामपक्षी विचारधारा के पोषक थे। जीवन पर्यन्त आर्यसमाज में रहते हुए भी वह इस विचारधारा को मानते रहे। धार्मिक कूप-मण्डूकता मैंने उनमें कभी नहीं देखी। आर्यसमाज के मंच से वह कम्युनिस्ट सिद्धान्तों पर चोट करते, परन्तु व्यवहार में उनकी अधिकांश बातों को स्वीकार भी करते। हाँ! धर्म, ईश्वर, आर्यसमाज की बनावट, उस पर पैसेवालों का आधिपत्य, मुसलमानों की स्थिति आदि कुछ बातों के सम्बन्ध में कम्युनिस्टों के विचारों से वह कभी सहमत नहीं हुए। इन बातों पर घण्टों मेरी उनसे चर्चाएँ हुआ करतीं। चर्चाएँ कभी-कभी तीखी हो जाया करती थीं, फिर भी हम दोनों में कभी कटुता उत्पन्न नहीं होने पाई। हमारी बहस सदा मित्रवत् होती रही। आपसी चर्चा के दौरान हमें एक दूसरे को समझने का सुअवसर मिला करता।

अँगरेजी सरकार की हठवादिता के कारण राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को सन् १९४२ ई० के अगस्त में 'अँगरेजों भारत छोड़ो' का नारा देना पड़ा। महात्मा गाँधी तथा कांग्रेस के नेता यह नहीं चाहते थे कि जनतान्त्रिक शक्तियों के मुकाबले फासिस्ट शक्तियों की शक्ति बढ़े और वे विभिन्न राष्ट्रों के शासन-सूत्र को हथिया लें। लेकिन उनके बढ़ाव को तभी रोका जा सकता था। जब अँगरेज भारत की बागडोर यहाँ के राष्ट्रीय नेताओं के हाथों सौंप देते। पर ऐसा नहीं कर अँगरेजी लुटेरों ने महात्मा गाँधी-समेत सभी राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर जेलों में बन्द कर दिया। विरोधस्वरूप सम्पूर्ण राष्ट्र ने विद्रोह कर दिया। ऐसे अवसर पर भाई रामनारायण शास्त्री कब पीछे रहनेवाले थे? वह भी अगस्त-क्रान्ति में कूद पड़े। वह आन्दोलन के प्रबल प्रचारक एवं संगठनकर्त्ता बन गये। फलस्वरूप वह जेल की यातनाओं से बच नहीं सके। उनका सम्बन्ध कांग्रेस में रहकर काम करनेवाले समाजवादियों से हो चुका था। अतः उनके जैसे एक प्राणवान् व्यक्तित्व समाजवादी विचारधारा के प्रभाव से अपने को अलग नहीं रख सका। गुरुकुल के छात्र रहने के कारण उन पर स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं आर्यसमाज का प्रभाव था और स्वतन्त्रता-संग्राम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के क्रम में समाजवादी विचारों की छाप थी। इस प्रकार अपने जीवन के अन्त तक उन्होंने अपने इन दोनों विचारों को निभाया। परन्तु, स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद उनका कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से आर्यसमाज और शोधकार्य रहा। शोध कार्य के क्षेत्र में भी उन्हें काफी प्रसिद्धि मिल चुकी थी। इस क्षेत्र में उन्होंने कुछ ग्रंथ भी दिये।

राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यों से सम्बद्ध रहने के कारण शास्त्रीजी का सम्बन्ध मेरे जैसे अनेक कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ताओं से भी रहा। इस सम्बन्ध को उन्होंने अन्त तक निभाया भी। ऐसे लोगों में डा० ए० के० सेन, प्रो० सन्तलाल सिंह, परमेश्वर, एम० एल० सी०, कृष्णचन्द्र चौधरी, एम० एल० सी० आदि प्रमुख हैं। सांस्कृतिक जागरण के कार्यों में इनका विशेष सम्बन्ध रहा। यदा-कदा चुनाव-कार्यों में भी शास्त्रीजी का सम्बन्ध हमसे रहा। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि, उन्होंने सदा-सर्वदा इस काम में हमारा आँख मूँदकर समर्थन किया। कालान्तर में जनसंघवालों से भी उनका सम्बन्ध स्थापित हो चुका था। फिर भी, हम दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध बना रहा। राजनीतिक मत-विभिन्नता के कारण आत्मीयता में किसी प्रकार की कमी नहीं आने पायी। इस प्रकार की सहिष्णुता इन दिनों प्रायः कम ही देखने को मिलती है।

पं० रामनारायण शास्त्री आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध उपदेशक होने के नाते प्रभावशाली वक्ता भी थे। अपने बेजोड़ तर्क से वह अक्सर अपने विरोधियों को निरुत्तर कर दिया करते। कहा भी जाता है कि आर्यसमाजी शास्त्रार्थ के पण्डित हुआ करते हैं। नौजवानों के वह विशेष रूप से प्रिय पात्र थे। बिहार के नौजवानों में शास्त्रीद्वय (पं० प्रकाशवीर शास्त्री और पं० रामनारायण शास्त्री) के प्रति विशेष आकर्षण था। उनके दुःखद निधन से संसद, आर्यसमाज, देश और राज्य को भारी क्षति उठानी पड़ी है, जिसकी पूर्त्ति आसानी से नहीं हो सकती।

स्व० रामनारायण शास्त्री की गणना आर्य विद्वानों में भी की जाती रही है। अपनी विद्वत्ता और शोधकार्यों के कारण ही वह बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद पर नियुक्त किये गये थे। परन्तु दुःख है कि वह उसके कार्य-संचालन के लिए अधिक दिनों तक जिन्दा नहीं रह सके। उनकी अचानक मृत्यु का समाचार सुनकर मेरे जैसे उनके अनेक मित्रों को हतप्रभ रह जाना पड़ा। मुझे तो स्वप्न में भी आशा नहीं थी कि वह इतनी जल्दी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपने मित्रों, शुभचिन्तकों, हितैषियों, प्रशंसकों, श्रद्धालुओं और बन्धु-बान्धवों को बिलखता छोड़कर आँखें मूँद लेंगे और मेरी तो उनकी मृत्यु से कुछ ही दिनों पूर्व पटना के कोतवाली-थाने के निकट मुलाकात भी हुई थी। वह भला चंगा दीखे थे। रिक्शा रोककर उन्होंने मुझसे काफी देर तक बातें की। राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद पर नियुक्ति के लिए मैं उन्हें बधाई देना ही चाहता था कि वह बोल उठे—बधाई रास्ते में नहीं, घर पर स्वीकार करूँगा, कृपया वहाँ तशरीफ लाइए। उनके आदेश को मैं टालता भी कैसे! उनके निवासस्थान पर जाने की बात पक्की हो गई। परन्तु अकस्मात् उनकी मृत्यु का दु:खद समाचार मिला। अत: मैं शोकविह्वल होकर उनके निवासस्थान पर गया अवश्य, पर उन्हें बधाई नहीं दे सका; क्योंकि वहजीवित नहीं थे, उनका पार्थिव शरीर भी नहीं था, जीवित बच रही थी केवल उनकी कीर्त्ति और स्मृति। यही उनके परिवार और मेरे जैसे उनके मित्रों के लिए सम्बल रह गये हैं जो सदियों तकजीवित तथा देश और समाज को अनुप्राणित करते रहेंगे। अगर हम उनकी इस कीर्त्ति को बचाकर रख सके, तो यह उनके प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

बन्धुवर शास्त्रीजी रूढ़िवाद के भी भंजक थे। आर्यसमाजियों में ऐसे कम लोग मिलेंगे, जिन्होंने अन्तरजातीय विवाह किया हो। परन्तु, उन्होंने ऐसा कर कई दशक पहले समाज में एक नया आदर्श पेश किया। आज जैसा पहले कोई सरकारी प्रोत्साहन नहीं था। फिर भी, उन्होंने अन्तरजातीय विवाह कर सामाजिक क्रान्ति की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम बढ़ाया। वह मुझसे भी बाजी मार ले गये, क्योंकि कम्युनिस्ट सिद्धान्त में विश्वास करने के बावजूद मैं अन्तरजातीय विवाह करने में सफल नहीं हो सका। मात्र मैं यही कर सका कि रूढ़िवादी विवाह-पद्धति को तिलांजलि देकर आर्यसमाजी पद्धति से मैंने अपना विवाह किया।

शास्त्रीजी ने अन्तरजातीय विवाह का जो मार्ग प्रशस्त किया, उसपर चलना सामाजिक क्रान्ति के लिए अत्यावश्यक है। ऐसा करके ही हम समाज से जातीयता के संकीर्ण भाव को समाप्त कर सकते हैं। जातिवाद हमारे समाज के लिए अभिशाप बन गया है। यह आपसी कलह और मनमुटाव की जड़ है। समाज के स्वस्थ विकास के लिए इसका मूलोच्छेदन जरूरी है। इस दिशा में स्व० रामनारायण शास्त्री के पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए नौजवानों को आगे बढ़ना है।

अपने सैंतीस वर्षों के सम्पर्क में मैंने यही पाया कि, भाई शास्त्रीजी का व्यक्तित्व विविध गुणों से परिपूर्ण था। जो कोई भी उनसे मिलता, आकर्षित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए बिना नहीं रहता। वह बड़े ही मिलनसार और सरल स्वभाव के थे। कुशल वक्ता होने के नाते उनकी आवाज में वज्र जैसी शक्ति थी। उनकी संकल्पशक्ति भी बेजोड़ थी। जो कुछ भी निश्चय करते, उसे पूरा करने की धुन उनमें लगी रहती। स्मरणशक्ति भी उनकी बड़ी तेज थी। जिसे एक बार देख लेते, उसे जल्दी भूलते नहीं। देशभक्ति की भावना उनमें सराबोर थी। दीन-दुखियों के वह सच्चे माने में मित्र थे। ऐसे व्यक्ति के असामयिक निधन से निश्चय ही समाज और देश की भारी क्षति हुई है। वैसे व्यक्तित्व को अभी और जिन्दा रहने की आवश्यकता थी।

शास्त्रीजी यदा-कदा दिल्ली भी जाया करते। मेरी प्रबल इच्छा के बावजूद वह कभी मेरे साथ ठहरे नहीं। वह जब भी दिल्ली जाते, संसद्-सदस्य श्रीप्रकाशवीर शास्त्री के यहाँ ठहरते। उनके दिल्ली-प्रवास का समाचार मुझे बराबर प्रकाशवीरजी से मिल जाया करता। हम दोनों एक दूसरे का समाचार प्रकाशवीरजी के माध्यम से ही जान लिया करते; क्योंकि बहुधा मिलने का समय नहीं मिल पाता था। वह जिस धन्धे को लेकर दिल्ली आते, उसे जल्दी-जल्दी पूरा कर लौट जाते।

स्व० प्रकाशवीर शास्त्री और स्व० रामनारायण शास्त्री के बीच बड़ा ही घना सम्बन्ध था। दोनों की आत्मीयता बेजोड़ थी। ऐसा लगता था कि, दोनों एक दूसरे के पूरक थे। दोनों एक दूसरे के प्रबल प्रशंसक रहे। परन्तु, दोनों के जीवन के अन्तिम दिनों में यह स्थिति बनी नहीं रह सकी। दोनों एक दूसरे के आलोचक बन चुके थे।

मैं अपने संस्मरण के इन शब्दों के साथ अपने अनन्य मित्र स्व० रामनारायण शास्त्री के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

●

- *"ईश्वर—ईश्वर चरम जीवनशक्ति का नाम है। यह शक्ति समय के साथ बदलती रहती है। उस ईश्वर में विश्वास मत रखो, जो समयानुसार ढाला न जा सके।"*
- *"अवकाश—छुट्टी नर्क का दूसरा नाम है। दुःख पाने का सबसे बड़ा कारण अवकाश है, जिसमें हम सोचें कि हम प्रसन्न हैं अथवा नहीं।"*

—बर्नार्ड शा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराजेय संघर्षशील व्यक्तित्व : बटुकजी

▢ सनत्कुमार शर्मा

२८-०१-७८ : सरस्वती-मन्दिर.....। अपरिचित जगह..... जिन्हें आज तक देखा नहीं..... ऐसे परिचितों तक पहुँचाने के लिए प्रोपर चैनल..... बोल सकने में पथ-प्रदर्शक नहीं, कर्णधार का बोझ सँभालकर मुझे ले चलने का कार्यक्रम श्रीश्रुतिदेवजी ने निश्चित कर दिया..... कल सुबह आठ बजे.....।

२९-०१-७८ : कार्यक्रम निश्चित हो जाने के बावजूद 'सरस्वती मन्दिर' में श्रीश्रुतिदेवजी की बारह घण्टों की लम्बी प्रतीक्षा के बाद रात के साढ़े नौ बजे 'बटुक'जी यानी रामनारायण शास्त्री के परिवार तक पहुँचा..... जहाँ घनीभूत वेदना, निराशा और कुण्ठा के सागर की उत्ताल तरंगें सबको अपने में निमज्जित किये हैं..... निस्तब्धता के इस दुर्भेद्य और विषादमय परिवेश में मैं तो बिलकुल..... निरीह था.....। श्रुतिदेवजी की भी कहाँ कुछ चल पाई थी..... उस माहौल में? कोई 'फुआजी' थीं वहाँ..... चुप्पी तोड़ने की औपचारिकता में..... सन्दर्भ से जो कि कटी हुई नहीं थीं..... लेकिन जुट भी कहाँ पा रही थीं.....? कोई इलाज है भी!

अबतक बच्चों को देखा भी कहाँ था.....? बेटी अलका बैठी है... सामने... वही नाक-नक्श 'बटुकजी' की आकृति की प्रतिच्छाया.... बिना किसी के बताए पहचान लेने लायक.....। वेदना... बेकली... मायूसी की प्रतिमूर्त्ति..... बिलकुल मासूम.....। बार-बार लग जाता है..... बटुकजी सामने बैठे हैं..... सब निश्चल हैं...... निस्पन्द..... हलचल पैदा करने की कोशिश भी निष्फल निष्प्रभ हो जा रही है.....। दोनों बच्चे कहीं बाहर हैं.....।

इस वेदनामयी..... सृष्टि में..... रह पाना भी..... अलग है। पाना भी..... बहुत-बहुत मुश्किल.....। इस 'आघात' के सामने किन्हीं शुभेच्छुओं की, स्नेहीजनों क़ी संवेदनाओं की तथा राहत पहुँचाने की इच्छाओं की क्या वकत है.....।

विषाद के इस तूफान को थमना ही चाहिए..... माँ को पिता की भूमिका निभानी ही है..... दूसरी कोई राह है भी.....? 'बाँटि न लैहैं कोय'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की चलन बटुकजी के मामले में थोड़े बदल जानेवाली है.....! प्रिय परिजनों का, शुभेच्छुओं का स्नेह, शुभकामनाएँ इस अवसर पर छाए विषाद और 'दैन्य' को दूर कर पाने पर ही सार्थक हो सकती हैं.....। बच्चों में 'बटुकजी' के गुण होने ही चाहिए..... उनमें सरजमीन पर खड़े होने की वास्तविकताओं का डटकर सामना करने की लियाकत होनी ही चाहिए। उनपर 'दैन्य' की छाया कभी न पड़े, यही श्रेयस्कर है।..... जमीन और रुपयों की पृष्ठभूमि की महत्ता नहीं थी 'बटुकजी' की..... न ही..... किसी से उधार ली हुई लियाकत थी.....। वह अपनी स्वत: विकसित लियाकत थी उनकी, जिसकी पुख्ता नींव श्रीसीतारामाश्रम में पड़ी थी.....। वह आक्रामक लहजा, जुबान की वह अभिभूत कर देनेवाली विशिष्टता..... अपने लक्ष्य की प्राप्ति में जी-जान से पिल पड़ने की वह विशिष्ट प्रवृत्ति..... तूफान वर्षा कर देनेवाला आवेश..... वह सब 'बटुकजी' की अपनी खास चीज थी..... स्वार्जित थी..... उधार ली हुई नहीं।

जिस कुल में पैदा हुए, उसकी एक विशिष्टता है—'अहसान लाद देंगे, किन्तु किसी को अपने ऊपर अहसान लादने नहीं देंगे।' बच्चों में परिवार में इस गुण का विकास हो, ऐसी कामना है।

सुविधाओं के पीछे भागने के बदले कठिनाइयों से जूझने की लियाकत कहीं ज्यादा कीमती नहीं होगी.....?

'लाल फीता की प्रकृति में किसी बदलाव की गुंजाइश कहाँ है.....? तब जुबानी आश्वासनों और दिलासा की छलनामयी मरीचिका की पहचान जितनी जल्दी हो जाय, यही बेहतर है.....। पाँव धरती पर रहे..... इसमें क्या बुरा है.....?

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः!'

(छः-सात साल की उम्र से पन्द्रह-सोलह की उम्र तक साथ रहने, पढ़नेवालों में से एक जो बिहटा-आश्रम में पं० रामनारायण शास्त्रीजी को छात्रावस्था में 'बटुकजी' के नाम से जानते थे)

बटुकजी : बिहटा आश्रम से कलकत्ता

स्वामी सहजानन्दजी सरस्वती (बिहटा-आश्रम) की चिट्ठियाँ डाक से रोक ली जाती थीं, सम्भवतः सी० आइ० डी० वालों के इशारे पर..... और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ लेने के बाद आश्रम में भेजी जाती थीं..... हमीं लोगों ने बिहटा पोस्ट ऑफिस की मुहरों को बारीकी से देखकर यह निष्कर्ष निकालने में मदद की थी.....। एक खत पर किसी महीने की पहली तारीख की मुहर थी..... उस दिन उसे रोक लिया गया था..... दूसरे दिन दो तारीखवाली मुहर मिलाकर तो दी गई थी, लेकिन ऐसा करने में २ के साथ १ का सामना होने पर '12' ऐसा हो गया था। इसने स्वामीजी के सन्देह को पुष्ट कर दिया था।

इस हालत में गोपनीय और अत्यन्त आवश्यक सन्देश अब विश्वस्त दूत द्वारा भेजा जाना आवश्यक बन गया था.....।

स्वामीजी किसानों की समस्या हल करने की कोशिश में, सारे भारत में किसान-आन्दोलन चलाने के लिए पहल कर रहे थे..... इस काम के लिए सारे देश के लोगों से, जिनके विचार और कार्यक्रम इनसे मिलते थे, सम्पर्क साध रहे थे.....। बंगाल में इनका साथ कृषक पार्टी या इसी तरह की नामवाली कोई संस्था दे रही थी..... इस संस्था के नेताओं में फजलुल हक, सुहरावर्दी आदि बंगाल के प्रसिद्ध नेता थे। स्वामीजी को इनके पास कुछ सन्देश भेजने थे। डाक से दूत भेजने की सूचना दे दी गई थी। सन्देश लेकर आश्रम से बटुकजी गये थे। इस समय बटुकजी की उम्र आठ या नौ साल की रही होगी। शरीर के लिहाज से बटुकजी अत्यन्त छोटे थे। जैसे गीता की एक बड़ी पुस्तक के सामने कुछ एक इंच लम्बी-चौड़ी 'गुटका' गीता।

कलकत्ता शहर में रहनेवाले कार्यकर्त्ता इन्हें नहीं खोज पाये थे..... प्लेटफॉर्म पर अपने खोजनेवालों को बटुकजी ने ही खोज़ निकाला था।

सही जगह पर सही व्यक्ति को सन्देश थमाकर बटुकजी कई जगह (कलकत्ता में ही) घूम आये थे। संस्कृत परीक्षा-समिति से कई जानकारियाँ तथा पुस्तक-विक्रेताओं से कई दुर्लभ पुस्तकों के मिल सकने की सूचना लेकर दूसरे दिन ही लौट आए थे। सौंपे गये कामों को अच्छी तरह पूरा करने के लिए बहुत-बहुत प्रशंसा की गई थी उनकी.....।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यवीर पण्डित रामनारायण शास्त्री

□ कैलाशपति मिश्र
(पूर्व-वित्तमन्त्री, बिहार)

पण्डित रामनारायण शास्त्री से पहला परिचय सन् ४६ में हुआ। परिचय भी विरोधाभास से प्रारम्भ हुआ। आर्यसमाज द्वारा चालित 'आर्यवीर दल' नाम की एक संस्था थी। शास्त्रीजी आर्यजगत् के श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता होने के कारण आर्यवीर दल के प्रसार में लगे हुए थे। मैंने उन दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक का जीवन प्रारम्भ ही किया था। जवानी का जोश, सिद्धान्त की कट्टरता तथा स्वभाव में रोष की मात्रा अधिक थी। स्व० शास्त्रीजी में भी ये गुण लगभग समान ही दिखायी देते थे। वे आयु में बड़े होते हुए भी अत्यन्त कर्मठ थे। यदा-कदा आर्यवीर दल के काम तथा संघ की शाखा के बीच टकराव हो जाया करता था। सन् ४८ के प्रारम्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबन्ध लगा और वह लगभग डेढ़ वर्ष तक बरकरार रहा। यह अवसर था, जिसने सांस्कृतिक धरातल पर खड़े हृदयों को झकझोर डाला। आर्यवीर दल के कार्य शिथिल पड़ गये। संस्कृति तथा राष्ट्रीयता पर अकारण होते हुए प्रहार से शास्त्रीजी चिन्तित हो उठे। देश में अनेक सज्जन-पुरुष संघ को निकट से समझने का प्रयत्न करने लगे और जैसे-जैसे बात ध्यान में आई वैसे-वैसे दु:खित हो उठे। लम्बे प्रतिबन्ध के प्रहार से घायल संघ प्रतिबन्ध समाप्त होते ही सम्भलने लगा। इसके बाद वातावरण में एक नये आयाम का पदार्पण होने लगा। संघ के जीवटपन से आर्यजगत् के बहुत से नेता प्रभावित हुए। आर्यसमाज की विचारधारा मूर्त्तिपूजन से मेल नहीं खाती। संघ सब रूढ़िवादों से ऊपर उठ जाने के बाद भी कुछ बातों को लेकर कुछ लोगों के लिए विवाद का विषय बना रहा। संस्कृति का प्रतीक भगवा ध्वज तत्त्व का प्रतीक है। इसे नमन करना तत्त्व को अंगीकार करना है। आर्यसमाज के कतिपय कार्यकर्त्ता स्वीकार करने को तैयार नहीं होते थे। हिन्दू शब्द भी कभी-कभी विवाद का विषय बन जाता था। पण्डित रामनारायण शास्त्रीजी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने की कोशिश की। पूजनीय गुरूजी के कार्यक्रमों में भाग लेना शुरू किया और स्वयंसेवकों की मण्डली में अनायास ही आना-जाना प्रारम्भ कर दिया। अन्त:करण की ऊँचाई के कारण न उन्हें संघ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझने में देर लगी, न तत्त्वज्ञान अपनाने में संकोच हुआ और न ध्वज को नमन करने में ही वैचारिक कठिनाई अनुभव हुई। वे देखते-देखते एक बहुत उच्च स्वयंसेवक बन गये।

पण्डित रामनारायण शास्त्री संस्कृत के विद्वान् थे। उन्हें भाषाविज्ञान पर अधिकार था। आर्यसमाज के कट्टर सार्वदेशिक नेता थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती का उपदेश रक्त की बूँद-बूँद में घुला हुआ था। इस आधार को उन्होंने कभी छोड़ा नहीं। लेकिन उनमें समन्वय की अद्भुत क्षमता थी। संघस्थान में या संघ-कार्यालय में कभी-कभी शिशुओं के साथ घुल-मिलकर ऐसे रम जाते थे कि कभी इस क्षेत्र में नयापन नहीं दिखाई पड़ता था।

श्रीशास्त्रीजी राजनैतिक दल से अलग रहते हुए भी राजनीतिक विचारधारा से अपने को अलग नहीं रख सके थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि राजनीति राष्ट्रीयता, संस्कृति तथा अध्यात्म पर आधारित होनी चाहिए। इसके लिए उनका मन मचलता रहता था। उनके इन गुणों ने हम लोगों को और निकट ला दिया। वे आयु में, विद्वत्ता में तथा कर्मठता में बड़े रहने के बाद भी पदों के अनुसार अधिष्ठित सबको भरपूर सम्मान देते थे। राजनीति को शुद्ध करने के लिए उनके हृदय में कुछ वर्ष पहले आग धधकने लगी थी। पिछले ८-१० वर्षों में कई बार मुझसे मिले थे। उन्होंने कहा कि अब नौकरी से मुक्त होना चाहता हूँ और आपके आदेशानुसार राजनीति में कूद पड़ना चाहता हूँ। मैं उनकी आर्थिक स्थिति तथा उनके कन्धे पर पारिवारिक बोझ से परिचित था। इसलिए जोर देकर नौकरी से हटने से रोक देता था। फिर भी वे राजनीतिक मंचों से सभाओं में अपना विचार रखने में घबड़ाते नहीं थे। धर्म-प्रचार के साथ-साथ उनका कार्यक्षेत्र शिक्षा-जगत् था। राष्ट्रभाषा-परिषद् की सेवा करते रहे, शोधकार्य में लगे रहे, साथ ही साथ बीसों शैक्षणिक संस्थाओं को जन्म देने, उन्हें शक्ति देने एवं उसे सफल बनाने में जुटे रहते थे। आर्यसमाज द्वारा निर्देशित कार्यक्रमों को पूरा करने में वे कभी पीछे नहीं रहते थे। किसी भी क्षेत्र में उनका स्वभाव निर्भीक तथा सहनशील था। पारिवारिक आर्थिक स्थिति की उन्होंने कोई चिन्ता नहीं की। शास्त्रीजी को स्वभाषा का उचित स्थान प्राप्त न होना निरन्तर खटकता रहता था। हिन्दी-आन्दोलन में वे एक सक्षम सेनानी रहे। ऐसा व्यक्तित्व विरले ही देखने को मिलता है। शास्त्रीजी दिवंगत हो गये, लेकिन उनके जीवन की कृतियाँ समाज पर, शिक्षा-जगत् पर तथा राष्ट्रीयता पर अमिट छाप छोड़ गई हैं। उन्हें शतबार नमस्कार है। जिन लोगों ने शास्त्री-स्मृतिग्रन्थ प्रकाशित करने का निर्णय किया है, उन्हें भी धन्यवाद है।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वजनप्रिय एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व : शास्त्रीजी

□ भोलानाथ झा

भारत का यह अहोभाग्य है कि परमब्रह्म की असीम कृपा तथा देशवासी सज्जनों के पुण्य-प्रताप से समय-समय अपने में ऐसे अनेक प्रभावशाली व्यक्तित्व का आविर्भाव होता है, जिनसे चेतना जागृत होकर समाज को पतन की ओर से बचाकर उन्नति की ओर अग्रसर होने में सदा सहयोग प्राप्त होता रहा है।

ऐसे ही एक प्रभावशाली व्यक्तियों में अपने सर्वजनप्रिय पं० श्रीयुत रामनारायणजी शास्त्री थे। पटना जिला के अन्तर्गत चिन्तामणिचक गाँव में जन्म लेकर, अध्ययन द्वारा अपना काफी विकास कर, पटना में आकर बसने के बाद आपकी सूझ-बूझ से समाज में एक उत्साहपूर्ण वातावरण उत्पन्न हो गया था। सब प्रकार से समाज की उन्नति के लिए प्रयत्न में आपने अपना समय, शक्ति, बुद्धि आदि लगाकर राष्ट्र का जो उपकार किया है, वह अविस्मरणीय है।

एक अत्यन्त साधारण परिवेश में रहते हुए भी अपना समय, शक्ति और बुद्धि का उपयोग जीवन भर राष्ट्र के उत्थान के लिए करते हुए आप सर्वजनप्रिय तथा एक प्रेरणा-केन्द्र बनकर उभर आये थे और स्थानीय जनों में आपने जो उत्साह का वातावरण निर्माण किया, वह सदा सर्वदा प्रेरणादायक बना रहेगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक साधारण कार्यकर्त्ता के नाते मेरी पहली भेंट आप से पटना के राजेन्द्रनगर के एक भाग में सज्जनों की एक बैठक में हुई। पहली भेंट में ही आपका ऐसा स्नेह मिला, जो सदा स्मरण रहेगा। आपका असीम स्नेह एक प्रेरणा के रूप में एवं संघ के छोटे-बड़े कामों में जो सहयोग और प्रेम प्राप्त होता रहा वह सदा अविस्मरणीय बना रहेगा।

आपात स्थिति में जिस समय हम संघ के अनेक कार्यकर्त्ता कारागार में बन्द थे, उस समय भी आप निर्भीक रहकर सदा कार्यरत कार्यकर्त्ताओं को जो प्रेरणादायक सहयोग देते रहे, वह भी अविस्मरणीय रहेगा। हमारा दुर्भाग्य है कि ऐसे हमारे एक कार्यकर्त्ता हम लोगों के कारावास से निकलते ही हमको छोड़कर चले गये। हृदय में असीम आघात का बोझ लेकर भी भगवान् से हमारी प्रार्थना है कि आपकी जीवन-स्मृति हमें सदा स्फूर्त्ति प्रदान करती रहे।

बि० प्रा० सह-संचालक
रा० स्वयं सेवक संघ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० रामनारायण शास्त्री और सरस्वती शिशु-मन्दिर

▢ राधामोहन सिंह

स्व० पं० रामनारायण शास्त्रीजी अब नहीं रहे। उनका स्मरण आते ही हृदय भर आता है, आँखें छलछला उठती हैं। कौन जानता था कि उनका अन्त इतना निकट आ गया है और इस तरह हम लोगों के बीच से उठकर वे चले जायेंगे? कौन जानता था कि महाकाल का निमन्त्रण आने में कुछ ही समय की देर है। वे आज़ हम लोगों से दूर हैं—बहुत दूर, इस दूरी का कोई अन्त नहीं किन्तु फिर भी ऐसा मालूम हो रहा है कि वे..... वे दूर कहाँ हैं..... बहुत ही निकट हैं..... प्राय: ही वे हमारे सामने दिखाई देते रहते हैं..... किसी समय भी हृदय से दूर नहीं जाते।

मैंनें स्व० शास्त्रीजी का प्रथम दर्शन प्राप्त किया था पटना में ही, जब कि शिशु-मन्दिर की स्थापना के लिए प्रथम बैठक हुई थी। देखने में सीधे, सरल किन्तु कर्मठ।

तब से मैं उनके मार्गदर्शन में काम करता रहा। शास्त्रीजी मार्गदर्शक नहीं, सहोदर, सखा तथा अभिभावक भी थे। वे जबतक शिशु-मन्दिर के सचिव-पद पर रहे—तबतक मुझे किसी तरह की चिन्ता नहीं थी। सभी प्रकार की चिन्ताओं तथा चिन्तन का भार वे स्वयं वहन करते रहे। यदि किसी समय कुछ गलतियाँ हो भी जातीं, तो उन्हें अपने माथे लेकर मेरी पीठ पर हाथ रखकर बहुत ही वात्सल्य भाव से कहते—कोई बात नहीं, गलतियाँ तो होती ही रहती हैं, पीछे की ओर मत देखिए, बस बढ़ते जाइए—आपने जिस मार्ग को अपनायां है, वह कण्टकाकीर्ण तो है ही, आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते रहें-बढ़ते रहें।

शिशु-मन्दिर में कितनी ही बार ऐसा समय आया कि जब भी मैं उन गलतियों के विषय में कुछ भी बोलने को होता, तो शास्त्रीजी स्वयं कुछ बोल जाते। मैं चुप रहने पर विवश हो जाता।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि शास्त्रीजी एक सच्चे कर्मयोगी थे। उनको कार्य में विश्वास था। कुशलतापूर्वक कर्म करके उसे भोग का रूप देने का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण भी विद्यमान था। वेद-शास्त्रों का अध्ययन उनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य था। उसी अध्ययन के कारण उनमें वे सभी गुण विद्यमान थे, जो एक मानव में होना अनिवार्य गिना जाता है।

इस छोटी-सी अवधि में ही उन्होंने मेरे हृदय में अपने कर्त्तव्य की ऐसी छाप लगा दी कि उसे जीवन के अन्त तक भूल न सकूँगा। अब भी आँखों के सामने अनेक स्मृति-चिह्न उभरते हैं और फिर आँसुओं में डूब जाने की चेष्टा करते हैं पर डूब नहीं पाते।

मुझे पूर्णतया याद है वह एक अगस्त सन् १९७७ ई० का दिन, उसी दिन शिशु-मन्दिर में लोकमान्य तिलक की पुण्य-तिथि मनाने का कार्यक्रम था। सभी तैयारियाँ हो चुकी थीं। बालकों की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था। इसी अवसर पर दो मन्त्री भी आनेवाले थे और उसी दिन प्रातःकाल ही मैं पेट के दर्द से परेशान हो गया। दवा-इन्जेक्शन आदि से कुछ भी लाभ नहीं हुआ। डॉक्टरों का कहना था कि इसी समय ऑपरेशन करना होगा, अन्यथा प्राण संकट में पड़ सकता है। किन्तु मेरे पास..... पैसों का इतना अभाव था कि कहा नहीं जा सकता। शास्त्रीजी ने मेरे मन की बात को समझ लिया, उन्होंने कहा—आप चिन्ता न करें सारी व्यवस्था हो जायेगी, आप ऑपरेशन के लिए तैयार हो जायँ।

इधर मेरा ऑपरेशन सफल हुआ और उधर पुण्य-तिथि का कार्यक्रम भी। कार्यक्रम में मैं नहीं था—उस समय मुझे चेत भी कहाँ था, अचेत कर दिया गया था, किन्तु दूसरे दिन जितने भी अभिभावक सहयोगी मुझसे मिलने के लिए आये, उनका कहना था कि आपके मन्त्री महोदय काफी दुःखी थे। आपके सम्बन्ध में सूचना देने के पहले ही उन्होंने कहा कि कार्यक्रम में उत्साह नहीं है—इसका कारण हमारे प्रधानाचार्यजी अभी ऑपरेशन-थियेटर में हैं और इसी कारण कार्यक्रम उत्साहहीन-सा लग रहा है, इसमें कमियाँ महसूस हो रही हैं। इतना ही कहने में वे द्रवित हो गये। उनकी आँखों में आँसू झलक पड़े। वे हमारे मार्गदर्शक ही नहीं, सच्चे अभिभावक भी थे।

२३ जनवरी, १९७८ ई० की सन्ध्या के समय मैं कार्यालय में शिशु-मन्दिर का कार्य कर रहा था, अचानक बाहर से आवाज आई, 'हमारे प्रिंसिपल साहब हैं!' मैं उनकी आवाज को पहचान गया। उठकर बांहर आया और फिर हम दोनों कार्यालय में बैठ गए। बातचीत का प्रारम्भ शास्त्रीजी ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही किया। मेरे स्वास्थ्य के विषय में। उन्होंने पूछा आपका स्वास्थ्य कैसा है? अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें। आपको समय पर भोजन और दूध बहुत आवश्यक है। यदि इसमें कुछ भी असुविधा हो तो घर पर आकर भोजन कर लिया करें, दूध के लिए भी। दूध की तो अपने घर में कमी नहीं है। वे इस विषय में कहते जा रहे थे-कहते जा रहे थे और मैं..... मैं सोच रहा था, कैसे महापुरुष हैं ये।

तीन-चार दिन पहले तो इनका स्वास्थ्य चिन्ताजनक था और आज कहाँ-कहाँ से घूमकर आ रहे हैं। इस समय इनको घर पर जाकर आराम करना था और अपने स्वास्थ्य की ओर न देखकर आये हैं यहाँ मेरे स्वास्थ्य के विषय में पूछने और मेरे पथ्य-परहेज की व्यवस्था करने की ही चिन्ता हो रही है इन्हें। मैं इन्हीं बातों को सोच रहा था। उनकी विचारधारा फिर शिशु-मन्दिर की आर्थिक स्थिति की ओर चली गई, उसके लिए क्या करना चाहिए? इसका विचार करने के लिए ही मैं आपके पास आया हूँ।

इतना सुनते ही मेरी विचारधारा भंग हो गई। मैंने कहा—आप पूर्णतः स्वस्थ तो हो जाइए, फिर इसपर विचार-विमर्श हो जाएगा, यह समस्या एक दिन में तो सुलझनेवाली है नहीं! उन्होंने कहा—'मैं बिलकुल ठीक हूँ। समिति को बुलाकर धन-संग्रह करने का प्रबन्ध करना चाहिए। शिशु-मन्दिर ठीक से चले, पढ़ाई-लिखाई, शिक्षण-कार्य उचित रूप में हो, इसके लिए आप बराबर चिन्तित रहते हैं तो क्या इसमें मेरा कोई हक नहीं है? मुझे भी इस कार्य में सहयोग देना है। मैं पूर्णतः ठीक हूँ। इस समय भी सेक्रेटेरिएट से घूमकर आ रहा हूँ रिक्शे में। इतना कहकर वे हँस दिये। उन्होंने कहा—मुझे राष्ट्रभाषा-परिषद् के डायरेक्टर का पद मिल गया है, किन्तु न जाने क्यों वर्त्तमान डायरेक्टर चार्ज देना नहीं चाहते।

मैंने देखा उनके चेहरे पर चिन्ता की एक हल्की-सी रेखा भी नहीं है। मैं उनके व्यक्तित्व की ओर ही सोचता रहा और वे न मालूम क्या-क्या समझाते रहे।

घड़ी में ८.२० का समय हो गया। उन्होंने कहा—अब मैं घर जाता हूँ—आप अपने स्वास्थ्य की ओर पूरा ध्यान रखें। वे उठकर बाहर आए मैं भी शिशु-मन्दिर के मुख्य द्वार तक उनके साथ-साथ आया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे चले गये। पर यह कौन जानता था कि वे सदा के लिए चले जायेंगे। दूसरे दिन प्रातः काल ही सूचना प्राप्त हुई कि शास्त्रीजी सदा-सदा के लिये चले गये! आश्चर्य? ऐसा मालूम पड़ा कि सिर पर पहाड़ टूट पड़ा हो! विश्वास नहीं हो रहा था। मैं साइकिल लेकर दौड़ गया राजेन्द्रनगर की ओर। वहाँ जाकर जो दृश्य देखा—कमरे में उनके निष्प्राण देह को फूल-मालाओं से सजाया जा रहा है—उनकी इस देह पर नये-नये रेशमी वस्त्र, वेद की ऋचाओं का पाठ और दूसरी ओर उनकी बिलखती पत्नी और बच्चे..... समझ में नहीं आ रहा था कि किस तरह वे झेल सकेंगे अपने छोटे से हृदय में इतने बड़े तूफान को।

प्रदेश संगठन-मन्त्री
संस्कार भारती, बिहार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे प्रिय, आत्मीय और श्रद्धेय : शास्त्रीजी

□ नरसिंह बैठा

पं० रामनारायण शास्त्रीजी इतनी जल्दी हम सबको छोड़कर चले जायेंगे, ऐसा मैंने आजतक कभी नहीं सोचा था। शास्त्रीजी मेरे अत्यन्त ही आत्मीय थे। एक प्रकार से वे मेरे प्रेरणास्त्रोत थे। मेरा आर्यसमाज से सम्बन्ध अपने छात्र-जीवन के दौरान ही सन् १९४२ ई० से रहा है। आर्यसमाज के सिद्धान्तों एवं उसके विचारों से मेरा आजतक कोई भी मतभेद नहीं रहा। मैं तो एक प्रकार से आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता के रूप में बहुत दिनों तक कार्य किया। आर्यसमाज से अत्यधिक लगाव रहने के कारण ही मैं शास्त्रीजी के अत्यन्त ही निकट रहा और उनसे मेरा बराबर ही सम्बन्ध बना रहा। शास्त्रीजी से मेरा सर्वप्रथम परिचय सम्भवतः सन् १९४६ ई० को हुआ। सन् १९४६ ई० में आर्यसमाज द्वारा नौजवानों और छात्रों का एक संगठन संचालित हुआ था। उस संगठन का नाम 'आर्यवीर दल' था। वह उस वक्त अत्यन्त ही सुचारु रूप से सारे राज्य में चलाया जा रहा था। मैं भी 'आर्यवीर दल' का एक सक्रिय एवं प्रमुख स्वयंसेवक था। सन् १९४६ ई० में आर्यसमाज नरकटियागंज का वार्षिक समारोह हुआ था। उस समय मैं 'आर्य वीर दल' का स्वयंसेवक था। उस दरम्यान ही मुझे शास्त्रीजी के सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आर्यसमाज नरकटियागंज के उस समारोह में ही शास्त्रीजी से मेरा सर्वप्रथम परिचय हुआ। मेरा शास्त्रीजी से किस रूप में परिचय हुआ और किन परिस्थितियों में हुआ, इसकी भी एक बहुत ही लम्बी कहानी है।

हरिजनों से कुछ लोग छुआछूत का भाव रखते थे। आर्यसमाज ने छुआछूत या भेद-भाव की भावना को खत्म करने का संकल्प किया था, उसी कारण ही मैं आर्यसमाज से प्रभावित हुआ। उस समय आर्यसमाज के लोग एक प्रकार से हरिजनों को उचित स्थान देने हेतु एवं छुआछूत या भेद-भाव को खत्म करने के लिए समाज से संघर्ष किया करते थे। आज इतना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो छुआछूत का भेद-भाव कम हुआ है, उन सबका श्रेय आर्यसमाज को एक प्रकार से दिया जाना चाहिए। शास्त्रीजी से मेरा जो परिचय कराया गया था, वह हरिजन युवक के रूप में ही हुआ था। प्रथम परिचय के दरम्यान ही मैं शास्त्रीजी से बहुत ही प्रभावित हो गया। शास्त्रीजी जितने दिन आर्यसमाज के समारोह में रहे, उतने दिनों तक उनके भोजन, स्नान आदि सभी प्रकार की सुविधा का प्रबन्ध मुझे अपने साथियों के साथ करने का मौका मिला। एक दिन शास्त्रीजी ने मुझे अपने पास बुलाया। पास बुलाने के बाद शास्त्रीजी ने मुझे बहुत से लोगों के बीच में ही कहा—"आर्यसमाज के लोग छुआछूत, जाति-पाँति का भेद-भाव नहीं मानते हैं, इसलिए आप क्यों मेरे निकट में बैठने से हिचकिचाते हैं।" फिर उसके बाद से उन्होंने मुझसे पूछा—क्या आप पढ़ते हैं, तो मैंने हाँ का उत्तर दिया। क्या पढ़ने में मन लगता है ? तो फिर मैंने हाँ का उत्तर दिया। उसके बाद उन्होंने मेरे उत्साह को बढ़ाने के लिए अन्य अनेक बातों से प्रोत्साहित किया। उसी दरम्यान अनायास ही उन्होंने सबके बीच ही भविष्यवाणी कर दिया कि—"तुम्हारा भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है। तुम आगे चलकर बहुत कुछ समाज के लिए करोगे।" उनका कहा हुआ यह वाक्य आजतक मुझे याद है और ऐसा लगता है कि उनका कथन बहुत कुछ सत्य निकला। उनके इस कथन से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी ही प्रेरणा का फल है, जो मैं आज इस लायक हूँ। मेरी प्रेरणा का स्रोत आर्यसमाज रहा है और शास्त्रीजी जैसे विचारवान् व्यक्ति।

आर्यसमाज के समारोह में जो भी विद्वान् सन्त स्वामी लोग आया करते थे, मैं उनकी बहुत ही सेवा और आदर किया करता था। आज उन्हीं स्वामी और सन्तों के आशीर्वाद का फल है कि मैं आज इतना कुछ कर रहा हूँ। शास्त्रीजी से मेरा नरकटियागंज आर्यसमाज के समारोह में जो परिचय हुआ, उसके बाद से मैं धीरे-धीरे बहुत ही निकट आ गया। मेरा उनके साथ इस प्रकार का सम्बन्ध हो गया था कि मैं उनको जब कभी कहीं देखता, तो मेरा मस्तक उनको देखते ही आदर के साथ झुक जाया करता था। मुझे ऐसा लगने लगता था कि वे मेरे परिवार के सम्माननीय सदस्य हैं।

लगभग ३६ वर्ष हुए, काँग्रेस में मैं आया। अब मेरा यहाँ से राजनीतिक जीवन प्रारम्भ हुआ। उस समय तक मेरी शिक्षा भी समाप्त हो गई थी। मैं अपना पूरा समय काँग्रेस को देने लगा। काँग्रेस में आने के बाद काँग्रेस के सिपाही होने के नाते इलाके की सेवा करने का काफी मौका मिला। कुछ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों के बाद मुझे विधान सभा के निर्वाचन हेतु प्रत्याशी घोषित किया गया। प्रथम बार विधान सभा का टिकट सन् १९५७ ई० में मिला और मैं प्रथम बार में ही चुनाव में भारी बहुमत से विजयी होकर बिहार विधानसभा का सदस्य हुआ। उसके बाद से मैं ईश्वर की कृपा से एवं जनता की शुभकामनाओं से बराबर ही चुनाव जीतता आया हूँ। अभी पिछले साल ही श्रीजयप्रकाश नारायणजी के आन्दोलन को लेकर समूचे भारतवर्ष में एक नया परिवर्त्तन हुआ। बिहार में काँग्रेस भी बहुत ही बुरी तरह से चुनाव में हार गई। काँग्रेस के सत्ता से हट जाने के बाद जनता पार्टी की सरकार सत्ता में आई। देश में जयप्रकाश आन्दोलन को लेकर इतना बड़ा परिवर्त्तन हुआ, किन्तु फिर भी हमारे क्षेत्र की जनता ने काँग्रेस को वोट देकर मुझे विजयी बनाया।

जनता पार्टी के सरकार में आने के पूर्व तक बिहार राज्य में काँग्रेसी मन्त्रिमण्डल में मैं एक मन्त्री था। सन् १९७४ ई० के सम्भवतः नवम्बर-दिसम्बर की बात है, उस समय पूरे देश की स्थिति कुछ और ही थी। श्रीजयप्रकाश बाबू का आन्दोलन बहुत ही तीव्र गति से पूरे भारतवर्ष में फैल रहा था। आन्दोलन अपनी अन्तिम पराकाष्ठा पर था। हम काँग्रेसी नेताओं और काँग्रेस मन्त्रिमण्डल के मन्त्रियों को कहीं भी किसी सभा में आने-जाने की कठिनाई होती थी। किसी भी आयोजन में यदि कोई मन्त्री या नेता जाया करते थे तो यह निश्चित था कि उस आयोजन में कोई न कोई घटना होने की पूरी सम्भावना थी। कहीं-कहीं पत्थर और रोड़े से मन्त्रियों का स्वागत हुआ करता था। पूरे देश में आपात स्थिति की घोषणा कर दी गयी थी। वैसी परिस्थिति में शास्त्रीजी सम्भवतः १९७४ ई० के नवम्बर-दिसम्बर में लगभग शाम को अचानक मेरे निवासस्थान पर एक गाड़ी से पहुँचे। यह भी संयोग था कि जो मेरी मुलाकात उनसे हो गई। शास्त्रीजी के आते ही मैं उनसे बातचीत करने लगा। यों मन्त्रियों की क्या स्थिति होती है, यह तो किसी से छिपी हुई बात नहीं रहती है। मन्त्रियों के एक-एक मिनट का समय अत्यन्त ही कीमती हुआ करता है, किन्तु फिर भी जब कभी शास्त्रीजी मेरे यहाँ आया करते थे, तब मैं उनसे निश्चित रूप से एक अलग कमरे में बैठकर बातचीत अवश्य ही समय निकाल कर एकान्त में किया करता था। मैं कितना ही क्यों न व्यस्त रहूँ, फिर भी उनसे बातचीत किया करता था। उनसे बातचीत के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौरान मुझे कई प्रकार की जानकारियाँ मिला करती थीं। मुझसे वे बराबर ही हरिजनों एवं भूमिहीनों के लिए चिन्ता व्यक्त करते थे। वे हमेशा यही कहा करते थे कि बैठाजी, किस प्रकार से समाज में हरिजनों एवं गरीबों को उठाया जाए। इसपर आप जो भी मदद मुझसे चाहें मैं करने को तैयार हूँ। साथ ही आर्यसमाज के द्वारा आप जो भी सहायता चाहेंगे, मैं उसे उपलब्ध कराने का प्रयास करूँगा। हमेशा उनके मस्तिष्क में यही एक ही प्रश्न उभर कर आया करता था। दिन-रात वे आर्यसमाज के कार्यों में व्यस्त रहते थे। एक माने में देखा जाय तो आर्यसमाज के सिद्धान्तों एवं विचारों का सही पालन करनेवालों में स्व० पं० रामनारायण जी शास्त्री एक थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती के सच्चे सिपाही के रूप में मैं शास्त्रीजी को मानता था। वे निःस्वार्थ भाव से किसी भी व्यक्ति का कोई कार्य किया करते थे। मुझे आजतक यह स्मरण है कि कभी वे मेरे पास अपने किसी भी व्यक्तिगत कार्य से नहीं आये। मैं जब बिहार सरकार का एक मन्त्री भी था, तब उन्होंने कभी मुझे अपनी नौकरी के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा। मैं यह जानता था कि विद्वानों का समय मन्त्रियों से अधिक मूल्यवान् और कीमती हुआ करता है। इसलिए मैं शास्त्रीजी से बातचीत किया करता था। मेरी नजर में शास्त्रीजी एक बड़े ही विद्वान् व्यक्ति थे। शास्त्रीजी को अध्ययन से बड़ा शौक था। उनसे बातचीत करने से मुझे नई बातों की जानकारी होती थी। उनसे बातचीत करने में मेरा मन भी लगता था एवं लाभ भी होते थे। बहुत प्रकार से मुझे शिक्षा भी मिलती थी। उनके मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार की योजनाएँ रहा करती थीं। मुझे सभी जानकारियाँ और सुझाव उनके द्वारा ही बहुत कुछ प्राप्त हुआ करते थे।

पु०सं० 2817

हाँ, तो मैं यह कह रहा था कि सन् १९७४ ई० के नवम्बर-दिसम्बर में आन्दोलन अपने अन्तिम चरम सीमा पर था। उस समय देश की स्थिति कुछ और ही थी। खासकर बिहार में तो और ही भयंकर स्थिति थी। आपात स्थिति की घोषणा हो चुकी थी। वैसी स्थिति में एक दिन शास्त्रीजी शाम को मेरे निवासस्थान पर आए और मुझसे संयोगवश मुलाकात भी हो गई। आते ही शास्त्रीजी ने कहा, "बैठाजी—आपको अभी मेरे साथ ही इस गाड़ी में आर्यसमाज के समारोह में चलना है।" आर० ब्लॉक के नजदीक ही आर्यसमाज द्वारा एक सभा का आयोजन था। मैंने शास्त्रीजी को मुझे नहीं ले

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने का आग्रह किया। उन्हें देश की स्थिति और आन्दोलन के सम्बन्ध में अवगत कराया। मैंने उनको यह भी कहा कि अगर वहाँ जाऊँगा, तो निश्चित ही कुछ हल्ला-गुल्ला होगा। उस समय देश की कुछ ऐसी स्थिति थी भी। मैं तो उस समय बिहार सरकार के काँग्रेसी मन्त्रिमण्डल का एक मन्त्री भी था। इसीलिए मन्त्री होने के कारण सारी परिस्थितियों से पूर्णरूप से अवगत था। फिर भी शास्त्रीजी ने मुझे आर० ब्लॉक के एक सभा में भाषण देने का अनुरोध किया। उन्होंने बहुत जिद की और कहा कि—बैठाजी! आप निश्चिन्ततापूर्वक मेरे साथ चलें। मैं यह वचन देता हूँ कि कोई अप्रिय घटना नहीं घटेगी। भीतर-भीतर ही मैं परिस्थितिवश कुछ सोचा करता था। शास्त्रीजी ने यह भी कहा—मैं तो राजनीति में नहीं हूँ, किन्तु यह जानता हूँ कि जनता किसे कितना चाहती है और उसकी नब्ज क्या है ? मैं बहुत ही असमंजस की स्थिति में पड़ गया। मेरे सामने दो परिस्थितियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ने लगीं। एक सभा में जाने पर अप्रिय घटना घटने की और दूसरी ओर शास्त्रीजी का अनुरोध। शास्त्रीजी का अनुरोध टाला भी नहीं जा सकता था। उनका जो भी आदेश होता, उसे पूरा करने का मेरा कर्त्तव्य होता। अन्त में मुझे शास्त्रीजी के अनुरोध पर झुकना पड़ा और तय करके चला कि चलो देखा जायेगा। शास्त्रीजी के साथ उसी गाड़ी में चल पड़ा। शास्त्रीजी ने सभा में जाकर मेरे आने की सूचना दी। सर्वप्रथम उन्होंने मेरा नागरिक अभिनन्दन किया फिर उन्होंने जनता के सामने मेरा परिचय दिया और लोगों से उन्होंने अपनी ओर से तथा आर्यसमाज की ओर से यह अपील की कि लोग पूर्ण शान्तिपूर्वक बैठाजी की बातें सुनें और पूरे अनुशासन में रहें। शास्त्रीजी के मात्र छोटे से भाषण के पश्चात् मेरा भाषण हुआ और उसके बाद फिर पुनः शास्त्रीजी का भाषण हुआ। लगभग तीन घण्टे तक आयोजन चला और मैं वहीं शास्त्रीजी के बगल में बैठा रहा। यहाँतक न जाने जनता पर भी क्या जादू हो गया था कि वे सारे लोग जबतक आयोजन समाप्त नहीं हुआ, तबतक शान्त होकर बैठे रहे और पूरे अनुशासन में रहे। उस छोटे से आर्यसमाज के आयोजन में लगभग चार-पाँच हजार की भीड़ थी और सारा पण्डाल शान्तिपूर्वक मेरा, शास्त्रीजी तथा अन्य लोगों के भाषण सुने। बीच में किसी भी प्रकार की कोई घटना नहीं घटी। समारोह खत्म हो जाने के बाद मैंने शास्त्रीजी से विदा लिया। इस घटना के बाद से मेरे मन में शास्त्रीजी के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रति बड़ा विश्वास और उनके प्रति बड़ा सम्मान जम गया। उस दिन से मैं जान गया कि यह व्यक्ति कोई साधारण व्यक्ति नहीं। केवल दुबले-पतले शरीर और साधारण वेशभूषा से ही व्यक्ति को नहीं पहचाना जा सकता है। यह दुबला-पतला शरीर और साधारण वेशभूषावाला व्यक्ति बहुत ही महान्, विद्वान् और विलक्षण पुरुष है। इस घटना के बाद से मुझे यह भी पता चल गया कि शास्त्रीजी बहुत ही साहसी और संकल्पनिष्ठ व्यक्ति हैं। जब किसी काम के लिए वे एक बार संकल्प करते, उसको अवश्य ही पूरा करके दम लेते। यह गुण मैं बराबर ही उनमें देखता आया। इस घटना के क्रम में मेरे मन में एक यह भी विश्वास जम गया कि शास्त्रीजी कभी मुझे किसी गलत स्थान पर नहीं ले जायेंगे। इसी विश्वास के कारण ही मैं उनके द्वारा आयोजित आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी-समारोह, जिसका आयोजन बरौनी में भी हुआ था, उसमें सम्मिलित हुआ। उस शताब्दी-समारोह की भी बहुत लम्बी कहानी है। उस समारोह को किस-किस प्रकार से कुछ लोगों ने असफल करने का प्रयास किया, परन्तु समारोह काफी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज का शताब्दी-समारोह सन् १९७५ ई० में पूरे राष्ट्र के विभिन्न स्थानों पर बड़े ही धूम-धाम से मनाया गया। बिहार में भी सर्वप्रथम शास्त्रीजी ही आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी-समारोह आयोजित करने को कृतसंकल्प हुए। इस सम्बन्ध में मेरा पूरा सहयोग प्राप्त होने की आशा को लेकर शास्त्रीजी तन-मन-धन से एकजुट होकर बरौनी में शताब्दी-समारोह करने के लिए पटना से प्रस्थित हुए। शास्त्रीजी बरौनी में शताब्दी-समारोह करने के लिए पटना से तो चले गये, किन्तु उनके कुछ विरोधी लोगों ने समारोह को असफल करने का अपना पूरा प्रयत्न लगा दिया। वे लोग बहुत ही सक्रिय होकर आयोजन को असफल करने के लिए एकजुट हो गये। सन् १९७५ ई० की स्थिति सन् १९७४ ई० की स्थिति से और भी भयंकर थी। पूरे राष्ट्र में आपातस्थिति लगी हुई थी। जनता में बहुत ही आक्रोश था। श्रीजयप्रकाश का आन्दोलन बहुत ही तीव्र गति पर चल रहा था। वैसी स्थिति में पुनः शास्त्रीजी शताब्दी-समारोह करने के लिए कृतसंकल्प हुए थे। इस आयोजन को भी असफल करने की कोशिशें जारी थीं। मेरे पास तो इस समारोह में सम्मिलित न होने के लिए कई धमकी-भरे पत्र भी आये। टेलीफोन पर भी मुझे मना किया गया। बहुत-सी अफवाहें फैलाई गईं। मुझे तो यहाँतक भी कहा गया कि शास्त्रीजी जनसंघी हैं और वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के व्यक्ति हैं। बरौनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में जो समारोह होने जा रहा है, उसमें सब जनसंघ, आर०एस०एस० एवं विद्यार्थी परिषद् के लोगों का सम्मेलन होने जा रहा है। साथ ही शास्त्रीजी के यहाँ आन्दोलन से सम्बन्धित गुप्त बैठक तथा आन्दोलन के बहुत से बड़े-बड़े नेता भूमिगत रहा करते हैं। इसी प्रकार की विभिन्न गलत-गलत अफवाहें मुझे दी गईं। मुझे यह भी कहा गया कि उस समारोह में यदि आप गए तो फिर वहाँ भाषण नहीं होने दिया जायेगा। और बम चलने की नौबत आयेगी। मैं उस समय भी बिहार सरकार का एक मन्त्री था। इसलिए यह स्वाभाविक था कि कुछ देर के लिए मन में बहुत प्रकार की आशंकाएँ उत्पन्न हों। किन्तु फिर भी, मुझे इतना विश्वास था कि शास्त्रीजी कभी मुझे गलत स्थान पर भाषण देने नहीं ले जायेंगे। चूँकि मैं पहले से उनके व्यक्तित्व और उनकी सेवा से बहुत ही प्रभावित हो चुका था। इसलिए मेरे हृदय में उनके प्रति बहुत ही सम्मान और विश्वास था। इसी विश्वास को लेकर मैंने आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी-समारोह में सम्मिलित होने के लिए पटना से कार द्वारा बरौनी के लिए प्रस्थान किया। बरौनी जाकर शास्त्रीजी से मिला। शास्त्रीजी मुझे देखकर इतने प्रसन्न हुए कि उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। उनकी आँखों में खुशी के आँसू भी देखने को मिले। मुझे उन्होंने अपने अनुज के समान गले से लगा लिया । फिर तो मैं वहाँ रात्रि-समारोह में शरीक हुआ और पटना के लिए प्रस्थित हुआ। वहाँ ज़ाकर मैंने जो कुछ भी अफवाहें सुनी थीं, वे सब गलत साबित हुईं। यहाँ यह जानने को मिला कि किस प्रकार से एक व्यक्ति को नीचा दिखाने के लिए तथा बदनाम करने के लिए विरोधियों ने कितना बड़ा षड्यन्त्र रचा था। साथ ही आयोजन को असफल करने के लिए कितनी गन्दी राजनीति लोगों ने एक साधारण और निःस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करनेवाले व्यक्ति शास्त्रीजी के साथ की। मैंने तो वहाँ अपने भाषण में भी इन अफवाहों की चर्चा की थी। वहाँ जाकर मैं और भी चकित रह गया कि शास्त्रीजी के एकमात्र प्रयास से ही कितना बड़ा पण्डाल और भव्य यज्ञशाला आदि बने थे। वहाँ के आयोजन में जो कुछ भी मुझे देखने को मिला, वह सब बहुत ही कम आयोजनों में मिलता है। वहाँ स्थानीय लोगों की मदद भी शास्त्रीजी को मिली थी। कितने बड़े पैमाने पर वह आयोजन किया गया था, यह आँका नहीं जा सकता। उस समारोह की बहुत सारी विशेषताएँ थीं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। वहाँ जाकर जो कुछ भी मैंने अपनी आँखों से देखा, वह सब मुझे स्तम्भित कर देनेवाली बातें थीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या पटना में सुना और क्या मुझे बरौनी में देखने को मिला। उस दिन के बाद से मेरे हृदय में शास्त्रीजी के प्रति और भी श्रद्धा जम गयी। इस घटना से मुझे और भी विश्वास हो गया कि शास्त्रीजी कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति हैं। इस घटना की चर्चा मैंने अन्य व्यक्तियों से भी की।

इसी प्रकार से शास्त्रीजी से मेरा छिटपुट रूप में विभिन्न जगहों में दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ करता था। मेरी अन्तिम मुलाकात मृत्यु के ठीक एक माह पूर्व हुई थी। मैं अपने पुत्र चि० नरेन्द्र के साथ सचिवालय की ओर जा रहा था और शास्त्रीजी अपने ज्येष्ठ पुत्र चि० अभिजित कश्यप के साथ रिक्शा पर जा रहे थे। मुझे देखते ही पहले वे नमस्ते एकाएक बोले। उन्हें देखते ही मेरा भी सिर सम्मान में झुक गया और मैंने दोनों हाथ उठाकर नमस्ते किया। उसके बाद वहीं पर खड़े-खड़े बहुत-सी बातें हुईं। वे कुछ चिन्तित और दुःखी नजर आ रहे थे। मैंने उनसे इसका कारण भी पूछा, किन्तु उन्होंने मुझे कुछ भी नहीं बताया। उस दिन उनका स्वास्थ्य भी गिरा हुआ था। उनकी मृत्यु के पश्चात् मुझे उनके पुत्र द्वारा उस दिन की घटना का कारण बाद में पता चला। निदेशक बनने हेतु वे उस समय अत्यधिक चिन्तित और व्यस्त रहा करते थे। निदेशक बनने के हेतु उन्हें बहुत ही संघर्ष करना पड़ा एवं बहुत-सी बातों को लेकर मानसिक तनाव में रहना पड़ा, जो उनकी मृत्यु का एक कारण बना। उस दिन और अधिक कुछ बातचीत नहीं हो पाई। बस कुछ ही क्षण बाद वे आँखों से ओझल हो गये। उस अन्तिम मुलाकात के बाद से तो फिर शास्त्रीजी इस संसार से ही चले गये।

शास्त्रीजी की मृत्यु के बारे में जब मैंने सुना! तब एकदम स्तम्भित रह गया। विश्वास नहीं हो रहा था कि शास्त्रीजी इतनी जल्दी हम सबको छोड़कर चले जायेंगे। यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं उनका अन्तिम दर्शन नहीं कर सका। किन्तु, मेरी भगवान् से यही प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले। उनका परिवार सुखमय जीवन व्यतीत करे और ईश्वर उनके परिवार के लोगों को शक्ति दें कि वे इस दुःख को सहन कर सकें। खास कर उनके पुत्रों को यह कहना चाहूँगा कि वे अपने पिता के समान ही बढ़ें और मेरी हर शुभकामना उन बच्चों के साथ है। हम सभी का सौभाग्य होगा कि ऐसी स्थिति में हम उनके परिवार के लिए कुछ कर सकें। स्मृति-ग्रन्थ के प्रकाशनकर्त्ताओं को मैं धन्यवाद देना चाहूँगा कि उन लोगों ने मुझे याद किया, इसके लिए मैं आभारी हूँ। ऐसे महान् व्यक्ति के लिए बिहार सरकार,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाज के लोग एवं समाज के विभिन्न वर्ग के लोग चाहे वे किसी जमात के हों, विद्यार्थी परिषद् के हों, सबसे मैं यह् अपील करना चाहूँगा कि शास्त्रीजी की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु कुछ और ठोस कार्य करें। इस पुनीत काम के लिए जो कुछ भी मुझसे होगा, मैं अपने को बहुत बड़ा भाग्यशाली समझूँगा। स्व० शास्त्रीजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तभी सम्भव हो पायेगी, जब हम उनके संकल्प के अनुसार, उस पिछड़े वर्ग, हरिजन, छोटे वर्ग के लोग एवं छुआछूत आदि की भावनाओं को समाज से खतम कर पावें। इन्हीं शब्दों के साथ मैं शास्त्रीजी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

सदस्य-बिहार विधानसभा
पूर्व-मन्त्री, ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार, पटना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरणीय व्यक्तित्व : शास्त्रीजी

❑ रामलखन सिंह यादव

पं० रामनारायण शास्त्रीजी मेरे बड़े ही अभिन्न मित्रों में थे। जिस दिन शास्त्रीजी की मृत्यु हुई थी, उस दिन दुर्भाग्यवश मैं पटना में नहीं था, जिसका मुझे बहुत ही अफसोस है। पटना से बाहर होने के कारण मैं उनका अन्तिम दर्शन नहीं कर सका। उनके निधन का समाचार दो दिन बाद मुझे समाचारपत्र द्वारा ज्ञात हुआ। समाचार पढ़ते ही मैं तो कुछ देर तक विचारों में डूब गया। एकदम स्तम्भित हो गया। समाचारपत्र में निकले हुए समाचार पर विश्वास नहीं हो रहा था। मुझे क्या मालूम था कि शास्त्रीजी इतनी जल्दी हम सबको छोड़कर चले जायेंगे। ऐसा मैं सपने में भी नहीं सोचा था। आजतक मुझे यह विश्वास/नहीं हो पाता है कि शास्त्रीजी का निधन हुआ है। जब कभी उनके सम्बन्ध में सोचता हूँ, तब उनका मुसकराता हुआ चेहरा मानसपटल पर स्पष्ट रूप से दीखने लगता है। अभी उनके नाम के पूर्व 'स्व०' शब्द लगाने में लेखनी रुक जाती है, आँखें डबडबा जाती हैं और हृदय कचोटने लगता है।

पं० रामनारायण शास्त्रीजी से मेरा सर्वप्रथम परिचय जेल के बन्दी के रूप में प्राप्त हुआ। सन् १९४२ ई० की बात है, सारे देश में अँगरेजी साम्राज्य के प्रति आन्दोलन हो रहे थे। काँग्रेस पार्टी के नेतृत्व में सारे भारतवर्ष में आन्दोलन बड़े तीव्र गति से चल रहा था। लोगों में जनाक्रोश था। अँगरेजी शासन से सभी ऊब चुके थे और एक साथ डटकर अँगरेजी शासन के विरुद्ध महात्मा गान्धी के नेतृत्व में उन्होंने आन्दोलन किया था। महात्मा गान्धी ने 'जेल भरो' की अपील की और इधर जेल भरना शुरू हुआ। गान्धीजी के अपील पर मैं भी स्वतन्त्रता-संग्राम में जेल गया था। उस समय मुझे फुलवारीशरीफ कैम्प जेल में स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में बन्दी बनाकर रखा गया था। फुलवारीशरीफ कैम्प जेल में ही शास्त्रीजी से मेरा परिचय हुआ। शास्त्रीजी भी स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में बन्दी थे। जेल में जो मेरा परिचय हुआ, वही जेल से निकलने के पश्चात् मित्रता में बदल गया। जेल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की एक-दो घटना मुझे अभी तक स्मरण है, जिसके कारण ही मैं शास्त्रीजी के व्यक्तित्व से अत्यन्त ही प्रभावित हुआ। जेल में मेरे साथ शास्त्रीजी, श्यामनन्दन मिश्र आदि अन्य अनेक सक्रिय आन्दोलनकारी लोग बन्द थे।

जेल की एक घटना मुझे अबतक स्पष्ट रूप से याद है। एक बार जेल में शास्त्रीजी को बहुत कड़ी सजा दी गई थी। जेल में जो कैदी बहुत उपद्रवी हुआ करते हैं, उनको हाथ-पैर में बेड़ी पहना करके एक कमरे में बन्द कर दिया जाता है। इस घटना की भी एक बहुत लम्बी कहानी है जिसका मैं संक्षिप्त वर्णन कर रहा हूँ। जेल में उस वक्त हमलोग एक समाचार-पत्र निकाला करते थे, जो श्रीश्यामनन्दन मिश्र के निर्देशन में निकला करता था। जेल में तो कागज आदि का अभाव हुआ करता है और न छापने की कोई व्यवस्था थी, फिर भी जेल के सभी बन्दी किसी प्रकार से कागज आदि का प्रबन्ध कर लिया करते थे। चूँकि जेल में छापने का कोई साधन उपलब्ध नहीं था, अतः हम सभी बन्दी लोग हाथ के द्वारा ही लिखकर समाचारपत्र तैयार करते थे, जिसे जेल के अन्दर अन्य कैदियों और बाहर के लोगों को भी भेजा जाता था। इसी समाचारपत्र के घटनाक्रम में एक घटना घटी।

एक दिन शास्त्रीजी समाचारपत्र हाथ से लिखने के पश्चात् जेल में बाँटने लगे और जेल के अन्य सभी बन्दियों को एक स्थान पर इकट्ठा करके उन्होंने भाषण देना शुरू किया। उनके उक्त भाषण से जेल के सभी लोग प्रभावित हुए। उनके उक्त भाषण से प्रभावित होनेवाले लोगों में एक मैं भी था। उनके उस भाषण के पश्चात् मेरी मित्रता और भी घनिष्ठ हो गयी। इतने में भाषण देने के समय ही जेल का अधीक्षक आ गया। उसने शास्त्रीजी को जेल में भाषण देने से मना किया। किन्तु शास्त्रीजी माननेवाले कोई साधारण व्यक्ति तो थे नहीं। एक बार जब किसी चीज के लिए कृतसंकल्प होते, तो उसे पूरा करके ही दम लेते, यह उनका एक बहुत बड़ा गुण था। जेल-अधीक्षक के बार-बार मना करने के बाद भी शास्त्रीजी भाषण देते रहे। उसके बाद शास्त्रीजी जेल-अधीक्षक के विरोध में लोगों से नारेबाजी करवाने लगे। जेल का अधीक्षक फिर पुनः आकर शास्त्रीजी से भाषण और नारेबाजी को बन्द करने का अनुरोध किया। जेल-अधीक्षक इस घटना से बहुत ही क्रोधित हुआ। उसने अपमान का बदला लेना चाहा और शास्त्रीजी को हाथ-पैर में बेड़ियाँ लगवाकर जेल में बन्द कर देने का आदेश दिया। इस घटना को लेकर बन्दियों के बीच शास्त्रीजी की ख्याति बढ़ गई। उस दिन मैं शास्त्रीजी के साहस को जाना। उसके बाद से जेल से निकलने के पश्चात् मैं तो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक जीवन में प्रवेश कर गया। मैं काँग्रेस के संगठन का कार्य देखने लगा एवं शास्त्रीजी आर्यसमाज के संगठन में सक्रिय हो गये। इसी प्रकार से हम लोग विभिन्न आयोजनों में बराबर मिलते रहे।

मुझे एक बात का बहुत ही अफसोस रहा कि मैं शास्त्रीजी के बहुत आग्रह पर भी आर्यसमाज-स्थापना-समारोह, जो बरौनी में आयोजित हुआ था, उसमें सम्मिलित न हो सका। मैंने शास्त्रीजी से न आने के सम्बन्ध में टेलीफोन पर क्षमा माँगी और अगली बार किसी आयोजन में सम्मिलित होने के लिए मैं वचनबद्ध हो गया। दूसरी बार जब दानापुर में आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी-समारोह आयोजित हुआ, तब उसमें सम्मिलित हुआ। दानापुर में जो शताब्दी-समारोह हुआ था वह सम्भवतः सन् १९७६ ई० में हुआ था। यह शताब्दी-समारोह भी एक मात्र शास्त्रीजी के प्रयत्न द्वारा आयोजित हुआ था। उस समय भी देश की वैसी ही स्थिति थी, किन्तु इस बार पहले से ही मैं वचनबद्ध था, इसलिए दानापुर शताब्दी-समारोह में सम्मिलित हुआ। दानापुर में जब मैं शास्त्रीजी से मिला, तब वे बहुत प्रसन्न हुए। उसी प्रसंन्नता एवं भावुकता में मेरे भाषण के पूर्व माइक पर मेरे सम्बन्ध में खुले अधिवेशन में लगभग सात-आठ हजार की जनता के बीच उन्होंने यह भी कह दिया कि मैं 'बिना ताज का बादशाह हूँ'। इसी प्रकार के विभिन्न विशेषणों के द्वारा शास्त्रीजी मेरे सम्बन्ध में लगभग आधे घण्टे तक बोलते रहे। शास्त्रीजी के उस छोटे से परिचय-भाषण के पश्चात् मेरा भाषण हुआ। मेरे भाषण के पश्चात् शास्त्रीजी बहुत गदगद हुए और उस दिन न जाने उन्हें क्या हुआ कि उन्होंने कहा "रामलखनजी चलिए, आज हम लोगों का एक सम्मिलित फोटो भी हो जाये।" आयोजन के स्वागत-मन्त्री श्रीयोगेन्द्र नारायण ने भी आग्रह किया तो मेरा और शास्त्रीजी का फोटो हुआ। शायद वह फोटो आयोजनकर्त्ताओं के पास होना चाहिए।

शास्त्रीजी से शताब्दी-समारोह के कई अवसरों पर तथा उसके पश्चात् अक्सर मुलाकातें हुआ करती थीं।

मृत्यु होने के चार पाँच घण्टे पूर्व भी मेरी मुलाकात शास्त्रीजी से हुई थी। शास्त्रीजी जो २३ जनवरी, १९७८ ई० की रात्रि में 'मुक्त कण्ठ' के समारोह में सम्मिलित होने हेतु पारिजात प्रकाशन में आये थे। उस समारोह में मैं भी गया था। घण्टों मैंने और शंकरदयाल ने बैठकर उस दिन भी बातें कीं। 'मुक्त कण्ठ' के उक्त समारोह में शास्त्रीजी का भाषण भी हुआ। उस दिन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ भी उनके चेहरे पर मृत्यु का आभास नहीं प्रतीत होता था। किन्तु उस दिन वे कुछ दुर्बल अवश्य ही लग रहे थे। दुर्बल होने का कारण भी मैंने पूछा, शास्त्रीजी ने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं बतलाया। बाद में मुझे यह जानकारी मिली कि शास्त्रीजी इधर कुछ दिनों से मानसिक तनाव की स्थिति में रहा करते थे। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक तो बन ही गये थे, किन्तु उन्हें निदेशक-कक्ष की चाभी नहीं दी गई थी, जिसकी वजह से ही वे चिन्तित रहते थे।

भगवान् से मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे दिवंगत शास्त्रीजी की आत्मा को शान्ति और सद्गति प्रदान करें।

पूर्व-सदस्य
बिहार विधानसभा, पटना

कर्मठ तपस्वी तूने छीना है विधाता !

सत्य का निर्भीक प्रहरी, आर्यों का सजग नेता
वेद का विद्वान्, वैदिक यज्ञ का ज्ञाता, प्रणेता
गैर को भी जिसका आकर्षण बना लेता था अपना
देखता था धरती पर जो स्वर्ग को लाने का सपना
हँसते-हँसते जिसने काँटों पर हमेशा पग बढ़ाया
जिसकी कर्मठता ने मरुस्थल में भी फूलों को सजाया
जिसकी वाणी पर सरस्वती थी हमेशा वास करती
वीरता जिसकी थी विघ्नों पर सदा उपहास करती
शत्रुओं से जूझना तो जिसकी किस्मत में लिखा था
अपने मित्रों का भी जिसने वार हँस-हँस कर लिया था
मुसकराता मुख, सरल जीवन, अडिग साहस हृदय में
नेत्र ज्योतित, चरण गतिमय, क्या कसर रहती विजय में
आह ! वह कर्मठ तपस्वी तूने छीना है विधाता
तू करुण है या निठुर, कह, पाप क्या हमने किया था

—उत्तम चन्दशरर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपात स्थिति में अखिलभारतीय विद्यार्थी-परिषद् को शास्त्रीजी का सहयोग

□ सुशीलकुमार मोदी

चीनी आक्रमण के समय पटना के गान्धी मैदान में आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा था। सारे देश में देशभक्ति उबाल मार रही थी। मैं करीब १२ वर्ष का था। मैं भी उस वार्षिकोत्सव में शामिल हुआ। सम्मेलन में एक नाटे कद का व्यक्ति धोती-कुरता पहने, कन्धे पर चादर लिये सिंह-गर्जना कर रहा था। उसके एक-एक शब्द मानों अंगार उगल रहे थे। सारी सभा में सन्नाटा छा गया। शरीर में उनके वाक्यों से सिहरन पैदा होने लगी। अगले क्षण लगा, मानों सीमा पर हम सभी युद्धरत हैं। उस व्यक्ति के शब्दों ने मानों मेरे रक्त में देशभक्ति घोल दी। मैं कभी सोचता भी नहीं था कि उस महान् ओजस्वी वक्ता का इतना प्रेम, सान्निध्य, सामीप्य मुझे प्राप्त होगा। यह वक्ता वही आर्यसमाज के महान् नेता पं० रामनारायण शास्त्री थे।

एक दिन मैं अपने चाचाजी के यहाँ गया। उनका आर्यसमाज से सम्बन्ध था। अचानक शास्त्रीजी वहाँ पहुँच गये। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि इतने समीप खड़े मैं उनसे बात कर रहा हूँ। सिंह-गर्जना करनेवाला इतने सरल स्वभाव और स्नेह, प्रेम का देनेवाला हो सकता है, इसका अहसास मुझे उस दिन हुआ।

वर्षों बीतते गये। चुनाव-सभाओं में भी शास्त्रीजी को भाषण करते सुना। मैं समझता था कि वे शायद आर्यसमाज के पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता हैं तथा कथा, प्रवचन, भाषण करना इनका धन्धा है, किन्तु जब ज्ञात हुआ कि वे सरकारी नौकरी में हैं, तो आश्चर्य हुआ। सरकारी नौकरी में रहते हुए भी जनसंघ के मंच से भाषण करने का साहस ! उनके इस साहस का तो परिचय मिला आपातकाल में। सरकारी नौकर तो क्या स्वतन्त्र कार्य करनेवाले शिक्षक, वकील भी जब २० सूत्री के सामने पूँछ हिला रहे थे, उस समय शास्त्रीजी के साहस ने मेरे मन में उनके सम्मान को दुगुना कर दिया। मुझे सरकार ने पेरोल पर बहन की शादी में भाग लेने के लिए रिहा किया था। दुर्भाग्य से जेल से निकलते ही हजारीबाग के उपायुक्त ने मुझे बुरी तरह से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीटा और पुनः गिरफ्तार कर लिया। मैं जब दुबारा छूटकर पटना आया, तब कोई डॉक्टर मेरी चिकित्सा के लिए तैयार नहीं हो रहा था। इसी बीच मेरी पेरोल की अवधि समाप्त हो गई और चोट के कारण मुझे अस्पताल में भरती होना था। मेरे घर के अगल-बगल पी० एम० सी० एच० के कई वरिष्ठ डॉक्टर हैं। एक-एक कर सबने अपने वार्ड में मुझे भरती करने से इनकार कर दिया। बीमार मीसा बन्दी के लिए कोई सरकार को यह कहने के लिए तैयार नहीं था कि यह बीमार हैं और इन्हें चिकित्सा हेतु अस्पताल में भरती करना अनिवार्य है। मैं निराश हो रहा था। पुनः मुझे जेल के बूचड़खानेनुमे अस्पताल में ही जाना होगा। अचानक शास्त्रीजी को कहीं से यह परेशानी ज्ञात होती है। उनके लिए मानों यह उँगलियों का खेल था। सरकारी नौकर होते हुए भी उन्होंने अपने मित्र डॉ० श्यामनारायण आर्य से मुझे अपने वार्ड में भरती करने के लिए कहा। जब कोई मुझसे बात करने में भी डरता था, शास्त्रीजी मुझे स्वयं अस्पताल ले गये, वहाँ भरती कराया। मैं समझ नहीं पा रहा था कि मैं इस व्यक्ति का अहसान किन शब्दों में चुकाऊँ। चारों ओर खुफिया विभाग के लोग लगे थे। फिर भी सरकारी नौकरी करते हुए अपने सहयोगियों, कार्यकर्त्ताओं के लिए इतना कौन कर सकता है ? अपने उसूलों के लिए संघर्ष करनेवाले के अतिरिक्त कौन अपनी नौकरी दाँव पर लगा सकता है ?

उनके इस साहस पर मुझे अस्पताल में स्मरण होने लगा धनबाद अधिवेशन का। सन् १९७३ ई० में विद्यार्थी-परिषद् का प्रान्तीय अधिवेशन होनेवाला था। इस अधिवेशन के द्वारा राज्यव्यापी संघर्ष की घोषणा होनेवाली थी। हमें तलाश थी एक ऐसे उद्घाटक की, जो छात्रों को संघर्ष के लिए ललकार सके, जिसका जीवन स्वयं वही संघर्ष और रचना का समन्वय रहा हो। कई नाम प्रस्तावित हुए, अन्त में सहमति हुई शास्त्रीजी के नाम पर। हम उनसे आग्रह करने गये। युवा शक्ति के निमन्त्रण को कौन ठुकरा सकता था। हम धनबाद में बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे। ठीक समय पर शास्त्रीजी आये। कार्यकर्त्ताओं के साथ काफी घुल मिल गये। सन्ध्या में उनकी गर्जना प्रारम्भ हुई। करीब नब्बे मिनट तक प्रतिनिधि उनकी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का आनन्द उठाते रहे। सामाजिक स्थिति का चित्रण करते हुए उन्होंने छात्रों को महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, कुशिक्षा से संघर्ष के लिए आह्वान किया। आज भी परिषद् के कार्यकर्त्ता उनके भाषण का स्मरण करते हैं। धनबाद के उस अधिवेशन ने इतिहास की धारा बदल दी। बिहार-आन्दोलन प्रारम्भ करने का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
श्रेय धनबाद के इस अधिवेशन को है। और इस अधिवेशन में प्रतिनिधियों की मानसिकता संघर्ष के लिए तैयार करने का श्रेय श्रीशास्त्रीजी को है।

धनबाद-अधिवेशन के बाद तो शास्त्रीजी मानों परिषद्-परिवार के सदस्य ही हो गये। अनेक कार्यक्रमों में उनको निमन्त्रण मिला। इसी प्रकार का एक विभागीय सम्मेलन सन् १९७४ ई० की फरवरी के बाद में आयोजित था। बिहार छात्र-नेता सम्मेलन के बाद से कम्युनिस्ट लोग तिलमिलाये हुए थे। विद्यार्थी-परिषद् से बदला लेने की तलाश में थे। बाढ़ कम्युनिस्टों का गढ़ माना जाता था। शास्त्रीजी बाढ़ के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे। सुबह से ही सी. पी. आई. के लोग कार्यक्रम भंग करने की साजिश कर रहे थे। सन्ध्या में उद्घाटन होना था। स्थगित करने का विचार चल रहा था। इतने में शास्त्रीजी का आगमन हुआ। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि सी. पी. आई. की गुण्डागर्दी के कारण सम्मेलन स्थगित किया जा रहा है, तो वे आवेश में आ गये। उन्होंने चुनौती दी कि देखता हूँ वे सभा को कैसे भंग करते हैं। माइक द्वारा बन्द प्रचार पुनः प्रारम्भ हो गया। करीब ४०० लोग सभा में उपस्थित थे। ज्यों ही कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, सी. पी. आई. के कार्यकर्त्ताओं ने शोर मचाना, आवाजें कसना शुरू किया। जब वे मंच की ओर बढ़ने लगे तो शास्त्री जी से न रहा गया। उन्होंने माइक स्वयं सँभाला। कम्युनिस्टों को चुनौती देते हुए उन्होंने सी. पी. आई. के स्थापना-काल से लेकर आजतक के कारनामों की धज्जी उड़ानी शुरू कर दी। उनकी सिंह-गर्जना के समक्ष विरोधियों की आवाज डूबने लगी। स्व० शास्त्रीजी ने उनके एक-एक प्रश्न का करारा जवाब दिया। सी. पी. आई. कार्यकर्त्ता हक्का-बक्का थे। मंच पर कब्जा करने का साहस खत्म हो गया। वे स्वयं उनके भाषण को शान्तिपूर्वक सुनने लगे।

ऐसे थे शास्त्रीजी। मेरे जीवन को जिन कुछ लोगों ने प्रेरणा प्रदान की है, उनमें शास्त्रीजी भी एक हैं। मृत्यु के दिन मैं पटना में नहीं था। अगले दिन जब लौटकर आया, तब अवाक् रह गया। मात्र ४-५ दिन पूर्व पं० दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद पर एक लेख लिखने का उन्होंने वचन दिया था। आज भी उनके सान्निध्य में बीती अनेक स्मृतियाँ ताजा हैं और उनकी मृत्यु स्वप्न के समान प्रतीत होती है।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रीजी का अक्षय व्यक्तित्व

□ स्वामी हरिनारायणानन्द

वेदान्त की दृष्टि से सारा ब्रह्माण्ड ही नश्वर है। जब मनुष्य को आत्मज्ञान या स्व-स्वरूप का वास्तविक ज्ञान हो जाय, तब जीव-ब्रह्म की द्वैत[1]-भावना समाप्त हो जाती है और वह भी ब्रह्ममय बन जाता है। केवल ब्रह्म ही सत्य है और जगत् मिथ्या है। आत्मा कर्म के बन्धनों से मुक्त हो जाती है और ज्ञान के उदय से सारी भ्रान्तियाँ मिटकर शुद्ध चेतन ब्रह्म में जीव लीन होकर शाश्वत सत्य को प्राप्त हो जाता है, जो वास्तव में जीवन की तुरीय अवस्था है।

इस दृष्टि से श्रीरामनारायण शास्त्रीजी के पार्थिव शरीर के न होने पर भी उनकी आत्मा ब्रह्म में लीन होकर निरन्तर सुख के सागर में व्याप्त हो गई होगी, परन्तु व्यावहारिक एवं लोकदृष्टि से शरीरधारी शास्त्रीजी की इस संसार से अनुपस्थिति हम सभी मित्रों तथा सम्बन्धियों को खल रही है। यही भगवान् की रचना की लौकिक स्थिति है। जब स्वयं राम, कृष्ण आदि भगवान् के अवतारों को भी इस मर्त्यलोक में सामान्य लोगों की ही तरह शरीर को छोड़ना पड़ा, तब हम साधारणजनों की ऐसी स्थिति आश्चर्यजनक नहीं मानी जा सकती है। यह विधि का विधान माना जाता है। जो जन्म लेगा, वह मरेगा। उत्पत्ति तथा लय यह जीवन का सच्चा क्रम बना हुआ है। मैं ऐसा मानता हूँ कि जीवन के इस ऊँचे विचार और आदर्श को श्रीशास्त्रीजी स्वयं समझते थे; क्योंकि अपनी प्रखर बुद्धि तथा धर्म एवं दर्शनों के अध्ययन द्वारा उन्होंने जगत् के वास्तविक स्वरूप को पहिचानने का प्रयास किया था।

श्रीशास्त्रीजी से मेरा परिचय गत १९४२-४३ ई० के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के किसी महीने में दिवंगत पूज्यश्री ब्रह्मचारी मंगलदेवजी महाराज

---

१. अद्वैतवाद : अवतारवाद अपनी बुद्धि की उपज है, शास्त्रोचित नहीं । वेदान्त दर्शन के 'भेदव्यपदेशाच्च' (१.१.१७) 'इतरव्यपदेशात् हिताकरणादिदोषप्रसक्तिः' (२.१२१) आदि सूत्रों द्वारा जीव और ब्रह्म का स्पष्ट भेद बताया गया है । इसी प्रकार 'सपर्यगाच्छुक्रमकायम्०' (यजु. ४०.८) मन्त्र प्रमाणित करता है कि ईश्वर शरीरधारी नहीं है । —सं०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सम्पर्क के कारण हुआ था। चिन्तामणिचक के एक लब्धप्रतिष्ठ परिवार में उत्पन्न श्रीरामनारायण शास्त्री केवल उस जिले और बिहार प्रान्त के जाने माने आर्यनेताओं में ही नहीं थे, अपितु देश के विभिन्न भागों में उनकी कुशाग्र बुद्धि, शास्त्रीय ज्ञान तथा भाषणपटुता की चर्चा होती रहती थी। उनके सारगर्भ धाराप्रवाह एवं प्रांजल शब्दों में हिन्दी-भाषण की प्रशंसा बराबर हुआ करती थी। वे केवल एक अच्छे संस्कृतज्ञाता तथा शास्त्रविद् ही नहीं थे बल्कि कर्मयोग में उनकी पूर्ण निष्ठा थी, जिन्होंने देश और धर्म की रक्षा के लिए अपने-आपको तपाया था।

कोई व्यक्ति किसी बड़े व्यक्ति के आश्रय से आगे बढ़ता है और प्रसिद्धि पाता है, परन्तु कोई-कोई ऐसा भी व्यक्ति होता है, जो अपनी निष्ठा, ईमानदारी, अध्यवसाय तथा स्वयंप्रेरित प्रतिभा से ऊपर उठकर अपने जीवन की प्रकाशमान रश्मियों से दूसरे को आलोकित करता रहता है, उसी श्रेणी में श्रीशास्त्री का नाम रखा जा सकता है, जिसे प्रतिष्ठित पुरुष कहा जाता है। अपने अभिमान तथा ज्ञान के दम्भ से अलग रहकर मूकभाव से श्रद्धापूर्वक समाज की सेवा कैसे की जाय, इसकी शिक्षा शास्त्रीजी के जीवन से आसानी से ली जा सकती है। बराबर दूसरों की सहायता में विनम्र भाव से लगे रहनेवाले इस प्रतिभाशाली पण्डित के भौतिक जीवन की समाप्ति से हमको बहुत कष्ट हुआ है। भारतीय धर्म एवं संस्कृति के उन्नत आदर्शों के रक्षण एवं प्रसारण में अपनी प्रतिभा तथा क्षमता के अनुसार श्रीशास्त्रीजी ने जो कुछ किया है, वह सदियों स्मरण किया जाता रहेगा।

महामन्त्री, भारत साधुसमाज
शेखपुरा, पटना

●

- ❑ *विभिन्नता में एकता हमारी संस्कृति की विशेषता है। मन, वचन और कर्म की एकता आवश्यक है।*
- ❑ *हमारा जीवन दुःखमय नहीं, अपितु आनन्दमय है। जीवन में आनन्द की भावना का रहना आवश्यक है। यही अरस्तू और प्लेटो ने सिखाया है। जीवन के प्रत्येक कार्य में हर्ष का सम्मिश्रण हमें नवजीवन प्रदान करेगा।*

—स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे हिन्दीमय थे

□ प्रो० डा० रामकृपाल सिंह

पं० रामनारायण शास्त्री से मेरा लगभग एक दशक का अभिन्न सम्बन्ध रहा। उनकी बहुमुखी प्रतिभा और स्नेहशील व्यक्तित्व ने मुझपर अमिट प्रभाव छोड़ा। शास्त्रीजी एक ओजस्वी वक्ता थे। एक बार किसी कार्यवश मैं जमशेदपुर के प्रवास पर था। आर्यसमाज की ओर से एक आयोजन में शास्त्रीजी बोलनेवाले थे। मैं उन्हें सुनने की उत्सुकता का लोभ संवरण नहीं कर सका और उस आयोजन में सम्मिलित हुआ। उनके तर्कसंगत ओजस्वी भाषण ने जिस प्रकार से सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया, उसने मुझे काफी प्रभावित किया।

शास्त्रीजी एक कर्मठ व्यक्ति थे। एक बार किसी कार्यभार को स्वीकार करने के बाद उसके समाधान के लिए वे लीन हो जाते थे। आर्यसमाज का कार्य हो या हिन्दी का अथवा किसी की व्यक्तिगत समस्या का समाधान, सबमें वे एकाग्रता से लग जाते थे। शास्त्रीजी भारतीय सभ्यता और संस्कृति के हिमायती ही नहीं, वरन् उसकी मूर्त्ति थे। उनका सीधा-सादा लिवास और मधुर वाणी उनके व्यक्तित्व की गरिमा को ढकने का प्रयास अवश्य करता था लेकिन कुछ ही देर की बातचीत में सत्य प्रकट हो जाता था।

शास्त्रीजी ने बिहार में हिन्दी की जो सेवा की, वह अविस्मरणीय है। हिन्दी की अलख जगाने में वे सतत लगे रहते थे। उनके प्रयास से हिन्दी की काफी प्रगति हुई और बिहार सरकार के विभागों में हिन्दी के प्रयोग की मात्रा बढ़ती गई।

शास्त्रीजी आर्यसमाज के माध्यम से राष्ट्रीयता और सामाजिक जागरण का कार्य करते रहे। पटना ही नहीं, सारे बिहार के आर्यसमाज के लिए वे एक मजबूत स्तम्भ थे। शास्त्रीजी प्रगतिशील विचारों के पोषक थे। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन में और सामाजिक जीवन में द्वैत को कभी स्वीकार नहीं किया। गरीब और पिछड़ों को जगाकर समाज में समता लाने के लिए वे अथक प्रयत्न करते रहे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रीजी ने कभी धन जोड़ने की चिन्ता नहीं की। जहाँ जो कुछ प्राप्त हुआ, उसी में सन्तोष करते और दूसरों के लिए कष्ट झेलना भी उनके जीवन का प्रमुख बिन्दु था।

मेरा विश्वास है कि बिहार के सभी सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिए शास्त्रीजी की स्मृति प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

●

भावांजलि

बिहार के ओजस्वी आर्यवक्ता पं० रामनारायणजी शास्त्री के असामयिक निधन पर हार्दिक संवेदना एवं उनके जीवन-संस्मरण पर आत्मिक श्रद्धांजलि :

बुझ गया वह दीप धरा से जगमग ज्योति प्रकाश लिये ही।
थीं अनेक आशाएँ जिनसे चला गया बिन पूर्ण किये ही॥
प्राप्त किया वैदिक शिक्षा था गुरुकुल वैद्यनाथधाम में जाकर।
बनकर उपदेशक महान् वह हुआ सम्मानित पटना आकर॥
ओजस्वी वक्ता बिहार का था वह वेद मार्ग-अनुयायी।
विगत प्रान्तीय आर्य सम्मेलन की उसने थी अलख जगायी॥
हिन्दी के साहित्य-जगत् में था उसने गौरव पाया।
बन अध्यक्ष राष्ट्रभाषा-परिषद् का भी दायित्व निभाया॥
प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा का रहा सदा सिरमौर प्रचारक।
कैसे याद भुलायें उनकी, जो था राष्ट्र-धर्म उद्धारक॥

—तपस्वी आर्य, नरकटियागंज (बिहार)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुज रामनारायणजी

□ स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

आत्मीयों का वियोग सर्वदा दुःखद है, किन्तु जब कोई वयस् का छोटा संसार से विदा होता है, तब तो यह दुर्भाग्य है। सौभाग्यवान् हैं वे पुत्र और पुत्री, जिनके जीवनकाल में उनके माता-पिता, सास और श्वसुर का देहावसान हो। भाग्यशाली है वह शिष्य, जो अपने गुरु की अन्त्येष्टि में भाग ले और भाग्यवान् है वह अनुज, जो अपने अग्रज की मृत्यु का संवाद सुने। किन्तु महा अभागा है वह, जो अनुजों की मृत्यु का समाचार पाये। रामनारायण मुझसे बीस वर्ष छोटे थे। सन् १९२६ ई० में २४ जनवरी को उनका जन्म हुआ, जन्म की दृष्टि से बीस वर्ष छोटे थे। मालूम नहीं, मृत्यु की दृष्टि से वे कितने वर्ष आगे निकल गये। वे अनुज थे, मैं अग्रज; अब वे 'अग्रज' हो गये। मैं अब 'अनुज' रह गया (मृत्यु : दिनांक २४ जनवरी, १९७८ ई०) !!

रामनारायणजी गुरुकुल वैद्यनाथधाम के स्नातक थे। वहाँ से ही, उन्होंने शास्त्री की उपाधि सन् १९४१ ई० में ली। मैंने सन् १९२५ ई० में प्रयाग विश्वविद्यालय से बी. एस-सी. की उपाधि प्राप्त की। मैं तो 'बी. एस-सी.' न कहला पाया, रामनारायणजी जीवनान्त तक शास्त्रीजी कहलाते रहे। स्पष्ट है कि शास्त्रीजी कहलाना उसी प्रकार निरर्थक है, जैसे—किसी का बी.ए.जी., एम.ए.जी. कहलाना। उन्हें शास्त्रीजी कहना महिमा को कम करना था। गुरुकुल वैद्यनाथधाम से इन्होंने सन् १९४२ ई० में 'विद्यारत्न' की उपाधि भी पाई, इसी वर्ष सन् १९४२ ई० में हिन्दी विद्यापीठ, देवघर से 'साहित्यभूषण' हुए, १९४३ ई० में बंगाल संस्कृत एसोसिएशन के 'काव्यतीर्थ' भी बने, १९४६ ई० में बिहार संस्कृत समिति से 'साहित्याचार्य' की उपाधि भी मिली। वास्तविक बात तो यह है लालबहादुर, प्रकाशवीर और रामनारायणजी को शास्त्रीजी कहना शोभा नहीं देता—'शास्त्री' अपने स्तर की सबसे निचली[1] उपाधि है। उपाधियों को उपनाम बना देना अनुचित और अवैध परम्परा है।

---

१. 'शास्त्री जी' कहना या कहलाना आर्य-संस्कृति एवं संस्कृत के सम्मान का परिचायक है । आर्य-संस्कृति के प्रति हमारी आस्था आज राजनीतिक गुलामी के मध्य शिक्षा का प्रायः पश्चिमीकरण हो जाने पर भी अविचल एवं अक्षुण्ण है,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रामनारायण के छात्र-जीवन पर उग्र क्रान्तिवाद की छाप पड़ी है। मानवेन्द्रनाथ राय से सन् १९४० ई० में ही सम्बन्ध हो गया। गुरुकुल, वैद्यनाथधाम ने उन्हें आर्यसमाज के निकट ला दिया। धीरे-धीरे हिन्दी-साहित्य के प्रति उनकी अभिरुचि बढ़ गई। इस प्रकार, उनके जीवन का प्रवाह तीन स्रोतों में होकर बहा—राजनीतिक, वैदिक धर्म और राष्ट्रभाषा। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से 'साहित्यरत्न' की उपाधि १९५० ई० में ले ली। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् पटना जनता की भी संस्था है, और सरकार की भी। सन् १९५२ ई० से श्रीरामनारायणजी ने इस संस्था में कार्य प्रारम्भ किया और इसी समय से इनकी रुचि हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की ओर बढ़ी। 'पाण्डुलिपि' के संरक्षण, सुरक्षण एवं सम्पादन का स्वयं में एक बड़ा शास्त्र है। पश्चिमी शोध-पद्धति में इस शास्त्र का मूर्धन्य स्थान है। आर्यसमाज के क्षेत्र में इस ओर अभिरुचि कम है। उदीयमान विद्वानों से मेरा आग्रह है कि इस शास्त्र में दक्षता प्राप्त करने का प्रयास करें। इसी वर्ष मैंने मद्रास थियोसोफिकल सोसायटी, अडयार का पुस्तकालय देखा। इस संस्था का 'पाण्डुलिपि संग्रहागार' देखकर मैं चकित रह गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी संकुचित स्थान में एक शोधकक्ष खोल रखा है, वह तो शोध-परिहास है। मेरा स्नेहपूर्वक विनम्र आग्रह है कि हमारे अधिकारी अडयार के पाण्डुलिपि-संग्रहागार को देखें और उसके तारतम्य में कुछ कार्य करने का सपना सँजोकर रखें। थियोसोफिकल सोसायटी का नाम मैंने इसीलिए लिया, कि आर्यसमाज की प्रथम स्थापना १८७५ ई० में हुई थी और थियोसोफिकल सोसायटी की भी इंसी वर्ष। इस दिशा में छोटा-सा प्रयास गुरुदत्त भवन, लाहौर में आरम्भ हुआ था, पर अब तो विद्वानों का ध्यान ही इस ओर नहीं है। कितना अच्छा होता, यदि रामनारायणजी के अनुभव से इस क्षेत्र में हम कुछ लाभ उठा सकते।

रामनारायणजी उत्साही युवक थे। देश की प्रत्येक नई धारा में बहने का लोभ संवरण वे न कर सके। कभी आप उन्हें आर्यसमाज में पायेंगे, कभी

यह बात 'शास्त्री जी' सम्बोधन में छिपी है। भारतीय मानस 'बी. एस-सी. जी.' या 'एम. ए. जी' कहलाकर अपने आपको शास्त्रीजी से अधिक गौरवान्वित नहीं मानता, इस सम्बोधन का यही रहस्य है। यह 'सबसे निचली उपाधि है' वरेण्य लेखक के इस विचार से जनसमाज का सहमत हो पाना कठिन है। वस्तुतः रामनारायणजी या इनके जैसे और विद्वान् 'शास्त्री' उपाधि के कारण नहीं अपितु अपने वैदुष्य से 'शास्त्रीजी' (शास्त्रपारंगत विद्वान्) कहलाते थे।

—सम्पा०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यवीर दल में, कभी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में, कभी जनसंघ में, कभी छात्र-संघर्ष में जयप्रकाश नारायण की समग्र क्रान्ति में उन्होंने अपने तरुण उत्साह को बिखरा रखा था। अच्छे वक्ता थे, वाणी में ओज और प्रसाद गुण था, अच्छे लेखक थे, आत्मीयता के प्रतीक थे—सभी की सहायता में तत्पर, यही उनकी मानवीय दुर्बलता थी, और यही उनकी विशेषता। मैं न तो उनके साथ कभी रहा, न कभी साथ में मैंने यात्रा की। जब सम्पर्क में आया, तब कुछ क्षणों के लिए ही। उनमें विनम्रता और निरभिमानता इतनी थी कि वे अपनी गहराई तक किसी को पहुँचने का अवसर देते ही न थे। मेरा बराबर यह विचार रहा है कि अपने देश के अनुभवी साहित्यिकों को आर्यसमाज के उच्चस्तरीय साहित्य-सृजन की सुविधाएँ प्रदान की जायें। रामनारायणजी हमारे उन विशेष व्यक्तियों में से थे, जिनकी योग्यता और निष्ठा से हमें लाभ उठाना चाहिए था। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् ने तो उनसे ठोस लाभ उठाया, पर हमलोगों ने उनका उपयोग केवल व्याख्याता और पुरोहित के रूप में ही किया।

रामनारायणजी के दिवंगत होने पर अब क्या लिखूँ। हृदय से सम्बन्ध रखनेवाले रोग हमारे युवकों और कम अवस्था के लोगों को उठा ले जाते हैं। सम्पूर्ण समाज को सोचना होगा कि इस प्रकार के अभिशापों से हम किस प्रकार मुक्त हो सकते हैं।

●

ज्ञान-प्रदीप

आदित्यगणो, हमें न अपने दाहिने कुछ दिखलाई देता है, न अपने बायें और न अपने सम्मुख, या पृष्ठभाग में ही । हमारे चारों ओर महारात्रि का निविड़ अन्धकार फैला हुआ है, और इस परिचित वन-पथ में हम भटक गये हैं । कृपा कर हमें भय मुक्त करो एवं तिमिरान्ध दिग्भ्रान्ति से निकालकर प्रकाश की ओर ले चलो ।

'नवनीत' से—ऋग्वेदीय अग्निसूक्तों के आधार पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० रामनारायण शास्त्री आर्यजगत् की निधि थे

□ *ओमप्रकाश त्यागी 'सांसद'*
नई दिल्ली

स्वर्गीय पं० श्रीरामनारायण शास्त्री मेरे परम मित्रों में एक थे। वह आर्यसमाज की विभूतियों में एक थे। विद्वान् होने के अतिरिक्त वह एक प्रभावशाली वक्ता थे। उनकी वाणी में एक ओज, जोश एवं जनता के दिल और दिमाग तक पहुँचनेवाली संवेदना होती थी। उनके भाषणों की विशेषता यह भी थी कि साहित्यकार होने के नाते उनकी भाषा बड़ी ही सुसंस्कृत एवं लच्छेदार थी। वैदिक धर्म एवं संस्कृति पर उनका अध्ययन वास्तव में अद्वितीय था। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए उनके मन में जो लगन एवं तड़प थी, वह अन्यों के लिए अनुकरणीय है। दुर्भाग्यवश, आर्यसमाज उनकी विशेषताओं का अधिक लाभ नहीं उठा सका और वह अल्पकाल में ही हमसे विदा हो गये। आर्यसमाज स्वर्गीय पं० प्रकाशवीर शास्त्री के वियोग को सहन भी नहीं कर पाया था कि एक दूसरी हस्ती हमसे विदा हो गई!

पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री के साथ मुझे बहुत समय तक कार्य करने का अवसर मिला। वे आर्यवीर दल बिहार के संचालक और मैं अखिलभारतीय प्रधान संचालक था। उन्होंने जिस विशेषता एवं योग्यता से समूचे बिहार में एक विशाल नवयुवक शक्ति को खड़ा किया, वह सचमुच आश्चर्य की बात थी। बिहार प्रान्त का कोई कोना ऐसा नहीं था, जहाँ श्रीशास्त्री के संकेत पर मर-मिटने वाले न हों। उनमें इसी तरह की अनेक विशेषताएँ थीं।

प्रभु से प्रार्थना है, वह आर्यजगत् को इसी प्रकार की मिशनरी भावनावाले विद्वान् और कार्यकर्त्ता प्रदान करे, ताकि महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार किया जा सके।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिभावान् वाग्मी पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री

□ *पं० शिवकुमार शास्त्री 'सांसद'*
नई दिल्ली

पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री के प्रथम बार दर्शन मुझे पं० श्रीप्रकाशवीरजी शास्त्री द्वारा लखनऊ में समायोजित उपदेशक सम्मेलन के अवसर पर हुए थे। श्रीशास्त्रीजी ने श्रीरामनारायणजी का परिचय मुझसे कराया। बहुत ही प्रेम और आत्मीयता से मिले, किन्तु मैं उनके व्यक्तित्व से विशेष प्रभावित नहीं हो पाया। रात्रि को एक सम्मेलन में जब उनका भाषण हुआ, तब पता चला कि सामान्य-सी वेशभूषा और आकृति में यह कोई असाधारण व्यक्ति है और तब से लगभग २०-२५ वर्षों तक श्रीशास्त्रीजी से बहुत ही अभिन्नता रही।

आर्यसमाज के मंच पर पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री के भाषणों का एक विशेष स्थान था। अपने भाषण में शब्दों की काव्यमयी छटा जितनी सुन्दरता से श्रीशास्त्रीजी दरसाते थे और एक-एक शब्द जिस प्रकार सजा-सजा कर रखते थे, यह कला आर्यसमाज के किसी दूसरे वक्ता में अबतक देखने को नहीं मिली। विषय का प्रतिपादन भी बहुत ही व्यवस्थित ढंग से होता था। संस्कृत और हिन्दी का उच्चारण बहुत उत्तम था। भाषा में बिहारी पुट का आभास भी नहीं हो पाता था। श्रीशास्त्रीजी के भाषण सारे भारतवर्ष में बड़ी रुचि से सुने जाते थे।

श्रीशास्त्रीजी की अपनी एक यह भी विशेषता थी कि वे राजनीतिक मंच पर भी उसी अधिकार से भाषण दे सकते थे, जिसप्रकार धार्मिक मंच पर। एक बार श्रीकँवरलाल गुप्त, संसद्-सदस्य (लोकसभा) ने चौथी लोकसभा के चुनाव के समय श्रीरामनारायणजी शास्त्री को अपने चुनाव-प्रचार के लिए एक मास के लिए दिल्ली बुलाया और श्रीशास्त्रीजी ने इस महीने में श्रीकँवरलाल गुप्त के निर्वाचन-क्षेत्र को अपने भाषणों से मानसिक दृष्टि से सर्वथा उनके अनुकूल तैयार कर दिया। श्रीगुप्त इस चुनाव में भारी बहुमत से विजयी रहे थे और प्रायः अपनी सफलता की चर्चा करते हुए श्रीशास्त्रीजी के प्रति भी आदरपूर्वक कृतज्ञता प्रकट करते थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० श्रीरामनारायणजी में वे सभी गुण थे, जो एक नेता में होने चाहिए। प्रबन्ध की दृष्टि से सफल संगठनकर्त्ता थे। अपने साथियों और मित्रों पर पूरा भरोसा रखते थे और यथा अवसर उनके सम्मान और यश का पूरा ध्यान रखते थे।

गत दो वर्षों में पं० श्रीवाचस्पतिजी शास्त्री, श्रीपं० प्रकाशवीर जी शास्त्री और पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री का वियोग आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति है। इन तीनों ही व्यक्तियों का अपना-अपना विशेष स्थान था। ये सभी बड़े प्रतिभावान् और यशस्वी वक्ता थे। श्रीवाचस्पतिजी शास्त्री तो कुछ देर तक अस्वस्थ भी रहे, किन्तु श्रीप्रकाशवीरजी शास्त्री को अचानक रेल-दुर्घटना ले गयी और उसके बाद एक-डेढ़ महीने में ही पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री चल बसे। श्रीशास्त्रीजी के रुग्ण होने का समाचार भी सुनने को नहीं मिला और पहले-पहल जब मुझे किसी व्यक्ति ने सूचना दी तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। मैंने फोन करके आर्य-सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से इस समाचार की पुष्टि कराई, तब इस हृदयविदारक वियोग का ज्ञान हुआ।

श्रीशास्त्रीजी लेखक भी बहुत अच्छे थे। कुछ एक लेख मैंने आर्यसमाज के पत्रों में उनके पढ़े। पुस्तक रूप में उनकी कोई कृति मुझे अब तक देखने को नहीं मिली। यदि वे कोई अपना ग्रन्थ पाण्डुलिपि के रूप में छोड़ गये हों, तो यह आर्यसमाज का कर्त्तव्य है कि उस ग्रन्थ को छपवाकर जनता को लाभान्वित करे और स्वयं यश का भागी बने।

मुझे यह जानकर सन्तोष हुआ कि श्रीशास्त्रीजी का स्मरण कराने के लिए एक ग्रन्थ की रचना हो रही है। यह उचित ही है। इतने बड़े विद्वान् और वक्ता का हम इस रूप में भी आदर न कर पायें, तो इससे अधिक और कृतघ्नता क्या होगी? मैं इस अवसर पर इसी शब्द-सुमनांजलि को श्रद्धापूर्वक श्रीशास्त्रीजी की स्मृति में अर्पण करता हूँ।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश के इतिहास की एक अमूल्य निधि : शास्त्रीजी

□ रामगोपाल शालवाले

स्वर्गीय पं० रामनारायणजी शास्त्री एक प्रबुद्ध विचारक, उच्च कोटि के साहित्यिक, वैदिक धर्म के प्रबल प्रचारक एवं आर्यसमाज के कर्मठ तथा उत्साही विद्वान् थे।

मेरा शास्त्रीजी के साथ गहरा सम्बन्ध रहा है। पंजाब के हिन्दी-आन्दोलन की समाप्ति पर उनके आदेशानुसार मैंने समूचे बिहार प्रान्त का दौरा किया, उस समय शास्त्रीजी सभी स्थानों पर मेरे साथ रहे। उस अवसर पर उन्हें निकट से देखने का मौका मिला, जिससे उनके प्रति मेरी श्रद्धा और भी बढ़ गई।

बिहार में आर्यसमाज के कार्य को संगठित करने में उन्होंने जो भूमिका निभाई है, वह आर्यसमाज के इतिहास में हमेशा याद रहेगी।

श्रीशास्त्रीजी देश के एक विख्यात विद्वान् और ओजस्वी वक्ता थे। उनके भाषण को सुनकर जनसामान्य में वैदिक धर्म, आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धा का उत्पन्न होना स्वाभाविक था। दिल्ली में स्वर्गीय शास्त्रीजी जब भी आते थे, बड़ी आत्मीयता के साथ वह मेरे पास रहते थे। उनकी वाणी में अत्यन्त ओजपूर्ण प्रवाह था। उनकी लेखनी में सशक्त प्रभाव था। उनके निधन से आर्यसमाज का एक स्तम्भ गिर गया है। बिहार प्रान्त में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार एवं संगठन के लिए श्रीरामनारायण शास्त्री जैसा प्रभावशाली सेवक मिलना कठिन है। हिन्दी-साहित्य की जो सेवा उन्होंने जीवनपर्यन्त की है वह भी देश के इतिहास की एक अमूल्य निधि समझी जायेगी। उनके निधन से जो क्षति हुई है, उसे पूरा नहीं किया जा सकता।

पूर्व-प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यकुलगौरव पं० शास्त्रीजी

□ डॉ० दुखनराम

विधि बहुत ही बलवान् है, उसकी लीला भी बहुत ही विचित्र है। यह ध्रुव सत्य है कि विधि की अप्रतिहत गति के सामने किसी का कुछ भी चलता-बनता नहीं है। कौन जानता था कि कराल काल का कुचक्र अनायास ही अपने भीषण वज्राघात से हमें सर्वथा मर्माहत कर देगा, और आर्य जनता की समग्र गतिविधि को संज्ञाहीन एवं श्रीविहीन बना देगा, अफसोस—

इक हूक सी दिल में उठती है,
इक दर्द ज़िगर में होता है।
मैं रात में उठकर रोता हूँ,
जब सारा आलम सोता है।

इसमें सन्देह नहीं कि आर्यसमाज का यह अनुपम चमकता सितारा असमय में ही अनायास अन्तर्धान हो गया! यह सम्पूर्ण आर्यजगत् के लिए महान् दुःखद एवं दुर्भाग्यपूर्ण प्रसंग है। इस विषादग्रस्त शोकाकुल वातावरण में हमारे सहृदय कृतज्ञ बन्धुओं ने इस स्वर्गीय पुनीत अमरात्मा की पुण्यस्मृति में एक चिर संस्मरण-स्वरूप स्मारिका के प्रकाशन का समायोजन किया है। यह सत्प्रयास प्रशंसनीय और अभिनन्दनीय है। साथ ही सत्कर्मनिष्ठ आर्यजीवन-अभिषिक्त दृढ़संकल्पवान् दिवंगत महापुरुष के प्रति सच्ची कृतज्ञता एवं श्रद्धांजलि समर्पित करने की भी यह एक उत्कृष्ट प्रक्रिया है। प्रसिद्ध नीतिकार नारायण पण्डित का कथन है :

गुणिगणगणनारम्भे न पतति कठिनी ससंभ्रमाद्यस्य।
तेनाम्बा यदि सुतिनी वद वन्ध्या कीदृशी नाम॥

वस्तुतः, जब देश-जाति एवं स्वधर्म के रंगमंच पर विद्वान् मनीषी गुणीजनों एवं त्यागी, तपस्वी बलिदानी आर्यनेताओं की गणना हो, उनका नामोल्लेख किया जाता हो, तो उस समय तर्जनी अंगुली के द्वारा सहसा जिस नाम का निर्देश न हो, देश, जाति और समाज जिससे गौरवान्वित न हो, और

CC-0. Gurukul Kangri Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसके नाम का उल्लेख तत्कालीन इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में नहीं किया जाय, ऐसे भारस्वरूप कुपुत्रों के जन्म देने से माता पुत्रवती नहीं कहलाती है, बल्कि वह तो वन्ध्या स्त्री के समान है, और उसका जीवन जीना भी व्यर्थ है। वास्तव में जीना एवं जन्म लेना तो उसी का सार्थक है, जिसके जीने और जन्म लेने से देश, जाति एवं समाज का अभ्युदय होता है। कुल गौरवान्वित होता है। जननी कृतार्थ होती है और जन्मभूमि वसुन्धरा पुण्यवती कहलाती है। धन्य हैं वे महापुरुष, जो अपने प्रखरतम समुज्ज्वल व्यक्तित्व एवं अलौकिक कृतित्व के दिव्यालोचन से दिग्भ्रमित राष्ट्र और समाज को सद्ज्ञान का आलोक प्रदान करते हैं। यह सत्य है कि हर युगीन नेता अपने प्रतिभा-सम्पन्न निखरित व्यक्तित्व से युग को प्रभावित करता है और अपने देदीप्यमान कृतित्व से लोक-कल्याण का सन्मार्ग विस्तृत करता है। ऐसे ही विद्यारत्न नरपुंगवों में अकाल-कालकवलित स्वर्गीय पं० रामनारायणजी शास्त्री का नाम भी समुल्लेखनीय है।

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की उक्ति भी श्रीशास्त्रीजी के जीवन के साथ ठीक-ठीक चरितार्थ होती है।

शास्त्रीजी का जन्म पटना जिलान्तर्गत मोकामा के सन्निकट चिन्तामणिचक ग्राम के साधारण सम्भ्रान्त भूमिधर ब्राह्मण-कुल में माघ शुक्ल चतुर्दशी, १९२६ ई० को हुआ था। बाल्यकाल में ही शास्त्रीजी में होनहार के सभी विलक्षण गुणं दृष्टिगोचर होते थे। वे अपने परिवार के सर्वप्रथम उदीयमान नर-रत्न थे। गुरुकुल, वैद्यनाथधाम, देवघर के सभी निष्णात स्नातकों में शास्त्रीजी एक प्रतिभासम्पन्न स्नातक तथा बिहार संस्कृत एसोसियेशन से शास्त्री की परीक्षा समुत्तीर्ण थे। उनका जीवन गुरुकुलीय शिक्षा-दीक्षा से पूर्णतया प्रभावित और चमत्कृत तो था ही, किन्तु प्राचीन और अर्वाचीन सांस्कृतिक शिक्षाओं से भी पूर्णतया परिपुष्ट था। इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने अपने समुज्ज्वल जीवन-स्वाध्याय की सरणी से गुरुकुल माता की गोद को सफल एवं सार्थक किया है। उनका यज्ञमय जीवन त्रिविध ऐषणाओं से सर्वथा परे हो सर्वमेध दीक्षा से अभिषिक्त था। उनका परोपकारमय विशाल व्यक्तित्व बड़ा ही चमत्कृत एवं लोक-कल्याण की भावना से सर्वथा ओतप्रोत था। इन्होंने ईश्वरीय देन के फलस्वरूप अपनी कलात्मक प्रेरणा से समस्त आर्य जनता को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था। इनकी ओजस्वी भाषण-कला, साहित्यिक वाग्मिता, गवेषणात्मक वक्तृत्व, सरसता, उपदेशगरुना तथा प्रखरतम राजनीतिक सूझ-बूझ गरिमा पर जनता प्रमुग्ध थी। जन-मनोरंजन एवं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षण के अनेक गुण और साधन-सामग्री उनमें विद्यमान थी। उन्होंने अपने सहज सौजन्य, औदार्य, सदाचारिता, सहृदयता, मिलनसारिता आदि विविध दैवी सम्पदाओं से राष्ट्र की सभी दिशाओं में धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक नेताओं को भी आत्मसात् कर लिया था। फलतः, आपके स्वर्गारोहण के उपरान्त शवयात्रा में राष्ट्र के सभी क्षेत्रों के मूर्धन्य महापुरुषों, नेताओं, कवियों, लेखकों, सम्पादकों और अनेकानेक कार्यकर्त्ताओं ने सम्मिलित होकर आपके प्रति शोक-संवेदना व्यक्त करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और समस्त आर्यजगत् का कार्यकलाप स्थगित कर दिया गया।

शास्त्रीजी जीवन पर्यन्त 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' की मूल भित्ति पर आरूढ़ होकर वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज की सेवा-सुरक्षा करते रहे और उसके सफल जागरूक प्रहरी बने रहे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के उपमन्त्री तथा बिहार-राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री पद पर आसीन होकर सुचारु रूप से कार्य करते रहे। भारतीय जनसंघ एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के भी आप लब्ध प्रतिष्ठ रहनुमा रहकर भारतीय जनजीवन की विविध समस्याओं के समाधान हेतु अपनी आवाज बुलन्द करते रहे। अखिलभारतीय आर्यकुमार सभा और आर्यवीर दल के भी आप पुनरुज्जीवक समुत्थापक एवं सफल संरक्षक बनकर युवा पीढ़ी के नवयुवकों में नया जीवन एवं नई ऊर्जा का प्रस्फुरण एवं संचार करते रहे। इसके अतिरिक्त सरस्वती शिशुमंदिर, अखिलभारतीय विद्यार्थी परिषद् आदि अनेकानेक भारतीय छोटी-बड़ी संस्थाओं के साथ भी आपका तादात्म्य सम्बन्ध था और जीवन-पर्यन्त अपनी त्याग-तपस्या एवं कर्मकुशलता से उन संस्थाओं को अभिसिंचित और सुपुष्पित करते रहे। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के तो आप अभिन्न अंग थे। आपने अपनी अलौकिक प्रतिभा एवं सामाजिक कार्यदक्षता से १५ जनवरी, १९७८ ई० को निदेशक-पद का प्रभार ग्रहण कर परिषद् के समुन्नयन में अनुपम योगदान करते हुए उसकी समृद्धि और आकर्षण में चार चाँद लगाया। प्राचीन हस्तलिखित शोध-विभाग के प्रभारी के रूप में रहकर प्राचीन हस्तलिखित उपलब्ध अनेक ग्रन्थों, पोथियों, स्मारिकाओं, पत्र-पत्रिकाओं और अभिनन्दन-ग्रन्थों का लेखन, सम्पादन एवं प्रकाशन-सम्बन्धी आपकी सेवाएँ सदा स्मरणीय रहेंगी। साथ ही बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के बारह खण्डों में प्रकाशित होनेवाले बिहार के साहित्यिक इतिहास के निर्माण में भी आपका सहयोग सर्वदा अभिनन्दनीय रहेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीशास्त्रीजी अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों के यशस्वी नियामक थे। उन्होंने अपने प्रत्युत्पन्नमतित्व की प्रतिभा से समग्र आर्यजगत् के विविध पक्ष को वैदिक धर्म एवं आर्य-संस्कृति के सत्सिद्धान्तों और मान्यताओं के अनुकूल ही आलोकित किया।

वैदिक धर्म एवं वैदिक संस्कृति के प्रबल समर्थक, स्वतन्त्र राष्ट्रीयता के गौरवगान, मानवता के पावन पुण्डरीक, आर्य मर्यादा के परमोन्नायक, युवा पीढ़ी के वर्चस्वी नेता, आर्यकुल के शिक्षा-निदेशक, ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसमाज स्थापना-शताब्दी-सम्मेलन-समारोह के सफलताकांक्षी, वैदिक भावनाओं के उत्प्रेरक, कुशल कर्णधार, युगधर्म-प्रवर्त्तक, महर्षि दयानन्द के चरण-चंचरीक एवं सत्यं शिवं सुन्दरम् की भव्य भावनाओं से सुगुम्फित सिद्धान्तों और सद्विचारों को जनगण तक पहुँचाने के लिए अहर्निश प्रयत्नशील, कृतसंकल्पी श्रीरामनारायण शास्त्रीजी व्यक्ति के रूप में एक युग, एक संस्था और एक पुण्यकर्म के प्रतीक थे। अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि क्रूर काल के असामयिक कुचक्र से भारतीयता के विशुद्ध स्वरूप विद्यारत्न श्रीरामनारायणजी शास्त्री आज हमारे बीच नहीं रहे।

श्रद्धेय शास्त्रीजी का प्रेरक व्यक्तित्व, स्फूर्तिप्रज्ञ नेतृत्व, राष्ट्र एवं समाज के हित में किये गये शुभ आयोजन, राष्ट्रीय एवं सामाजिक प्रश्नों और विभिन्न समस्याओं पर दिये गये उनके सद्विचार, समाधान तथा सम्मतियाँ विराट् काल के कागज पर अमिट हस्ताक्षर-स्वरूप पुण्यस्मृति-चिह्न के रूप में बने रहेंगे। ऐसे गौरवमय व्यक्तित्व के प्रति सद्भाव व्यक्त करना श्रद्धांजलि समर्पित करना अपने आपमें एक महान् स्तुत्य और अनुकरणीय कार्य है।

आर्यजगत् के सन्मार्ग-दर्शक के रूप में वैदिक धर्म एवं आर्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार में तथा मानवता के पोषण और संरक्षण में श्रीशास्त्रीजी का योगदान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार और विस्तार में उन्होंने अथक परिश्रम किया। उनका ज्वलन्त एवं प्रेरक व्यक्तित्व स्वराष्ट्र-धर्म और समाज के समुन्नयन में सदा सजग और तत्पर था। सत्यांश में वे एक व्यक्ति नहीं, एक संस्था थे, और थे वे युगधर्म के आह्वान पर मर मिटनेवाले एक सच्चे यशस्वी आर्य नेता।

यह सत्य है कि आप युगीन चेतक के द्युतिमान् अग्रदूत थे। आपका कर्म एवं आदर्श व्यक्तित्व राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र वैदिक आर्य-भावना के विस्तार और संगठन में तथा विविध सम्मेलन-समारोह आदि के आयोजनों को सफलीभूत बनाने में हमेशा कटिबद्ध और दृढप्रतिज्ञ रहा है। आप जीवन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर देश जाति, समाज और असहाय अकिंचन जनों के निःस्वार्थ सेवक बने रहे। वैदिक आर्य राजनीति के आप प्रथम पोषक थे। राष्ट्रभाषा हिन्दी की सम्मानित सुरक्षा, शराब नशाबन्दी, अभक्ष्य पदार्थों के सेवन का निषेध, गोहत्या-निषेध, भ्रष्टाचार-उन्मूलन और प्राचीन वैदिक ऋषि मुनियों के निर्देशानुसार वैदिक आर्य-प्रणाली को पुनरुज्जीवित करने की दिशा में निर्भीकतापूर्वक जितने भी अभियान और आन्दोलन चलाये गये, उनमें आपने सर्वाधिक सक्रिय योगदान किया और आजीवन एक सफल आदर्श नेता के रूप में रहे।

श्रद्धेय शास्त्रीजी जबतक जीवित रहे, मनसा, वाचा, कर्मणा कथनी और करनी में अभेद रूप से वैदिक धर्म, संस्कृति एवं वैदिक राजनीति के उद्दीपन में सदैव अग्रसर रहे। आपने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इस वैदिक उद्घोष के सार्वभौम विस्तार हेतु जो अविरुद्ध कदम उठाया, वह सर्वथा सराहनीय और चिरस्मरणीय रहेगा।

अखिल जगन्नियन्ता जगदीश्वर से प्रार्थना है कि आर्य-संस्कृति के प्रकाश-पुंज, महान् देशभक्त, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक, आर्यसमाज के उज्ज्वल रत्न, युवकहृदयसम्राट्, राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत, व्याख्यानकेशरी, श्रद्धेय पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री के सदृश कर्मवीर, धर्मधुरीण, वेद-सन्देशवाहक, सच्चा लोकहितैषी, आर्यकुलगौरव, आदर्श नेता सदैव इस भारतीय वसुन्धरा पर अवतीर्ण होते रहें, जिससे कि इस महती क्षति और अभाव की पूर्ति हो सके, यही शुभ कामना है।

●

द्रव्यागमो नृणां सूक्ष्मः पात्रे दानं ततः परम्।
कालः परतरो दानात् श्रद्धा चैव ततः परा॥

—महाभारत : १४.११.७५

धर्मपूर्वक धन कमाना मनुष्यों के लिए बहुत उत्तम बात है। उससे भी उत्तम अच्छे कार्य में उसका उपयोग है तथा इससे भी महत्त्वपूर्ण आवश्यक अवसर पर किसी की सहायता करना है और इससे भी बढ़कर बात यह है कि वह सहायता श्रद्धापूर्वक विनम्रता से की जाये। यही यज्ञ का विशुद्ध स्वरूप है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतीत गौरव के साकार पुजारी : पं० रामनारायण शास्त्री

□ आचार्य रमेशचन्द्र अवस्थी

प्रवाहशील शैली में भाषा की ओजस्विता, माधुर्य एवं लालित्य के त्रिगुणात्मक विधा से पूर्ण वाणी हमारे परम स्नेही श्रीरामनारायण शास्त्रीजी की रसवर्षी जिह्वा पर सदैव नर्त्तन किया करती थी, उन्हें रससिद्ध वक्ता कहने में हमें कोई संकोच नहीं है, आर्यसमाज के अधिकांश वक्ता तर्क और कर्कश वाणी के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रायः लोगों की धारणा है कि आर्यसमाज में तर्क अधिक है भावना और श्रद्धा कम है, भाषण में वक्ता के स्वर में कठोरता और तर्क की रूक्षता रहती है, हृदय की भाषा कम होती है, मस्तिष्क का पैनापन अधिक होता है; परन्तु शास्त्रीजी इसके अपवाद थे, वह अनुभूतिप्रधान' सहृदय प्राणी थे, जहाँ साहित्य और कला, इतिहास और संस्कृति एवं भावना तथा रसमयता समरूप से सिंचित होती थी। वैदिक जीवनधारा की ओजस्विता, औपनिषदिक ज्ञान की सूक्ष्म वेद्यता और महाकवियों की कल्पना प्रधानता शास्त्रीजी को सहज में प्राप्त थी। यही कारण था कि जिस परिषद् में, संगोष्ठी में, विचार-चर्चा में और बृहत् सभाओं में उनके विचार प्रकट होते थे श्रोता तन्मयता के साथ सुनते थे, भावविभोर होते थे और वक्तृता समाप्त होते ही वक्ता के प्रकट विचारों के पक्षधर बन जाते थे। वाणी की सम्मोहन-शक्ति के द्वारा श्रोताओं को अपनी भावना के साथ बाँध लेना शास्त्रीजी का सहज कौशल था।

विद्वान् के सान्निध्य, सरस्वती के कृपाधर के नैकट्य में यदि जीवन का कुछ क्षण व्यतीत हो जाय, तो मैं अपने को पुण्यशाली समझता हूँ, परन्तु यदि ऐसे व्यक्ति के साथ अधिक समय व्यतीत हो, तो भाग्यातिरेक के अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जा सकता है। मैं अपने को गौरवशाली समझता हूँ कि जब-जब शास्त्रीजी लखनऊ आये, हमारे साथ ही रहे और कानपुर भी जब गये, हमें लखनऊ में सूचना दी और हम उनके साथ रहे। आर्यसमाज लखनऊ के सन् १९७६ ई० के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने शास्त्रीजी आये, मेरे साथ ही डी. ए. वी. कालेज में ठहरे। यहीं सभा और भाषणों का प्रबन्ध था। निकट से देखने का अवसर मिला, कितने सहज स्वभाव के सरलहृदय प्राणी थे। किसी बात की चिन्ता नहीं, कोई उद्विग्नता नहीं, कोई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असन्तुलन नहीं। जैसे पवित्र भागीरथी समरस होकर बहती हैं, वैसे ही शास्त्रीजी की जीवन धारा थी। जो कुछ जलपान और भोजन के समय प्राप्त हुआ, उसी में पूर्ण सन्तोष, कभी माथे पर सिकुड़न नहीं और भौंहों में त्योरी नहीं, सदैव सहज, मधुर मुस्कान अधरों पर विकसित रहती थी और नयनों में सबके लिए स्नेहिल जलधारा। एक सीमित मानव में असीमित मानवीय गुण यदि कहीं समवेत थे, तो वे रामनारायणजी शास्त्री में थे।

भारत के प्राचीन गौरवमय सांस्कृतिक इतिहास और वैदिक कालीन तथा बौद्ध कालीन मनीषियों की ज्ञानधारा से शास्त्रीजी पूर्ण प्रभावित थे और आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुपोषक इस कारण से थे कि स्वामीजी ने भारत का उद्धार वैदिक वाङ्मय के प्रकाशपुंज में ही अनुस्यूत अनुभव से किया था। भारतीय प्राचीन संस्कृति के रुपहले और सुनहले तारों के सहारे शास्त्रीजी प्राचीन भारत की गरिमामय चित्रशैली को प्रस्तुत करने में सक्षम थे। प्राचीन उत्कर्ष और कला पर, अतीत की ज्ञानराशि में चमकती कलिकाओं को बटोरकर, सहज और सँवारकर शास्त्रीजी बड़ी कुशलता के साथ प्रस्तुत करते थे। उनके भाषणों में अतीत का गौरव बोलता था, जीवित और साकार होता था। वाणी की अभिव्यक्ति में अतीत के गौरव का साकार पुजारी यदि शास्त्रीजी को कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। साथ ही वह स्वयं जहाँ विचारों से भारतीय स्वर्णयुग की आभा से आभासित थे, वहीं वेश-भूषा में भारतीय सारल्य के प्रतीक थे। श्वेत धोती, कुरता, सदरी और कन्धे पर पड़ा हुआ रेशमी उत्तरीय ही उनकी सज-धज थी, पैरों में चप्पल और नंगे सर अधिक रहते थे। शीतकाल में भी अधिकतर सहज और सरल वेश-भूषा उन्हें रुचिकर थी।

पुरातन के प्रति सहज लगाव शास्त्रीजी में था। तभी शोध-प्रवृत्ति बलवती थी। प्राचीन दार्शनिक महाकवि एवं विचारकों की दर्शित प्रतिभा में उन्हें प्रकाश मिलता था और उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञानाम्बुधि में वह मुक्ताओं की खोज करते थे। जीवन में न भोजन के प्रति, न परिधान के प्रति, न प्रियजन और परिवार के प्रति इतना मोह था, जितनी चिन्ता और अभिव्याप्ति थी, किसी प्राचीन कवि के किसी वाक्य के अन्तस्तल तक पहुँचने की और किसी विद्वान् विचारक के विचार-सरणि के मूल तक जाने की थी। तभी यौवन के दिन शोध-परिचर्चा में बीते तथा जो कुछ ज्ञानमुक्ताएँ मिलीं, उन्हें समाज में बिखेर देने में उन्हें रस मिलता था और आह्लाद का अनुभव होता था।

आर्यसमाज-क्षेत्र के अग्रणी वक्ता होते हुए उनका अपना विशेष स्थान साहित्य और कला के क्षेत्र में था। सायं आर्यसमाज के मंच से वेदों के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्कर्ष पर भाषण देते थे, तो दिन में महाविद्यालय के प्राध्यापकों और वरिष्ठ कक्षा के छात्रों के लिए साहित्य और जीवन के सामंजस्य के रहस्य को उद्धृत करते थे। लोकप्रियता उन्हें प्राप्त थी और शोध के छात्रों की कठिनाइयों को सहज में समझकर उसे पूर्ण सहायता और पथ-प्रदर्शन की दिशा देते थे।

शास्त्रीजी जिससे एक बार मिल लेते थे, वह उनका हो जाता था। आर्यसमाज लखनऊ आये, उनके सार्वजनिक भाषण हुए, जनता इतनी प्रभावित हुई कि बराबर अनुरोध करती कि अगले वर्ष फिर शास्त्रीजी आवें। दो वर्षों तक निरन्तर आये और १९७८ ई० के वार्षिकोत्सव के अवसर पर उनको आमन्त्रित करने का आयोजन हो ही रहा था कि सहसा वज्र-सा समाचार मिला कि भारतीय संस्कृति का परम पोषक पखेरू हमारे बीच से उड़कर अब प्राचीन मनीषियों और साहित्यस्रष्टाओं के बीच में सदैव के लिए चला गया, जहाँ जरा-मरण का भय नहीं, केवल अबाध एकरसता है।

सुहृद्वर रामनारायण शास्त्रीजी की हार्दिक इच्छा थी कि मैं पटना में उनके साथ कुछ दिन रहूँ और साहित्य-चर्चा में तथा कला-विवेचन में कुछ समय बीते। कार्यक्रम बना और बिगड़ा, मेरे भाग्य में उनका और सान्निध्य नहीं था, तभी उनके जीवन में पटना न जा सका। भावी कार्यक्रमों को विधाता के अतिरिक्त और कौन समझ सकता है, परन्तु खेद है तथा रहेगा कि उनके साथ साहित्य-चर्चा का हमारा जो कार्यक्रम बना था, वह विधाता की निष्ठुरता से विखण्डित हो गया।

शास्त्रीजी तन्मय एवं भावुक थे। कालिदास की सरस काव्य पंक्तियाँ, विद्यापति के रसमंजूषी गीत, प्रसाद की कामायनी के पद और महादेवी के विरह-प्रवण उद्गार उन्हें प्रिय थे और हमारा सौभाग्य है कि जब हम दोनों एक साथ बैठते थे, तब शास्त्रीजी कुछ गुनगुनाते और सुनाते थे। ऐसे साहित्यकाल की स्मृति को स्थायी बनाने के लिए उनके प्रशंसक अग्रसर हैं, यह सन्तोष की बात है। आयुष्मान् अभिजित कश्यप तो उनके लिए जीवित धरोहर हैं। आशा है, सबके प्रयासों से शास्त्रीजी हमारे बीच में वर्षों चर्चा के विषय रहेंगे, हमारा आशीर्वाद इन युवकों को है।

पूर्ण श्रद्धा और भरे हुए हृदय से अपने अभिन्न मित्र स्वर्गीय रामनारायण शास्त्रीजी के प्रति मैं श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

भू. पू. सम्पादक, 'आर्यमित्र'
लखनऊ

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविस्मरणीय व्यक्तित्व : पं० रामनारायणजी शास्त्री

□ प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

सम्भवतः १९४५-४६ ई० की बात होगी। दक्षिण कलकत्ता आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव हो रहा था। हम उस समय विद्यार्थी थे और कलकत्ता के प्रसिद्ध चार्टर्ड बैंक में रहते थे। बैंक से कई आर्य सज्जन उत्सव में गये थे। मैं जा न सका था, अतः लौटकर मुझे लोगों ने बताया कि बिहार से एक श्रीरामनारायणजी शास्त्री आये हैं, गजब का बोलते हैं। श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध-सा कर लेते हैं। इस प्रकार की प्रशंसा प्रायः सबने की और ५-६ मील की दूरी पर होनेवाले उत्सव में जाने का आकर्षण श्रीशास्त्रीजी की ख्याति थी।

अगले दिन हम समय से पूर्व प्रथम पंक्तियों में ही जा बैठे। व्याख्यान का विषय तो इस समय ध्यान में नहीं है। किन्तु उनका गम्भीर गर्जन, ऊर्जस्वल वाणी, अविस्मरणीय व्यक्तित्व आज भी स्मृतिपटल पर धूमिल नहीं हो सका है। उन दिनों साम्प्रदायिक एकता-मिलन इत्यादि के नारे राजनीतिक मंचों पर लगते थे। श्रीरामनारायणजी ने पम्पापुरी का एक प्रसंग वाल्मीकि-रामायण से उद्धृत किया। उनके अध्ययन-कक्ष के गवाक्षों से इठलाते पवन ने उनकी वाल्मीकि-रामायण की पुस्तक का वह पन्ना उलटकर सामने कर दिया—शरद् की सुहावनी शोभा में एक सरोवर में एक बगुला धीमे-धीमे आगे बढ़ रहा था—बकध्यान-मत्स्यसन्धान। किन्तु सरलहृदय राम-लक्ष्मण से बोल उठे—'लक्ष्मण ! देख पम्पा के बगुले भी परम धार्मिक हैं', शनैः-शनैः पैर उठाते हैं कि कहीं कोई पैर की चोट से मर न जाये। भला राम जैसा सरलहृदय क्या जान सकता था बकध्यान और मत्स्यसन्धान।

किन्तु एक मछली से यह राम के द्वारा बगुले की प्रशंसा सही न जा सकी। मछली बोली—राम ! इस बगुले ने हमारा कुल ही साफ कर दिया है। इस हृदयस्पर्शी व्याख्या के साथ श्रीरामनारायणजी ने श्लोक को सुनाया। राम बोले :

पश्य लक्ष्मण पम्पायां बकः परमधार्मिकः।
शनैः-शनैः पदं धत्ते जीवानां वध-शङ्कया॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मछली से यह प्रशंसा न सुनी गयी और उसने उत्तर दिया :

बकः किं वर्ण्यते राम ! येनाऽहं निष्कुलीकृतः।
सहवासी विजानीयात् चरित्रं सहवासिनाम्॥

यह बिरादरी बँटानेवालों पर और एकता के हिमायतियों पर ऐसी चुभती उक्ति थी कि बिना याद किये याद हो गई और आज भी २५-३० वर्ष बाद बिना उद्धरण मिलाये हमने ये श्लोक उद्धृत कर दिये। श्रीशास्त्रीजी का यह ओजस्वी व्यक्तित्व अविस्मरणीय है।

कुछ दिन और बीते। मैं कलकत्ता के समाजों में कइ बार कई जगह व्यवस्थापकों की भूमिका में आने लगा। श्रीशास्त्रीजी के कई व्याख्यान यथा—आर्यसमाज संस्था है या आन्दोलन इत्यादि आज भी बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। काश! उन दिनों टेप रिकार्डर आज की तरह प्रचलित होते और इन व्याख्यानों का रिकार्ड हमारे पास होता।

कलकत्ता-आर्यसमाज के उत्सवों पर श्रीशास्त्रीजी की विशेष अनुकम्पा रहती थी। प्रायः आ ही जाते थे, चाहे दो तीन-दिन के लिए ही आवें। जब कभी एक-दो दिन विलम्ब से आते थे तो हमें सैकड़ों व्यक्तियों को यह उत्तर देना पड़ता था कि आदरणीय शास्त्रीजी कल या परसों आ रहे हैं।

आदरणीय शास्त्रीजी हमसे आयु में एक दो महीने बड़े थे, किन्तु हमें अग्रज बनाकर रखने में उन्हें कोई सुख मिलता था। हमपर इस रहस्य का उद्घाटन तब हुआ, जब उनके देहान्त के पश्चात् उनकी जन्मतिथि प्रकाशित हुई।

आदरणीय शास्त्रीजी का हमपर और हमारे परिवार पर बड़ा विश्वास था। सन् १९६० ई० के आसपास की घटना होगी। दानापुर आर्यसमाज का उत्सव हो रहा था। जिस दिन उत्सव का आरम्भ था, उसी दिन हमारा कॉलेज दुर्गापूजा की छुट्टियों के लिए बन्द हो रहा था। अतः छुट्टी से पूर्व हम कॉलेज में अनुपस्थित न होना चाहते थे। जब हमारी अस्वीकृति और कुछ एक की और अस्वीकृति हो गई, तो शास्त्रीजी ने एक पत्र देकर भेज दिया एक व्यक्ति को और कहलवा दिया कि 'अवश्य पहुँचें, आर्यसमाज की मर्यादा का प्रश्न है।' पत्र मिलने पर रुकना असम्भव था, अतः हम यथासमय पहुँच गये।

वहाँ हमने रामनारायण शास्त्रीजी की एक और निर्भीकता देखी। श्रीदिनकरजी की प्रसिद्ध कृति 'संस्कृति के चार अध्याय' प्रकाशित हो चुकी थी। श्रीदिनकरजी साहित्य-जगत् के, बिहार के ही नहीं, सम्पूर्ण भारत के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रतिम निर्द्वन्द्व महारथी थे। उनके साथ टकराना और बिहार में ही, सुरक्षित न था। हरदिल अजीज चिकनी राजनीति की जूतियाँ ढोनेवाले उपदेशकों का हौसला श्रीदिनकर से टकराने का न हो सकता था। फिर दिनकरजी की विद्या भी बड़ी उच्च थी। उनकी बातों को काटना या उन्हें उत्तर देना जहाँ विद्या का काम था, वहीं साहसिक भी था।

श्रीदिनकरजी ने 'सत्यार्थप्रकाश' के स्वमन्तव्यामन्तव्य से आर्यावर्त्त की सीमा का उद्धरण देकर 'आर्यवाद का दुष्परिणाम' एक प्रसंग उत्थापित किया है। यह 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ न पढ़ने केवल स्वमन्तव्यामन्तव्य-मात्र पढ़ने का अक्षम्य दुष्परिणाम था। हमने लेखक की इस भूल की ओर ध्यान दिलाते हुए श्रीदिनकरजी को लिखा था कि यह स्वामी दयानन्द जैसे महान् व्यक्ति के लिए भी अन्याय है। जब दिनकरजी ने हमें उत्तर न दिया, तो हमने दानापुर (पटना) की उस विशाल सभा में संप्रमाण श्रीदिनकरजी की मान्यता का निराकरण किया और स्वामी दयानन्द के पक्ष की स्थापना करके सिद्ध किया कि यह आर्यवाद का दुष्परिणाम श्रीदिनकरजी के किसी पूर्वाग्रह का फल था।

मेरे व्याख्यान के पश्चात् श्रीरामनारायण शास्त्री धन्यवाद देने उठे। उस समय श्रीदिनकरजी द्वारा प्रतिपादित 'सामासिक संस्कृति' की मान्यता की वह धज्जियाँ उड़ाई गईं कि पटनावाले भी दंग रह गये। श्रीशास्त्रीजी की इस निर्भयता की चर्चा व्याख्यान के पश्चात् कई गैर आर्यसमाजी प्राध्यापक बुद्धिजीवियों ने मुझसे भी की थी।

श्रीरामनारायणजी विद्वान् थे, वक्ता थे, आर्यसमाज के दीवाने भी थे। इस सबके साथ वे अपनी धुन के बड़े पक्के थे।

सारे देश में आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी मनाई जा चुकी थी। दिल्ली का उत्सव था ही विचित्र। कलकत्ता, मेरठ, कानपुर, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा सब जगह स्थापना-शताब्दी मनाई जा चुकी थी। बीच में एक बिहार में कुछ टालमटोल का-सा वातावरण दिखा। इधर श्रीरामनारायणजी की भूमिका बिहार के आर्यसमाज-संगठन में कुछ अलग-अलग-सी थी। उन्हें यह असह्य हो रहा था कि बिहार में शताब्दी न मनाई जाये।

उन्होंने अपने कुछ साथियों को लेकर बरौनी में शताब्दी का सुन्दर आयोजन कर डाला। मुझे भी पत्र आया व्यक्तिगत स्नेह का वास्ता दिया हुआ था, आर्यसमाज की और श्रीरामनारायणजी की इज्जत का प्रश्न था। मैंने अपने अनुज प्रिय शिवाकान्त को उत्सव से पूर्व सन्ध्या को ही बरौनी भेज दिया, ताकि वे यज्ञ में ऋत्विग्वरण के साथ वेदपाठ कर सकें।

CC-0. Gurukul Kangri Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे पहुँचने पर बिहारवाले मुझे बताने लगे कि संगठन ने इस सम्मेलन का विरोध किया है। तार दे देकर उत्सव स्थगित हो जाने के बहाने न पहुँचने की सलाह दी है। बिहार का प्रान्तीय स्तर का एक भी अधिकारी नहीं आया था। स्वीकृति देकर भी सार्वदेशिक सभा के लोग भी प्रान्तीय संगठन का साथ देने के लिए आने से कतरा गए। सत्य-असत्य की तो हम क्या परख करें किन्तु वह सब हमें बताया गया, जो घटना-क्रम से सत्य प्रतीत होता था।

भाई शिवाकान्त ने मेरे पहुँचने पर मुझे बताया कि सहयोगियों के अभाव में श्रीशास्त्रीजी फावड़ा-झावड़ी लेकर यज्ञवेदी की मिट्टी पाट रहे थे। थक गए थे तो श्रीशास्त्रीजी वहीं जमीन पर गमछा बिछाकर सो गए। नींद टूटी और थकावट छूटी तो फिर मिट्टी खोद-खोदकर झावड़ी भरते और अपने ही सिर पर ढोकर यज्ञवेदी को पाटते। किन्तु यज्ञ का काम ठीक समय पर आरम्भ किया गया।

सोचता हूँ, बिहार के महोपदेशक, सफल वक्ता, अखिलभारतीय प्रतिभा के प्रचारक ने आर्यसमाज के सम्मान की रक्षा के लिए अपने साथियों के साथ मिट्टी खोदी एवं ढोई, किन्तु आर्यसमाज के सम्मान की रक्षा की। अपने ही संगठन के कर्णधारों से प्रताड़ित होकर भी अपने धुन के धनी आदरणीय भाई रामनारायणजी शास्त्री की पुण्यस्मृति में शत-शत प्रणाम करता हूँ। जब-जब बिहार की धरती पर आर्यसमाज के इतिहास का निष्पक्ष प्रयास होगा, तब-तब इस बलिदानी विद्वान् की गाथा स्वर्णाक्षरों में अंकित की जायेगी।

'धन्यास्ते सुकृतिनः!'

आचार्य, आर्यसमाज
कलकत्ता

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धांजलि

साहित्य धुरी, धुन्ध में तेरी बनी,
वक्ता रहे 'युग' साहित्य-केन्द्र का।
क्रान्तिध्वज आत्मसंगत बनी तेरी,
यह श्रद्धांजलि प्रभु आपके प्रति है मेरी।

'प्रभु' शान्ति के पुजारी तुम, युग-क्रान्ति के नायक तुम,
समाज-कल्याण 'नव' पथ अपनाया, अश्रु भी उसी पे ढाया।
शान्ति-शान्ति 'नव' क्रान्ति लाया, साहित्य-ध्वज ऊपर लहराया,
जन श्रद्धांजलि को तुम अपनाओ, आत्मसंगीत एक बार सुनाओ।।

कटु कण्टक है वसुन्धरा, अधेड़ जीवन है मेरा,
कंगन खनक एक सुर जगी है, साहित्य कफन है मेरा।
विरह-व्यथा मेरे जीवन की श्रद्धांजलि मैं तुझे देता हूँ,
'प्रभु' सच कहता हूँ मैं, दर्द को लिये जीता हूँ।।

'प्रभु' पंच-पुष्प श्रद्धांजलि, बना तेरा आभूषण,
युग 'दर्द' जीवन सन्त, अन्त-मात्र आधार बना।
तेरे जीवन का सूर्यास्त, वसुन्धरां के वक्षस्थल पर,
'प्रभु' अरथी भी विश्व-साहित्य का ताज बनी।।

क्रूर दण्ड जमाने की, तेरी याद मिटाई जाती है,
तुझे आँचल से ढके हुई है नव-ऊषा।
मात्र शब्द-श्रद्धांजलि मैं तुझे देता हूँ,
मैं तेरे लिए 'अमर श्रद्धांजलि दीप' जलाये जीता हूँ।।

–विद्यासागर पाण्डेय

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मयोगी श्रीरामनारायणजी शास्त्री

□ स्वामी ओमानन्द सरस्वती

गत वर्ष १९७७ ई० में आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार की स्वर्ण-जयन्ती के उपलक्ष्य में मुझे बिहार की राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ के अधिकारियों के अनेक पत्र इस महोत्सव पर आग्रहपूर्वक बुलावे के प्राप्त हुए, जिसे मैं टाल नहीं सका। जाने का एक मुख्य कारण यह भी था कि अपने पुराने साथी पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री पर्याप्त समय से रोगी चले आ रहे थे। उनके दर्शन की उत्कट इच्छा जो पर्याप्त समय से मेरे मन में थी, वह मुझे पटना जाने के लिए विवश कर रही थी, इसी कारण मैं पटना बहुत से आवश्यक कार्यों को छोड़कर पहुँच ही गया। मेरे शिष्य ब्रह्मचारी रामवीर जी मेरे साथ थे। प्रचार की दृष्टि से हम अपने साथ कुछ साहित्य भी ले गये थे। वहाँ जाकर पं० रामनारायणजी शास्त्री से जो मिलने की उत्कट इच्छा थी, उसको पूरा करने के लिए उनके स्थान की पूछताछ की; क्योंकि वे इस महोत्सव में भी नहीं पधारे थे। गुजरातवाले पं० श्रीभगवान् देवजी शर्मा भी पटना पहुँचे हुए थे। उनकी भी शास्त्रीजी से मिलने की इच्छा थी। हम दोनों ने मिलकर कार्यक्रम बनाया और उनके घर पर पहुँच गये। उस समय भी शास्त्रीजी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, स्वास्थ्य में सुधार अवश्य था। पर्याप्त समय से मधुमेह का रोग चला आ रहा था और चिकित्सा भी साथ-साथ चल रही थी। उनकी निर्बल अवस्था देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ। उन दिनों जहाँ अन्य औषधियों का सेवन वे कर रहे थे वहाँ अपने घर के आँगन में लगी कड़वे परवल की लता के पत्तों का भी वे औषध के रूप में सेवन करते थे। उससे उनको लाभ भी हो रहा था। मैंने भी अपने दो-तीन अनुभूत योग मधुमेह पर बताये, जो उन्होंने लिख लिए। हो सकता है, उनमें से उन्होंने किसी का सेवन किया हो। शास्त्रीजी के साथ पहले से ही मेरी बहुत आत्मीयता थी; क्योंकि वे आर्यसमाज के गिने-चुने विद्वानों में से थे। बहुत ही अच्छे लेखक तथा प्रभावशाली वक्ता थे। जिस प्रकार पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री उत्तरप्रदेश के अच्छे विद्वान् वक्ता माने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

जाते थे, उसी प्रकार वे बिहार प्रदेश के धाराप्रवाह बोलनेवाले विद्वान् उपदेशक थे। उनकी वक्तृत्व-कला और लेखन-शैली दोनों ही अद्भुत थी। इसलिए बिहार के शोधकार्य करनेवाले ग्रन्थों के मुख्य सम्पादकों में से आप भी एक थे। इस संस्था ने बहुत से ग्रन्थ प्रकाशित किये, जिनके प्रकाशन का श्रेय आपको ही है। श्रीरामनारायणजी शास्त्री के अनेक व्याख्यान आर्यसमाज के बड़े-बड़े सम्मेलनों और उत्सवों पर सुने थे। उनकी व्याख्यान-शैली श्रोताओं को मोह लेती थी। परमपिता परमात्मा उनकी दीर्घायु करते तो भारतवर्ष और आर्यसमाज की बहुत बड़ी सेवा होती। आर्यसमाज बम्बई फोर्ट की शताब्दी दिसम्बर, १९७७ ई० में हुई। उसे हमारे गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने देखने का बहुत आग्रह किया। उनके आग्रह को मैं नहीं टाल सका। मैं और हमारे कुछ अध्यापक एवं ब्रह्मचारी सब मिलकर १८ व्यक्ति थे। चूँकि बम्बई में ही सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द जी महाराज ने की थी, इसलिए सारा आर्यजगत्, आर्यसमाज स्थापना-शताब्दी वहीं मनाना चाहता था। किन्हीं कारणों से वह शताब्दी-समारोह बम्बई में नहीं हो सका और वह बम्बई के स्थान पर दिल्ली में हुआ। बम्बई-शताब्दी का स्थगित होना सबको अखरता रहा। जब आर्यसमाज फोर्ट ने अपना स्वर्ण-जयन्ती-समारोह मनाया, तब इससे आर्यजपत् को कुछ सन्तोष हुआ। इसलिए बहुत दूर-दूर से आर्यबन्धु बम्बई के महोत्सव पर पहुँचे। इस उत्सव में पं० रामनारायणजी शास्त्री परिवार-सहित पधारे। उनके दर्शन करके मुझे तथा सभी आर्यबन्धुओं को बहुत हर्ष हुआ। उनका स्वास्थ्य कुछ सुधरा हुआ दिखाई दिया तो सभी को यही आशा हुई कि यह आर्यसमाज का विद्वान् पुनः शीघ्र ही कार्यक्षेत्र में उतरेगा। आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम के विषय में भी उनसे बातचीत की तथा अन्य भी अनेक विद्वानों ने उनसे परामर्श किया। पटना तथा बम्बई में जो वार्त्तालाप हुआ, उसका निष्कर्ष यही था कि आर्यसमाज के कार्य में जो स्थिरता आई हुई है, उसका मुख्य कारण आर्यसमाज का नेतृत्व निर्बल हाथों में है। आर्य जनता के उत्साह और कर्मण्यता में कोई न्यूनता नहीं है। यदि आर्यसमाज के नेता ठीक हों तो आर्यसमाज के पुराने दिन फिर शीघ्र ही लौट सकते हैं। इसलिए आर्यसमाज के नेतृत्व में परिवर्त्तन की आवश्यकता है। हम सबका यही विश्वास था कि पं० रामनारायणजी शास्त्री जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को आगे लाना चाहिए। हमें क्या पता था कि जिस विद्वान् पर हमारी इतनी बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं, वे हमें इतना शीघ्र छोड़कर चले जायेंगे और उनके स्थान की पूर्त्ति न हो

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकेगी। पाठकजी की स्मृति जब भी आती है, तब उनके गुण-कर्म-स्वभाव को याद करके सभी आर्यबन्धुओं का मन अत्यन्त दुःखी होता है। पटना के भाई उनके स्वर्ग सिधारने से बहुत दुःखी हुए ही, अन्य प्रान्तों के उनके परिचित आर्यबन्धुओं को भी कोई कम क्लेश उनके वियोग से नहीं हुआ। ऐसे सुयोग्य कर्मठ, मिलनसार विद्वान् को मैं और उनके अन्य साथी कैसे भूल सकते हैं। इन कुछ शब्दरूपी पुष्पों से मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

आचार्य
गुरुकुल झज्जर, रोहतक (हरियाणा)

- *ईश्वर-भक्ति सत्पुरुषों के जीवन का आवश्यक अंग है और प्रत्येक मनुष्य जो वास्तविक उन्नति के पथ पर चलना चाहता है, उसको ईश्वर के गुण जानने चाहिए और नित्य प्रति उन गुणों का गान करना चाहिए।*

- *ईश्वर के दर्शन वहाँ हो सकते हैं, जहाँ ईश्वर और हम दोनों हैं। ईश्वर सर्वव्यापक है, परन्तु जीव अल्पज्ञ-एक देशव्यापी है इसलिए ईश्वर के दर्शन वहीं कर सकता है, जहाँ दोनों हों, अर्थात् हृदय के भीतर।*

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रीजी की पावन स्मृति में

☐ *स्वामी अग्निवेश*

उनके मंच पर खड़े होते ही पण्डाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। आर्यसमाज कलकत्ता का ऐतिहासिक मुहम्मद अली पार्क में वार्षिकोत्सव था और पण्डित रामनारायण शास्त्री का भाषण सुनने के लिए सारा पार्क खचाखच भरा हुआ था, बहुत से लोग तो सेण्ट्रल एवेन्यू के फुटपाथों पर खड़े भाषण सुन रहे थे।

सन् १९५७-५८ ई० की बात होगी। उस समय मैं लगभग १८ साल का था। कलकत्ता के कॉलेज में पढ़ता था और स्व० रमाकान्तजी उपाध्याय की महती कृपा से आर्यसमाज की मान्यताओं में दीक्षित हो रहा था।

युवा हृदय की पूरी भावुकता के साथ मैं स्व० शास्त्रीजी की ओजस्वी वक्तृता का एक-एक शब्द पी जाया करता था। 'वैदिक संस्कृति के चार स्तम्भ' पर उनका भाषण मुझे और पं० रमाकान्तजी के सुपुत्र भाई वाचस्पति को तो लगभग कण्ठस्थ ही हो गया था। सामयिक राजनीति और वैदिक सिद्धान्तों का सुन्दर सम्मिश्रण होता था उनके उद्गारों में। महर्षि दयानन्द के प्रति अटूट श्रद्धा के साथ मुखरित होता उनका प्रचंण्ड राष्ट्रवाद हमें भावविभोर कर देता था। एक घण्टे से कुछ अधिक का भाषण ऐसा लगता, जैसे कुछ मिनटों में खत्म हो गया। मेरे समेत सभी युवक साथी आर्यसमाज के मन्त्रीजी से यह आग्रह किया करते थे कि शास्त्रीजी को उत्सव पर अवश्य आमन्त्रित करें। उनका भाषण सबसे अन्त में या कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर से पहिले हुआ करता था और हम मन्त्र मुग्ध होकर सुना करते थे।

इतने अच्छे वक्ता होने के बावजूद उनमें मैंने नेतापन की गन्ध नहीं देखी। उनकी सादगी उनकी निरभिमानता और एक निष्ठावान् कार्यकर्त्ता जैसा जीवन और भी अधिक प्रभावित करनेवाला था। लगातार कई वर्षों तक प्रतिवर्ष किसी न किसी उत्सव आदि पर उनसे मिलने और उन्हें सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो ही जाता था।

इधर कलकत्ता छोड़ने के बाद उनसे कई सालों से मिलना न हो पाया। पर १९७३-७४ ई० में आर्यसमाज, दानापुर के उत्सव पर जब मैं उनसे मिला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उन्होंने कलकत्ता के छात्र श्यामराव को संन्यासी अग्निवेश के रूप में पाया, तो गद्‌गद हो गये। पूरी आत्मीयता के साथ अपने परिवार में और समाज में सभी से मेरा परिचय करवाया। लोकनायक जयप्रकाश नारायण से मेरी पहली भेंट करवाने में उनका विशेष सहयोग था। सरकारी सेवा में होने के बावजूद लोकनायक के नेतृत्व में चल रहे ऐतिहासिक संघर्ष को उनका पूर्ण समर्थन था। मैंने उनके राजेन्द्रनगर-स्थित निवासस्थान पर इस संघर्ष के प्रमुख नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं की एक गुप्त बैठक भी देखी। उनकी इस क्रान्तिधर्मिता ने मुझे बेहद प्रभावित किया। वहाँ वैदिक समाजवाद पर दिये मेरे व्याख्यानों को उन्होंने बहुत पसन्द किया। आर्यसमाज में छाये मठाधीशों के विरुद्ध उनकी बगावत ने तो हमारा हृदय जीत लिया और पण्डित रामनारायणजी शास्त्री के रूप में हमें एक सच्चा नेता सच्चा साथी मिल गया। हमने घण्टों आपस में बैठकर आर्यसमाज के युगान्तरकारी आन्दोलन को एक बार फिर पूरी तेजस्विता के साथ गरीबी और शोषण से त्रस्त मानवता की मुक्ति का आन्दोलन बनाने का संकल्प किया था। मैंने पटना से लौटकर अपने सभी साथियों में शास्त्रीजी के बारे में चर्चा की। सन् १९७६ ई० में जब मीसा के अन्तर्गत स्वामी आदित्यवेशजी, भाई रोशन आर्य, श्रीरामानन्दजी तिवारी, श्रीयुगराजजी, श्रीजगबन्धु अधिकारीजी के साथ मैं अम्बाला जेल में बन्द था, तब स्वामी इन्द्रवेशजी, श्रीजगवीरजी आदि के साथ दानापुर-उत्सव पर गये और वहाँ पण्डित रामनारायणजी की संगठन-कुशलता वैदिक समाजवादी विचार, दर्शन और मिशनरी भावना से इतने प्रभावित हुए कि मेरी तरह वे भी आनेवाले वर्षों में शास्त्रीजी के नेतृत्व में काम करने के लिए आश्वस्त होकर आये।

पर, देखते-देखते हमारा वह प्रेरणादायक साथी हमें छोड़कर चला गया! मुझे जब यह हृदयविदारक समाचार मिला, तब मैं हतप्रभ रह गया। मेरे मन कुछ और था, कर्त्ता के कुछ और!

शास्त्रीजी अब नहीं रहे, लेकिन उनकी क्रान्तिवाणी हमारे कानों में झंकृत होती रहेगी। समाज से गरीबी और अन्याय के निराकरण में हम सभी साथी दुगुने-चौगुने उत्साह से जुट जायें। समाजवाद, राष्ट्रवाद और आध्यात्मवाद का अभिनव आन्दोलन ही स्व० रामनारायणजी शास्त्री के प्रति हमारी वास्तविक श्रद्धांजलि होगी।

अध्यक्ष, बँधुआ मुक्तिमोर्चा
नई दिल्ली

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहज दयालु शास्त्रीजी

□ डॉ० आचार्य वशिष्ठ शिव बलसे

बिहार का सन्थालपरगना, गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथधाम, देवघर के कारण प्रसिद्ध है। यह पहाड़ी स्थल है और जंगली जानवरों और करैत तथा गेहुँवन साँपों से भरा पड़ा है। बड़े-बड़े शेर कभी इस ओर भटक आ जाते हैं, किन्तु छोटे बाघ, लकड़बग्घे और भालुओं का यह ससुराल है। गुरुकुल के चारों ओर जंगल है। उत्तर में देवघर दो कोस पर है और गुरुकुल की सीमा में अमृतसलिला नदी है। जाड़े के दिनों में वहाँ की ठण्ड मशहूर है। लोग अण्टियों और कम्बलों से चेहरे ढककर बाहर निकलते हैं।

एक बार सबेरे ही हम लोग दिनचर्या प्रारम्भ करने के निमित्त जंगलों में गये। नदी के पास उस ओर ईख के खेत थे। एक लकड़बग्घा वहाँ छिपकर बैठा था। (यह भेड़िये की जाति का जानवर होता है और बड़ा मजबूत शरीर का होता है। इसका मुँह बहुत बड़ा और हाथ-पाँव भी लम्बे होते हैं और पूरी कद का हो, तो बछड़े से बड़ा दिखाई देता है। अकेले में घात लगाकर हमला करना इसकी विशेषता है। समूह में लोग रहें तो यह आसानी से झपट्टा मारकर आदमी को ले भागता है। इसके जबड़े इतने मजबूत होते हैं कि यह हड्डी को चूर-चूर कर देता है। इसकी गरदन पर बाल होते हैं लम्बे-लम्बे। लकड़बग्घा मौका पाकर एक साथी पर हमला कर बैठा। हाथ में लालटेन और फरसे अथवा भाला लेकर चलना वहाँ आदत-सी थी। साथी ने भी बीच में जलती लालटेन ही उसके मुँह में झोंक दी। लकड़बग्घा इस बार छिप गया। लड़के ने भी शोर मचाया। हम लोग जल्दी-जल्दी निपटे और भाले तथा कुल्हाड़ी से लैस होकर उधर आ गये। उधर सूर्योदय होने को एक घण्टा शेष था। हम लोगों ने खेत के उस भाग को, जहाँ लकड़बग्घे के छिपने की आशंका थी, घेर लिया। इस व्यूह-रचना में कुछ ही समय लगा। बाद में लकड़बग्घे को खेत से बाहर निकालने के लिए हम पत्थरों की वर्षा करने लगे। जब उसे पत्थर लगे, तब वह जोर से गुर्राए। बीच में ही वह खेत से निकल पड़ा और गाँवों की ओर भागने लगा। निकलते समय उसकी पीठ पर डण्डों का भारी हाथ पड़ चुका था और मुँह पर पत्थर भी लगे थे। परन्तु वह किसी की परवाह किये बगैर खेतों से होकर भागने लगा। हम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके पीछे-पीछे कई गाँवों से गुजरे और कई कोस निकल जाने पर उसने पीछा करनेवाले लड़कों और गाँववालों पर हमला कर दिया। मैं उससे काफी पीछे था और केवल पत्थरों का ही प्रयोग कर रहा था, किन्तु मेरे अग्रज विश्वामित्रजी विद्यारत्न बिलकुल उसके पीछे ही दस हाथ पर थे। वह ज्यों ही उनकी ओर मुड़ा कि उन्होंने कुल्हाड़ी से जोर का वार उसके सिर पर किया। वह गुर्राकर वहीं गिर पड़ा और फिर उठा। इतने में गाँववाले भी आ गये, किन्तु उसके उठ जाने पर सबके सब भागने लगे। वह भी लड़खड़ाता उनकी ओर दौड़ने लगा। मैं भी करीब आ गया था; क्योंकि वह विरुद्ध दिशा से आ रहा था। मेरे हाथ में भाला था, इस कारण उसको घोंपने के लिए उसपर वार किया। भाला उसे लगा, किन्तु उसमें शक्ति नहीं थी और उसके बलिष्ठ शरीर में वह घुस नहीं सका। इतने में अग्रज भी आ गए और इस बार जो उसके सिर पर वार किया, तो उसकी दाहिनी आँख निकल गई और वह भहराकर गिर पड़ा। बाद में लाठियों ने उसका अन्त कर दिया।

अब प्रश्न उठा कि उसे कौन ले जाय। उसकी खाल भी कीमती थी। हम लोग उसे घसीटकर ले जाने लगे, किन्तु खाल खराब न हो जाय इस कारण उसे उठाकर बाँधने लगे। इतने में, जिस गाँववाले के खेत में हमने उसे मारा था, वह दस बारह लट्ठधारी लोगों के साथ उधर आ धमका। वे लोग संख्या में अधिक थे। इधर गुरुकुल के लड़के अभी दौड़कर वहाँ पहुँच ही रहे थे। वे लोग हमसे जल्दी-जल्दी निपटकर लकड़बग्घे को ले जाना चाहते थे।

रामनारायणजी शास्त्री भी तबतक आ पहुँचे। बात लड़ाई की हो गई थी और लकड़बग्घे को हम अपनी ओर और गाँववाले अपनी ओर खींचने लगे। फिर एक लड़के ने एक गाँववाले को चपत भी जमा दी क्योंकि वह बदतमीजी से पेश आ रहा था और गालियाँ दे रहा था। शास्त्रीजी ने अपनी मृदुल वाणी से उसको ठण्डा किया और इतना जोरदार भाषण किया कि जो लोग वहाँ लड़ने के लिए आये थे, वे नमस्कार कर जाने लगे। उन्होंने कहा—'भाइयो! ये जंगली जानवर आपकी निरीह माँ-बहनों पर हमला करते हैं और उनको घायल करते हैं, हम लोग आपके रक्षक बनकर यहाँ आये और इस विशालकाय जानवर से आपको मुक्त किया। हम आपके मित्र, हितरक्षक और भाई भी हैं।' गाँववालों का मुखिया वहाँ आ गया था और वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने गाँववालों से वह जानवर गुरुकुल पहुँचाने का कार्य किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब हम रास्ते में बात-चीत करते आ रहे थे, तब हमने शास्त्रीजी से पूछा कि आप कहाँ रह गये थे? हम लोग तो निरन्तर उसका पीछा ही कर रहे थे। शास्त्रीजी ने कहा—भाई आप लोग तो जल्दबाजी में कम्बल और लालटेन ईख के खेत के पास ही छोड़ आये थे। मैंने वे सब इकट्ठे कर एक लड़के के हाथ उन्हें गुरुकुल भिजवा दिया। हमने फिर पूछा—तो आपका कम्बल कहाँ है? उन्होंने कहा—रास्ते में दौड़कर आ रहा था। एक बूढ़ा ठिठुरकर मरा जा रहा था। मैंने उसे वह ओढ़ा दिया, तब कहीं उसकी जान में जान आयी। वह दुआ मनाता गया। हमने कहा—भाई कम्बल तो आपका बड़ा ही सुन्दर और कीमती था और उससे ठण्ड भी जाती थी। शास्त्रीजी ने कहा कि—कम्बल तो और भी आयेगा। मैं बिना कम्बल के भी काम चला लूँगा किन्तु उस बूढ़े के लिए तो मेरा कम्बल ही सम्बल हो गया।

शास्त्रीजी जितने धैर्य, आत्मविश्वास और प्रेमल वाणी में बात करते थे कि केवल दया, अनुकम्पा, महत्ता और सहजता उनकी वाणी से टपकती थी। उस दिन हम सभी दिन के दस बजे गुरुकुल पहुँचे।

गुरुकुल, वैद्यनाथधाम, देवघर, बिहार छोड़े दस वर्ष ही हुए थे कि पं० रामनारायणजी शास्त्री परेल (बम्बई), आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में भाग लेने आये थे, जहाँ उन्होंने अत्यन्त प्रशंसात्मक शब्दों में मेरी सिफारिश की और भाषण करने का आग्रह किया। गुरुकुल को तो १९४२ ई० में मैंने छोड़ दिया था। तब से कहीं भी भाषण करने का न तो अवसर आया था और न अभ्यास ही। उस दिन उनके आग्रह पर मेरा प्रथम सार्वजनिक भाषण बम्बई में हुआ। मैं उन दिनों अपने भाइयों के साथ ८, कालाचन्द बिल्डिंग, फोरजेट हिल रोड, कम्बाला हिल, बम्बई-२६ में रहता था। पं० रामनारायणजी ने स्वयं मेरा पता ढूँढ निकाला और वे मेरे यहाँ एक बार उक्त पते पर आये भी। फिर खूब घुल-मिलकर बातें हुईं। सन् १९५२ ई० में मैंने अपना डेरा बदला और संयोग से वे दो-तीन बार इस डेरे पर भी आये। जब कभी आर्यसमाज का कार्य होता, तो वे अवश्य मेरे डेरे पर आते थे।

सन् १९७७ ई० में वे विलेपार्ले, पूर्व बम्बई-४०००५७ के पते पर मेरे यहाँ अन्तिम बार आये थे। इस बार वे अधिक क्षीण हो गए थे। उनके दोनों सुपुत्र अभिजित कश्यप और अमिताभ अपनी विदुषी माँ श्रीमती ईश्वरी आर्या के साथ आये थे। मैंने भी निश्चय किया था कि एक बार पटना जाकर सब मित्रों से इस वर्ष मिलूँ, किन्तु दुर्दैव ऐसा कि संकल्प पूरा ही नहीं हुआ—'हा, हन्त हन्त नलिनं गज उज्जहार' वाली बात हो गयी। श्रीमती ईश्वरी आर्या द्वारा उनके स्वर्गस्थ होने की सूचना मिलते ही मैं सन्न रह गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल में उनका प्रवास लगभग सात वर्षों का रहा होगा। जब हम लोग प्रथमा परीक्षा देकर लौटे थे, तब मध्यमा (संस्कृत) की परीक्षा में बैठने वे बिहटा से गुरुकुल वैद्यनाथ आये थे।

हम इस संस्कृत-परीक्षा के कारण ही सहपाठी थे। अन्य विषयों में वे हमसे एक वर्ष आगे थे और मेरे अग्रज पं० विश्वामित्रजी विद्यारत्न के साथ थे। गुरुकुल में भी हम लोग कुछ वर्ष ही थे, किन्तु अपनी सदाशयता, सहृदयता और ओजस्वी वक्तृता के कारण वे हम लोगों के आत्मीय हो गये थे।

गुरुकुल में मेरे साथ दस विद्यार्थी ही साथ में थे। अब सबके सब कहीं न कहीं छिटक गये। जिनसे बाद में भी लगाव रहा और आत्मीयता रही, उनमें सबसे कीर्त्तिमान् पं० रामनारायणजी ही थे। क्षुद्रता जैसी चीज उनमें तिलमात्र नहीं थी। इस कारण हम उन्हें महानुभाव कहते थे। सबकी सहायता के लिए वे सदा तत्पर रहा करते थे। वे स्वयमेव मृगेन्द्र थे। उनमें नरशार्दूल के गुण थे।

गुरुकुल से निकलने के बाद उन्होंने लगभग तीन हजार पुस्तकों-पाण्डुलिपियों और ग्रन्थों का संग्रह, सम्पादन, संशोधन और लेखन-शुद्धि कार्य किया, फिर भी वे हमेशा प्रसिद्धि-पराङ्मुख रहे। आर्यसमाज के कार्य से वे चन्दन की तरह दिन प्रति दिन घिसते ही रहे और अन्त में महर्षि दयानन्द सरस्वती के दर्शित मार्ग पर चलकर उन्होंने इहलीला समाप्त की।

सारा जीवन ही ज्ञानदान, विद्यादान, विद्या-सम्पादन और यथोचित मार्गदर्शन में खपा दिया। उत्तरप्रदेश, बिहार, दिल्ली, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र उनका कार्यक्षेत्र रहा। बंगाल, उड़ीसा और असम में भी उनकी कीर्त्ति पताका फहराती रही।

तेजस्वी चेहरा, शालीन परिधान, ओजस्वी भाषण और आत्मीयता के पुंज पं० रामनारायण शास्त्री के सम्पर्क में जो जब भी आया, वह उनकी ओर आकृष्ट हो गया। अब वह आकर्षण का केन्द्रबिन्दु परमात्मा में विलीन हो गया—'भस्मान्तं शरीरम्, ओम् क्रतोः स्मर ओम् कृतं स्मर।'

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुमुखी प्रतिभा के धनी : शास्त्रीजी

□ आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

स्वर्गीय प्रिय पं० रामनारायण शास्त्रीजी के साथ मेरा सम्पर्क कई दशकों से रहा है। उनकी यह उदार सुजनता ही थी कि मुझ जैसे अल्पज्ञ को भी वे सदा एक उद्भट विद्वान् मानकर आदर-सम्मान देते रहे और मुझमें गुरुबुद्धि रखते रहे। सार्वदेशिक सभा में वे सदा मीटिंग में और अन्यत्र सभा-सम्मेलनों में मुझे विद्या का अगाध समुद्र कहते थे। उनसे मुझे प्रेम था। वे जहाँ नवयुवक आर्यवर्ग के अग्रगामी और प्रखर वक्ता एवं लेखनी के धनी थे, वहाँ उन्हें आर्यसमाज के साथ प्रभूत प्रेम था।

मुझे स्मरण है कि गया में एक समाज ने, जिसका बिहार प्रतिनिधि सभा से सम्बन्ध नहीं था, पहले के पुराने गया-समाज को दिये गये वचन के आधार पर उत्सव पर बुलाया और मैंने उस निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया। मेरा यह नियम था कि समाजों का विरोध करनेवाले समाजों के उत्सव में नहीं जाते। जब मैं उत्सव पर रात्रि में गाड़ी से 'गया' स्टेशन पर उतरा, तब दोनों समाजों के लोग फूलमाला लेकर आये। पुराने गया समाज के कार्यकर्त्ताओं के साथ शास्त्रीजी भी थे। वे उस समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री भी थे। दोनों ने मुझसे अपने-अपने यहाँ चलने का अनुरोध किया। स्वर्गीय शास्त्री ने स्पष्ट किया कि इस दूसरे नये समाज का सम्बन्ध किसी सभा से नहीं है और पुराने समाज के विरोध में यह खड़ा किया गया है। मैंने नये समाज के लोगों के लोभ और क्रोध का बिना विचार किये उनसे कहा कि नियमतः मैं पुराने समाज में ही जाऊँगा। यदि आप मुझे सही स्थिति बताते, तो मैं कभी स्वीकृति न देता। शास्त्रीजी मेरे निर्णय पर बड़े प्रसन्न हुए और बोले 'आप से जो आशा थी, वह पूरी हुई।' उत्सव में रात्रि को मुझसे पूर्व उनका बड़ा ही ओजस्वी भाषण हुआ और उत्सव बड़ा ही शानदार हुआ, जब कि यह बिना पर्याप्त विज्ञापन आदि के आयोजित हुआ था।

पटना के गाँधी मैदान में एक बृहत् प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन हुआ। सम्मेलन के संयोजकों में श्रीशास्त्रीजी एक थे। बड़े परिश्रम से सम्मेलन को सफल बनाने का उन्होंने प्रयत्न किया। एक दिन ऐसी घटना घटी कि स्वर्गीय राष्ट्रकवि रामधारी सिंह का भाषण हुआ। भाषण क्या था, वेदों पर एक प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कुठाराघात था। सारी जनता और आर्यनेताओं में तहलका मच गया। जनता उठकर चिल्लाने लगी—'बन्द करो इस बकवास को'। दिनकरजी को अपना व्याख्यान बीच में ही पूरा कर देना पड़ा। स्वर्गीय स्वामी ध्रुवानन्दजी ने और पद्मभूषण डा० डी. रामजी, प्रधान प्रतिनिधि सभा ने तथा सारी जनता ने अनुरोध किया कि दिनकरजी का आचार्य वैद्यनाथजी शास्त्री से उत्तर दिलाया जाये और खाने का समय हो गया है, फिर भी इस भोजन-कार्य को दो घण्टे के लिए बन्द रखा जाये। उत्तर के बाद भोजन का कार्य हो। समूह से पण्डाल उमड़ रहा था। शास्त्रीजी दिनकरजी में गुरुत्व-बुद्धि रखते थे और उनका बहुत सम्मान करते थे। कुछ थोड़े सोच में पड़े, परन्तु वे स्वयं एक योग्य और जनकार्यकर्त्ता थे। शीघ्र ही उन्होंने जनमानस को समझ लिया और घोषणा की—'भोजन दो घण्टे बाद होगा। मैं वेद और महर्षि के माने हुए वैदिक सिद्धान्तों पर आघात नहीं सहन कर सकता हूँ, अतः आचार्यप्रवर पं० श्रीवैद्यनाथ शास्त्री से प्रार्थना करता हूँ कि वे दिनकरजी के आक्षेपों का उत्तर दें।' इससे लोगों में उत्साह की लहर उठ खड़ी हुई। दो घण्टे तक भाषण चला और जनता मन्त्रमुग्ध हो सुनती रही। पण्डित शास्त्रीजी के आर्य-सिद्धान्तों के प्रति प्रेम का यह एक अनुपम उदाहरण है।

कई बार शास्त्रार्थों के अवसर पर भी मैंने उनके उत्साह को देखा है कि वे चाहते थे कि योग्यतम विद्वान् ही शास्त्रार्थ करें।

बम्बई में भोईवाड़ा-समाज का उत्सव था। उसमें शास्त्रीजी के कई सुन्दर भाषण हुए। जनता पर उन्होंने अपनी छाप डाली। हमारे भाषण तो हुए ही। इसका क्या प्रभाव था, इसको वर्णन करनेवाली शास्त्रीजी की वाणी अब नहीं है और न वे अब इस अवस्था में हमारे समक्ष हैं। दूसरे दिन शंका-समाधान का कार्यक्रम था। स्वर्गीय सेठ शूरजी वल्लभदास प्रधान थे। ऐसा शंका-समाधान कभी देखा नहीं गया। चार सौ शंकाएँ जिनमें पढ़े लिखे लोगों की, प्रोफेसर और विद्यार्थियों की भी विज्ञान आदि सम्बन्धी शंकाएँ थीं। घोषणा हुई कि अब शंका-समाधान होगा। श्रीशास्त्री खड़े हो गये और कहा कि यह दुरूह कार्य आचार्य वैद्यनाथजी शास्त्री ही सम्पन्न करेंगे। तीन-चार घण्टे तक शंकाओं का समाधान हुआ। बम्बई के लोगों पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा।

श्रीशास्त्रीजी को सभी प्यार करते थे। सम्मान देते थे। वे वक्ता थे, लेखक, पत्रकार और साहित्यिक प्रतिभावाले थे। समय से पूर्व उनका निधन देश और समाज की महती क्षति है।

बड़ोदरा, गुजरात

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० रामनारायण शास्त्री : एक विनत श्रद्धांजलि

☐ डॉ० प्रज्ञा देवी

दुबला-पतला शरीर, मुसकराता चेहरा, सौम्यता की प्रतिमूर्त्ति, सजग आँखें, धवल शुद्ध खादी का धोती-कुरता एवं कन्धे पर रेशमी किनारे का उत्तरीय धारण किए हुए, राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य उपासक आर्यजगत् के गौरव-स्तम्भ पं० श्रीरामनारायण शास्त्रीजी को भरी सभा के मध्य एक झटके में पहिचान पाना कठिन नहीं था। २४ जनवरी, १९७८ ई० का वह काला दिन था, जिसने सदैव के लिए पू० शास्त्रीजी को ५२ वर्ष की अल्पायु में ही हम सबसे छीन लिया। सन् १९७७ ई० के नवम्बर में पं० प्रकाशवीर शास्त्री जैसे आर्यमनीषी के निधन-रूप अनभ्र वज्रपात की दारूण यन्त्रणा से आर्यजगत् उबर भी नहीं पाया था कि उसे सन् १९७८ ई० की २४ जनवरी को पं० रामनारायणजी शास्त्री जैसे आर्यपुरुष के निधन-रूप दूसरे हृदयविदारक वज्रपात का दारूण कष्ट सहने को विवश होना पड़ा!

आदर्श ब्राह्मण-वृत्ति, निरभिमान, विनम्र स्वभाव, निष्कलंक जीवन, अति मृदु स्निग्ध वाणी, यह था पण्डितजी का आन्तरिक व्यक्तित्व! अद्भुत वक्तृत्व-कला में गहन चिन्तन तथा अन्वेषण की छाप एवं शुद्ध संस्कृतनिष्ठ शब्द तथा अलंकारों से सजी-धजी प्रांजल भाषा जो उनके मुख से भाषण के समय बिना किसी प्रयास के निःसृत होती जाती थी, किसी को भी चकित कर देने वाली थी। हिन्दी में उन्हें उच्च कोटि की सर्वमान्य प्रतिष्ठा प्राप्त थी। वे जहाँ कहीं भी भाषण देने जाते थे, कॉलेज के छात्र उन्हें मधुलुब्ध भ्रमर की भाँति घेरे रहते तथा दूर-दूर से बड़ी संख्या में उनका भाषण सुनने के लिए अवश्य आते थे। भाषण में उनके परिचय के लिए कहीं भी कोई ढिंढोरा पीटने की आवश्यकता न थी। केवल उनका नाम प्रसारित कर देना पर्याप्त होता था। ऐसी लोकप्रियता एवं ख्याति के वे धनी थे। अपनी इसी व्यापक लोकप्रियता के फलस्वरूप वे बड़े ऊँचे स्तर के सम्मेलनादि का आयोजन एवं संचालन बड़ी सहजता से थोड़े समय में ही कर लेते थे। पिछले वर्ष बरौनी, दानापुर आदि में कराये गये शताब्दी-समारोह इसके प्रमाण हैं। बिहार में प्रथम बार शताब्दी-समारोह कराने का श्रेय भी आपको ही है। वे अपने-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपमें बहुत बड़े गुणों के निधान थे, अतः आज उनकी स्मृति आते ही यह जानते हुए भी कि शरीर नश्वर है, लेखनी जड़ बन जाती है। आँखें अश्रुविह्वल हो उठती हैं।

उन्हें मैं कई वर्षों से अपने पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी के उत्सव में आने के लिए कह रही थी, पर संयोगवश वे न पहुँच सके। मृत्यु से ठीक एक मास पूर्व जब वे मुझे २४ दिसम्बर, १९७७ ई० को बम्बई-सम्मेलन में मिले, तब मैंने छूटते ही अपना उलाहना प्रस्तुत करते हुए कहा—'शास्त्रीजी! आपका एक शोधपूर्ण भाषण मैंने रक्सौल में सुना था, आपको विद्यालय में हमारी कन्याओं को केवल एक भाषण सुनाने के लिए इस बार उत्सव पर आना होगा'। बोले—'मैं पूरे तीन दिन के लिए आऊँगा, एक दिन के लिए नहीं'। मनुष्य सोचता कुछ और है, पर होता वही है, जो विधि को स्वीकार होता है। इस साक्षात्कार के एक मास पश्चात् बिहार की धरती में उपजा यह लाल ठीक अपने जन्मदिन के दिन ही अपनी इहलीला समाप्त कर महायात्रा पर चला गया!

शास्त्रीजी पूर्ण निष्ठावान् आर्य ही नहीं, स्वयं में आर्यसमाज थे। जीवन के अन्तिम क्षण तक वे आर्यसमाज के चिन्तन-मनन एवं विभिन्न क्रिया-कलाप में ही लगे रहे। कड़वाहट तो उनके स्वभाव में आते हुए मैंने कभी नहीं देखी। वे अपनी बात को बड़ी स्पष्टता एवं मृदुता से रख देते थे। बरौनी के शताब्दी-समारोह में जब मैं किसी कारणवश नहीं गई, तो दानापुर-शताब्दी-समारोह में मिलते ही एक खास अन्दाज से वे मुझसे बोले—'आप बरौनी आई नहीं?' मेरे पास उस समय चुप रहने के सिवा कोई रास्ता नहीं रहा, मैं बड़ी गहराई में पड़ गई! पर आज बरौनी के लिए उनके स्वयं के हाथ का लिखा वह पत्र, जो इस समय मेरे समक्ष है, देखकर उनके कहे हुए उनके शब्द बार-बार मस्तिष्क में चोट-सी पहुँचा रहे हैं।

शास्त्रीजी दूसरों को उनके कार्य के लिए थपकी देना भी खूब जानते थे। सम्भवतः, पुस्तकें उनके जीवन का सबसे बड़ा व्यसन थीं, और वे पुस्तकों का मूल्य पूछने की अपेक्षा उसकी तथ्यवस्तु को जानने की जिज्ञासा अधिक रखते थे। मेरा प्रथम बार सम्पादित अथर्ववेद, भाष्य का प्रथम भाग उन्होंने कहीं से देख लिया। दो-चार महीने पश्चात् मिलने पर तत्काल मुझसे बोले—'टिप्पणियाँ तो आपने बहुत अच्छी दीं, पर और अधिक दे देतीं, संकोच क्यों कर गईं?' ऐसा लगा, यह बात उन्होंने मुझे कहने के लिए बहुत दिनों से डिबिए में सँजोकर रखी थी, जो मेरे देखते ही निकाल दी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धेय शास्त्रीजी ने अपने जीवन में जिस क्षेत्र में कार्य किया, सर्वत्र उच्च सफलता प्राप्त की। निर्भीकता एवं अदम्य साहस उनके अपने गुण थे। आपात स्थिति के दिनों में भी जिस समय कोई भी सरकार की यत्किञ्चित् आलोचना करने में हिचकिचाता था, शास्त्रीजी सरकारी रिपोर्टों के आधार पर गोवध आदि समस्याओं को लेकर खुले आम आलोचनाएँ अपने भाषणों में करते थे।

सम्मेलनादि तो अब भी भविष्य में बहुत होंगे, बड़े पैमाने पर होंगे, पर पं० रामनारायण शास्त्रीजी जैसे व्यक्तित्त्व का अभाव हृदय को बराबर सालता ही रहेगा।

आचार्या, पाणिनि कन्या महाविद्यालय
वाराणसी-१०

- ❑ *यदि हम धार्मिक होने का दावा करते हैं, तो धर्म को हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। यदि जीवन धर्ममय नहीं है, तो फिर धर्म निर्जीव सिद्धान्त-मात्र रह जाता है।*

- ❑ *धर्म सम्पूर्ण जीवन की पद्धति है—स्वभाव है। ऐसा नहीं हो सकता कि हम कुछ कार्य तो धर्म की उपस्थिति में करें और शेष कार्यों के समय उसे भुला दें। जबतक मनुष्य धर्म को भीतर प्रतिष्ठित नहीं करता, तबतक उसमें विज्ञान के कल्याणकारी उपयोग की योग्यता नहीं आयेगी।*

—डॉ० राधाकृष्णन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाविद्वान् पं० रामनारायणजी शास्त्री

□ स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

मैं अपना दुर्भाग्य समझता हूँ कि मुझे स्व० पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री के निकट सम्पर्क में आने का अभी सुयोग नहीं प्राप्त हुआ, अतः उनके विषय में संस्मरण लिख देने की स्थिति में मैं नहीं हूँ, तथापि उनके जीवन और कार्यकलाप के विषय में जो तथ्य मैं 'जनज्ञान' के अंक १९७८ ई० के अन्त में प्रकाशित श्रीअशोक कुमार के 'मेरे प्रेरणा-स्रोत पं० रामनारायण शास्त्री' तथा अन्य लेखों द्वारा जान पाया हूँ उसके आधार पर मैं पं० श्री रामनारायणजी शास्त्री को (जिनका लगभग ५२ वर्ष की आयु में २४ जनवरी, १९७८ ई० को देहावसान सभी समाज और राष्ट्रप्रेमियों के लिए अत्यन्त दुःखप्रद हुआ) उनके लिए श्रद्धांजलि अर्पित करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

पं० रामनारायणजी शास्त्री का जन्म पटना जिलान्तर्गत मोकामा के चिन्तामणिचक ग्राम में २४ जनवरी, १९२६ ई० को हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा बिहार खेतिहर आन्दोलन के जन्मदाता स्वामी सहजानन्दजी सरस्वती के चरणों में हुई। तदनन्तर आपने पं० श्रीमहेशजी के आचार्यत्व में गुरुकुल वैद्यनांथधाम में शिक्षा प्राप्त की। सन् १९४१ ई० में आपने गुरुकुल वैद्यनाथधाम से शास्त्री और १९४२ ई० में विद्यारत्न की उपाधि प्राप्त की।

शास्त्रीजी की विद्यारसिकता :

इन दो उपाधियों से सन्तुष्ट न होकर आपने हिन्दी विद्यापीठ, देवघर से साहित्यभूषण की उपाधि प्राप्त की और सन् १९४३ ई० में बंगाल संस्कृत एसोसिएशन में काव्यतीर्थ की उपाधि पाई। सन् १९४६ ई० में आपने बिहार संस्कृत समिति पटना से साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की। इस प्रकार, शास्त्रीजी की विद्यारसिकता स्पष्ट प्रकट होती है।

शास्त्रीजी द्वारा आर्यसमाज की अभिनन्दनीय सेवा :

सन् १९४३ में काव्यतीर्थ परीक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात् पं० रामनारायणजी शास्त्री बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना में उपदेशक नियुक्त हुए तथा उपदेशक के रूप में उन्होंने बिहार के अतिरिक्त सम्पूर्ण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भारतवर्ष के कोने-कोने में वेद-प्रचारार्थ भ्रमण किया और उनका यह कार्य मृत्यु से कुछ समय पूर्व तक चलता रहा।

सन् १९५६ से १९५९ ई० तक शास्त्रीजी आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के मन्त्री पद पर रहे। बिहार आर्यप्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के उपमन्त्री के रूप में शास्त्रीजी ने कई वर्ष सेवा की। हैदराबाद-आर्यसत्याग्रह में भी उन्होंने सक्रिय भाग लिया। जब भारत के प्रान्त-प्रान्त में आर्यसमाज स्थापना-शताब्दी-समारोह मनाया जा रहा था, तब मान्य शास्त्रीजी ने अस्वस्थ होते हुए भी बरौनी में बिहार प्रान्तीय आर्यसमाज स्थापना-शताब्दी-समारोह के आयोजन का भार अपने कन्धों पर लिया और अत्यन्त अस्वस्थ होने पर भी उसे सफल करके दिखाया।

शास्त्रीजी का राष्ट्रभाषा-प्रेम तथा राष्ट्रीय सेवा :

जहाँ मान्य शास्त्रीजी का सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा में व्यतीत हुआ, वहाँ उन्होंने राष्ट्रीय सेवा भी कम नहीं की।

२ फरवरी, १९५२ ई० को 'बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्' के स्थापना-काल से ही आपने क्षेत्रीय कार्यकर्त्ता के रूप में कार्यारम्भ किया। आगे चलकर राष्ट्रभाषा-परिषद् के क्षेत्रीय अनुसन्धान-पदाधिकारी और निदेशक नियुक्त होकर आपने राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा द्वारा राष्ट्रभाषा के प्रति जो प्रेम प्रदर्शित किया, वह सदा अविस्मरणीय रहेगा। आप हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के संशोधन, पाठ-सम्पादन और पाठालोचन के विशेषज्ञ माने जाते थे। राष्ट्रभाषा परिषद् से १२ खण्डों में प्रकाशित होने वाले बिहार के साहित्यिक इतिहास के निर्माण में आपका अत्यन्त स्तुत्य योगदान रहा।

यह बड़े खेद की बात है कि ऐसे महाविद्वान्, आर्यसमाज और राष्ट्र के सच्चे सेवक पं० श्रीरामनारायण शास्त्री का लगभग ५२ वर्ष की आयु में २४ जनवरी, १९७८ ई० को देहावसान हो गया। मैं ऐसे महान् विद्वान् आर्यसमाज और राष्ट्र के सच्चे सेवक के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करना और उनके शोक-सन्तप्त परिवार तथा बन्धुवर्ग के प्रति संवेदना प्रकट करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। सर्वशक्तिमान् दिवंगत मान्य शास्त्रीजी के पवित्र आत्मा को सद्गति तथा उनके सगे-सम्बन्धियों और मित्रों को इस दारुण दुःख के सहन करने की शक्ति प्रदान करें, यही सश्रद्ध प्रार्थना है।

समाजसेवानिरतः तथा राष्ट्रहिते रतः।
रामनारायणः शास्त्री, सादरं वन्द्यते मया॥

अध्यक्ष विश्ववेदपरिषद्, आनन्दकुटीर, ज्वालापुर

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धान्तवादी लौह-व्यक्तित्व : शास्त्रीजी

□ श्रीऋषिमुनि सिंह

बिहार में संविद सरकार कार्यरत थी। पहला ही अवसर था, जब साम्यवादी, समाजवादी तथा भारतीय जनसंघ एक साथ सरकार में सम्मिलित हुए थे। यद्यपि उनमें समस्त घोषणाओं पर सहमति थी, तथापि एक ही बिन्दु था, जिसपर भारतीय जनसंघ ने अपनी विमति प्रकट कर दी थी और वह था—'उर्दू का बिहार की द्वितीय राजभाषा बनाने का प्रश्न।' यह एक ऐसा प्रश्न था, जिसपर सरकार के भीतर तथा सरकार के बाहर जनता में भी सर्वत्र चर्चा हो रही थी। एक गोष्ठी में पक्ष-विपक्ष में मत प्रकट किये जा रहे थे कि मैंने देखा एक साधारण से दिखाई देनेवाले व्यक्ति ने सारी गोष्ठी की बहस का सूत्र अपने हाथों में ले लिया और बोला—'जब मुसलमान भाई अपनी नागरिकता को दूसरे दर्जे की नहीं रहने देना चाहते, तब अपनी भाषा को, जिसकी वे वकालत कर रहे हैं, क्यों द्वितीय श्रेणी दिलाने पर तुले हैं?' यह सुनते ही किसी ने बात आगे बढ़ाई—'आप उर्दू को केवल मुसलमानों की भाषा क्यों मानते हैं, मैं तो चाहता हूँ कि फारसी लिपि में यदि उसे लिखने के स्थान पर दूसरी किसी लिपि में लिखा जाय, तो वह किसे ग्राह्य नहीं होगी?' इधर से छूटते ही उत्तर मिला—'सवाल भाषा और लिपि का नहीं, सवाल उसके पीछे छिपी मनोवृत्ति का है, अन्यथा देश की समस्त भाषाएँ देवनागरी लिपि स्वीकार कर लें, तो भाषाई समस्या स्वयं समाप्त हो जाय।' मैंने देखा कि उस गोष्ठी का सम्पूर्ण तनाव सिमटकर उस निष्कर्ष पर आ खड़ा हुआ, जिसकी ओर संकेत किया गया था और वह संकेत करनेवाले व्यक्ति और कोई नहीं, वह थे पं० रामनारायण शास्त्री, जो अपनी सहजता में भी अनोखी प्रतिभा समेटे रहते थे।

उसके बाद तो जब, 'संघ-सन्देश' निकालने की बारी आई, तब प्रारम्भ से ही उसके कलेवर, सम्पादन-व्यवस्था, छपाई, समाचार तथा विषयों के चयन और सम्पादकीय टिप्पणियों के तैयार करने में वे बराबर अपनी सारी गरिमा समेटे हुए मित्रभाव से जुटे पाये गये। एक दिन जब वर्त्तमान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वित्त-मन्त्री जो उन दिनों भारतीय जनसंघ बिहार के महामन्त्री थे—श्रीकैलाशपति मिश्र ने जब परिचय कराना चाहा और उनसे मेरा और श्रीजितेन्द्र सिंह सम्पादक, संघ-सन्देश का परिचय कराते हुए कहा, आप हैं पं० रामनारायणजी शास्त्री, आप लोग इनसे सब प्रकार का सहयोग और परामर्श ले सकते हैं, तब वे उनकी बात काटकर बोल उठे, आप किनसे परिचय करा रहे हैं, ये लोग तो हमारे अभिन्न मित्र बन चुके हैं।

यद्यपि शास्त्रीजी से हमारा सम्बन्ध बहुत पुराना नहीं, मात्र एक दशक से ही था, परन्तु प्रथम परिचय के दिन से ही वे इतना घुल-मिल गये कि यह समझ पाना कठिन था कि उनके और अपने बीच कोई द्वैधीभाव भी है। आर्यसमाज के वे अखिलभारतीय मूर्द्धन्य नेताओं में से थे, एक उद्भट विद्वान्, शास्त्रों के मर्मज्ञ तथा विलक्षण तार्किक प्रतिभा के धनी वे थे, परन्तु कभी-कभी उनकी सादगी महत्ता के विचित्र कलेवर में हम लोगों पर आवरण बनकर छा जाती थी। एक बार उनको ढूँढता हुआ ही मैं बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् तक गया और उनको न पाकर वापस आ रहा था। सम्भवतः १९७७ ई० का मार्च-अप्रैल महीना था। कुछ ही दूर आ पाया था कि देखा, वे रिक्शा पर सवार चले आ रहे हैं। मुझे देखते ही वे उतर गये और बोले, 'अब तो चाय पीकर ही चलेंगे।' पास की दूकान पर चाय पीने के बाद बोले, चलिए, आपको थोड़ी ही परेशानी उठानी पड़ी। अन्यथा, ऐसे ही लौट जाते तो पता नहीं क्या सोचते। उनके साथ दो झोले थे और एक मोटी-सी चादर थी, जो चलने में परेशान कर रही थी, इसलिए मैंने स्वाभाविक तौर पर हाथ बढ़ाया कि एक झोला ले लूँ, तो वे भड़क उठे, 'आप वरेण्य हैं और मेरा झोला उठाना चाहते हैं, आपका साथ जितनी ही देर का हमें मिलता है, वह क्या कम है?' मैं हैरान था और कुछ हद तक स्तम्भित भी कि एक बन्धु मित्र और आत्मीय-सा दिखाई देनेवाला व्यक्ति, आखिर मुझे इतनी दूर ठेल देनेवाली संज्ञा क्यों दे डाला? शास्त्रीजी अपनी मान्यताओं के प्रति दृढ़ आस्था रखनेवाले, निर्भीक व्यक्तित्व तथा शास्त्रों के अध्ययन के निचोड़, सम्पूर्ण मानवता को आर्यत्व में प्रतिष्ठित करने के लिए एक व्रतस्थ जीवन जीनेवाले साधक थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को उन्होंने निकट से परखा था और संघ के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को वे बड़ी ही श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। इतना ही नहीं, अपना जीवन उन्होंने संघ के वातावरण में पूर्णतया घुला-मिला दिया था। मेरे प्रति 'वरेण्य' की संज्ञा भी उन्होंने जो लगाई, वह भी संघ के कार्यकर्त्ता होने के कारण ही।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश 'आपातकाल' का शिकार था। पुलिस पीछे पड़ी थी। संघ पर प्रतिबन्ध लग चुका था और संघ के कार्यकर्त्ता भूमिगत होकर कार्यरत थे। ऐसे समय में कई महत्त्वपूर्ण बैठकें पटना में राजेन्द्रनगर-स्थित उनके आवास पर ही हुईं। नई सरकार बनने के बाद, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में कार्यरत श्रीशास्त्री को राष्ट्रभाषा-परिषद् का निदेशक बनाया गया, परन्तु उनके दैनिक व्यवहार में सरलता तथा अन्य सारे सादगी के भाव ज्यों-के-त्यों बने रहे। सरल तो इतने थे कि कोई भी अपनी कहानी सुनाता और चल पड़ते थे उसका सहयोग करने। नई सरकार बनने के बाद लोग उनको मिनिस्टरों तक खींच ले जाने लगे। यही समय की असमय दौड़धूप, उनको हमसे छीन ले गई! आज भले वे दिखाई न पड़ें, परन्तु मेरा विश्वास है कि वह आत्मा अपने देश, उसकी संस्कृति तथा उसकी ज्ञान-गरिमा से इतनी अभिन्न हो चुकी है, कि वह पुनः धरती पर वापस आने को व्याकुल होगी।

बिहार प्रदेश संगठन-मन्त्री
इतिहास-पुनर्लेखन-समिति, पटना

मैं घमण्डों में भरा ऐंठा हुआ,
एक दिन था जो मुंडेरे पर खड़ा।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ,
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।
मैं झिझक उट्ठा, हुआ बैचैन-सा,
लाल होकर आँख भी दुखने लगी।
मूँठ देने लोग कपड़ों की लगे,
ऐंठ बेचारी दबे पावों भगी।
जब किसी ढंग से निकल तिनका गया,
तब समझ ने यों मुझे ताने दिये—
'ऐंठता तू किसलिये इतना रहा,
एक तिनका है बहुत तेरे लिये।'

—अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्ची श्रद्धांजलि

□ ईश्वरी प्रसाद प्रेम

आचार्य पं० रामनारायणजी शास्त्री माँ–आर्यसमाज के उन आदर्श सपूतों में थे, जिनके प्रति मेरे अन्तर्हृदय में सदैव ही एक प्रकार की मूक भक्ति-भावनी रही है।

यह ठीक है कि मैं दो–तीन बार से अधिक उनके सम्पर्क में नहीं आया, पर यह भी ठीक है कि प्रत्येक बार उनके विकासोन्मुख व्यक्तित्व की छाप अधिक गहरी ही होती गई। एक समय था, जब पं० रामनारायणजी शास्त्री, स्व० पं० प्रकाशवीरजी शास्त्री एवं आदर्शचरित्र कर्मवीर पं० नरेन्द्रजी (हैदराबाद) के साथ मिलकर यह त्रिमूर्त्ति आर्य समाज के गौरवमय भविष्य एवं आर्य युवा चेतना का प्रतीक बन गई थी। कैसी विडम्बना है, नियति की, कैसी कठोर किन्तु अटल व्यवस्था है कि आज यह त्रिमूर्त्ति जिस आश्चर्यजनक वेग से उभरकर आई थी, उससे भी अधिक आश्चर्य के साथ लगभग एक साथ ही विश्व के रंगमंच से अन्तर्हित हो गई। हा हन्त!

सन् १९६१ ई० की बात है, भारतीय लोक–समिति का पुर्नगठन पं० बुद्धदेवजी विद्यालंकार पं० श्रीप्रकाशवीरजी शास्त्री आदि ने आर्यसमाज के राजनीतिक मंच के रूप में किया था। राजनीति में कभी अधिक रुचि न होने पर भी उक्त त्रिमूर्त्ति के साथ मैत्री–सम्बन्ध और घनिष्ठता के कारण मैं भी इस समिति के दिल्ली–सम्मेलन में कुछ मित्रों सहित गया हुआ था। रात्रि को पं० रामनारायणजी शास्त्री ने विशाल सभा को सम्बोधित किया। वह छवि आज भी मेरी आँखों में तैर रही है। तेजस्वी मुखमण्डल से प्रवाहित संस्कृतगर्भ हिन्दी में विभिन्न रसों से रसमयी और अलंकारों की छटा से छविमान उनके वह ओजस्वी वाणी कभी भूल नहीं सकेगी। उनका भाषण क्या था, गद्यकाव्य का उत्कृष्टतम नमूना था। सच ही, सुनते–सुनते मैं तो जैसे विभोर हो उठा था। शास्त्रीजी कह रहे थे—एक वटवृक्ष था। उसके समीप ही एक लता अंकुरित हो गई थी—वह वटवृक्ष का आश्रय लेकर बढ़ती गई और एक दिन ऐसा आया कि वह वटवृक्ष के शीर्ष पर पहुँच गई। ढक लिया इस लता ने वटवृक्ष को और अब वह इस अभिमान–भार से झूम रही थी कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने वटवृक्ष के अस्तित्त्व को छिपा दिया था। पर तभी आया वायु का एक झोंका और देखते-देखते वह लता धूलिसात् होकर अस्तित्वहीन हो गई। वटवृक्ष तब भी निर्विकार भाव से खड़ा अपनी अति प्राचीनता की गौरवमयी गाथा सुना रहा था। और पुनः अपनी वाणी में ओज़स्विता के पुट को गहरा करते हुए शास्त्रीजी ने मानों घन-गर्जन को लजाते हुए कहा—मेरी वैदिक संस्कृति, भारतीय संस्कृति ही वह वटवृक्ष है, विदेशी सभ्यता की कोमलांगी, विलासमयी लता ने आज उसे आवृत कर लिया है—फलतः प्रत्येक क्षेत्र में आज हम अपने 'स्व' को—स्वधर्म, स्वसभ्यता, स्वभाषा, स्वदेश एवं स्वसंस्कृति और स्वगौरव को भूल गये हैं। भारतीय लोक-समिति वायु के झोंके के रूप में अपने कर्त्तव्य को निभाया करती है, जिससे विदेशी सभ्यतारूपी यह लता धूलिसात् होकर भारतीय संस्कृति का वटवृक्ष अपने प्राचीन गौरव के प्रकाश में विश्व को शाश्वत सुख-शान्ति का सन्देश दे सके। इस प्रकार, वह समय दूर नहीं है, जब ऋषि की यह वाणी सार्थक हो उठेगी :

कहेगा जगत्, फिर से एक स्वर में सारा।
वही पूज्य भारत गुरु है हमारा॥

और तब, भारतमाता के जयघोषों और तालियों की गड़गड़ाहट से आक़ाश-मण्डल गूँज उठा था।

माँ-आर्यसमाज का यह अनन्य निष्ठावान् सपूत, हिन्दी-साहित्याकाश का वह प्रोज्वल नक्षत्र और भारतीय संस्कृति का एकनिष्ठ उपासक, आज हमारे बीच नहीं रहा। प्रभु हमें शक्ति, भक्ति दे कि शास्त्रीजी के सपनों का आर्यसमाज बने। भारत के निर्माण की दिशा में हम वाणी से नहीं, अपनी कृति द्वारा सहायक बन स्वकर्त्तव्य निभायें। यही होगी उस नर-देवता के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि। मेरा विश्वास है कि स्वयं शास्त्रीजी के परिवारजन माँ-आर्यसमाज के चरणों में वैसी ही अनन्य आस्था रखते हुए वैदिक धर्म को पारिवारिक धर्म के रूप में स्वीकार कर सच्ची श्रद्धांजलि में सहभागी बनेंगे।

सम्पादक : 'तपोभूमि', मथुरा

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाणी के जादूगर : शास्त्रीजी

□ उत्तम चन्द शरर

दो वर्ष पूर्व की ही तो बात है, स्व० शास्त्रीजी कानपुर के उत्सव पर पधारे। मैंने उनकी काफी ख्याति सुन रखी थी। दर्शन नहीं कर सका था। मेरे साथी पं० क्षितीशजी ने शास्त्रीजी का परिचय कराया, एक सीधा-सादा, दरमियाने कद का, परन्तु आत्मीयता और स्नेह से भरपूर व्यक्तित्व मेरे सम्मुख खड़ा था। मैं उठा और एकदम ही शास्त्रीजी के गले से चिपट गया। मैंने कहा—'शास्त्रीजी, किसी की आँख में जादू—तेरी जुबान में है, मैं आपकी ख्याति सुन चुका हूँ।' पूरी आत्मीयता से वे बोले—'मैं तो कबसे आपसे मिलना चाहता था, दो अजनबी, परन्तु चिरकाल से परिचित व्यक्तियों का यह मिलन भी खूब था और फिर तो हम दो नहीं थे, अद्वैत का साम्राज्य था। मेरी इच्छा थी शास्त्रीजी को कभी पानीपत बुलाऊँ, परन्तु शास्त्रीजी की इच्छा प्रबल थी, उन्होंने मुझे दानापुर बुला ही लिया। मेरा परिचय कराते उनके शब्द 'शररजी से मिलना मेरी उपलब्धि है' मुझे झकझोर से गये, उनके सुपुत्रों से भी परिचय हुआ, ऐसा लगा, अपने घर में आ गया हूँ। शास्त्रीजी आर्यसमाज की विभूति तो थे ही, मानवता का मुकुट भी थे, उनका सद्व्यवहार उनका प्रेम, मुसकराते हुए बात करना, यह सब उनकी विद्वत्ता में स्वर्णसुगन्धि का मेल था। वे मुझे अन्तिम बार बम्बई में मिले, स्वस्थ तो नहीं थे, परन्तु वे इतनी जल्दी चले जायेंगे, ऐसी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। मैंने उनके सुललित काव्यमय भाषण सुने, वे जनता के हृदयों में उतर जाते थे, शास्त्रीजी वाणी के जादूगर थे। वे सचमुच चहकते हुए बुलबुल थे, जिसके लिए उर्दू-कवि इकबाल ने लिखा—'शाख पर बैठा, कोई दिन चहचहाया, उड़ गया।' आज उनके जाने से प्रिय अभिजित ही अनाथ नहीं हुए, समाज का मंच ही केवल मौन नहीं, विद्वानों का मण्डल ही अपने रत्न से वंचित नहीं हुआ, अपितु मानवता अपने स्नेहसिक्त हृदयवाले महापुरुष को खो बैठी है। शास्त्रीजी मेरे जैसे साथियों की कल्पना में तो सदैव रहेंगे ही,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु उनका अभाव मन में चुभता-सा रहेगा।

दामन किसी का हाथ से जाता रहा मगर
इक रिश्तारा खयाल है जो टूटता नहीं
तेरे बदन की महक थी तेरे बदन की महक
चमन में लाख महकते गुलाब देखे हैं।

●

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय।
तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्तः परात् परं पुरुषमुपैति दिव्यम्॥

—मुण्डक : ३.२.८

जिस प्रकार बहती हुई नदियाँ समुद्र में जाकर नाम-रूप को छोड़ देती हैं और उसमें लय हो जाती है, उसी प्रकार विद्वान् नाम और रूप को छोड़कर सबसे बड़े दिव्य पुरुष, अर्थात् ब्रह्म में स्थित हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजापति को दी आहुति मौन क्यों?

पं० रामनारायणजी शास्त्री के मुजफ्फरपुर-आर्यसमाज में दिये गये भाषण का एक अंश :

"एक बार संस्कृत के दो महाकवि माघ और कालिदास इस विवाद में उलझ गये कि दोनों में महान् कवि कौन है? निर्णय हुआ कि यह प्रश्न यदि माँ सरस्वती से किया जाये, तो उनका उत्तर दोनों के लिए सन्तोषप्रद भी होगा और अन्तिम भी। निश्चयानुसार दोनों सरस्वती की सेवा में पहुँचे। कवियों ने सरस्वती की वन्दना की और तत्पश्चात् अपना प्रश्न प्रस्तुत किया। सरस्वती ने सुना और वह कुछ क्षण मौन रही, कवियों की जिज्ञासा तीव्रतर जानकर वह बोली, कि मेरी दृष्टि में माघ महाकवि हैं। माघ तो यह सुनते ही प्रसन्नता में सराबोर हो गये और कालिदास आतुरता में फिर पूछ बैठे–'तो माँ! क्या काव्य में मेरा स्थान कम है?' गम्भीर स्वर में सरस्वती बोली–'कालिदास! तुम तो साक्षात् सरस्वती हो, तुम्हें महाकवि ही क्यों कहूँ?

कुछ इसी प्रकार से एक बार मन और वाणी में अपनी श्रेष्ठता की होड़ जगी। दोनों ने यह निश्चय किया कि स्वयं प्रजापति से यह निर्णय क्यों न कराया जाये? मन तथा वाणी दोनों प्रजापति के पास पहुँचे, स्तुतिवचनों के पश्चात् दोनों ने जिज्ञासा प्रकट की कि भगवन्! आपकी दृष्टि में मन का स्थान प्रमुख है अथवा वाणी का? मन ने अपने पक्ष में कहा कि वाणी वही तो कहेगी; जिसका मैं चिन्तन करूँगा? वाणी ने अपना पक्ष लिया–'यदि मैं उस चिन्तन को शब्दों का साकार रूप न दूँ, तो चिन्तन का मूल्य ही क्या? प्रजापति ने सुना और मुसकुरा दिए। फिर धीरे से बोले, मेरी दृष्टि में मन अधिक बलवान् हैं। वाणी ने सुना तो तैश में आकर बोली–'आपकी दृष्टि में मेरा स्थान गौण है?' गम्भीर मुद्रा में प्रजापति बोले–'वाणी का महत्त्व कहने में तो स्वयं मेरी वाणी मूक हो जाती है।' वाणी ने सुना तो कृतज्ञता के भाव से झुक गई, और बोली–'प्रजापति! यदि मेरा इतना महत्त्व है कि जिसके वर्णन में आपकी वाणी मौन हो जाती है, तो मैं भी आप प्रजापति को जब कभी आहुति दूँगी, तो उसकी शक्ति की असीमता एवं महत्ता को जानकर मौन हो जाया करूँगी।'

इसीलिए यज्ञ में प्रजापति को आहुति मौन होकर दी जाती है।"

–प्रस्तुति : उत्तमचन्द शरर, पानीपत

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपमेय व्यक्तित्व : शास्त्रीजी

▢ शास्त्रार्थमहारथी पं० रामदयालु शास्त्री

पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री का उपमान नहीं मिलता। आर्यजगत् के उद्भट विद्वान् शास्त्रीजी अल्पायु में ही इहलीला समाप्त कर गए। किन्तु उनकी स्मृति आर्यजनमानस के आकाश पर यावच्चन्द्रदिवाकरौ, अक्षुण्ण और अमिट रहेगी। उनके आकस्मिक निधन से जो क्षति हुई है, उसकी पूर्त्ति होना असम्भव है। स्व० रामनारायणजी अपूर्व प्रतिभा के धनी थे। जब वे लगातार दो-तीन घण्टे भाषण करते थे, जनता मन्त्र-मुग्ध हो जाती, जनप्रवाह चित्रलिखित-सा हो जाता था। वे वक्तृत्व-कला के जादूगर थे।

राजनीति का अगाध पाण्डित्य, शब्दावली की अनुप्रासपूर्ण योजना, विषय पर अधिकार, शैली का प्रवाह, कुरीतियों और राजनैतिक प्रवंचनाओं पर तीखे प्रहार, शास्त्रीजी के वाग्मित्व एवं शास्त्र-समरांगण के योद्धा का परिचय देते थे। अपने उच्च कोटि के भाषाविज्ञान के बल पर राज्य में उन्हें ऊँचा सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था। शास्त्रीजी आर्यसमाज के एक जाज्ज्वल्यमान हीरा और उदीयमान ज्योतिपुंज थे। जहाँ पहुँच जाते थे, उनके दर्शनों के लिए और विशद विवेचनापूर्ण ऐतिहासिक वचनामृत सुनने के लिए जनौघ में ज्वार-भाटा आ जाता था। उनकी टक्कर का भाषण सुनने के लिए उदाहरण ढूँढ़ना कठिन है।

इसपर भी उनके स्वभाव में माधुर्य और सरलता का अनुपम पुट था। जब मुझे मिलते थे, मेरे चरण छूकर ही अभिवादन करते थे, मुसकान-भरे चेहरे से उनमें दूसरों को आकर्षित करने की कला थी। निरभिमान होकर अपनी आशंकाओं का समाधान पूछते थे। प्रथम बार मिलने में ही पुराना हो जाना, उनकी मिलनसारी का चमत्कार था। अन्तिम बार भेंट पटना-शताब्दी-समारोह के मंच पर हुई। मेरे चरण छूकर बोले—'डॉ० ने बोलना बन्द कर रखा है।' मैं अपना भाषण देने खड़ा हुआ और प्रिय शास्त्रीजी गर्म चादर कन्धे पर डाले मंच से उतर गये। क्या मालूम था, यह अन्तिम मिलन है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्दान्त दैव के प्रबल हाथों ने पं० रामनारायणजी शास्त्री को अवश्य दबोच लिया, किन्तु वे अपने गुणों से अमर हो गये। शास्त्रीजी पाण्डित्य में, भाषण-कला में औदार्य, गाम्भीर्य, सरलता, नम्रता और निरभिमानता में ऐसा उपमेय थे, जिसका उपमान नहीं मिलता।

३, कृष्ण टोला, अलीगढ़ (उ०प्र०)

●

गुरुतामुपयाति यन्मृतः पुरुषस्तद् विदितं मयाधुना।
ननु लाघवहेतुरर्थिता न मृते तिष्ठति सा मनागपि ॥

—महाभारत : शान्तिपर्व, ३९८

जीवित की अपेक्षा मृत शरीर अधिक भारी होता है। इस विचित्रता का रहस्य मैंने यही समझा कि संसार में हल्का बना देनेवाली चीज 'अर्थिता' याचना है, किन्तु मृत शरीर को अब किसी से कोई याचना नहीं, गरज नहीं, इसलिए वह भारी हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति और प्रसन्नता की प्रतिमूर्ति : शास्त्रीजी

◻ *प्रो० ओम्प्रकाश ब्रह्मचारी*

अमेरिकी दार्शनिक डॉ० ऐण्ड्र्यू जैक्सन डेनिस ने अपने विचार आर्यसमाज के बारे में इन शब्दों में व्यक्त किए हैं :

मुझे एक आग दिखाई पड़ती है, जो हर चीज को जलाकर खाक कर रही है। .....यह आग प्राचीन आर्यधर्म को असली पवित्र अवस्था में लाने के लिए एक भट्ठी है, जिसे आर्यसमाज कहते हैं। यह आग भारतवर्ष के एक परम योगी दयानन्द सरस्वती के हृदय में आविर्भूत हुई है। .....मैं इस आग का स्वागत करता हूँ। जब यह अग्नि इस सुन्दर भूमि को नया जीवन प्रदान करेगी, तो सार्वभौम शान्ति, समृद्धि और प्रसन्नता का युग शुरू होगा।

उपर्युक्त उद्धरण की पंक्तियाँ स्व० पं० रामनारायणजी शास्त्री जैसे आर्यधर्म के दीवानों एवं स्वामी दयानन्द के हृदय में उत्पन्न आग को फैलाने हेतु दिल में तड़प लिये युवकों और उत्साही कार्यकर्त्ताओं को देखकर ही लिखी गयी होंगी। बिहार की भूमि को आर्यजगत् में प्रतिष्ठित करने का श्रेय युवकसम्राट् एवं वाणी के जादूगर स्व० रामनारायणजी शास्त्री जैसे कुछेक विद्वानों को प्राप्त है। कुल ५२ वर्ष की आयु में जितना यश, प्रतिष्ठा, स्नेह और आदर पण्डितजी ने प्राप्त किया था, वह किसी के लिए भी स्पृहणीय होगा।

यह अजीब संयोग है कि २३ जनवरी को स्वतन्त्रता-सेनानी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्मदिवस है और पं० रामनारायण शास्त्री का निर्वाण-दिवस। नेताजी को उनके त्याग, बलिदान और देश-प्रेम के चलते भारतवासी सदा याद रखेंगे, वैसे ही पण्डित रामनारायण शास्त्री को धारा-प्रवाह वक्तृता, सफल नेतृत्व एवं पाण्डित्य के लिए आर्यजन याद करते रहेंगे।

अभी पिछले दिनों १५ जनवरी, १९७८ ई० को बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना के निदेशक के रूप में प्रोन्नति द्वारा आपने दायित्वपूर्ण भार को सम्भाला था। १८ जनवरी को जब मैं उनकी इस सफलता पर बधाई देने पहुँचा, तो घण्टों अनेकानेक विषयों पर चर्चा हुई। इसमें राष्ट्रभाषा-परिषद् की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरानी गरिमा की प्राप्ति, इसके कार्य में मौलिक परिवर्त्तन और कुछ नवीन कार्यक्रम चालू करने की योजना वे बना रहे थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि परिषद् के प्रयत्न से हिन्दी उच्चतर एवं उच्चतम शिक्षा का माध्यम है, इसे प्रमाणित करना है। एतदर्थ उन्होंने मेडिकल, इंजिनीयरिंग तथा स्नातकोत्तर पठन-पाठन के लिए पाठ्य-पुस्तक हिन्दी में लिखाये जाने हेतु विद्वानों की सूची तैयार की थी। वे परिषद् से प्रकाशित शोध-पत्रिका को ततोऽधिक प्रामाणिक और उच्चस्तरीय बनाने की आकांक्षा रखते थे।

रामनारायणजी शास्त्री एक ओर आर्यसमाज की निधि थे तो दूसरी ओर हिन्दी के उज्ज्वल रत्न। आर्यसमाज के फैलाव एवं सिद्धान्त-प्रचार हेतु उनके दिल में कैसी तड़प थी, उसके कुछ नमूने इस प्रकार हैं :

१. वे सिद्धान्तों के मौखिक प्रचार से ज्यादा व्यावहारिकता पर जोर देते थे। जात-पाँत को तोड़ने के क्रम में उन्होंने आज से तीस वर्ष पूर्व अन्तरजातीय विवाह का एक आदर्श प्रस्तुत किया। आज से ३० वर्ष पूर्व समाज की स्थिति कैसी रही होगी, शोचनीय है। उस विपरीत एवं विकट स्थिति में दिल की तड़प थी, जिसके चलते अत्यन्त ही उन्होंने यह साहसिक कार्य किया। आज कितने लोग हैं, जो ऐसा व्यावहारिक आदर्श प्रस्तुत करते हैं?

२. युवकों को सामाजिक कार्य में आगे बढ़ने के लिए सदा प्रेरित करते थे। मेरे जैसे दर्जनों युवक उनकी योग्यता, योजना-निर्माण, कार्यशैली से प्रभावित होकर उनके निर्देश में कार्य करते थे। आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी पर आयोजित अखिलभारतीय निबन्ध-प्रतियोगिता—'महर्षि दयानन्द के सपनों का आर्यसमाज' विषय पर लिखने की प्रेरणा आपने मुझे दी थी। निबन्ध के स्वरूप पर आपसे खुलकर बातें हुई थीं और निबन्ध पुरस्कृत भी हुआ। आपकी ही प्रेरणा से 'आर्यसमाज और मानव-निर्माण' 'स्वतन्त्रता-संग्राम में आर्यसमाज की देन' विषयक निबन्ध लिखता रहा। साहित्य की वृद्धि के लिए आप युवकोचित सामग्री लिखने के पक्षधर थे। युवकों के बीच उनकी माँग को देखकर साहित्य रचे जायँ, ऐसा वे चाहते थे। उनकी ही प्रेरणा से मैं लिखने की ओर प्रवृत्त हुआ। 'मैं आर्यसमाज क्यों पसन्द करता हूँ' विषयक पुस्तक लगभग पूरी हो चुकी है। जिसमें आर्यसमाज के सिद्धान्त, उसकी नीति, मान्यताएँ, युवक क्यों पसन्द करें आर्यसमाज को, आर्यसमाज की आर्थिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नीति, यज्ञ द्वारा नुकसान नहीं, आदि विषय हैं। पण्डितजी यदि इस पुस्तक की पूर्णता को देखते, तो उन्हें बड़ी खुशी होती। वे इसकी भूमिका स्वयं लिखना चाहते थे।

३. आर्यसमाज के कार्य-कलाप में बिहार के पिछड़ेपन से वे दुःखी रहा करते थे। शताब्दी-समारोह दूसरे प्रान्तों में कई स्थानों पर मनाये जाते देख एवं राष्ट्रीय नेताओं की व्यंग्योक्ति सुनकर आपने निश्चय किया था कि बिहार में आठ स्थानों पर शताब्दी-समारोह करेंगे। आपके ही प्रयत्न से बरौनी, दानापुर एवं मुजफ्फरपुर में शताब्दी-समारोह सफलतापूर्वक मनाये गये।

मुजफ्फरपुर-शताब्दी-समारोह के अवसर पर आपने एक विशालकाय स्मारिका निकालने की योजना बनाई थी, जिसमें सिद्धान्तपरक लेख, मुजफ्फरपुर की सामाजिक, ऐतिहासिक एवं अन्यान्य विषयक विशेषताओं का आकलन एवं उत्तर बिहार की विभिन्न समाजों का संक्षिप्त इतिहास छपा।

४. सफल संगठन् एवं नेतृत्व की आपकी योग्यता अनुकरणीय थी। कैसे अपने मातहत कार्यकर्त्ताओं से काम लिया जाये, कैसे अपने विरोधी एवं पक्षधर लोगों के बीच संतुलन रखा जाये, कैसे विपरीत परिस्थिति में भी सामाजिक कार्य न रुके, कैसे सेवा-कार्य चलाया जाये, कैसे मंच पर व्याख्यानदाताओं से अपेक्षित विषयों पर व्याख्यान कराये जायें, कैसे युवकों को उत्तरदायित्व के काम पर लगाकर उनके भीतर आत्म-सम्मान एवं उनकी योग्यता को बढ़ाया जाये, कैसे वार्त्तालाप में अपने शिष्टाचार-प्रदर्शन से काम बना लिया जाये, आदि व्यावहारिक बातें पण्डितजी बड़े मनोयोग एवं विश्वास के साथ बताते एवं करके दिखाते थे। ये बातें आज याद करके चित्त विकलित हो जाता है कि यदि वे हमारे बीच कुछ और समय तक रहते, तो ऐसी और बहुत-सी चीजें सिखाते।

५. पुरोहित एवं प्रचारक पैदा करने का उनका अपना तरीका था। वे स्वयं दोनों कार्य करते हुए अपार सुख अनुभव करते थे। क्या संस्कारों के महत्व पर व्याख्यान हो, क्या वैदिक मन्त्रों की सारगर्भत हृदयग्राही व्याख्या हो, क्या विविध सैद्धान्तिक विषयों पर व्याख्यान हो, एक बार जो सुन चुका, बिना भाषण पूरा सुने उठने से रहा। मुजफ्फरपुर मारवाड़ी व्यायामशाला में सन् १९५८ ई० में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके कई व्याख्यान हुए थे, जिन्हें लोग आज भी याद करते हैं। आप अपने व्याख्यानों में छात्रों एवं प्राध्यापकों को अपनी बातें नोट करने के लिए सदा प्रोत्साहित करते थे और अपनी पुस्तकों से मिलान करने की सलाह देते थे। ऐसे ही एक बार 'भारतीय संस्कृति' पर आपके व्याख्यान का शिक्षित समुदाय पर अच्छा प्रभाव पड़ा था।

जिस पढ़े-लिखे में आप थोड़ी भी योग्यता देखते थे, उसे पुरोहित या प्रचारक बनने की प्रेरणा ही नहीं देते, बल्कि इसमें सफलता के लिए कुछ जादुई गुर भी बताते थे। कैसे संस्कार करना, कैसे और क्या-क्या व्याख्या करना, किन-किन विषयों पर भाषण देना, कैसे ये भाषण तैयार करना, आदि सब कुछ बताते थे। आपकी प्रेरणा से कई बार 'संस्कार-प्रशिक्षण' शिविरों का आयोज़न मुजफ्फरपुर आर्यसमाज में किया जा चुका है।

आपके जीवन को देखकर ये पंक्तियाँ अनायास मानस-पटल पर आ जाती हैं :

> जो देखी हिस्ट्री इस बात पर कामिल यकीं आया।
> उसे जीना नहीं आया, जिसे मरना नहीं आया॥

पं० रामनारायण शास्त्री के सान्निध्य में रह़नेवाला एक बार उनके मन की बात इन शब्दों में अवश्य दुहरायेगा :

> वक्त आने पर बता देंगे, तुझे ओ आसमाँ।
> हम अभी से क्या बताएँ, क्या हमारे दिल में है॥

'दूसरों की मदद में खुद अपनी परवाह न करनेवाले शास्त्रीजी जैसे कुछ युवक पैदा हों, तो आर्यसमाज की अग्नि-शिखा प्रज्ज्वलित रहेगी और शान्ति, समृद्धि तथा प्रसन्नता के दर्शन हो सकेंगे।'[१]

रमना, मुजफ्फरपुर-२

●

१. महान् शोक! प्रस्तुत लेख के मुद्रणपत्र का संशोधन करते समय ही डाकिया यह दुःखद पत्र दे गया कि श्री ओम् प्रकाश ब्रह्मचारी का देहावसान ६-३-९६ को प्रातः हो गया! कालस्य कुटिला गतिः! प्रभु दिवंगत को आत्मशान्ति दें।

—सम्पा०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सम्माननीय व्यक्ति

□ रामशंकर सिंह

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक एवं अखिलभारतीय आर्यसमाज के एक वरिष्ठ नेता पं० श्रीरामनारायण शास्त्री (५२ वर्ष) के दिल के दौरे से अकस्मात् निधन की सूचना आर्यसमाज, जमशेदपुर के सूचनापट्ट पर विगत २७ जनवरी, १९७८ ई० को जब मैंने पढ़ा, तब सहसा स्तब्ध-सा हो गया। ऐसा महसूस हुआ, मानो काटो तो खून नहीं। मात्र ११ दिनों पहले १६ जनवरी को ही उन्होंने बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक का कार्यभार ग्रहण किया था।

एक लम्बे अर्से के बाद सन् १९७५ ई० में पूजनीय शास्त्रीजी से अकस्मात् ही जमशेदपुर में हमारी मुलाकात हुई थी, जहाँ वे सरकारी काम से भाषा-सर्वेक्षण के सिलसिले में छोटानागपुर के दौरे पर आये हुए थे। दिनांक १२ फरवरी, १९७५ ई० को केबुल कम्पनी वेलफेयर एसोसिएशन की साहित्य-परिषद् की ओर से उनका अभिनन्दन किया गया था, जिस अवसर पर स्थानीय साहित्यिकों एवं पत्रकारों को भी आमन्त्रित किया गया था।

पिछले वर्ष नवम्बर माह में अपने एक अन्तरंग ग्रामीण मित्र श्रीधरणीधरजी के साथ स्व० शास्त्रीजी से निकटतापूर्वक मिलने का अवसर उनके पटना स्थित राजेन्द्रनगर, निवास पर प्राप्त हुआ था। विभिन्न विषयों पर हम लोगों की बहुत ढेर-सी बातें हुईं; पर विवशता थी समय की, अन्यथा ज्ञान-लाभ करने का एक सुन्दर अवसर मिला था।

उस समय की एक बात जब मुझे याद आती है, तब मैं बहुत ही दुःखी होता हूँ। मेरे सामने ही पं० प्रकाशवीर शास्त्री की रेल-दुर्घटना से हुई अकस्मात् मृत्यु की सूचना उनके पुत्र ने टेलिफोन द्वारा पं० रामनारायण शास्त्री को दिया। सूचना पाते ही शास्त्रीजी बहुत मर्माहत हो उठे! तत्पश्चात् उस दुःखद समाचार की सूचना उन्होंने अन्य लोगों को दी। उस वक्त कोई नहीं जानता था कि यह व्यक्ति पं० प्रकाशवीर शास्त्री के देहान्त के दो माह पश्चात् ही स्वयं इस धरती को छोड़कर स्वर्ग को सिधारेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे स्मरण है वह क्षण, जब उनसे मैंने अपने गाँव (जहाँ उनका भी ननिहाल था) चलने का अनुरोध किया, जिसे वे ठुकरा न सके। लगभग ४० वर्षों के बाद जब वे हमारे गाँव गए, तो अपनी सारी पुरानी स्मृतियों को सँजोए हुए थे, जहाँ बचपन के दिन उन्होंने अपने बिताये थे। उन सभी स्थानों को विशेषकर उन्होंने देखा, जहाँ पर वे खेला करते थे। बड़ी दिलचस्पी से गाँव के लोगों से उन्होंने बातें की। उन्होंने वादा किया था कि निकट भविष्य में वे पुनः हमारे गाँव चलेंगे और अधिक दिनों तक रहेंगे, परन्तु मुझको क्या पता था कि वे हम लोगों से इतनी जल्दी बिछुड़कर कभी वापस न आने के लिए जा रहे हैं?

हमारे हृदय में उनका सम्मानपूर्ण स्थान सदा सुरक्षित है।

४८, श्रीराम रोड
जमशेदपुर-८३१००३

❑ सृष्टि-रचना और प्रलय एक दूसरे के उपरान्त ऐसे चलते रहते हैं, जैसे कि एक दीवार-घड़ी का पैण्डुलम एक ओर से दूसरी ओर तथा फिर पहली ओर को जाता है । यह भी कहा जा सकता है कि जैसे दिन और रात एक दूसरे के बाद अनन्त काल से चले आते हैं, वैसे ही सृष्टि और प्रलय हो रहे हैं। सृष्टिकाल को ब्रह्मदिन कहते हैं और प्रलयकाल के ब्रह्मरात्रि। ये बराबर-बराबर होते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनारायण शास्त्री : स्मृति-तर्पण

❐ निर्मल मिलिन्द

स्थिति की सत्यता के बावजूद अब भी श्रीरामनारायणजी शास्त्री के नाम के पूर्व स्वर्गीय लिखने से मन हिचक रहा है। बरबस उनका स्वरूप आँखों के सामने खड़ा हो जा रहा है। शास्त्रीजी की कद-काठी एकदम सामान्य-साधारण लोगों जैसी ही थी। उनकी असाधारण क्षमताओं का आभास भी मिलने-जुलनेवालों को तुरन्त हो जाता था।

यह पहले से जानते होने पर भी कि शास्त्रीजी अनेक भाषाओं के ज्ञाता एवं समर्थ विद्वान् हैं, कि बिहार की लोकभाषाओं के प्रबल पक्षधर एवं अनुसन्धित्सु हैं, कि उन्होंने बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना के माध्यम से साहित्य-संवर्द्धन, परिमार्जन, शोध, सम्पादन, संग्रह आदि क्षेत्रों में प्रचुर कार्य सम्पन्न किया है तथा अनेक स्थानों से घूम-घूमकर एवं छानबीन कर लुप्तप्राय साहित्य की विभिन्न विधाओं का उद्धार किया है; कि बिहार के अमर साहित्यकारों—रफीजल्ला खाँ, सूरजदास, सन्त लालचदास, दरियादास, किफायतुल्लाह, पदुमनदास, जयरामदास, हलधरदास, देवीदास, चन्द्रमौलेश्वर, शिवसिंह 'सरोज' आदि की कृतियों का सम्पादन कर उन्हें प्रकाशित कराया है; मुझे उनकी निकटता पहली बार आर्यसमाज, जमशेदपुर के विशिष्ट वार्षिकोत्सव के अवसर पर ही तब प्राप्त हुई, जब मैं उनके प्रिय पात्र एवं अपने मित्र श्रीरामशंकर सिंहजी के साथ उनसे मिलने आर्यसमाज भवन में पहुँचा। यूँ मैंने उनके दर्शन पहले भी बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् कार्यालय में किए थे, किन्तु निकट सम्पर्क का वह प्रथम अवसर था।

शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान् शास्त्रीजी आर्यसमाज की बिहार-शाखा के सशक्त स्तम्भ थे तथा अखिलभारतीय स्तर पर भी बहुत सम्मानित एवं पूज्य थे। वे स्वामी दयानन्द के विचारों के अनुरूप वैचारिक एवं सामाजिक क्रान्ति के कट्टर पक्षधर थे। उन्होंने आर्यगरिमा को जीवन में उतारा था इसलिए भी उनका प्रभाव 'शब्द-वीरों' से कहीं अधिक पड़ता था। तर्क एवं बुद्धि की कुशाग्रता, कर्त्तव्यनिष्ठा, अद्भुत कार्यक्षमता, दक्षता, अनुसन्धानवृत्ति, सर्वेक्षण पटुता, प्रतिनिधित्व-कुशलता उनके आभूषण थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रीजी जीवन के अन्तिम क्षण तक सदा निरभिमान, हँसमुख, उदार एवं मिष्टभाषी बने रहे।

जनवरी '७७ ई० में जब बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् का विगत अनेक वर्षों का संयुक्त वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा था, शास्त्रीजी की कर्मठता की सबने प्रशंसा की थी। इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन में भाग लेने के लिए मुझे भी तत्कालीन निदेशक पण्डित हंसकुमार तिवारीजी का निमन्त्रण मिला था। स्टेशन से उतरकर जब मैं परिषद्-भवन पहुँचा, तब शास्त्रीजी ने मुझसे अपने आवास में ही साथ ठहरने को कहकर अहैतुकी कृपा की। उम्र में काफी बड़े होने एवं अनेक दृष्टियों से महान् होने पर भी उन्होंने मुझे जो स्नेह-सम्मान दिया था; वह अनुभूति की धरोहर बन गया है। वहाँ मुझे उनकी स्नेहशीला साध्वी उदारमना धर्मपत्नी (श्रीमती ईश्वरी आर्या) एवं प्रतिभाशाली ज्येष्ठ पुत्र अभिजित को भी जानने-पहचानने का अवसर मिला। लोकभाषाओं के प्रति उनकी चिन्ता कितनी प्रगाढ़ एवं दृष्टि कितनी स्पष्ट थी, यह मैं उसी दौरान जान पाया था। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक पद पर नियुक्ति के साथ ही वे इस दिशा में सोचने लगे थे, किन्तु दैवयोग!

उनकी अमर कृतियाँ और अक्षय यश बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् की ऐसी निधियाँ हैं; जिनपर बिहार को गर्व है। किन्तु, वह व्यक्ति अब कहाँ मिलेगा? और वह अपनत्व?

प्रधान संपादक : 'स्टील सिटी समाचार'
जमशेदपुर-३

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरशाही की हृदयहीनता के शिकार : शास्त्रीजी

२४ जनवरी के पूर्व प्रात: यानी लगभग तीन बजे बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के कार्यकारी निदेशक श्रीरामनारायण शास्त्री का निधन हो गया। सुना है, उन्हें दिल की बीमारी थी और उस रात उसी बीमारी ने उन्हें धर दबोचा। यह सही है कि उनकी अकारण मृत्यु हुई और उनका परिवार प्राय: अव्यवस्थित रह गया। यह भी सही है कि उनके मरने से हिन्दी का कोई महान् स्तम्भ धराशायी नहीं हुआ था। हिन्दी का कंगूरा टूटकर नहीं गिरा। यह भी मान लेता हूँ कि उनके जाने से पटना के नागरिक जीवन का आर्यसमाजी समुदाय अनाथ नहीं हुआ; क्योंकि एक-से-एक नेता अब भी जीवित हैं।

मगर सबसे ज्यादा सही बात यह है कि शास्त्रीजी के निधन से पटना की सांस्कृतिक जिन्दगी की वह झील सूख गई, जो सक्रिय प्रेरणा और जिन्दादिल कार्यक्रमों का अयाचित सिंचन अनायास करती थी और जिससे सम्पूर्ण बिहार का सांस्कृतिक जीवन स्पन्दित होता रहता था। उनके जाने से पटना की वह छाँह गायब हो गई, जिसके पास बैठकर समाज-सेवा के प्रति समर्पित आर्यसमाज और अन्य संस्थानों द्वारा उपेक्षित-दंशित कार्यकर्त्ता थोड़ी देर आराम कर लेता था, नई ताजगी एकत्र कर आगे बढ़ जाता था। शास्त्रीजी के उठ जाने से वह भभूत उड़ गई, जो हर क्रान्तिकारी के चरणों पर लोटती थी और बाद में ललाट का चन्दन बन जाती थी। वे गये तो पटना के राष्ट्रभाषा-आन्दोलन के अर्जुन के गाण्डीव की प्रत्यंचा टूट गई। उनके निधन से जाति के बन्धन को तोड़नेवाला एक फकीर मसीहा उठ गया। आज वे दर्जनों अवसर याद आते हैं, जब शास्त्रीजी ने पटना में घोर आतंक और सनसनी के बीच आधी रात के समय अन्तरजातीय विवाह सम्पन्न कराकर अपने साहसी पौरोहित्य को उजागर किया था।

शास्त्रीजी एक सप्ताह के लिए बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किये गये थे। मगर जनता सरकार की विडम्बना यह कि बड़ी क्रूरता के साथ उन्हें रोज सचिवालय बुलाया गया और मरते समय तक उन्हें निदेशक के कमरे की चाभी नहीं दी गई। शास्त्रीजी कभी बरामदे में तो कभी बाहर मैदान में कार्यालय का काम करते रहे। शास्त्रीजी के स्वास्थ्य के कारण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे बार-बार लगता था कि जनता सरकार के अनुभवहीन मन्त्री और नौकरशाही के क्रूर जबड़े से निबट पाना आसान नहीं होगा। शास्त्रीजी के मन पर निदेशक के कमरे की चाभी नहीं मिल पाने के कारण हजार-हजार हथौड़ों की चोट पड़ रही थी। इस बीच में उनसे कई बार मिला, तो उनकी फीकी मुस्कान से इस बात का संकेत मिल जाता था कि वे शिक्षा-विभाग के उस पदाधिकारी-वर्ग का अपमान झेल रहे हैं, जिसे ऐसा करने में सहज सुख का अनुभव होता है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि अपमान की ग्लानि की मार सहते-सहते वे असहिष्णु हो उठे और हम कायरों पर नाराज होकर रूठकर इस संसार से ही बिदा हो गये!

शास्त्रीजी मामूली इन्सान थे। आर्यसमाज के पुनर्जागरण-कार्यक्रम के अखिलभारतीय स्तर के उपदेशक और सम्पूर्ण भारत में घूम-घूमकर भारतीय एकता का अलख जगानेवाले समर्पित सेवक थे। एक सुखी सम्पन्न परिवार (भूमिहार ब्राह्मण) में पैदा होकर भी उन्होंने अन्तरजातीय विवाह किया था और वह भी उस समय जब भारत की सामन्ती व्यवस्था तोड़ने की तैयारी में ही था। अपनी बेटी के विवाह के समय उन्हें अपने क्रान्तिकारी क्रियाकलाप के परिणाम भी भुगतने पड़े थे। मुझे बार-बार ऐसा लगा था कि शास्त्रीजी कहीं-न-कहीं से टूट रहे हैं। बेटी के विवाह के क्रम में हमारे समाज ने उनपर जो आघात किया था, वह उन्हें धीरे-धीरे तोड़ता रहा। हालाँकि बेटी के लिए अन्ततः उन्हें मनपसन्द घर मिल गया था, मगर उस क्रम में उन्होंने समाज का वास्तविक चेहरा देख लिया था।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में भी शिवपूजन बाबू के बाद जो निदेशक आये, उनसे उनकी पटी नहीं। स्व० नलिनविलोचन शर्मा को छोड़ उनका स्वाभिमानी मस्तक किसी और के आगे झुका नहीं। परिषद् में भी वे क्रमशः टूटे। भारत के आजाद होने से आजतक शायद ही कोई स्वाभिमानी व्यक्ति सत्ता या प्रतिष्ठा से जुड़कर बिना टूटे जी सका है। शास्त्रीजी भी इसके अपवाद नहीं थे। कार्यकारी निदेशक के रूप में नियुक्ति और कार्यभार ग्रहण के बाद शिक्षा-विभाग ने निदेशक के कमरे की चाभी न देने का जो अपमानजनक रवैया अपनाया, उससे वे धराशायी हो गये। शास्त्रीजी निदेशक के कमरे में बैठने के सौभाग्य से वंचित किये गये और शायद इसी यातना ने उन्हें अन्तिम रूप से तोड़ दिया। जब शास्त्रीजी का निधन हुआ, तो शिक्षा-मन्त्री समेत अनेक मन्त्री और शिक्षा-विभाग के कृपानिधान पदाधिकारी उनकी अरथी पर फूल चढ़ाने आये। शोक-सभाएँ आयोजित हुईं, शोक-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्देश आकाशवाणी से प्रसारित हुए और शास्त्रीजी की महिमा का गुणगान होने लगा। जिस शास्त्रीजी को तिल-तिल मरने की ओर अग्रसर होने में हमारे समाज ने निर्णायक पहल की, उसी की अरथी पर पुष्पार्पण!

शास्त्रीजी का परिवार आज अनाथ है। हम उसके लिए कुछ करें न करें, वह जी लेगा। अनेक समाजसेवियों का परिवार आज भी हमारी नंगी आँखों के सामने जीने का संघर्ष कर रहा है। गोपाल सिंह नेपाली, शिवचन्द्र शर्मा, दिनेशप्रसाद सिंह, फणीश्वरनाथ रेणु जैसे दिवंगत साहित्यकारों के आश्रितों के प्रति हम कितने सावधान हैं, यह सर्वविदित है। इसलिए शास्त्रीजी का परिवार भी जी लेगा। मगर प्रश्न है कि क्या हमारा दृष्टिकोण भारत की आजादी के बाद भी नहीं बदलेगा? हमारे मन्त्री और सरकारी अफसर क्या अपना ढंग नहीं बदलेंगे? अगर उत्तर नकारात्मक है, तो भविष्य बड़ा ही संघर्षपूर्ण होगा।

'हुंकार', साप्ताहिक, ११ फरवरी, ७८ ई० से साभार

●

विद्ययैव मदो येषां कार्पण्यं विभवे सति।
तेषां दैवाभिशप्तानां सलिलादग्निरुत्थितः॥

विद्या पढ़ने के बाद भी जिनमें नम्रता नहीं आई, वैभवशाली होकर भी जो उदार नहीं, कृपण-कंजूस बने हुए हैं, ऐसे दैवाभिशप्त भाग्यहीनों के लिए तो मानों पानी में से आग निकल आई!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यनेता पं० रामनारायणजी शास्त्री की मधुर स्मृति में

□ शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थमहारथी

माननीय पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री, पटना मुझे बिहार प्रान्त के कई उत्सवों में मिले हैं। वे महाविद्वान् आर्यसमाज के सच्चे नेता थे। दम्भ और छल-कपट तथा चालाकी का भाव उनमें कुछ लेशमात्र भी न था। उनके भाषण ओजस्वितापूर्ण तथा क्रान्तिकारी होते थे। सचमुच आर्यसमाज के वह गौरव थे। आर्यसमाज के उपदेशक भजनीक आदि सभी से उनका प्यार था। बहुत पुरानी बात है। भागलपुर-उत्सव में उनका व्याख्यान मेरे व्याख्यान के पश्चात् हुआ था। उन्होंने अपने व्याख्यान में मेरी भरपूर प्रशंसा की। मैं उनके लच्छेदार भाषण से आश्चर्यचकित था। तबसे मेरी उनपर अगाध श्रद्धा थी। उनका जीवन अति सरल था। सचमुच वह आर्यसमाज और आर्यजाति के गौरवशाली क्रान्तिकारी नेता थे। मुझे उनपर बहुत आशाएँ थीं। अब आर्यसमाज उनसे लाभ उठाने को कृतसंकल्प हुआ, तो वह रूठकर अगली दुनिया में चल दिये। सम्भवतः परमेश्वर ने ऐसे अद्भुत प्रतिभावान् विद्वान् की अन्यत्र आवश्यकता समझी हो। किन्तु, उनका आकस्मिक निधन हम आर्यों के लिए वज्रपात हुआ। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति और उनके परिवार बन्धुजनों तथा आर्यों को धैर्य प्रदान करें।

सुभाष नगर
गुड़गाँव कैण्ट (हरयाणा)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनोखे व्यक्तित्व के स्वामी : शास्त्रीजी

□ अमरेन्द्र सिन्हा
पत्रकार

यह कहा जाता है कि हर व्यक्ति का अपना व्यक्तित्व होता है। परन्तु, सही व्यक्तित्व तो वही होता है, जो अन्यों को अपनी ओर बरबस आकर्षित कर सके। कोई व्यक्तित्व आस-पड़ोस, दूर-निकट के लोगों को आकर्षित करता है, तो वही सार्थक होता है। शास्त्रीजी ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी थे।

आज के समाज में कोई पैसे से, कोई भुजबल से अथवा कोई किसी पर की शक्ति पाकर अपना व्यक्तित्व बनाने का प्रयास करता है, अपनी पहचान बनाना चाहता है। ऐसा कुछ मामलों में होता भी है, वह चिरस्थायी या स्थायी नहीं बनता। शास्त्रीजी को अपनी विशेष पहचान बनाने के लिए अलग से कोई प्रयास नहीं करना पड़ा। उनका व्यक्तित्व तो समाज पर स्वतः छाप छोड़ गया।

शास्त्रीजी बाहर एवं भीतर से एक सरल व्यक्ति थे। सादगी के प्रतीक थे। कोई आडम्बर, कोई अहंकार नहीं था। मैंने जब भी शास्त्रीजी को देखा, आँकने की कोशिश की तो भीतर एक प्रसन्नचित्त मुख का ही दर्शन हुआ। राग-द्वेष से दूर रहना कोई आसान काम नहीं है, विशेषकर आज के भौतिक युग में।

शास्त्रीजी से मेरा परिचय पुराना नहीं था। मुझे अपनी समाचार-संस्था (हिन्दुस्तान समाचार) के कार्य से अधिकांश बिहार से बाहर ही रहना पड़ा। परन्तु जब पटना लौटकर आया, तब शास्त्रीजी में एक दुर्लभ व्यक्तित्व देखा। फिर तो निकटता होनी थी। निकटता ने उनको और उनके व्यक्तित्व की विशेषता को समझने में मदद की। वे समाजशास्त्री थे, परन्तु इस विषय पर उनका ज्ञान कर्मक्षेत्र में भी उतना ही था, जितना अध्ययन-क्षेत्र में। समाज के किसी काम में वे एक उत्साही कार्यकर्त्ता (नेता नहीं) के रूप में अपना योगदान देना पसन्द करते थे। किसी रचनात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक कार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आप शास्त्रीजी को बुलाएँ और वे समय पर न पहुँचें, ऐसा हो ही नहीं सकता था। सामाजिक कार्यों के सम्बन्ध में उन्होंने काल या पात्र को नहीं देखा। उनसे जितना बना, उतना किये, ऐसा नहीं। ऐसे कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना उनका स्वभाव था। इसमें वे अपना स्वास्थ्य भी नहीं देखते थे और न यह देखते थे कि उनका सामर्थ्य क्या है?

इन कारणों से उन सरलचित्त व्यक्तित्व के चारों ओर से एक प्रभामण्डल बना, उसने उन्हें समाज के या सरकार के अन्धेपन से बचाये रखा। आखिर, कर्मयोगी का परिचय तो यही है।

●

अपत्नीकः कथमग्निहोत्रं जुहोति, श्रद्धा पत्नी, सत्यं यजमानः, श्रद्धा सत्यम्, तदित्युत्तमं मिथुनम्, श्रद्धया सत्येन मिथुनेन स्वर्गान् लोकान् जयतीति ॥ —*ऐतरेय ३२.१०*

प्रश्न—बिना पत्नी के अकेला यज्ञ कैसे करे?

उत्तर—यजमान कभी अकेला नहीं होता। यज्ञ में श्रद्धा पत्नी है और सत्य स्वयं यजमान है। यह जोड़ा कभी पृथक् नहीं होता। श्रद्धा और सत्य के जोड़े को अपनाकर मनुष्य सतत अपना अभीष्ट सिद्ध कर सकता है। इस प्रकार श्रद्धाविहीन कर्म विधुर है और सत्य-विहीन श्रद्धा विधवा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे पथप्रदर्शक : पं० रामनारायण शास्त्री

□ अशोककुमार गुप्त

लेखनी सहसा ये शब्द लिखते हुए रोती है कि बिहार के आर्यसमाज के प्राण, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के स्तम्भ पं० रामनारायण शास्त्रीजी अब इस संसार में नहीं रहे! लोग इन्हें आदर से शास्त्रीजी कहकर पुकारा करते थे। अभी-अभी २३ नवम्बर को हुए पं० प्रकाशवीर शास्त्री, संसद् सदस्य की घातक मृत्यु के वार को आर्यसमाज बरदाश्त नहीं कर पा रहा था कि सहसा एक और झटका लगा २४ जनवरी को पं० रामनारायण शास्त्री की मृत्यु से। आर्यसमाज के दो स्तम्भ, विद्वान्, हिन्दी-साहित्य के अनन्य सेवक, भारतीय संस्कृति के महान् उन्नायक, सरस्वतीपुत्र, ओजस्वी वक्ता महज दो महीने के अन्दर इस संसार में अपनी कृति और स्मृति को छोड़कर चले जायेंगे। यह कोई स्वप्न में भी नहीं सोचा था। आप दोनों ने आर्यसमाज के क्षेत्र में एक ओजस्वी वक्ता के रूप में अखिलभारतीय ख्याति प्राप्त की थी।

लगता है, अब आर्यसमाज के पतझड़ के दिन आ गये हैं। हमारे बीच से क्रमशः विद्वान् उपदेशक, कार्यकर्त्ता, पथप्रदर्शक सभी निकलते जा रहे हैं। जिनकी न तो क्षतिपूर्त्ति ही हो पा रही है और न निकट भविष्य में इस रिक्तता की पूर्त्ति होने की कोई सम्भावना ही दीख पड़ रही है। सम्पूर्ण १९७७ एवं १९७८ ई० का आरम्भिक काल आर्यजगत् के लिए इतना महान् घातक सिद्ध होगा, यह कोई सोचा भी नहीं था। पूज्य स्वामी सोमानन्दजी महाराज की मृत्यु के उपरान्त लगभग एक बाढ़-सी आ गई है। हमारे बीच से क्रमशः महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती, स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी, अमरकवि प्रकाशचन्द्र कविरत्न, स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक, पं० प्रकाशवीर शास्त्री एवं पं० रामनारायण शास्त्रीजी के निधन ने तो लगभग आर्यसमाज को झकझोर-सा दिया है। आज आर्यसमाज की मनोदशा एक घायल शिकार सदृश है, जो शिकारी के पहले वार को अभी झेल नहीं पाया हो कि तत्क्षण उस पर दूसरा वार और फिर लगातार उसपर वार होता चला जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हें नवयुवक-हृदयसम्राट् कहूँ या आर्यजगत् का प्राण कहूँ, वक्तृत्व-कला का स्वामी कहूँ या निरन्तर समाज सेवा में रत तपस्वी कहूँ। आपका जीवन त्याग-तपस्या की शानदार मिसाल रही है। मेरी लेखनी में उतनी शक्ति नहीं कि उस महान् आत्मा के प्रति कुछ लिख पाऊँ। किसी ने ठीक ही कहा है कि—

बलिदानों का इतिहास नहीं, काली स्याही लिख पाती है।
उसके लिखने के लिए सदैव, खून की नदी बहाई जाती है॥

फिर भी, उस महान् आत्मा के प्रति उसके ही द्वारा दी गई लेखनी से कुछ शब्द लिखकर श्रद्धा के दो सुमन अर्पित कर रहा हूँ, जिसने मुझ जैसे एक साधारण आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता को अपना पुत्रवत् स्नेह और वात्सल्य-प्रेम देकर आर्यसमाज की चहुँमुखी दिशाओं को यथावत् ज्ञान दिया था यथा : लेखन, भाषण, मंच-संयोजन एवं एक सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में काम करने की कला उन्होंने ही सिखलाई थी। जब कि मेरे पिता श्रीजनकलाल गुप्तजी ने मुझे आर्यसमाज की प्रारम्भिक शिक्षा दी थी। उनका जीवन त्रिवेणी का एक संगम था। जहाँ धर्म, भारतीय संस्कृति और राजनीति की तीन धाराएँ आकर मिलती हैं।

आपका जन्म २४ जनवरी, १९२६ ई० को पटना जिलान्तर्गत मोकामा के चिन्तामणिचक ग्राम में पिता श्रीलालजीत शर्मा के घर हुआ था। बिहार खेतिहर आन्दोलन के जन्मदाता स्वामी सहजानन्द सरस्वती के चरणों में प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा हुई। तदुपरान्त गुरुकुल, वैद्यनाथधाम में पं० महेशजी के आचार्यत्व में हुई। आप गुरुकुल के छात्र-जीवन में ही सन् १९४० ई० के महान् क्रान्तिकारी नेता मानवेन्द्रनाथ राय के सम्पर्क में आये। एक तेजस्वी छात्र के रूप में सन् १९४१ ई० में गुरुकुल, वैद्यनाथधाम से शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। सन् १९४२ ई० में गुरुकुल, वैद्यनाथधाम से विद्यारत्न एवं हिन्दी विद्यापीठ, देवघर से साहित्यभूषण की उपाधि प्राप्त की। सन् १९४२ ई० में ही 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया एवं जेल की यातनाएँ सहीं। अपने छात्र जीवन से ही आर्यसमाज, राष्ट्रसेवा एवं देश के स्वतन्त्रता-संग्राम के कार्य-कलाप में भाग लेना प्रारम्भ किया था। सन् १९४३ ई० में बंगाल संस्कृत एसोसियेशन से काव्यतीर्थ की परीक्षा पास करने के उपरान्त बिहार राज्य आर्यप्रतिनिधि सभा, पटना में उपदेशक नियुक्त हुए तथा उपदेशक के रूप में बिहार एवं सम्पूर्ण भारतवर्ष के कोने-कोने में वेद-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रचारार्थ भ्रमण किया, जो मृत्यु के पूर्व तक चलता रहा। इतना कार्यव्यस्त रहने के बावजूद भी इन्हें विद्या के प्रति असीम आसक्ति थी। पुनः सन् १९४६ ई० में बिहार-संस्कृत-समिति पटना से साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की। १२ जुलाई, १९४८ ई० को पटना निवासी श्रीमोतीलाल आर्यजी की पुत्री श्रीमती ईश्वरी आर्याजी से विवाह हुआ। मन-वचन-कर्म से आर्य का परिचय तो इन्होंने अन्तरजातीय विवाह करके दिया। सन् १९५० ई० में अखिलभारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन द्वारा संचालित हिन्दी महाविद्यालय, प्रयाग से साहित्यरत्न की उपाधि प्राप्त की। १२ फरवरी, १९५२ ई० को बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के स्थापना-काल से ही क्षेत्रीय कार्यकर्त्ता के रूप में सरकारी सेवा का कार्यारम्भ किया। आगे चलकर परिषद् के क्षेत्रीय अनुसन्धान-पदाधिकारी और निदेशक नियुक्त होकर अपने आर्यसमाज के साथ ही साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी की जो सेवा की है, उसे राष्ट्र कदापि भुला नहीं सकेगा। आप हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के संशोधन और पाठालोचन के विशेषज्ञ माने जाते थे। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग के प्रभारी के रूप में आपने छह खण्डों में प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, हरिचरित्र, रामजन्म, सन्तकवि दरियाग्रन्थावली, सन्तमत का सरभंग-सम्प्रदाय आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का लेखन, सम्पादन किया। राष्ट्रभाषा-परिषद् से १२ खण्डों में प्रकाशित होनेवाला बिहार के साहित्यिक इतिहास के निर्माण में आपकी सेवाएँ स्मरणीय रहेंगी। आप ऐसे साहित्यकार थे, जिन्होंने साहित्य का बुनियादी कार्य किया है। भाषा-परिमार्जन और संगठन के माध्यम से हिन्दी की सेवा की। परिषद् के गठनकाल से ही अबतक इसके माध्यम से हिन्दी की जो सेवाएँ की; वह स्तुत्य हैं।

लगातार १९५६ से १९५९ ई० तक आर्यप्रतिनिधि सभा बिहार के मन्त्री पद पर रहे। बिहार आर्यप्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली के उपमन्त्री एवं सदस्य के रूप में कई वर्षों तक रहे। उस समय इन्होंने हैदराबाद-आर्यसत्याग्रह में भाग लिया। सन् १९५८ ई० में पंजाब हिन्दी-रक्षा-आन्दोलन में पं० प्रकाशवीर शास्त्री का सहयोग कन्धा से कन्धा मिलाकर दिया। शास्त्रीजी के इस आन्दोलन के कार्य को देखकर बहुतों ने बिहार के आर्यसमाज को पं० रामनारायण शास्त्री के नाम से जाना जिसने बिहार के आर्यसमाज का अलख देश के कोने-कोने में जगाये रखा। सन् १९६१ ई० के पटना-आर्यमहासम्मेलन की सफलता का सारा श्रेय इन्हीं को जाता रहा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९६२ ई० में कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा से पाली साहित्य में आचार्य की उपाधि प्राप्त की। सन् १९६३ ई० में पटना-प्रमण्डल के आयुक्त द्वारा आयोजित प्रशिक्षण केन्द्र में हिन्दी प्रशिक्षक के रूप में भाग लिया। सन् १९६९ ई० में आगरा विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान-विद्यापीठ से भाषा-सर्वेक्षण प्रशिक्षण लिया। भागलपुर विश्वविद्यालय बिहार के पी-एच.डी. के शोध प्रबन्धक के परीक्षक नियुक्त हुए। आप जन्मजात नेता, राष्ट्रभक्त हिन्दी सेवक, आर्यसमाजी थे। आपका समस्त जीवन, जीवन का एक-एक क्षण आर्यसमाज को अर्पित था। आप उन आर्यसमाजियों में से थे, जिनकी काया के कण-कण में समाजसेवा एवं आर्यसमाज समाया हुआ था। आपने आर्यसमाज, समाजसेवा और हिन्दी-साहित्य की सेवा का जो व्रत लिया था, उसे आपने पूरी शान से अपने जीवन के अन्तिम समय तक निभाया। आर्यसमाजी टकसालों से निर्मित सिक्के अपनी चमक नहीं खोते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें शास्त्रीजी के जीवन में देखने को मिलता है।

भगवान् ने जितना छोटा कद दिया था, उतना ही अधिक साहस और उत्साह दिया था। छोटा-सा कद, दुबला-पतला शरीर, सिर पर साफा न लम्बी-लम्बी मूँछें, परन्तु शेरों जैसी ऊँची आवाज। उनकी भाषण-प्रतिभा पर बड़े-बड़े विद्वान् अचम्भित रह जाते थे। जनता पर कण्ट्रोल करने में यह छोटा-सा व्यक्तित्व बड़ा ही प्रभावशाली था। अपनी ओजस्विता और वक्तृत्व-कला से पूरी सभा को बाँधकर रखना इनकी खास विशेषताएँ थीं। क्या मजाल कि इनके भाषणक्रम में एक भी श्रोता उठकर चला जाये।

जब भारत के प्रान्त-प्रान्त में आर्यसमाज स्थापना-शताब्दी-समारोह मनाया जा रहा था और यह विशाल प्रान्त बिहार जो सदैव ही सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक चेतना की प्रखर भूमि रही हो, मौनव्रत लिए चुप थी। इस समय शास्त्रीजी ने ही बरौनी में बिहार प्रान्तीय आर्यसमाज स्थापना-शताब्दी-समारोह करने का भार अपने दुर्बल कन्धों पर उठाया था और बिहार की भूमि पर शताब्दी-समारोह की धूम मचाई थी। उस सम्मेलन के अधिकारी के रूप में मुझे उनकी गौरव-गरिमा एवं कार्य-संचालन को निकट से देखने का अवसर मिला था। शास्त्रीजी अपने दुर्बल शरीर के साथ ही मधुमेह, रक्तचाप, हृदयरोग आदि विविध रोगों के शिकार थे। परन्तु अपने जीवन की परवाह किये बिना समारोह की सफलता में दिन-रात व्यस्त रहते थे। जिसके फलस्वरूप पूर्णतः शारीरिक एवं मानसिक क्षीणकाय हो चुके थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी हम लोगों को संघर्ष एवं संकल्प की शिक्षा दे रहे थे। मानों वह बड़े से बड़े कष्ट में भी हम लोगों को कर्त्तव्य-पथ से विचलित न होने का पाठ पढ़ा रहे थे। किसी भी कार्यकर्त्ता में क्या शक्ति है। वह क्या कर सकता है, जिसके लिए क्या-क्या सहायता एवं प्रोत्साहन दिया जाये, इसका सही मूल्यांकन आपके अन्दर था। किसी व्यक्ति को अपना बनाना या उसके अनुकूल अपने को बदल लेना शास्त्रीजी का महान् गुण था।

यह थी उनकी विभिन्न समारोहों एवं आन्दोलनों के संयोजन एवं नेतृत्व करने की कार्यक्षमता। इस प्रकार बरौनी-शताब्दी-समारोह की सफलता के पश्चात् दानापुर एवं पटना में शताब्दी-समारोह करवाकर बिहार के आर्यसमाज को एक प्रकाश दिया था।

अब हमारे समक्ष ऐसे अनेक अवसर आयेंगे, जब कि आर्यसमाज एवं हिन्दी-साहित्य को उनका अभाव खटकेगा। आप एक कुशल संगठक एवं प्रबन्धक थे। वस्तुतः आप अपने-आप में एक संस्था थे, जिनका सम्बन्ध विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, शैक्षणिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संस्थाओं से था। जिनकी उन्नति में आप सदा अग्रसर रहते थे। आप बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, आर्यसमाज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जनसंघ, जनतापार्टी, विद्यार्थी-परिषद्, छात्र संघर्ष समिति, छात्रसंघ, सरस्वती शिशुमन्दिर तथा अनेकानेक विभिन्न संस्थाओं से सम्बन्धित रहकर पटना की जनता की जो सेवाएँ की हैं, वह उन लोगों को भली भाँति ज्ञात है; जिनका सम्पर्क पटना से रहा है। बिहार में जनसंघ के स्थापना-काल में गठित प्रथम बिहार प्रदेशीय जनसंघ कार्यकारिणी समिति के वे सदस्य निर्वाचित हुए थे। बिहार में आर्यवीर दल तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक सदस्य थे। सरकारी सेवा में रहने के बावजूद भी आपने लोकनायक जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रान्ति में केवल भाग ही नहीं लिया, अपितु इनका सम्पूर्ण परिवार भूमिगत नेताओं के भोजन एवं आवास तक की व्यवस्था करता था। कई बार सरकारी छापे भी इनके घर पड़े थे। परन्तु इन सारे कार्यों से ये कभी विचलित नहीं हुए थे।

आपके लिए जो भी कहा जाये और जो भी लिखा जाये। कुल मिलाकर कम ही होंगे। जीवन को अधिकाधिक दूसरों के लिए उपयोगी बनाये रखना उनके जीवन की अनूठी उपलब्धि थी। आप अपने लिए नहीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपितु दूसरों के लिए जिये। ऐसे लोग तो आज खोजने पर भी नहीं मिलेंगे, जो दुनिया भर का काम करें और अपने परिवार के लिए कुछ न करें। तभी तो वे अपने परिवार के कार्य से ज्यादा महत्त्व दूसरों के कार्यों के सम्पादन करने में ही व्यतीत करते थे। सबके लिए आपका तन, मन, धन, परिवार, घर हमेशा खुला था। इसका पता तो इसी बात से चलता है कि मरने की रात्रि में भी लगभग १० बजे तक दूसरों के कार्यों में व्यस्त थे। शास्त्रीजी प्राय: कहा करते थे कि—'व्यक्ति का शरीर दूसरों के मदद करने के लिए मिला है। अपना-अपना निजी कार्य तो प्रत्येक मनुष्य करता है। जो दूसरों के दु:ख को समझकर उसके दु:ख में मदद कर सके, वही मनुष्य सच्चा मनुष्य है।'

१५ जनवरी, १९७८ ई० को बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना के निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया था। अभी आपके निदेशक-पद की स्वीकृति की स्याही भी नहीं सूख पाई थी कि २४ जनवरी, १९७८ ई० की धुन्ध और कोहरे में डूबी अँधेरी वह काली रात, जिसमें प्रात: होने के पूर्व ही हम लोगों के लिए रात बन गई, जिसने हमसे हमारे प्यारे शास्त्रीजी को छीनकर सदा-सर्वदा के लिए काल के ग्रास में दे दिया और वह शमाँ सदा-सदा के लिए बुझ गई। जो अपने आलोक से पटनावासियों को लगातार आलोकित कर रही थी। वह शेर जो कभी घण्टों दहाड़ा करता था, आज सदा-सदा के लिए मूक हो गया!

आपका जन्म ठीक आज से ही ५२ वर्ष पूर्व आज के ही दिन हुआ था। इनके निधन से हिन्दी का एक साहित्यकार, निष्ठावान् समाजसेवी देश का महान् आर्यवीर, हिन्दीप्रेमी, समाजसेवक और समर्पित राष्ट्रभक्त उठ गया। आप आर्यसमाज के सबल स्तम्भ थे। आपके निधन से समाज की एक बहुमूल्य निधि खो गयी है। आप आर्यसमाज के गगनमण्डल के उन चमकते नक्षत्रों में से एक हैं, जिनकी आंभा से वह देदीप्यमान हो रहा है और भविष्य में भी होता रहेगा। वे हमारे दिलों पर जो यादगार छोड़कर गए हैं, वह कभी मिट नहीं सकेगी। अब उनका पार्थिव शरीर हमारे बीच में नहीं रहा, परन्तु उनकी सुकृति का विग्रह सदैव हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। आप जैसे महान् विभूति के गुणों और कार्यकलाप को इन दो-चार पृष्ठों में समेटा नहीं जा सकता है। जिन्होंने अपना होश सम्भालते ही अपना सर्वस्व आर्यसमाज, हिन्दी-साहित्य और समाजसेवा के लिए न्योछावर कर दिया। उनका निर्वाण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही महोत्सव है। किसी के शब्दों में—

शहीदों की चिताओं पर, लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पे मरनेवालों का यही बाकी निशाँ होगा॥

शास्त्रीजी के निधन से वस्तुतः एक युग का अवसान हुआ है। आर्यसमाज और हिन्दी-साहित्य की जो अपूरणीय क्षति हुई है, उसकी पूर्त्ति निकट भविष्य में कुछ असम्भव-सी प्रतीत होती है। परम पिता परमात्मा दिवंगत शास्त्रीजी की महान् आत्मा को परमशान्ति प्रदान करें, यही मेरी कामना और प्रार्थना है। इनके बचे शेष कार्यों को यदि हम सब पूरा कर सके, तो उनके प्रति यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि हो सकेगी।

●

धर्मप्रसंगादपि नाचरन्ति पापं प्रयत्नेन समाचरन्ति।
एतत्तु चित्रं हि मनुष्यलोकेऽमृतं परित्यज्य विषं पिबन्ति॥

संसार में यह बड़ी विचित्र बात है कि लोग धर्म का प्रसंग आने पर भी उसका अनुष्ठान नहीं करना चाहते किन्तु पापाचरण पूरी कोशिशे लगा कर करते हैं। ऐसे अज्ञानी सहजता से मिल गये अमृत को ठुकरा कर कठिनतापूर्वक प्राप्त विष का प्याला पीने में भी आनन्दित रहते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे गृहपति मेरे उदारमना शास्त्रीजी

◻ ईश्वरी देवी

१२ जुलाई, १९४८ ई० का वह स्वर्णिम दिन! मेरा पितृ-गृह आधुनिक साज-सज्जा से सँवारा-सजाया विद्युत् प्रकाश से आलोकित हो रहा था। गृह के अन्दर आँगन में एक गुम्बजनुमा मण्डप का निर्माण विशेष शिल्पियों द्वारा किया गया था। ये शिल्पी मण्डपाच्छादन की कला में दक्ष थे। मण्डप के मध्य में गोबर-गणेश की प्रतिमा के स्थान पर यज्ञकुण्ड की स्थापना हुई थी और उसके चारों ओर आगत अतिथियों के बैठने की व्यवस्था थी। यज्ञकुण्ड के पास ही मंगलकलश के ऊपर चतुर्मुखी दीपक प्रकाशमान था। कलश से थोड़ा दक्षिण की ओर परम्परा से रखे जानेवाले हरीस (हल) के स्थान पर ध्वनिविस्तारक यन्त्र था, जिसने लोगों में कुतूहल उत्पन्न कर दिया था।

महिलाओं के लिए कोई अलग आवरण का स्थान नहीं था। आश्चर्य! बरात के सामने महिलाएँ बिना पर्दा के बैठेंगी? मुस्लिम सभ्यता से प्रभावित उस पर्दानशीन इलाके के लिए यह एक चुनौती थी। कुछ महिलाओं ने आकर मेरी माताजी से ताने के स्वर में कहा :

'भला! बिना गोबरगणेश के भी कहीं कोई ब्याह होला? औरत सबके बैठेला कोई इन्तजाम न कैला? हम सब बिना पर्दा के कैसे बैठब?'

माताजी ने उस शुभ मुहूर्त्त में मौन रहना ही शायद ठीक समझा, अतः वे शान्त रहीं।

इस प्रकार, आज से तीन दशक पूर्व का यह मण्डप अति आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित अपनी चमक-दमक से लोगों को चकाचौंध कर रहा था।

सन्ध्या के छः बजे थे। अतिथि और स्वजन उल्लास और उमंग में डूबे बड़ी व्यग्रता से बरात के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। उधर भगवान् भास्कर भी तपःपूत अपने प्रिय राम को शुभकामना व्यक्त करने हेतु अस्ताचल की ओर जाने में विलम्ब कर रहे थे। इसी बीच हलचल मच गई और लोगों ने कहा कि बरात बहुत निकट ही आ गई है। वरपक्ष से एक सज्जन ने आकर कहा कि वरमाला का प्रबन्ध कर लें। पहले तो लोगों ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका अर्थ ही नहीं समझा। जब उस व्यक्ति ने विस्तार से इसकी विधि बताई, तो लोग अवाक् रह गये। सब एक स्वर में कहने लगे—यह कैसी शादी! न कोई विधि-विधान और न पर्दा। रोशनी के बिना बरात की शोभा ही क्या है? आदि-आदि। मेरे पिताजी ने सबको शान्त कर कहा कि 'हम लड़की वाले हैं, अतः उस पक्ष से जो भी कहा जायेगा, वह मान्य है।' इस प्रकार शीघ्र ही सब प्रबन्ध कर दिया गया और राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्रीजी के पौरोहित्य में विवाह संस्कार २ घण्टे में ही सम्पन्न हो गया। विवाह-संस्कार के सारे मन्त्रों को पण्डित रामानन्द शास्त्रीजी ने माइक पर पढ़ा और विस्तार से उनकी व्याख्या की गई। धर्मप्राण शास्त्रीजी ने भी सभी मन्त्रों को दुहराया और आजीवन साथ रहने की प्रतिज्ञा की। विवाह का निम्नांकित मन्त्र उन्हें बहुत प्रिय था :

ओ३म् भगस्ते हस्तमग्रभीत्[१] सविता हस्तमग्रभीत्।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव॥

—अथर्व० १४।१।५१॥

अर्थ—इस मन्त्र में वर कहता है कि हे सौभाग्यवती वधू! धर्मयुक्त मार्ग में प्रेरक मैं, तेरे हाथ का ग्रहण कर चुका हूँ। तू मेरी धर्मभार्या है और मैं धर्म से तेरा गृहपति हूँ।

वेद के इन पावन मन्त्रों द्वारा प्रतिज्ञा करके जिसने इस गृह का गृहपति होना स्वीकार किया, वही इसे छोड़कर चला गया! सुना करती थी कि पुण्यात्माओं के बिछोह में मार्ग के निर्जीव रोड़े-पत्थर भी आँसू बहाते हैं। क्या पता था कि इसका कटु अनुभव करने के लिए मेरे जीवन में भी एक काली रात आनेवाली है। २४ जनवरी, १९७८ ई० की वह रात, वैसी ही भयानक कालिमा से भरी हुई आई, जिसने हठात्, बिना किसी पूर्व सूचना के इस गृह के गृहपति को हमसे सदा के लिए छीन लिया। ऐसा लगा कि घर की जड़ दीवारें और इसका जर्रा-जर्रा सजीव होकर चीत्कार कर रहा है और अब ज्यों-ज्यों समय का अन्तराल बढ़ रहा है, यह गृह, इसकी दीवारें और इसके कक्ष अपने गृहपति के वियोग की पीड़ा को अन्दर में व्याप्त कर बिलख रहे हैं। गृह की उदासी अब दूर होने की नहीं। जीवन के शेष दिनों को इसी हाहाकार के साथ गुजारना है।

पिछले साल काफी दिनों तक अस्वस्थ रहने के बाद जब वे अच्छे हुए, उन्होंने एक पुस्तक बड़े प्रेम से मुझे भेंट की थी—'इस कगार से उस

१. अथर्ववेद का पाठ 'अग्रहीत्' है। अन्यत्र शाङ्खायनादि गृह्यसूत्रों में 'अग्रभीत्' पाठ मिलता है। अर्थानुसार दोनों ही उपयुक्त हैं।। —सम्पा०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कछार तक' (लें० डॉ० श्रीनिवास)। पता नहीं, उस कछार को जाने का उन्हें आभास मिल गया था क्या?

वे जहाँ भी जाते थे, मुझे साथ ले जाने का प्रयास अवश्य करते थे, किन्तु उस कछार की यात्रा उन्होंने अकेले ही कर ली, मुझे असहाय इस कगार पर ही छोड़ दिया।

आर्यसमाज के सिद्धान्तों के वे कट्टर अनुयायी थे और यज्ञ एवं संस्कारों के द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार किया करते थे। आर्यसमाज के प्रचार के लिए कोई भी जोखिम भरा क्रान्तिकारी कदम उठाने में वे कभी पीछे नहीं हटते थे, उनका सम्बल था :

कबिरा खड़ा बाजार में लिए लुकाठी हाथ।
जो घर जारै आपना चलै हमारे साथ॥

इन पंक्तियों को वे अक्सर दुहराया करते थे। सन् १९५६ ई० की ऐसी ही एक घटना मुझे याद आती है। उस समय मैं बहुत ही अस्वस्थ थी। डॉक्टर ने पूर्ण विश्राम की सलाह दी थी। घर में केवल मैं और मेरी पंचवर्षीया पुत्री अलका थी, जो इनके राष्ट्रभाषा-परिषद् चले जाने पर मुझे दवा-पानी देती थी। एक दिन शाम के समय परिषद् से लौटने पर अचानक इन्होंने अपना प्रोग्राम बाहर जाने का बनाया।

मुझे और बच्ची को, कुछ आवश्यक सामानों के साथ इन्होंने अपने मित्र गौरीशंकर बाबू के यहाँ पहुँचा दिया और अपने वापस लौटने तक मुझे बच्ची के साथ वहीं रहने का आदेश दिया। पूछने पर उन्होंने कहा कि 'दीदी को लाने जा रहा हूँ, क्योंकि बीमारी में आपकी देख-रेख करनेवाला कोई नहीं है।' गौरीशंकर बाबू की पत्नी ने मेरे उपचार का प्रबन्ध कर दिया। तीन-चार दिनों के बाद ये वापस आये, किन्तु साथ में दीदी नहीं थी। मैंने जब दीदी के लिए पूछा तो कहा गया कि 'अभी गाँव में जीजाजी नहीं थे। अतः वह एक सप्ताह के बाद आयेंगी।' समय बीत गया और मेरे बड़े पुत्र अभिजित का जन्म भी हो गया, किन्तु दीदी का पता नहीं। सब ठीक हो जाने के बाद एक दिन पुनः मैंने दीदी के लिए पूछ दिया। व्यवहारकुशल होते हुए भी, वे किसी बात को गोपनीय रखने में कुशल नहीं थे। जबरन जब किसी बात को छिपाते तो एक अजीब हँसी फूट पड़ती थी। मैंने कहा—क्या बात है दीदी अभी तक आई नहीं? हँसते हुए उनका उत्तर था—'बात ऐसी हुई कि उस दिन शाम को परिषद् में डॉ० दुखनरामजी ने टेलीफोन किया था कि रात में ही मैं मठगुलनी चला जाऊँ। वहाँ आर्यसमाजियों और ईसाई पादरियों में झगड़ा हो गया है। आर्यसमाज के लोगों ने उनकी बन्दूक छीन ली है और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पटना से सरकार की ओर से पुलिस समाज के कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार करने जा रही है। डॉ० साहब का आदेश था कि मैं रातों-रात वहाँ जाकर बन्दूक उनसे लेकर गंगा में डाल दूँ। डॉ० साहब ने यह भी कहा था कि यह कार्य अत्यन्त गोपनीय और साहसिक है, जिसे आप ही कर सकते हैं। यह भी सम्भव हो कि आप गिरफ्तार हो जायें, इसी कारण मैंने आपको और बच्ची को दूसरे परिवार में रख दिया। यदि जेल जाने की बात हो जाती, तब पता नहीं कब लौटता। ऐसी अवस्था में अकेला छोड़ जाने से आपकी देख-रेख कौन करता? अस्तु! मैंने दीदी के यहाँ जाने का बहाना किया था।'

शास्त्रीजी इस प्रकार के साहसिक और खतरनाक कार्य मौका आने पर यदा-कदा करते ही रहते थे। चाहे वह गोरक्षा-आन्दोलन हो अथवा हिन्दी-रक्षा, वे अपने स्वास्थ्य और नौकरी की परवाह किए बिना सदा समुद्यत रहते थे।

उदारहृदय ऐसे थे कि खुले दिल से वे अपने हित-अहित का खयाल किये बगैर किसी की प्रगति के लिए सहायता हेतु सदा तत्पर रहते थे। अपने प्रेमी बन्धुओं की उन्नति या आगमन की सूचना पाकर वे उनके सम्मानार्थ गोष्ठियाँ और अभिनन्दन करने में कभी चूकते नहीं थे।

सन् १९६६ ई० में शास्त्रीजी बहुत अस्वस्थ हो गये थे। डॉक्टरों ने उन्हें पूर्ण विश्राम का आदेश दिया था। 'डॉक्टर दुखनराम अभिनन्दन-ग्रन्थ' की तैयारी जोरों से चल रही थी। इन्हें डॉ० साहब की जीवनी लिखने का भार दिया गया था। ये प्रति दिन डॉक्टर साहब के आवास पर जाकर प्रश्नोत्तर द्वारा उनके जीवन-वृत्त का प्रारूप तैयार करते थे। एक दिन किसी कारणवश इन्हें लेने के लिए गाड़ी नहीं आई। थोड़ी देर राह देखने के बाद ये जाने के लिए बेचैन हो उठे। मैंने कहा 'छोड़िए, आज आप आराम कीजिए'। इसपर उन्होंने कहा—आप इसे नहीं समझेंगी। मैं रात में अपने मन में सोचकर डॉक्टर साहब से जो तथ्य निकालना रहता है, उसके अनुरूप प्रश्न तैयार कर लेता हूँ। यदि आज नहीं जाऊँगा, तो वे सारे प्रश्न अस्वस्थता के कारण विस्मृत हो जायेंगे और कथा का तारतम्य टूट जायेगा।

इस प्रकार चाहे किसी व्यक्ति का कार्य हो अथवा किसी संगठन का, वे पूरी निष्ठा एवं तत्परता से उसे किया करते थे।

आर्यसमाज स्थापना-शताब्दी-समारोह देश के सभी प्रान्तों में धूमधाम से मनाया जा रहा था, किन्तु बिहार मौन था। शास्त्रीजी को यह कैसे सहन होता? अपने चिन्तनीय स्वास्थ्य का ध्यान छोड़कर उन्होंने बरौनी में प्रथम शताब्दी-समारोह मनाने का संकल्प किया। दो माह पूर्व से ही वे उसकी तैयारी में जुट गये। सरकार के और समाज के वरेण्य महानुभावों को उत्सव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आने के लिए आमन्त्रित किया गया। उत्सव प्रारम्भ होने के एक सप्ताह पूर्व ही शास्त्रीजी अपनी औषधियों के साथ बरौनी चले गये। उत्सव के दूसरे दिन मैं अपने पुत्र अभिजित के साथ स्मारिका लिए सन्ध्या तीन नजे बरौनी पहुँची। वहाँ का बृहद् आयोजन विशाल शामियाना, सुन्दर सुसज्जित यज्ञ मण्डप प्रान्त के कोने-कोने से आये अतिथियों के ठहरने का सुप्रबन्ध देखकर मैं हैरान हो गई। ऐसी अस्वस्थता में, चारों ओर से विरोध के बावजूद इतना शीघ्र ऐसा विशाल आयोजन! उनकी कर्मठता का नमूना मिलने को नहीं है। मैं उन्हें खोजती हुई सड़क के निकट एक खेमे के पास जा पहुँची। शास्त्रीजी जून की गरमी में पसीने-पसीने, थके हारे ऊँची-नीची धरती पर केवल दरी बिछाकर बिना तकिया के प्रगाढ़ निद्रा में सो रहे थे। दुःख से मेरा मन भारी हो गया। जो व्यक्ति घर में एक मिनट बिना पंखा के नहीं रह सकता था उसकी यह हालत? कुछ देर बाद वे जगे। देखकर यही लगा कि बीमारी ने तो इनका शरीर ही जीर्ण किया था, किन्तु विरोधियों के व्यवहार ने इनका मन भी तोड़ दिया है। आनेवाले अतिथियों को पत्र तथा फोन के द्वारा अधिकारियों ने बरौनी पहुँचने के लिए मना कर दिया था। इसकी सूचना उन्होंने मुझे दी और साथ ही यह बताया कि एक दो ही ऐसे निर्भीक व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने आने की मंजूरी भेजी है। उन्होंने बड़े सम्मान के साथ स्वामी हरिनारायणानन्दजी और श्रीनरसिंह बैठाजी का नाम लिया और बड़े उत्साह से उनके आगमन की बाट जोहने लगे।

इस प्रकार, अपने ही सहयोगियों के असहयोग और अकारण विरोध ने उन्हें चूर-चूर कर दिया। ऐसे विरोधों के बीच किसी कार्य को सम्पन्न करने में उनकी शक्ति दुगुनी खर्च होती थी, जो उनके शरीर को जर्जर बना रही थी।

साहित्य की अर्चना उन्होंने पुरानी हस्तलिखित पोथियों के संकलन एवं अनुसन्धान से की। पुरानी पोथियों के संग्रह का कार्य भी बड़ा श्रम-साध्य था। कभी-कभी इन्हें इनके संकलन के सिलसिले में काफी अपमान और दुर्व्यवहार भी सहना पड़ता था।

ऐसे तपःपूत, उदारमना तथा अपने आर्यजगत् के प्रकाण्ड विद्वान, धुरन्धर प्रचारक के निधन से घर तो सूना हुआ ही, बाट-बटोही भी सूने उदास हो गये। सुधी समाज की यह महनीय क्षति हुई है जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

शास्त्री-भवन, राजेन्द्रनगर, पटना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी धर्मपत्नी श्रीमती ईश्वरी आर्या के साथ
(विवाह के दूसरे दिन : १३ जुलाई, १९४८ ई०)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे स्नेहवत्सल पिता : पं० रामनारायण शास्त्री

□ डॉ० (श्रीमती) अलका शर्मा

मेरे पूर्वजन्मों के सत्कर्मों का फल अथवा परम प्रभु की अपार कृपा का वरदान था कि मुझे एक ऐसे प्रकाण्ड विद्वान्, धुरन्धर तथा ओजस्वी वक्ता और कर्मशील मानव की पुत्री होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे भारतीय संस्कृति के गौरव के प्रतीक थे, जिनसे उनके परिवार के हम सभी लोग आज तक गौरवान्वित हैं।

वैदिक वाङ्मय में तीनों देवों की विशेष रूप से महिमा बताई गई है। यथा—'मातृदेव, पितृदेव और आचार्यदेव'। निःसन्देह माता जननी—जन्मदायिनी होती है और वह शिशु की प्रथम नारी गुरु है; किन्तु इससे पिता का महत्त्व कम नहीं होता और फिर एक ऐसे पिता का, जो स्वयं दिव्य गुणों से सम्पन्न हो और अपने बच्चों के सदाचार और अनुशासन के प्रति सदा जागरूक हो।

मेरे पिताजी भी ऐसे ही थे। वे धुन के पक्के थे और जिस कार्य का भार लेते, उसे ईमानदारी, तल्लीनता और पूरी निष्ठा से सम्पन्न करते थे। आर्यसमाज और महर्षि स्वामी दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने की उनमें स्वाभाविक बेचैनी और अकुलाहट थी। मनुष्य को सही रूप में मनुष्य बनाना उनका उद्देश्य था। अपने इसी उद्देश्य की पूर्त्ति हेतु सभी जीवन्त संस्थानों, चाहे वह आर्यसमाज हो या हिन्दी-संस्थान या बच्चों के निर्माण के हिन्दू नामधारी विद्यालय या कोई सांस्कृतिक प्रतिष्ठान अथवा आर्यत्व का प्रचार करनेवाली कोई संस्था, वे सबसे जुड़े हुए थे।

मैंने जबसे होश सँभाला, उन्हें सदा युद्ध-स्तर पर ही कार्य करते देखा। न भोजन की परवाह, न अपने स्वास्थ्य की चिन्ता और न ही अपने लिए ऐश्वर्य और कीर्त्ति बटोरने की ललक। सदा साधारण खादी का धोती-कुरता ही उनका परिधान था। उनका कहना था कि मनुष्य की पहचान उसका लिवास नहीं, अपितु उसका सदाचरण और उसकी सत्यनिष्ठ वाणी है। आचरण की विनम्रता और वाणी की मधुरता ने ही उनकी उज्ज्वल छवि को समाज में इतना उजागर किया, जो आज भी समय की परत से मलिन नहीं हुआ।

हम बहन-भाइयों को वे सदा कर्त्तव्यपरायण और अनुशासित देखना चाहते थे। थोड़ी-सी कोई लापरवाही के लिए उनके प्रचण्ड क्रोध का हमें सामना करना पड़ता था, किन्तु हम सबका मौन समर्पण उन्हें शीघ्र ही पिघला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देता था। उनका क्रोध क्षणभंगुर होता था। वे क्रोध के उपरान्त प्यार से हमारी भूलों के दुष्परिणामों को समझाते और आगे उसे न दुहराने के लिए सचेत करते थे।

इतनी व्यस्तता के बाद भी जब कहीं कोई ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम या सभा होती, तब वे हम सबको साथ ले जाते थे। समय का उन्हें सदा अभाव रहता था। आर्यसमाज के प्रचार हेतु या बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के भाषा-सर्वेक्षण हेतु वे अधिक समय तक बाहर ही रहते थे । हम सबके लिए वह दिन बड़े हर्ष और उल्लास का होता, जिस दिन इस छोटे परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर भोजन और वार्त्तालाप करते थे।

सांसारिक वस्तुओं के प्रति न उनको आकर्षण था न मोह। वे असंग भाव से ही घर-परिवार और समाज का कार्य करते थे। अक्सर उनसे अपने कार्य के लिए परामर्श और सहायता लेने हेतु लोग आया करते, जिनका स्वागत-सत्कार वे बड़े ही प्रसन्न भाव से करते थे, जिसमें मेरी माता उनकी सहयोगिनी रहती थीं। स्वयं अभावग्रस्त होने पर भी वे यदा-कदा कष्ट में पड़े लोगों की आर्थिक सहायता किया करते थे।

आज उनकी सारी स्मृतियाँ चित्रवत् मेरी आँखों के सामने घूम रही हैं। इतनी जल्दी वे हमें छोड़कर चले जायेंगे, कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था।

आर्यसमाज प्रतिदिन पंचमहायज्ञ करने की शिक्षा देता है। उनमें पितृयज्ञ का भी विधान है, अर्थात् माता-पिता की सेवा करना। मुझे ऐसा पितृयज्ञ विशेष रूप से करने का सौभाग्य नहीं मिला। वे अनायास ही कर्मरत रहते हुए महाप्रयाण कर गये। हाँ, इस पितृयज्ञ का दूसरा पक्ष आज भी हम सबके सम्मुख वर्त्तमान है : हम कोई ऐसा कार्य न करें, जिससे उनका यशःशरीर धूमिल हो। उनकी शिक्षा को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें और आर्यत्व का गुण अपने में धारण कर समाज को, मानव को थोड़ा भी उत्कर्ष की ओर ले जाने में सहायक हों, तो उस पितृयज्ञ का कुछ अंश हम पूरा कर सकेंगे।

पिताजी की यात्रा का सामान व्यवस्थित करना मेरे जिम्मे रहता था। उनकी दवाइयाँ, उनका बिस्तर, उनका वस्त्र आदि। यदि यात्रा लम्बी करनी होती, तब खाने का कुछ सामान भी; क्योंकि बीमारी के कारण उन्हें बहुत परहेज से रहना होता था। सबसे अधिक संकट तब उपस्थित होता था, जब अचानक एक-दो घण्टे में ही वे अपनी यात्रा के लिए प्रस्थान करने की सूचना देते थे। ऐसे अवसरों पर उनके सभी आवश्यक सामान शीघ्र सहेजने पड़ते थे, जिसका मुझे अभ्यास ही बन गया था।

बस! मैं परमपिता परमात्मा से हार्दिक प्रार्थना करती हूँ कि वे हम सबको पितृयज्ञ की पूर्त्ति के लिए सदा सक्षम बनाये रहें।

रामकृष्ण कालोनी (महेन्द्रू, पटना)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SHRI RAM NARAIN SHASTRI : ATRIBUTE

❒ *Dr. Phani Bhushan Prasad*
M.S., F.R.C.

I am neither an Arya Samaji nor a Politician, nor had I any relationship with Bihar Rashtra-Bhasha Parishad, the organisation in which late lamented Ram Narain Shastrijee worked and rose to the topmost position. Only a couple of years ago when I met him on a different context, I felt a peculiar kinship to him. I say this because, although my acquaintance with him was of a short period, his sudden death, on 24th, January, 1978, considerably shook me. Why, I asked myself, should Providence, who had elevated him to the highest post as Director in the Rashtra-bhasha Parishad, strike him down ruthlessly? Really a big joke of the Almighty and why? In fact, when I had read in the newspapers about the elevation of Shastrijee only a week back, I was so elated but Alas!, even before I could congratulate him he had departed from this mortal world.

If Shastrijee would have died without having adorned the post of Director of Rashta-Bhasha Parishad probably a few lines for his obituary would have sufficed. But for such a person who became Director, to die suddenly by heart-attack before he could even open his briefcase for the new job makes no sense to me. If it was God's will it should be have for God that He would have given him some more time to settle down and serve, the way he had painstakingly served throughout his active life. But may be it is foolish to think like that now. Because inscrutable are the ways of the great Almighty. But surely I am sore at Him and refuse to accept His verdict as just; only human thought my understanding may be.

Shastrijee himself a versatile scholar, used to soothe people when one's kith and kin died, by his comforting voice. His deep knowledge of the scriptures and its flamboyant exponence was a balm to many aggrieved hearts. I am quite sure that his own answer to such situation would have been that his time was up. Because of "Prabhu Karma...." "life is all Maya etc. etc." One has to accept death and there is no

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

greater happiness than to die of a quick heart-attack that gives no time to one to think. Even on the fateful night of 24th Jan. 1978, when it was bitterly cold, Shastrijee had worked till late at night to help one of his friends, who was in dire need, and in the morning he was not there. Serenely and peacefully he had departed to the Kingdom of Heaven where all mortals have to go.

I am a doctor and Shastrijee was my patient too, while he suffered from a different trouble some months back. He was such a good patient. Even in pain and sufferings I could see him ever smiling.

Shastrijee is gone and we have to accept it but such men always leave behind their imprints. His scholarly work, research publications, which he has handed over to the posterity, will remind humans that such a man trod this earth in flesh and blood.

You assembled scholars of the earth, if you desire to keep the atmosphere of the world, quiet and calm, go to the saints in the caves and forests of India, sit at their feet & learn divine wisdom from their holy lips and then propagate it in Europe and America.

—Miss Jatasku

अय भूमण्डल के समस्त विद्वानो ! यदि आप संसार के वायुमण्डल को क्षोभरहित और शान्त रखना चाहते हैं तो भारत के वन और गुफाओं में तप करते हुए महात्माओं की सेवा में जाओ और उनके चरणों में बैठकर उनके पवित्र ओष्ठों से जो विचार सुनो उनका प्रचार और प्रसार योरोप और अमेरिका में करो, तब संसार में शान्ति हो सकती है, आपके विचारों से वह सम्भव नहीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ON THE OCCASION OF THE DEATH ANNIVERSARY OF THE LATE SRI RAM NARAIN SHASTRI

A SCHOLAR TO REMEMBER : THE LATE SRI RAM NARAIN SHASTRI

☐ R. Balchand
Senior Journalist

The pleasure of contributing to a commemorative volume, alas, is a most sad task because of the passing of a scholarly friend of very long standing, the subject of this short sketch.

Very few, even among members of the Arya Samaj in Bihar, are fully aware of the unique achievements of the late Swami Dhruvanand Saraswati in the field of raising the intellectual and spiritual level of contemporary youth in the Bihar region. He came to Patna from the Sadhu Ashram in Uttar U.P. perhaps in the early 1920's of this century and plunged into the task he set himself of taking the youth of that era "back to the Vedas". That was the call of the great preceptor of the age, Swámi Dayanand and Pandit Dhurendra Shastri, as Swami Dhruvanandji was known during his pre-sanyas days as preacher of the Arya Samaj, dedicated his life to the Master's call. The late Pandit Ramnarain Shastri was among his most devoted disciples.

For decades he carried the message of the founder of the Arya Samaj from every urban and rural platform until he was called away to the wider sphere of the international Aryan League in Delhi. Perhaps there were polemical platform orators among Arya Samaj leaders who could carry large audiences but when it came to effective Vedic discourse there was hardly anyone who made the same impact on the mind of young men as Pandit Dhurendra Shastri. By his personality and by his erudition for nearly half a century, he carried the message of the Vedas not only in the homes of many Bihari people but into the mind and heart of enthusiastic young men and women.

Soft-spoken and affable of manners in private conversation, a scholar with the temperament of a recluse. Ramnarainnji could be thun-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

dering and devastating with arguments on public platforms of the Arya Samaj over controversial topics. When it came to finer points of philosphical discourse on Vedicism he could be as scholarly with the sutras as he was an authority in unravelling ancient calligraphy enshrined in old manuscripts.

In the tradition of our unique mentor Ramnarainji was more than an idealist who believed in devotion to religious and social advancement of the people among whom he lived and worked. For, instead of asking others to go ahead, or to follow, he took the lead himself. Always a warm friend, he was never without his load of books, always an armful at a time, mostly ancient manuscripts, and so he was always busy with his official work of the Bihar Rastra Bhasha Parishad, or his spiritual and religious duties as an Arya Samajist, each of which was equally dear and sacred. To him a duty was a duty, irrespective of the hour when it had to be performed, early in the morning, late in the eveing, it made no difference.

And so, he would always promise but rarely fulfil a private engagement, however assuringly made, to a standing or pressing friendly invitation, unless it happened to relate to some religious function.

His hard and continuous work between deciphering and editing manuscripts and propagating Hindi has left its imprematur on the Tiles of numerous publications of the Bihar Rashtra Bhasha Parishad as contributor, collaborator and editor. In a diversity of fields his work reflects scholarship. Though a forceful speaker on literary or religious platforms, it is among the pages of numerous contemporary Hindi publications that his reputation will endure.

It is sad to recall that his standing as a scholar and devoted worker in the cause of Hindi in Bihar had just received its due recognition in his appointment as director of the Bihar Rashtra Bhasha Parishad, with which he had been associated from its very inception and from the beginning of his own literary career, when a still more promising career had been cut short by death.

To whom who knew him in his public, academic and religious life he would be long remembered for his warm and affectionate attachment and willingness to be helpful. In his passing many of us have lost a warm friend.

Requiem for peace

"Om Shanti, Shati, Shanti"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PANDIT SRI RAM NARAIN SHASTRI : AS I KNEW HIM

❒ *Dhirendra P. Verma 'Lecturer'*

Pandit Sri Ramnarain Shastri lived in Rajendra Nagar, one of the posh residential localities of Patna, he breathed his last at his road no.11 residence on the 24th January 1978. In his death, the entire community of Rajendra Nagar has lost a pious and noble man. We find in him an image of a dedicated, hard-worker of Bhartiya Jan Sangh, and a person who sacrificed his life for the practices and principles of the Arya Samaj, but for the people of Rajendra Nagar, he was more than the two images.

The name of this great soul is perhaps not unknown to those of us who keep interest in politics and evolution of political parties in India, those among us who know about the establishment and contributions of the Arya Samaj; and those who are much associated with the socio-cultural upliftment of the society.

Personally, I knew him well. He was my neighbour. His two sons—Abhijeet and Amitabh are my intimate friends, my young brothers. Being a neighbourer, I could observe him. He was a man, who loved all. He knew most of the persons in Rajendra Nagar. One thing I would like to emphasise that he was a man who lived not for himself or his family members but for the others. In a very literal sense, he was grieved with one's sorrow, and also had true delight with other's pleasure. Whenever he met me, while walking or going somewhere on Rickshaw, everytime he stopped and asked me; "Well, Dhirendraji? How are you? Is everything fine?."If there was any problem with me or some one else and if he was able to help in any way, he used to volunteer himself. There would be no exaggeration in making a point that he was always found worrying for others. I am sure that it is very difficult to find such a person in today's individualistic and materialistic society.

Pandit Shastri thought for the society, worked for the society, and lived for the society. He was of the view that—"a man shoud not remain confined to his own four walls. He should attempt to contribute

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
constructively towards the development and advancement of the community. A service to one indirectly or directly, a service towards society, his nation, and the mankind. "It was his initiative that it brought an inspiration in me that I should work for my community. He has been one of the persons whose ideas and practices brought me to active public life. In a very short time, I came nearer to Pandit Ramnarain Shastri. I got enough opportunities to work with him, to talk to him, and to learn a lot from his genius.

It was the year 1970 that I decided that people of Rajendra Nagar should organise **Saraswati Puja** unitedly at one place. The festival was organised in a big way, which also included a variety of entertainment cultural programme, **Nirala Jayanti** and a **Kavi Sammelan.** I am delighted to say that my project was thumping success, as Pandit Sri Shastri rendered his active help. He suggested that I should go to the elders at Rajendra Nagar and they must have their co-operation too. Make them feel that they are too an important part of the community machine. Ramnarain Shastriji brought many persons under his flag, and those who joined him were Sri A.D. Sheth, Sri Alakh Singh, Sri Mahendra Nath Pandey-Advocate, Sri Shailendra Nath Srivastava, Sri Suchit Kumar Sinha and Late Sri Tarkeshwar Nath. At the first meeting with the elders of Rajendra Nagar, he advised that Puja must be celebrated under the banner of some organisation. When his proposal was accepted unanimously, everbody decided that Panditji would be the most suitable person to coin a new name of such organisation **Sanskriti Vihar**– a much artistic and literary name was suggested by him. All of us liked the name, and Rajendra Nagar Saraswati Puja of 1970 was held under the banner of **Sanskriti Vihar.** I recall full well that he was very much pleased working with us. He went from door to door at Rajendra Nagar, and collected donations, sometimes, it seems unbelievable that even such a great man, like Sri Ramnarain Shastri, would move from door to door for donation collection. But he did it and this is a fact.

After the Puja was over, he told me one day that he had done it for two purposes; first, that Puja should be celebrated in a big way, and, second, that young boys of today must learn how to work with people. According to him, a small work in a small community creates a leadership training, a devotion to work for others, and indeed contributes socially towards the cultural upliftment of the community to a greater extent.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The people of Rajendra Nagar feel that they have lost in his death certain valuables. We in Bihar still need a person like him. His death is a great loss to the community of Bihar. We have to work for the socio-cultural upliftment of the society. If we work in that direction, and follow his words and deeds it will be a real tribute to the departed soul of Pandit Sri Ram Narain Shastri.

Faculty of Law,
University of Allahabad

●

To stand with a smile upon your face against a stake from which you cannot get away that, no doubt, is heroic. But the true glory is resignation to the inevitable. To stand unchained, with perfect liberty to go away, held only by the higher claims of duty and let the fire creep up to the heart, this is heroism.

—H. W. Robertson

कर्त्तव्य पालन के लिये यदि किसी व्यक्ति को जलते हुए खम्भे के साथ बेड़ियों से जकड़ दिया जाये, किन्तु इस अवस्था में भी वह यदि मुस्कराता रहता है भागने की सुविधा होने पर भी भागता नहीं भले ही खम्भे की आग उसे पूरी तरह जला दें की शृंखला से जकड़ा हुआ है, तो निश्चय ही ऐसा रत्न वीर शिरोमणि हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रीजी की अप्रकाशित रचनाएँ :
आकाशवाणी-वार्त्ता एवं अन्य निबन्ध

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराणों में चन्द्रमा के विविध रूप

निशाकाल में हमारे मस्तक पर नक्षत्रों के मध्य में मणि जैसा उज्ज्वल आलोकमय और हिम-सा शीतल अंशुमाली, जो एक ज्योति दीख पड़ती है, प्राचीन भारतवासियों ने उसको चन्द्र, चन्द्रमा, सोम, हिमांशु, कुमुदबान्धव, शीतरश्मि आदि अनेक नामों से अभिहित किया है।

सूर्य प्रभृति अन्य ग्रहों की भाँति नियमित गति रहने से चन्द्र भी एक ग्रह है, किन्तु अपर ग्रहों की तरह इस ग्रह को सर्वदा सर्वांश में आलोकमय नहीं पाते और इसका मध्यभाग कृष्णवर्ण छायायुक्त जैसा लगता है। यह पृथ्वी से पाँच हजार सात सौ पैंतालीस (५७४५) योजन ऊँचाई पर अवस्थित है। चन्द्र जिस कक्षा में पृथ्वी-परिभ्रमण करता है, उसका परिमाण बत्तीस लाख चार हजार इक्यानबे (३२,०४,०९१) योजन है। यह दैनिक गति में स्वीय चक्र का ७९ कला, ३४ विकला और ५२ अनुकला भाग का अतिक्रम करता है। चन्द्रमण्डल का व्यास प्राय: दो हजार एक सौ तिरपन मील और पृथ्वी का व्यास सात हजार नौ सौ छब्बीस मील है। चन्द्र का आयतन पृथ्वी के आयतन का प्राय: १।४९वाँ अंश है, अर्थात् ४९ चन्द्र एकत्र करने पर पृथ्वी के समान होंगे। चन्द्र का जो अंश हमें दीखता है, उसका परिमाण यूरोप-खण्ड से लगभग दुगुना और भारतवर्ष से पाँचगुना है। पृथ्वी-परिक्रमा में चन्द्र को २७ दिन, ४३ मिनट का समय लगता है।

ऋग्वेद में चन्द्रमा को मन:प्रसूति-**चन्द्रमा मनसो जात:**—कहा गया है। शतपथ के अनुसार **सूर्यस्यैव हि चन्द्रमसो रश्मय:**,—सूर्य की किरणों से ही चन्द्र प्रतिभासित होता है। ऐतरेय ब्राह्मण कहता है—**अमावास्यायामादित्य-मनुप्रविशति**—अमावास्या के दिन चन्द्रमा सूर्य में अन्तर्भुक्त हो जाता है। ताण्ड्यब्राह्मण में चन्द्रमा को **'अपां पुष्पम्'**—पानी का पुष्प माना गया और उसे जलमय बताया गया है। वायुपुराण में भी **'अम्मयश्चन्द्रमा: स्मृत:'** उल्लिखित हुआ है। ब्रह्मपुराण का कथन है—**'शीतरश्मि: समुत्पन्न: कृत्तिकासु निशाकर:'**—कृत्तिका नक्षत्र में चन्द्रमा का जन्म होता है। शतपथब्राह्मण की कथा है—इन्द्र ने वृत्रासुर पर प्रहार किया। आहत और खण्डित वृत्रासुर ने इन्द्र के समक्ष अपने को अर्पित करके अमरता का वर माँगा। वृत्रासुर के आत्मसमर्पण से इन्द्र प्रसन्न हुए और उसे सोम पिलाकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर कर दिया तथा आकाश में चन्द्र बना दिया। हरिवंशपुराण के उल्लेख से यह कथा प्रचलित है—चन्द्र के मध्य का कृष्णांश, उसका कलंक है। यह पृथ्वी का प्रतिबिम्ब है, जैसे दर्पण में मुख प्रतिबिम्बित होता है। ब्रह्मपुराण के मत से पार्थिव जल सूर्य-किरणों से आकृष्ट होकर चन्द्रमण्डल में जाकर स्थिर होता है और पुनर्बार् वृष्टि प्रभृति रूप में पृथिवी पर गिर पड़ता है। वस्तुतः वैदिक वाङ्मय में चन्द्रमण्डल को ही जलन्धर कहते हैं। गंगा आदि नदियाँ चन्द्रमण्डल से ही प्रवाहित हुई हैं। भास्कराचार्य के मत से चन्द्र जलमय है। उसमें अपना कोई तेज नहीं है। चन्द्र का जो-जो अंश सूर्याभिमुख हो अवस्थित रहता है, सूर्य-किरण के प्रतिफलित होने से प्रकाशित रहता है। अपरांश के सूर्यकिरण से प्रतिफलित न होने के कारण श्यामल वर्ण लगता है।

पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड के अनुसार, ब्रह्मा ने अत्रि को प्रजा-प्रजनन का आदेश दिया। अत्रि ने तपस्या की, जिससे तेज प्रादुर्भूत हुआ। तीन हजार दिव्य वत्सर पर्यन्त तपस्या के फलस्वरूप सोम रूप में परिणत तेज ऊर्ध्वगामी होकर दसों दिशाओं को उज्ज्वल करता हुआ नेत्र से निःसृत होने लगा। विधाता के आदेश से सोम पृथ्वी पर गिर पड़ा। ब्रह्मा ने उसे उठाकर मृगवाहन रथ पर स्थापित किया। शशवाहन रथ पर बैठकर सोमश्चन्द्र ने पृथ्वी का इक्कीस चक्कर लगाया। इस सन्दर्भ में चन्द्र का बहुत-सा रेतस्तेज पृथ्वी पर क्षरित होकर गिर पड़ा। वही ओषधि-रूप में परिणत हो समस्त जगत् का पोषण करता है—इसीलिए 'सोम ओषधीनां पतिः' वैदिक वाङ्मय में उल्लिखित है। काशीखण्ड के मत में चन्द्र ने ब्रह्म के तेज से पुनर्बार वंर्धित हो काशी में चन्द्रेश्वरनाम से अपने को अवस्थित किया। महादेव ने सन्तुष्ट होकर उनकी एक कला से अपना ललाट सजाया और महादेव की ही कृपा से एकराजत्व लाभ किया, जिसे चन्द्रलोक कहते हैं। भौतिक तथा आध्यात्मिक अर्थों में चन्द्रलोक तथा शिवललाट की चन्द्रकला दोनों ध्यातव्य हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापित सोम राजा ने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया। उस यज्ञ के अवसर पर किसी कारणवश चन्द्र के प्रति क्रुद्ध दक्ष ने प्रतिदिन एक-एक कला के क्षीण होने का शाप दिया। पन्द्रह दिनों तक कला-क्षय के बाद शिवललाट में स्थापित होने से वह कला बाद के पन्द्रह दिनों में वृद्धिगत होकर पूर्ण हो जाती है, जिसे पूर्णिमा कहते हैं।

कालिकापुराण के मतानुसार शापदाता दक्ष ने ब्रह्मा के आदेश से पन्द्रह कलाओं के क्षय के अनन्तर पुनर्बार क्रमशः बढ़ने का नियम कर दिया। यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी धारणा है कि दक्ष राजा के शाप से इन्हें राजयक्ष्मा हुआ और उसी के प्रतीकार के लिए इनके क्रोड में एक मृग बैठा है।

तैत्तिरीयसंहिता, पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड और महाभारत के शल्यपर्व में इस कथा का दूसरा सन्दर्भ है :

दक्ष प्रजापति की अश्विनी आदि सत्ताईस कन्याएँ थीं। सोमराजा से इनका विवाह हुआ। चन्द्रमा ने इन सत्ताईस पत्नियों में रोहिणी को अधिक प्रेम दिया। दक्ष ने चन्द्रमा से कहा कि तुम सभी पत्नियों को समान रूप से प्यार दो। किन्तु चन्द्र ने दक्ष प्रजापति के निर्देश की अवज्ञा की। इसपर दक्ष ने चन्द्रमा को पन्द्रह दिन क्षय और पन्द्रह दिन क्षयपूर्त्ति का शाप दिया।

एक दूसरे पुराण की कथा में अत्रि तथा अनसूया का पुत्र सोम नाम से प्रसिद्ध हुआ था। स्वायम्भुव मन्वन्तर में इसने जन्म लिया। अत्रि ने इसे दसों दिशाओं से उत्पन्न किया। स्कन्दपुराण, वायुपुराण, हरिवंशपुराण और विष्णुधर्मोत्तरपुराण में वर्णित कथा में चन्द्र की उत्पत्ति अत्रि की आँखों से हुई। दक्षप्रजापति की सत्ताईस कन्याएँ इन्हें पत्नी रूप में दी गईं। चन्द्र की इन सत्ताईस पत्नियों के नाम पर वे बाद में सत्ताईस नक्षत्रों को प्राप्त हुए। इन सत्ताईस पत्नियों में रोहिणी पर इसकी विशेष प्रीति थी। अन्य छब्बीस पत्नियों को चन्द्र का रोहिणी-अनुराग सहन नहीं हुआ। सभी ने दक्ष प्रजापति के पास उपालम्भ भेजा। दक्ष ने चन्द्र को अनेक विधि से समझाया। किन्तु दक्ष ने जब चन्द्र द्वारा अपने परामर्श की अवज्ञा का अनुभव किया, तब क्रोधाभिभूत होकर चन्द्र के क्षयग्रस्त होने का शाप दिया। क्षय से चन्द्र क्षीण होने लगा। उसका दुष्परिणाम पृथ्वी की ओषधियों पर पड़ा। इस स्थिति से ओषधियों की क्षीणता और दैनन्दिन शुष्कता से देव व्यथित हुए और दक्ष के पास चन्द्र की शापमुक्ति के लिए प्रार्थना की। दक्ष ने शाप-संशोधन करते हुए कहा—चन्द्र का पन्द्रह दिन क्षय तथा पन्द्रह दिन वृद्धि का होगा। परन्तु इसके लिए चन्द्र को सभी पत्नियों पर समान ध्यान रखना होगा और पश्चिम के सागरमुख में स्नान करना होगा। पश्चिमी सागरमुख में स्नान करने के उपरान्त चन्द्र को पूर्ववत् कान्ति प्राप्त हुई। इसीलिए पश्चिम के इस क्षेत्र को प्रभास-क्षेत्र कहते हैं।

स्कन्दपुराण में लिखा है—शशपानतीर्थ में देवों तथा दैत्यों ने अमृतपान किया। वहाँ कुछ विलम्ब से पहुँचने के कारण चन्द्रमा अमृत से वंचित रहे। वहाँ का तीर्थ लेने के लिए देवों ने चन्द्र को परामर्श दिया। एक खरगोश इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीर्थ का प्राशन कर रहा था। चन्द्र ने उस खरगोश को ही उदरस्थ कर लिया (अब भी वह इसके उदर में दीखता है)। इसी पुराण के मत में चन्द्र के तपस्या करने पर सभी ओषधियाँ उत्पन्न हुईं। इसके क्षय होने पर ओषधियाँ (वनस्पतियाँ) सूख गईं। इसने अमृत देकर अनाथ मारिषा की रक्षा की तथा सभी ओषधियों में जीवन दिया—इसीलिए चन्द्र को **'ओषधीनां पतिः'** कहा गया है।

इसी पुराण के मतानुसार चन्द्र ने गुरुपत्नी तारा के साथ कुव्यवहार किया, उसी शाप से उनके शरीर में कलंक लगा है।

पुराने ज़माने की वृद्धाओं का विश्वास है कि चन्द्र में एक बृहद् वटवृक्ष है। पति-पुत्रविहीन एक वृद्धा उसी वटवृक्ष के नीचे बैठी सूत कातती है। यही वृक्ष चन्द्र का कलंक जैसा दीखता है। सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्तशिरोमणि और बृहत्संहिता प्रभृति में उनका कोई उल्लेख नहीं मिलता। प्राचीन ज्योतिर्विद् वराहमिहिर, श्रीपति और ज्ञानराज प्रभृति चन्द्र को जलमय मानते हैं। वहाँ सूर्यकिरणों के प्रतिफलित होने से वह उज्ज्वल और प्रभावशाली लगता है। भास्कराचार्य भी चन्द्र को जलमय मानते हैं। उनके मत से चन्द्र एक ग्रह है, जिसका अपना आलोक नहीं। सूर्य का आलोक ही उसमें प्रतिफलित हो रात्रि का अन्धकार नष्ट करता है। उसमें अपना कोई तेज नहीं है।

गोलाध्याय के अनुसार, सूर्य की अपेक्षा चन्द्र की गति अधिक है। अति शीघ्र ही सूर्य समसूत्रपात अतिक्रम करके पूर्व दिक्-क्रम से उसकी किरण जिस देश में प्रतिफलित होती है, उसी अंश को हम उज्ज्वल प्रभावशाली देखते हैं। उसके जिस अंश पर सूर्य-किरण नहीं पड़ती, वही भाग आलोकहीन ताम्रवर्ण लगता है। दिन-दिन चन्द्र जितना दूर होता जाता, उतना ही उसमें सूर्यकिरण अधिक परिमाण में प्रतिफलित होती जाती है। अमावास्या के बाद शुक्ल द्वितीया को यह पश्चिम दिक् में उदित होता है। इस समय चन्द्रमण्डल के पश्चिमांश में सूर्यकिरण से युक्त होने पर इसका एक कलापरिमित भाग उज्ज्वल हो जाता है। क्रमशः दिन-दिन एक-एक कला बढ़कर पूर्णिमा को पूर्णचन्द्र बन करके प्रकाशित होता है, फिर कृष्णपक्ष आने से प्रतिदिन एक-एक कला घट करके सम्पूर्ण बिम्ब अदृश्य हो जाता है। शुक्लपक्ष की प्रतिपद् से पूर्णिमा-पर्यन्त चन्द्र स्वीय वृत्त के १८० अंश भ्रमण करता है। इस काल पर्यन्त सूर्य से पश्चिम में चन्द्र अवस्थित होता है। इसी प्रकार कृष्णपक्ष में भी चन्द्र अपने वृत्त के १८० अंश चलता और सूर्य से पूर्व दिक् में रहता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यसिद्धान्त के मत में चन्द्र और सूर्य के अन्तरानुसार इसकी शुक्लता बढ़ती है। अमावास्या तिथि को चन्द्र और सूर्य के समसूत्रपात में अवस्थित होने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। उस समय इसमें सूर्यकिरण के प्रतिफलित नहीं होने से चन्द्र का उज्ज्वलांश मिट जाता है।

सूर्य की भाँति चन्द्र के भी दिन, मास प्रभृति गिने जाते हैं, चान्द्र दिन ही तिथि नाम से प्रसिद्ध है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण के मत से चन्द्र जितने समय में राशिचक्र के १२ अंश भ्रमण करता है, वही एक चान्द्र दिन ठहरता है। अमावास्या को सूर्य और चन्द्र समसूत्र में रहते हैं। इसी समय से प्रथम चौदह दिन आरम्भ होता है। इसके प्रथम दिन का नाम प्रतिपद् है।

पुराण के अनेक स्थलों के वर्णन के अनुसार आपाततः बोध होता है कि चन्द्रमण्डल सूर्यमण्डल के ऊपर अवस्थित है। भागवत में कहा है कि 'सूर्यगभस्ति' अर्थात् सूर्यमण्डल से लक्ष योजन ऊँचे चन्द्र की अवस्थिति रहती है। इसे स्पष्ट रूप से यह कहा जाता है कि पृथ्वी के लक्ष योजन ऊपर चन्द्रमण्डल सूर्यकिरण से उज्ज्वल होने पर हमें दिखलाई देता है।

पौराणिक मत में समस्त ग्रहमण्डल का अधिष्ठाता एक-एक देवता है। उसमें चन्द्रमण्डल और उसके अधिष्ठाता देव दोनों का वर्णन है। पुराणों में चन्द्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में जो भिन्न-भिन्न कथाएँ आती हैं, वह चन्द्र-मण्डल की नहीं, उसके अधिष्ठाता देव की हैं।

अत्रिपुत्र सोम चन्द्र का ही नाम है। एक बार सोम अत्यन्त प्रतिष्ठित हुआ। राजसूय यज्ञ करके इसने त्रैलोक्य को जीत लिया। बृहस्पति की पत्नी तारा का उसने जबरदस्ती अपहरण कर लिया। उसके लिए 'तारकामय' नामक बहुत बड़ा युद्ध हुआ। ब्रह्मा ने बीच-बचाव करके तारा बृहस्पति को लौटा दी। इसी बीच उसे बुध नामक पुत्र उत्पन्न हो गया था, जो चन्द्रमा का ही पुत्र होने पर उसे ही दे दिया गया। भागवतपुराण के सिद्धान्त से यह अश्लील कथा नहीं, ऐतिहासिक युद्ध नहीं, अपितु तारकयुद्ध की प्रतीक कथा-मात्र है : **'सुरासुरविनाशोऽभूत् समरस्तारकामयः'**—अर्थात् इस तारकयुद्ध, नक्षत्र-घर्षण में देवों और दानवों का नाश हुआ। वस्तुतः इस प्रतीक-कथा में बृहस्पति, चन्द्रमा, तारा तथा बुध खगोलीय नक्षत्र हैं। बृहस्पति ग्रह की कक्षा में भ्रमण करनेवाला तारा-नामक उपग्रह चन्द्रमा के आकर्षण के द्वारा अपने मूलकक्ष से च्युत होकर चन्द्रकक्ष में आ गया। इस आकर्षण-विकर्षण के कारण आकाश-मण्डल में गड़बड़ी मच गई। पुनः सूर्यनीत प्रजापति—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक-साहित्य के विश्वकृत् के पुनः आकर्षण होने पर तारा अपने मूलकक्ष में बृहस्पति के पास आ गई। इस आकर्षण-विकर्षण-समर के कारण चन्द्रमा का एक भाग जो आकाशीय आग्नेय बाणों के कारण स्खलित हो गया, अर्थात् टूट गया और अलग होकर उसने बुध के रूप में जन्म ग्रहण किया।

अथर्ववेद में कहा है—**सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां पुनः प्रायच्छदहृणीयमानः।** इसे ही दूसरे प्रकार से कहा है—**यामाहुस्तारकैषा विकेशीति।** तथा—**तेन जायामन्वविन्दत् बृहस्पतिः सोमेन नीताम्।** ताण्ड्य-ब्राह्मण में—बुध को सोमायन सोमपुत्र कहा गया है।

प्राचीन काल में ही आर्यकथा के अनुसार, वैदिक आर्य ग्रहों का वेध पृष्ठभूमि में स्थित तारों के माध्यम से कर रहे थे। ग्रहों की स्वाभाविक गति के कारण वे वेध करते समय ग्रह दूरस्थ तारों से हट-बढ़ जाते थे। तब उन्हें ही ग्रह मान लिया जाता था। बृहस्पति का क्रान्तिवृत्त के समीपस्थ किसी चमकीले तारे के साथ वेध हुआ। बृहस्पति वर्ष भर में एक राशि अथवा ३० अंश पूर्व की ओर चलता है। वह कभी प्रकाशावली तारा के पास दीखता था और कभी अदृश्य हो जाता था। इस प्रकार एक अंश से अधिक दूरी पर जाने के कारण तारा के साथ बृहस्पति का समागम, अर्थात् समीपवर्त्तिता हो गई। साहित्यिक भाषा में बृहस्पति की पत्नी के रूप में तारा को सम्बोधन मिला। कालान्तर में बृहस्पति के, स्वस्थिति से कुछ दूर पूर्व जाने पर पश्चिम से पूर्व को आते समय चन्द्रमा से उस तारा की युति होने से यह आच्छादित हो गई। प्रतिदिन १३ अंशों की गतिवाले चन्द्र की गति से उनका घर्षण हुआ। इसके उपरान्त बृहस्पति से शीघ्र गतिमान् चन्द्र कृष्ण की द्वादशी या त्रयोदशी में बृहस्पति के आसन्न गतिशील हुआ (इसे ही युद्ध रूप में संकेतित किया गया)। त्रयोदशी के बाद चन्द्रमा क्षीणकान्ति हो गया। यह सूर्यसिद्धान्त के मत से अपसव्ययुद्ध है। तत्पश्चात् चन्द्रमा के अमान्त होने के कारण बुध के निकटवर्त्ती होना और बुध का चन्द्रोद्भव होना स्वाभाविक है, जो पौराणिक कथा की विशेषता है। ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में इस कथा का उपर्युक्त प्रतीक वैज्ञानिक है, जिसका सम्बन्ध विशेषतः ज्योतिर्विज्ञान से सम्बद्ध है। यों, इस पुराणकथा की ऐतिहासिकता भी है, जिसके अनुसार चन्द्रवंशीय राजाओं की प्रसूति के सम्बन्ध में स्पष्ट है—ब्रह्मा से अत्रि, अत्रि से चन्द्रमा, चन्द्रमा से बुध और बुध से पुरूरवा। किन्तु इस ऐतिहासिक पक्ष के अतिरिक्त खगोलविषयक सिद्धान्त का प्रतीकात्मक विवरण पुराणकथा में उपबृंहित है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फलित ज्योतिष के मत में चन्द्र वायुकोण का अधिपति, स्त्रीगृह, सत्त्वगुण, लवण का अधीश्वर, वैश्यजाति, यजुर्वेदाधिष्ठांता और सूर्य तथा बुध का मित्र है। कर्कटराशि चन्द्र का क्षेत्र माना गया है।

समस्त धरा को और सम्पूर्ण प्राणिवर्ग को अपनी शीतल किरणों से आह्लादित करनेवाले 'चदि आह्लादने' धातु से निष्पन्न चन्द्र की समरसता, विशिष्ट ऐतिहासिकता, साहित्यिक गरिमा एवं ज्योतिष्क महत्ता से धरित्री, वानस्पतिक ओषधियाँ, सोमलताएँ तथा कूजनरत पक्षियाँ आप्यायित हैं। रीतिकाल की चन्द्रमुखी आह्लादवर्धिनी है और वीरगाथा-काल के वक्रचन्द्र को कोई ग्रस नहीं सकता है। यह दूसरी बात है कि आज का साहित्यकार चन्द्रोपमा-प्राप्ति के लिए दूज का चाँद हो रहा है। किन्तु साहित्य, ज्योतिष विज्ञान और संस्कृति का यह देवता वैदिक युग से पुराण-युग तक सम्पूजित रहा है और अणुयुग में भी अभी तक अन्वेषियों के लिए रहस्य बना हुआ है यह भारत के कोटि-कोटि शिशुओं का चन्दा मामा।

●

क्षुद्राः सन्ति सहस्रशः स्वभरणव्यापारमात्रोद्यताः
स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमानेकः सतामग्रणीः ।
दुष्पूरोदरपूरणाय पिबति यः स्रोतः पतिं वाडवो
जीमूतस्तु निदाघतापितजगत्सन्तापविच्छित्तये ॥

—सुभाषितावली, २८५

केवल अपने पेट-पालन के व्यापार में लगे हुए क्षुद्र जन इस जगत् में हजारों हैं, किन्तु परार्थ ही जिनका स्वार्थ है, ऐसा सज्जन पुरुष कोई एक विरला ही होता है। जैसे वडवानल समुद्र का जल सोखता है; पर केवल अपने लिए। किन्तु, मेघ समुद्र का जल लेता है तपी हुई धरती की प्यास बुझाने के लिए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयतु बँगलादेशः

भारत-महाद्वीपे सर्वत्र हर्षोल्लासमये वातावरणे 'जयबँगला' जयघोषेण गगनमण्डलं गुंजायमानाः जनाः अत्यन्तम् आनन्दमनुभवन्तः भवानी इव इन्दिरा गान्धीं मन्यमानाः अन्तःकरणैः प्रफुल्लतामुपगम्य बहुप्रतीक्षितं नवोदितबँगलादेशस्य स्वागतार्थं समुत्सुकाः सन्ति।

भारतीयस्वातंत्र्यसंग्रामे पराजितानां ब्रिटिशसाम्राज्यवादिनां दुरभिसन्धिपूर्णं द्विराष्ट्रसिद्धान्तमवलम्ब्य निर्मितं पाकिस्तानदेशस्य पूर्वीयखण्डं बंगपाकिस्तानेति विख्यातमद्य तद्देशवासिनः देशभक्तिभाव-संवलिताः स्वदेश-स्वभाषा-स्वसंस्कृतिमधिकृत्य गौरवमनुभवन्तः जनतंत्र-समाजवाद-धर्मनिरपेक्षतासिद्धान्त-मनुसरन्तः शेखमुजीबुर्रहमानस्य नेतृत्वे संगठितमुक्तिसेना-बलेन भारतीय-जल-स्थल-वायुसैनिकानाम् प्रोत्साहनप्रदच्छायाम् प्राप्य दीर्घकालीन-स्वदेशमुक्तिव्रतम् गणप्रजातंत्रीय बँगलादेशनिर्माणसंकल्पं च सफलीभूतम् अनुभूय आनन्दोल्लाससंवलिताः सन्तः बँगलादेशभूमिं तुमुलजयघोषेण भजन्ते।

दिसम्बरमासस्य गतषष्ठे दिवसे बहुचर्चित-चिरप्रतीक्षित 'बँगलादेशः' भारतीयशासकैः मान्यतामधिगम्य सर्वत्र भूगोलेऽस्मिन् नवीनतमदेशरूपेण समाचारपत्रेषु इतिहासात्मकस्थानमनुभजन् स्वसत्ताजीवनाय युद्धक्षेत्रे एवं भूमिगगने च बलिदानपरीक्षायाम् उत्तीर्णताम् साकल्यं प्राप्तुकामः संयुक्तराष्ट्रसंघस्य सुरक्षापरिषदि विवादमये वातावरणे भारतीयप्रतिनिधिभिः रूसदेशस्य महनीयमहत्त्वशालिभिः प्रतिनिधिभिः च डिंडिमनिनादैः विश्वस्य तथाकथितबृहद्राष्ट्राणां मस्तके स्थानमुपलब्धवान्। पाकिस्तानरूपेण यदा भारतदेशः खण्डितः तस्मिन्नेव समये निश्चितमिदम् अभवत् यद् पाकिस्तानदेशस्य पूर्वखण्डे सार्धशतकोटिनिवासिनः न केवलम् आर्थिकदृष्ट्या, अपितु भाषा-संस्कृति-ऐतिहासिकपरम्परया सर्वदा सर्वथा उपेक्षिताः भविष्यन्ति। पंचनदप्रदेशीयाः पाकिस्ताननेतारः सदैव पूर्वखण्डनिवासिमुस्लिममतवादिभिः सह इस्लाममते सर्वे भ्रातृवृन्दाः 'ब्रदरहुड' इति उच्चारयन्तः अपि द्वेषपूर्ण-छलछद्मयुक्तशोषणसंयुक्तां नीतिं स्वीकुर्वन् शासने द्विधावृत्तिं कुर्वन्ति स्म।

त्रिभिः दिशाभिः भारतेन, दक्षिणदिशास्थित-बंगसागरेण धृतः पाकिस्तानदेशस्यायं पूर्वखण्डः विगतत्र्यधिकविंशतिवर्षैः दिनानुदिनमसन्तोषस्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विधाभावात्मकशासनज्वालायां प्रज्वलितः, पश्चिमपाकिस्तानखण्डेन भाषासंस्कृतिपरम्पराभिः भिन्नः प्रमत्तैः युद्धलोलुपैः चंगेजी-अत्याचारपरायणैः, नादिरशाहीडिक्टेटरवृत्तिभिः सैनिकप्रशासकैः अत्यन्तमेव कष्टमनुभवन् साम्राज्यवादिभिः स्वदेशं मोचयितुम् स्वाधीनताप्रापणाय सदा प्रयत्नमानः आसीत्।

पाकिस्तानदेशस्य वर्त्तमान-राष्ट्रपतिः 'याहिया खाँ' सप्तत्युत्तरैकोनविंशति-वर्षे, दिसम्बरमासे राष्ट्रियप्रादेशिक-एसेम्बल्याः निर्वाचनम् उग्रतरमान्दोलना-नन्तरम् कारितवान्। गतवर्षे दिसम्बरमासस्य सप्तम्यां तिथौ राष्ट्रिय-एसेम्बल्याः सप्तदशे दिने प्रादेशिक-एसेम्बल्याः निर्वाचनमभूत्। निर्वाचनेऽस्मिन् शेखमुजीबुर्रहमानस्य 'अवामीलीग' इति नाम्ना विख्यातराजनीतिकदलस्य सर्वथा अप्रत्याशितसाफल्यं संजातम्। राष्ट्रिय-एसेम्बल्याम् त्रयोदशाधिक-त्रिशतस्थानेषु सप्तषष्ट्यधिकएकशतस्थानम् शेखमहोदयेनाधिगतम्। जुल्फिकार भुट्टो महोदयस्य नेतृत्वे संचालित-पीपुल्स पार्टीति विख्यातदलस्य षडधिकांशीतिनेतारः एवं निर्वाचिताः। प्रादेशिक-एसेम्बल्यामपि सम्पूर्ण-त्रिंशत्स्थानेषु नवांशीत्यधिक-द्विशतस्थानम् अवामीलीग-राजनीतिकदलस्य महानुभावाः प्राप्य स्वविजयोद्घोषणाम् कृतवन्तः। निर्वाचनेऽस्मिन् ह्येतद् स्पष्टतया मुखरीभूतम् यद् पाकिस्तानिवासिनो जनाः सैनिकप्रशासनम् नैव वाञ्छन्ति, 'जमायते इस्लामी'-ति धार्मिक-राजनीतिकदलमपि न स्वीकुर्वन्ति।

निर्वाचनेऽस्मिन् शेखमुजीबुर्रहमानेन षट्सूत्रीयकार्यक्रममुद्घोष्य स्वचुनावघोषणापत्रम् प्रचारितम्। तत्रासीद्—(१) पाकिस्तानदेशे वयस्कमताधिकारमनुसृत्य प्रत्यक्षनिर्वाचनद्वारा संघीय-संसदीयशासनस्य स्थापना भवेत्। (२) केन्द्रीयशासने केवलं प्रतिरक्षाविभागस्य परराष्ट्रविभागस्य च उत्तरदायित्वं स्यात्। (३) संघराज्ये स्थितस्य प्रदेशस्य वित्तीया तथा मुद्रानीतिः स्वतन्त्ररूपेण निर्मिता भवेत्। (४) करारोपणस्याधिकारः केन्द्रशासनस्य स्थाने प्रादेशिकघटकशासकानाम् विचारमनुसरन् स्यात्। (५) संघराज्ये स्थितप्रदेशस्य वित्तीया तथा मुद्रानीतिः स्वतन्त्ररूपेण निर्मिता भवेत्। (४) करारोपणस्याधिकारः केन्द्रशासनस्य स्थाने प्रादेशिकघटक-शासकानाम् विचारमनुसरन् स्यात्। (५) संघराज्ये सम्मिलिताः सर्वे घटकाः स्वविदेशीव्यापारस्य वृत्तान्तम् पृथक्-पृथक् रक्षयन्तु। तथा च (६) षष्ठं सूत्रमासीत् पाकिस्तानदेशस्य पूर्वखण्डशासकाः केन्द्रशासनात् पृथक् अर्धसैनिकानां सन्धानं कुर्युः।

निर्वाचनानन्तरं पूर्वघोषणानुसारं निर्वाचितप्रतिनिधीनां हस्ते पाकिस्तानशासनस्य उत्तरदायित्वं दातव्यमासीत्। किन्तु, पाकिस्तानशासकाः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेशनल-एसेम्बल्या: प्रस्तावम् एवं न कर्त्तुकामा: सन् केवलं दिवसं यथा-तथा यापयन्ति स्म।

निर्वाचनस्य मासद्वयान्तरम् उद्घोषिते एकसप्तत्यधिक-एकोनविंशति-अब्दस्य मार्चमासस्य तृतीयदिवसे अपि संविधाननिर्मातृसभाया: यदा पाकिस्तानशासका: अधिवेशनं नैव आहूतवन्त: तथा स्वनिर्वाचनघोषणायाम् उद्घोषितम् षट्सूत्रं कार्यक्रममनुसृत्य शेखमुजीबुर्रहमानस्य अवामीलीग-दलनेतार: संविधाननिर्माणे संलग्ना:। पीपुल्सपार्टी-नेता जुल्फिकारअली भुट्टोमहोदय: स्वदलस्य निर्वाचितबलम् स्वल्पमनुभूय एसेम्बल्या बहिष्काराय उद्घोषणाम् कृतवान्। तेनेदमपि कथितम् यावत् पर्यन्तं पाकिस्तानदेशस्य पूर्वखण्डनिवासिन: स्वायत्ततताया: कृते अधिकारग्रहणाय बद्धपरिकरा: भविष्यन्ति तावत् पर्यन्तमहम् राष्ट्रिय-एसेम्बल्या अधिवेशने स्वदलप्रतिनिधिभिस्सह सम्मिलितो नैव भविष्यामि।

पाकिस्तानशासको जेनरलो याहिया खाँ सदैव धूर्तरूपेण कूटनीति-मनुसरन् अमरीकीसाम्राज्यवादिभि: प्रोत्साहित: चीनी-अधिनायकै: प्राप्तप्रेरणाबल: शेखमुजीबुर्रहमानस्य लोकप्रियतां उपेक्षयामास। एक-सप्तत्यधिक-एकोनविंश-ख्रीष्टाब्दस्य ऐतिहासिके मार्चमासे पूर्वपाकिस्तानखण्डे उग्रतरम् आन्दोलनमभूत्। ढाकानगरे सर्वत्र सैनिकानाम् सन्नद्धता। राज्यपालरूपेण स्थितस्य एस० एम० अहसनमहोदयस्य पदमुक्ति:, शेखमहोदयस्य उद्घोषणामनुसृत्य असहयोगात्मकम् आन्दोलनमभूत्। मासेऽस्मिन्नेव भुट्टोमहोदयेन सह राष्ट्रपति याहिया खाँ ढाकानगरे विविधविधाभि: वार्त्ताभि: अवामीलीगस्य नेतृवृन्दानाम् मुक्तिसैनिकानामान्दोलने प्रवृत्तानां च कालक्षेपाय समागत:। मार्चमासस्य षड्विंशतिदिवसे शेखमहोदय: कारायाम् पाकिस्तानशासकै: धृत्वा निक्षिप्त:। तथा च पाकिस्तानदेशस्य पूर्वखण्डात् निर्वासित:। तदनन्तरम् सर्वत्र बँगलादेशे अग्निदाह:, आन्दोलनस्य तीव्रता, भीषणात्याचारेण पीडितानाम् दिनानुदिनम् भारते पलायनम् शरणार्थीरूपेण। वृद्धानां, बालानां, रोगिणां, युवतीसमूहानाम् अत्याचारदुर्दशा वर्णनातीता। पाकिस्तानसैनिकानां कटके नग्ना: तरुणीजना: भोगशान्त्यै अवरोधिता:।

अप्रैलमासस्य दशमे दिवसे बँगलादेशे निर्वाचित-प्रतिनिधिभि: प्रभुसत्तासम्पन्नबँगलादेशगणराजस्य उद्घोषणा संजाता। सप्तदशे दिने बँगला-देशस्य स्थानापन्नो राष्ट्रपति: नजरुल इस्लाममहोदय: बँगलादेशगणराज्यस्य विधिवत् स्थापनाम् उद्घोषितवान्। सप्तविंशतितमे दिने ताजुद्दीनमहोदय: बँगलादेशस्य प्रधानमंत्री जात:।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बँगलादेशस्य मान्यताकृते तथा च अस्त्र-शस्त्राणां याचनाम् विकसिता-विकसित सकलदेशवासिनां कृते स्वकीयम् अपीलम् प्रेषितवान्। दिसम्बर-मासस्य तृतीयदिने भारतीयसीमाया उल्लंघनं सर्वत्र पाकिस्तानसैनिकैः विहितम्। पाकिस्तानवायुसैनिकाः पश्चिमस्यां दिशि पाकिस्तानसीमानिकटस्थ-भारतीय-वायुयानस्थानके आक्रमणं कृतम्। तदनन्तरं चतुर्थे दिने भारतीयसैनिकानां बँगलादेशे पाकिस्तानसैनिकानाम् पराभवाय मुक्तिवाहिन्याः साहाय्यप्रदानाय, स्वाधीनतासंग्रामे युद्धरतबंगदेशीय लोकतन्त्र-समाजवाद-धर्मनिरपेक्षतानीति-स्थापनाय संलग्ननिवासिनाम् अपवित्रसैनिकशासनात् मोक्षाय बँगलादेशे प्रवेशः।

शनैः शनैः भारतीय वायु-वारि-स्थलसैनिकानाम् वीरतापूर्णप्रयासेन धर्ममयेऽस्मिन् संग्रामे जैसोर-लालमुनीरहाट-कुमिल्ला-चटगाँव-चाँदपुर-भैरवबाजार-मैमनसिंह-हिल्ली-जमालपुर-गोविन्दगंज-नरसिंघडीह-घोरघटानां तथा ढाकायाः मुक्तिः संजाता। पूर्वराज्यपालः शरणागतः। सैनिकानां अधिकारिवृन्दाः स्वजीवनरक्षणाय भारतीयसैनिकानामं प्रचण्डप्रहारेण भीताः शरणागताः। अन्ते सैन्यपतिः रिजाय खाँ-महानुभावोऽपि शरणमापन्नः।

भारतीयेतिहासे कलंकरूपेण पाकिस्तानदेशस्य सृष्टिः स्थापना च संजाता आसीत्। किन्तु धन्या श्रीमती इन्दिरागान्धी तथा धन्यतमाः तस्यानुयायिनो राजनेतारः सैन्यशासकाः, युद्धे स्वबलिप्रदाने सदा समुत्सुका योद्धारो सैनिकाः, भारतवासिनो जनवर्गप्रमुखाश्च ये तेषां सर्वेषामेव सम्मिलित-जनशक्तिप्रभावात् वङ्गदेशः स्वाधीनतां लब्ध्वा भारतखण्डस्य मानचित्रे परिवर्त्तनं आनीतवान्। मंगलमस्तु देशस्यास्य।

जयतु भारतदेशः। जयतु बँगलादेशः ।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माघे सन्ति त्रयो गुणाः

नव-पलाश-पलाशवनं पुरः, स्फुट-पराग-परागतपंकजम् ॥
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत्, ससुरभिं सुरभिं सुमनोहरैः ॥

इति वसन्तागमनवर्णनपुरस्सरः लोकवेदव्यवहारप्राथम्येन पदलालित्यरचना प्रखरः काव्यगत-ओज-गुणवैशिष्ट्य-प्रदर्शनप्रमुखो गुर्जरदेशीयः ख्रिष्टीय सप्तमशताब्द्यां स्थितः संस्कृतसाहित्यांकाशसूर्यो माघकविः नितरां वन्दनीयः। वल्लाल-पण्डित-संकलिते 'भोजप्रबन्धे' जैन-मेरुतुङ्गाचार्य-प्रणीते 'प्रबन्ध-चिन्तामणौ 'तथा च श्रीप्रभाचन्द्रेण विरचिते 'प्रभावकचरिते', 'शिशुपालवध-महाकाव्य'-प्रणेतुर्माघस्य जीवनवृत्तम् विस्तरेणालोचितम्। श्रीमदानन्द-तपनाचार्यस्य 'ध्वन्यालोकेऽपि माघरचित-पद्यमुदाहृतम्। गुर्जरदेशोत्पन्नोऽयं कविः ग्रन्थान्ते स्ववंशवर्णने स्वपितामहस्य सुप्रभवदेवस्याश्रयभूतं तत्कालीनमेकं महीपतिं स्मरति। दत्तकसूनुर्माघकविः नितरां ब्राह्मणोचितचरित्रमवलम्बयन् समस्ताम् निजभूमिं वस्त्राभूषणादिसम्पत्तिं दरिद्रेषु याचकेषु सदैव वितरितवान् स्वयमेव दारिद्र्यव्रतमंगीकृतवान्। स्वभार्यां सम्बोधयन् माघकविः कथयति।

अर्था न सन्ति न च मुञ्चति मां दुराशा त्यागान्न संकुचति दुर्ललितं मनो मे ।
याच्ञा च लाघवकरी स्ववधे च पापं प्राणाः स्वयं व्रजत किं नु विलम्बितेन ॥

इयं लोकोक्तिः प्रसिद्धास्ति, कमपि याचकम् तस्य याचितवस्तु-प्रदानेऽसमर्थो माघः लज्जितः स्वमानसं धिग् धिगिति उक्त्वा सः स्वप्राणानसृजत्। तदनन्तरं माघपत्न्या सतीत्वं स्वीकृतम्।

संस्कृतसाहित्येतिहासे कालिदासोत्तरकवीनां मध्ये अर्थगुण-कवित्व-शक्तिप्रसिद्धिं विस्तारयन् भारविः पदलालित्यगुणान् विस्फोटयन् दण्डिकविः दार्शनिकरचनासौष्ठवतया सर्वानपि मोहयन् श्रीहर्षकविः कोमलकान्तपदावली-मालां गुम्फित्वा सर्वानपि रसज्ञान् सम्मोहयति। सर्वेप्येते नमस्याः कवयः ज्ञानाकाशे प्रभातमणिरिव निजकाव्यमपूर्वैः रचनाप्रबन्धैः चमत्कृतवन्तः किन्तु माघकविः सर्वविधकाव्यरचनाचातुर्ये प्रज्ञः सर्वानपि पूर्ववर्त्तिकवीनतिशेते। अस्य कीर्त्तिलता केवलमेकस्य शिशुपालवधवृक्षस्य विंशसर्गभूतशाखामश्रित्य पल्लविता पुष्पिता वा। उपमायाः, अर्थगौरववत्तायाः पदलालित्यस्य पदे-पदे अनुभूतिर्जायते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
माघकवेः कमनीयकाव्ये। पदलालित्ये माघकवेरस्य श्लोकोऽतिप्रसिद्धः—

मधुरया मधुबोधित-माधवी मधुसमृद्धि-समेधित-मेधया ॥
मधुकराङ्गनया मुहुरुन्मदध्वनिभृता निभृताक्षरमुज्जगे ॥

श्रुतिविषयकज्ञानेऽपि प्रशंसनीयोऽयं कविः। प्रत्यूषे यज्ञकर्म्मणि अग्निहोत्रवर्णने सामिधेनीऋचायाः वर्णनपुरस्सरं कविः वर्णयति—

प्रतिशरणमशीर्णज्योतिरग्न्याहितानां विधिविहितविरब्धैः सामिधेनीरधीत्य।
कृतगुरुदुरितौघध्वंसमध्वर्युवर्यैर्हुतमयमुपलीढे साधु सांनाय्यमग्निः ॥

शब्दशास्त्रपारंगतोऽयं माघकविः वैयाकरणः। विशेषतया वैदिकस्वर-मीमांसया प्रखरतया स्वमहत्तां प्रदर्शयति—

संशयाय वर्धते सरूपयोः दूरभिन्नफलयोः क्रियां प्रति।
शब्दशासनविदः समासयोर्विग्रहं व्यवससुः स्वरेण ते ॥

अन्यदपि श्लोकेऽस्मिन् स्वरमीमांसा समलक्षिता भवति—

तदीशितारं चेदीनाम् भवांस्तमवमंस्त मा।
निहन्त्यरीनेकपदे य उदात्तः स्वरानिव ॥

कविरयं सांख्यदर्शनं निदर्शयति श्रीकृष्णस्तुतिप्रसंगे प्रथमसर्गे—

युगान्तकालप्रतिसंहृतात्मनो जगन्ति यस्यां सविकासमासत।
तनौ ममुस्तत्र न कैटभद्विषस्तपोधनाभ्यागमसंभवा मुदः ॥

सर्गेऽस्मिन्नेव उपमायाः सौष्ठवमपि—

सितं सितिम्ना सुतरां मुनेर्वपुः विसारिभिः सौधमिवाथ लम्भयन्।
द्विजावलिव्याजनिशाकरांशुभिः शुचिस्मितां वाचमवोचदच्युतः ॥

बौद्धदर्शनेऽपि विचक्षणोऽयं कविकुलगुरुः—

सर्वकार्यशरीरेषु मुक्त्वाङ्गस्कन्धपञ्चकम्।
सौगतानामिवात्मान्यो नास्ति मन्त्रो महीभृताम् ॥

एवम् संस्कृतभारते महाभागयुतोऽयं महाकविमाघः श्रीमद्भागवतमहा-पुराणचर्चित कथामवलम्ब्य एकमेव महाकाव्यं विरचय्य पाण्डित्यं कवित्वं काव्याचार्यत्वं निजभावुकहार्दिकरसोद्रेकतया काव्यकलाकामिनीवल्लभपदवी-मारोहति। प्रसिद्धेयम् उक्तिः—

नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं कथयन्ति पण्डितप्रवराः 'तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः' तथा च अयम् उपमायां कालिदासः अर्थगौरवे भारविः पदलालित्ये दण्डी इत्येक एव माघकविः सर्वाम् पदवीमारोहति।

माघेन विघ्नितोत्साहा नोत्सहन्ते पदक्रमे ।
स्मरन्तो भारवेरेव कवयः कवयो यथा ॥

इति माघकविं सर्वार्थतया साहित्यालोचकैः वन्दनीयः प्रशंसनीयः नमस्ते।

माघे सन्ति त्रयो गुणाः

माघकवेः काव्यरचनाप्रक्रियायां उपमा, पदलालित्यमर्थ-गौरवमित्येते त्रयोऽपि गुणा एकत्रीभूता सन्ति । तद्यथा—

उपमा

विततपृथुवरत्रा तुल्यरूपैर्ममूखैः
कलश इव गरीमान् दिग्भिराकृष्यमाणः ।
कृतचपल-विहङ्गालापकोलाहलाभि-
र्जलनिधिजलमध्यादेष उत्तार्यतेऽर्कः ॥

अर्थगौरवम्

तस्य सांख्यपुरुषेण तुल्यतां
बिभ्रतः स्वयमकुर्वतः क्रियाः ।
कर्तृता तदुपलभ्यतोऽभवद्
वृत्तिभाजि करणे यथर्त्विजि ॥

पदलालित्यम्

मक्षुरया मधुबोधितमाधवी
मधुसमृद्धि — समेधितमेधया
मधुकराङ्गनया ध्वनिरुन्मद-
ध्वनिभृतानिभृताक्षर — मुज्जगे ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाधीनता तस्याः उपलब्धिश्च

स्वाधीनता इति शब्दस्य द्वितीयार्थपरकप्रयोगः स्वराज्यमस्ति। वैदिक-साहित्ये 'स्वराज्य' शब्दस्य बहुधा प्रयोगो विहितः। 'यतेमहि स्वराज्ये' इति प्रसिद्धवैदिकवाक्ये स्वराज्यसंघर्षे संघर्षशीलानां जनानां कृते महती प्रेरणा, बलञ्च आसीत्। यमाश्रित्य भारतीयस्वराज्यसंघर्षनेतारः स्वराज्यम् जन्मसिद्धाधिकारम् घोषितवन्तः।

देशस्य, देशनिवासिनां वा स्वराज्यसन्दर्भे समाजविकासेतिहासे तिस्रः अवस्था भवन्ति। अनधीनता, पराधीनता स्वाधीनता चेति । अनधीनता या दशा विद्यते सा तु उच्छृंखलता, संगठनविहीनता, संविधानप्रतिकूलाचरणशीलता अनुशासनविरहिता भवति। समाजस्य विकासेतिहासे प्रागैतिहासिके कालखण्डे अनधीनतायाः अवस्था आसीत्। तस्मिन् समये नासीत् कश्चित् शासननियमः न चासीत् कश्चिन्नियामकः। शनैः शनैः विभिन्नसमाजवर्गे भिन्न-भिन्नवंशीयानाम् वंशानुक्रमपूर्वकम् वित्तबलेन, जनबलेन, भूमिखण्डबलेन वा देशेषु देशखण्डेषु वा आधिपत्यमभूत्। क्रमशः सामन्तवादपरंपरा प्रचलिता। समाजः अनधीनतामुत्सृज्य पराधीनतापाशे निबद्धः।

पराधीनतादशायाम् तु सर्वमपि परस्य, अन्यस्य, स्वसमाजेतरस्य, परकीयदेशस्य इतरदेशनिवासिनः वा आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक-आधिपत्यम् अधीनता वा संजायते। किमपि, कथमपि कदापि च न भवति स्वकीयम्। सर्वमपि विकासद्वारमपावृतं भवति। भौगोलिक-ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्वरूपम् सर्वमपि खण्डितं विकासापविद्धं संजायते । जनाः स्वपन्तः अपि सुखं नानुभवन्ति।

विगताब्देषु भारतदेशः ब्रिटिशसाम्राज्यवादिभिः पराधीनतापाशे निबद्धः नितरां पीडामनुभूय स्वाधीनतासंघर्षे विजयी सन् स्वराज्यमुपलब्धवान्। सर्वश्रीगोखले, लोकमान्यतिलकः, लाजपतरायः, चितरंजनदासः, महात्मा गांधी, वीरसावरकरः, मदनमोहनमालवीयः, योगी अरविन्दः, मौलाना अबुलकलाम आजादः, देशरत्नराजेन्द्रप्रसादः, वल्लभभाईपटेलः, नेताजीसुभाषचन्द्रबोसः, पण्डितो जवाहरलालः, श्रीमती सरोजिनी नायडूदेवी, राममनोहरलोहिया, तथा च लालबहादुरशास्त्रिप्रभृतयो जननेतारः राजनीतिज्ञाननिपुणाः, भारतीयसंस्कृति-शौर्यदीपकाः स्वकीयराष्ट्रसंघर्षनीतिबलेन देशस्य स्वाधीनतायाः कृते जीवनपर्यन्तं संघर्षनेतृत्वं कृतवन्तः।

स्वाधीनतायाः अर्थो भवति स्वस्य, स्वंदेशस्य, स्वसंस्कृतेः, स्वभाषायाः स्वकीयवेशभूषायाः, पारम्परिकविचारस्य, दर्शनपरम्परायाः अधीनता। यावत्-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यन्तं ब्रिटिशसाम्राज्यवादिनामधिकारे निबद्धः भारतभूगोलखण्डः सांस्कृतिक-सामाजिकआर्थिकदृष्ट्या स्वाधीनतापूतः न भवति तावत् पर्यन्तम् च अविभाजितभारतदेशस्य रावीतटे स्वीकृता पूर्णस्वाधीनता प्रतिज्ञा परिपूर्णा न भवति तावत् पर्यन्तम् च भारतखण्डः पूर्णस्वाधीनः इति कथयितुं न पारयामो वयम्।

पाकिस्तानेति नाम्ना अमरीकीसाम्राज्यवादिनामधीनतायाम् विगत-पंचविंशतिवर्षात् बंगदेशः पराधीनत्वमनुभवति स्म। पराधीनतासंकटसागरमुत्तीर्य बँगलादेशः सम्प्रति स्वाधीनतासुखमनुभवति। अमरीकीशस्त्रबलसंनद्धैः पाकिस्तानसैनिकैः कृतात्याचारस्य अत्यन्तमेव कठोरतरं कष्टमनुभूय अपि सर्वस्वसमर्पणसंकल्पशक्तिमन्तः शेखमुजीबुर्रहमानस्य अवामीलीगसदस्याः मुक्तिवाहिन्याः युवजनाश्च स्वभूखण्डस्य स्वराज्यमुपलब्धवन्तः।

भारतदेशः आंग्लीयः मुक्तः। जनवरीमासस्य षड्विंशतितमे दिने प्रतिवर्षं प्रजातंत्रात्मकयैः संविधानस्वीकृतिसूचक गणतंत्रदिवसरूपेण भारतीयजनैः हर्षोल्लासप्रकटीकरणाय महोत्सवः आयोज्यते। स्वाधीनताप्राप्तिः, गणतंत्रीयसंविधाननिर्माणोद्घोषणा आर्थिकदृष्ट्या स्वदेशीयवाणिज्यव्यापार-व्यवस्था, भारतीयाधिकारिभिः संगठिता व्यापारस्यायातनिर्यातनीतिपरिचालना स्पष्टतया ग्रामेषु-ग्रामेषु, नगरेषु-नगरेषु देशस्य भास्वरविपणिषु आपणेषु परिदृश्यते। स्वाधीनतायाः उपलब्धिसूचकम् अभिमंत्रणाविभागीयाभियांत्रिकैः निर्मितम् रूसादिदेशसाहाय्योपब्धीभूतम् भिलाई-राउरकेला-दुर्गापुर-बोकारो-धुर्वारांचीनगर्याम् आयस्कनिर्मितविविधयंत्रनिर्माणतीर्थमद्य भारतस्य गौरव-मुद्घोषयति।

यो हि देशः सूच्यग्रमपि पराधीनताकाले निर्मातुमसमर्थः सोऽद्य धूमयानस्य सर्वसामग्रीः रेलपथनिर्माणाय आयस्कदण्डं, धूम्रयानस्य आकर्षणाय यांत्रिकम् इंजिनेतिख्यातम्, वायुयानस्य सर्वमपि यंत्रम् तुमुलयुद्धे अमेरिका-फ्रांस-चीन-आदि देशनिर्मित-युद्धास्त्रम् विखण्डयति चूर्णीकरोति च। सर्वत्र कृषिक्षेत्रे हरितक्रान्तिः, व्यापारक्षेत्रे, शिक्षाप्रसारक्षेत्रे, रणक्षेत्रे देशोऽयं स्वावलम्बीभूतः एशिया-यूरोप-अफ्रीका-अमेरिकादेशस्य सर्वदेशानाम् समकक्षताम् अग्रसरत्त्वं च भजते।

साम्प्रतिके भारतदेशे श्रीमत्याः इन्दिरागांधीदेव्याः नेतृत्वे देशोऽयम् प्रजातंत्र—समाजवाद—धर्मनिरपेक्षतानीतिमवलम्ब्य उत्तरोत्तरामुन्नतिमधिगम्य विश्वे सर्वोत्तमम् स्थानमधिगन्तुम् यतमानोऽस्ति।

स्वाधीनताप्राप्तिः तदुत्तरम् तस्याः उपलब्धिश्च सर्वत्र, सर्वजनेषु, सर्वप्रदेशेषु, सर्वक्षेत्रेषु परिलक्ष्यते। देशस्य कणे-कर्णे 'जयतु भारतदेशः' 'स्थिराः तिष्ठन्तु स्वाधीनतोपलब्धयः' इति स्वरं गुंजति—अनुगुंजति च।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार के सन्त साहित्यकार : श्रीलक्ष्मीनाथ गोसाईं

बिहार प्रदेश में सन्त साहित्यकारों की अनेक परम्पराएँ रही हैं। सगुण भक्तिधारा, निर्गुण भक्तिधारा और प्रेमगाथा-परम्परा के सूफी साधकों की साहित्यसर्जना की इस भूमि में नवीनतम साहित्यशोध से नये गवाक्ष खुल रहे हैं। साहित्यकारों के नये ग्रन्थ तो शोध में प्राप्त हुए ही हैं, उनकी अनेक काव्य-शृंखलाएँ भी खुल रही हैं।

निर्गुण भक्तिधारा के सन्त साहित्यकारों की परम्परा से पृथक् सगुणभक्ति के ऐसे काव्यसाधक भी हुए, जो भक्त के साथ-साथ योगाभ्यासी महापुरुषों में भी पांक्तेय रहे हैं।

अंगदेश और मिथिला-प्रदेश की साहित्य-साधना की उर्वर क्रोशशिला-भूमि में जहाँ वज्रयानी सिद्धों और नाथपन्थी साधुओं ने भक्तिपन्थ के अनेकानेक निर्माण के द्वारा अपनी छाप छोड़ी है, वहीं सगुण भक्तिधारा के सन्तों ने भी न केवल भक्ति के गीत ही गाये हैं, अपितु योगाभ्यास एवं यौगिक चमत्कार के विविध संस्मरणों से साहित्येतिहास-लेखकों और काव्य-विवेचकों के लिए प्रचुर सामग्री दी है। मिथिला के महात्मा साहेबरामदास के बाद सबसे बड़े योगाभ्यासी महापुरुष के रूप में लक्ष्मीनाथ गोसाईं की गणना हुई है। काव्य-कला की दृष्टि से विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, उमापति, महेश ठाकुर, गोविन्ददास, रामदास, लोंचनकवि, रमापति उपाध्याय, लालकवि, नन्दीपति, भानुनाथ झा, विष्णुपुरी आदि कवियों के बाद परमहंस लक्ष्मीनाथ को ही माना जाता है। लगभग ..५ हजार भजनों के गायक और गीतकार गोसाईं लक्ष्मीनाथ ने अपने गीतों, भजनों, पदों अथवा रचनाओं में लक्ष्मीपति लक्ष्मीनाथ गोसाईं, 'लक्षन' और 'लखन' आदि अपने नाम या अभिधान का उपयोग किया है।

सहरसा जिले के परसरमा नामक ग्राम में सन् १७८८ ई० में गोसाईंजी का जन्म हुआ था। अपने पिता श्रीबच्चा झा के एकमात्र पुत्र श्रीलक्ष्मीनाथ गोसाईं जन्मजात योगी कहे जाते हैं। यज्ञोपवीत-संस्कार के पूर्व अपने पिता की आज्ञा से लक्ष्मीनाथ जी जंगलों में गायें चराने जाते थे। वहीं विनोदार्थ हठयोग की क्रिया करते थे। यज्ञोपवीत होने के बाद महिनाथपुर के पं० श्रीरत झा द्वारा संचालित विद्यालय में, उनके सान्निध्य में उन्होंने विद्याध्ययन प्रारम्भ किया। वहाँ ज्योतिष तथा वेदान्त का अध्ययन करने के अनन्तर वे प्रसिद्ध वेदान्ती हो गये। विद्याध्ययन के पश्चात् परमहंसजी का विवाह दरभंगा के कहुआ ग्राम-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निवासी सुखदत्त झा की पुत्री के साथ हुआ। विवाह के दो वर्ष पश्चात् पत्नीश्री के गर्भवती होने पर लगभग सत्ताईस वर्ष की वय में घर से विरक्त होकर लक्ष्मीनाथ गोसाईंजी नेपाल की ओर चले गये। भगवान् पशुपतिनाथ के दर्शन से भी उनको तृप्ति नहीं मिली और वे योगसाधना में रत होकर सच्चे गुरु की खोज में यत्र-तत्र भ्रमण करने लगे।

अकस्मात् एक पहाड़ी गुफा में गोरखनाथ की शिव-परम्परा के गुरु अम्बानाथजी से उनकी भेंट हुई और नौ वर्षों तक इनसे योगसाधना की शिक्षा लेते रहे। गुरु अम्बानाथ से योगदीक्षा लेने के पश्चात् गोसाईंजी ने दरभंगा जिले के चरबल-रहुआ नामक ग्राम में एक पिप्पल वृक्ष के नीचे तपस्या प्रारम्भ की। लगातार नौ वर्षों तक तपस्या में लीन रहने के अनन्तर भगवद्-भक्ति की भावना के प्रचार के लिए पुनः संसार में लौट आये और बनगाँव में एक मन्दिर और एक कुटी बनाकर रहने लगे। बनगाँव के अतिरिक्त दरभंगा जिले के झंझारपुर स्टेशन से सात-आठ मील दूरी पर अवस्थित फटिकी ग्राम में इनकी एक कुटिया है। कहा जाता है कि फटिकी ग्राम के मन्दिर और कुटिया में ही लक्ष्मीनाथ गोसाईं का निर्वाण पचासी वर्ष की वय में, सन् १८७२ ई० में हुआ था। आज भी इस कुटिया में इनकी पूजा-सामग्री-पलंग और पादुका आदि सुरक्षित हैं। मिथिला-प्रदेश के दरभंगा और अंगदेश के सहरसा, भागलपुर आदि क्षेत्रों के तारागाँव, महिनाथपुर, लखनौर और परसरमा आदि स्थानों में गोसाईंजी ने मन्दिर बनवाये थे। टेकारी, हथुआ, बेतिया, मकसूदपुर, दरभंगा, नेपाल आदि राज्यों के महाराजाओं के यहाँ उनकी राजसभाओं के साहित्यिक दरबारों में सादर आमन्त्रित होकर ये जाते थे। इनके विशिष्ट भक्तों में परसरमा (सहरसा-अंगदेश) के बाबू अनधर सिंह, एकरपुरा (मुँगेर-अंगदेश) के रायबहादुर राजा लक्ष्मीप्रसादजी, बरियाही कोठी के प्रोप्राइटर मिस्टर जॉन तथा पचगछिया और गनमारपुर के राजा थे। स्वामी लक्ष्मीनाथजी अधिकतर बनगाँव, फटिकी और लखनऊ की कुटियों में रहते थे। फटिकी मन्दिर की कुटिया में रहकर ही इन्होंने अपने सभी ग्रन्थों की रचना की है।

भक्ति-गीतों के अतिरिक्त अन्य प्रकार के गीतों की रचना भी इन्होंने की है। विशेषतः अपने मन्दिरों में संगीतज्ञों द्वारा गाये जानेवाले नये-नये गीतों की रचना इन्होंने हजारों की संख्या में की है। इनके द्वारा रचित छोटी-बड़ी बारह पुस्तकों का पता अभी तक चला है, जिनमें श्रीरामगीतावली, श्रीकृष्णगीतावली, श्रीकृष्णरत्नावली, रामरत्नावली, अकारादि दोहावली, भाषा-तत्त्वबोध, गुरुचौबीसा, प्रश्नोत्तरमाला, योगरत्नावली, पंचरत्नावली आदि इनकी प्रमुख

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचनाएँ हैं। इन्होंने 'वाजसनेयोपनिषद्' का हिन्दी में छन्दोबद्ध अनुवाद भी किया था। इनमें से कुछ पुस्तकें प्रकाशित हैं। डॉ० ललितेश्वर झा ने 'गोस्वामी लक्ष्मीनाथ की पदावली' शीर्षक अपने ग्रन्थ में इनकी रचनाओं पर विस्तृत और गम्भीर अध्ययन प्रस्तुत किया है।

इनकी रचनाओं की भाषा मुख्यत: खड़ी बोली अवधी, ब्रजभाषा और अंगिका है। इन्होंने अपने कुछ गीतों में मैथिली बोली के भी प्रयोग किये हैं। इनके रचित फुटकर भक्तिपदों में चौमासा, तिरहुती, प्रभाती, विष्णुपद और महेशवाणी प्रमुख हैं।

गोस्वामी लक्ष्मीनाथजी की पदावली में डॉ० ललितेश्वर झा ने इनके दो गीत दिये हैं, जिनमें एक इस प्रकार है :

मोहन बिनु कौन चरैहें गैया।
नहिं बलदेव नहीं मनमोहन रोवहिं यशोदा मैया।
को अब भोरे बछरू खोलिहैं को जैहें गोठ उहैया।
एकसरि नन्द बबा क्या करिहैं दोसरो न काउ सहैया।
को अब कनक कटोरा भरि-भरि माखन और लुटैया।
को अब नाचि नाचि दधि खैहैं को चलिहैं अधपैया।
को अब गोप सखा संग खेलिहैं को ब्रज नागरि हँसैया।
को गोपियन के घी चोरैहैं को गहि मुरली बजैया।
को अब दूत उत तें घर ऐहैं बबा-बबा गोहरैया।
लक्ष्मीपति गोपाल लाल गुण सुमरि-सुमरि पछतैया॥

इस पद के 'चरैहैं', 'रोवहिं', 'भोरे', 'बछरू', 'गोठ', 'अधपैया', 'बजैया', 'हँसैया', गोहरैया' आदि प्रयोग भाषावैज्ञानिक अध्ययन-अनुसन्धान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

इनके एक दूसरे गीत की कुछ विशिष्ट पंक्तियाँ हैं :

लखि साओन केर आओन।
वृन्दावन तरुवर सम फूलल, लागए कुंजु सोहाओन॥
गुंजुए अलिगन ननन‌न ननन‌न हनहन, मत्त मधुर रस पाओन।
झन नन-झन नन झिल्ली झनकए, दादुर दरद बढ़ाओन॥

इस गीतांश पर मिथिला बोली और उसकी ध्वनि का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

इनकी एक दूसरी रचना द्रष्टव्य है :

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज रे ललना गति कहलो न जाय।
भरि दिन अएल छवि निकहि खेलाय॥
साँझ पड़ैत देलक तीन लगाय।
लै सुतलहि यशोदा माई गोद लगाय॥
चिहुँकि उठल छवि चौंकि डेराय।
कहिऔन्ह जै नन्द महर काँ बुझाय॥
कतहुँ सँ लावथु तेल पढ़ाय।
से सुनि प्रभुजी हँसु मुसुकाय॥
हम लेब चान खेलौना ए माय।
से सुन हरखित भेलि जसोदा माय॥
'लक्ष्मीपति' चरनन बलि आय।
भगति हेतु तोहें सहस्र रूप देखाय॥

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् द्वारा प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' के छठे खण्ड में इनकी एक रचना 'योगरत्न' की पाण्डुलिपि का विवरण दिया गया है। यह हस्तलेख भागलपुर-क्षेत्र के मिरजापुर ग्रामवासी श्रीहलधर झा के पास सुरक्षित है। इस ग्रन्थ में पत्र-संख्या ४ है और प्रतिपृष्ठ पंक्तियाँ २८ हैं। प्रारम्भ की पंक्तियाँ हैं :

सतसर वरसिज तात, बन्दो गुरुपद जोड़ि कर।
लक्ष्मीपति के तात, सदा परम आनन्द कर॥
या तें निर्मल गात, कर (न) चाहों भाषा कछुक।
भूत शुद्धि की ब़ात, यो करता कर मोक्ष तह॥

इस सोरठा के बाद ग्रन्थ के अन्त की पंक्तियों में, दोहे में 'योगरत्न' पुस्तक के बारे में इस प्रकार लिखा है :

लक्ष्मीपति भाषन कियो नृप टोडर के हेतु।
भूतशुद्धि समाधि लौ हठयोग की सेतु॥
नागवेद चौपाद इन्ह दीपपक्ष है छन्द।
रसयुगल दोहा सहित सोरठ नन्दा चन्द॥
नभसि मोल दिग जानिबो रस पुनि दुतिआ पूर्वनक्षत्र।
मास पक्ष तिथि कवि दिवस लीख्या पोथी पत्र॥
उदय वाण दिनकर, सहित सन शूनो भूपाल।
मदन अस्त नवनिधि प्रथम बीते संवत् काल॥
योगरत्न पोथी विमल लक्ष्मीपतिकृत होय।
पुष्पवाटिका भवन में द्विज प्रसाद लिपि होय॥
इति श्रीयोगरत्न पुस्तकं समाप्तम्॥ शुभमस्तु॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमहंसजी ने अपनी इस रचना में प्राचीन पद्धति से ग्रन्थ का रचनाकाल, रचनास्थान, प्रयुक्त दोहों, सोरठों और चौपाइयों की संख्या दे दी है।

इनसे सम्बन्धित अपने लेख में श्रीजनार्दन झा 'जनसीदन' ने लिखा है—'इनके बनाये भजन और प्रभाती गीत मिथिला के घर-घर में गाये जाते हैं।'

इस प्रकार, बोधीदास, ठक्कुर श्रीधर, ठक्कुर सूफीकर हरपति, भानुकवि गजसिंह, रुद्रधर, भिखारी मिश्र, यशोधर चतुर्भुज, मधुसूदन, जीवनाथ, श्यामसुन्दर, कंसनारायण, हरिदास और महेश ठाकुर, नन्दीपति, कान्हा रामदास प्रभृति तिरहुतिया कवियों की परम्परा के कवि और सन्त लक्ष्मीनाथ गोसाईं कवि, सन्त, महापुरुष, भक्त, सिद्धयोगी और वीतराग साधु आदि विभिन्न विभूषणों से विभूषित चरितनायक हैं। इनकी रचनाओं की शैली, भाषा-प्रयोग, यौगिक चमत्कार, वेदान्तदर्शन-निरूपण और समकालीन रससिद्ध कवियों के साथ इनके ग्रन्थों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए पर्याप्त आयास की आवश्यकता है। निःसन्देह भक्तशिरोमणि गोसाईं लक्ष्मीनाथ परमहंस पर अभी पर्याप्त शोध अपेक्षित है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्मा

सर्वतोमुखी प्रतिभा के मूर्तिमन्त प्रतीक, समस्त भूमण्डल के चूडान्त पण्डितों में पांक्तेय और अपनी चित्ताकर्षक तर्कावलियों से बड़े-बड़े नैयायिकों एवं धुरन्धर तार्किकों को भी सहज निरुत्तर कर देनेवाले, ब्रह्मतेजोदीप्त देदीप्यमान व्यक्तित्व की गरिमा से अपने समकालीन समग्र साक्षर संसार को विस्मय-विमुग्ध करने में प्रखर पण्डित थे महामहोपाध्याय रामावतार शर्माजी।

वाल्मीकि, वेदव्यास, कपिल, कणाद, याज्ञवल्क्य, जनक, पाणिनि और पतंजलि की इस विमल भूमि में जिन अद्भुत नर-रत्नों का अवतरण हुआ और जिनकी अलौकिक ज्योति से सम्पूर्ण भूमण्डल आलोकित हुआ, उनमें एक थे हमारे आज के विषय-सन्दर्भ के चरितनायक रामावतार शर्माजी।

रामकृष्ण, चैतन्य, विवेकानन्द, विद्यासागर, राममोहन राय, दयानन्द तिलक, गोखले, अरविन्द, रमण रवीन्द्रनाथ और गान्धी के समान, प्रतिभा-बल से निखिल मानवता की ही सिद्धि के लिए महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा ने अपने अविराम स्वाध्याय तथा अविचल ज्ञान-साधना द्वारा समाज के समक्ष सरस्वती की उपासना का अनुपम एवं अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया था। शर्माजी से सम्बद्ध एक लेखक का सही संस्मरण है—वे साहित्य में पण्डितराज जगन्नाथ, व्याकरण में बालशास्त्री, न्याय में गदाधर, वेदान्त में शंकराचार्य, धर्मशास्त्र में हारीत, ज्योतिष में भृगु मुनि, गद्य-लेखन में बाणभट्ट, पुरातत्त्वान्वेषण में भण्डारकर, सूक्तिकथन में शुकदेव, वाद-विवाद की तर्कपद्धति में जानसन, स्मरणशक्ति की प्रबलता में मैकाले, विज्ञानमहत्ता के प्रतिपादन में बेकन, कविता में कालिदास, पदार्थ-तत्त्वविवेचन में यास्क और दयानन्द, आत्माभिमान में तिलक, सामाजिक क्रान्ति में लूथर; मनस्विता में शिवाजी और दयालुता में गोखले के समान थे। महामहोपाध्याय शर्माजी के विलक्षण व्यक्तित्व में हृदय एवं मस्तिष्क के विविध गुणों का अतिभव्य सामंजस्य था। इनके समसामयिक विद्वान् डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल ने इनके सम्बन्ध में कहा था—'शर्माजी के साथ रहने पर जान पड़ता है कि सचमुच हम महर्षि, कपिल और कणाद के साथ हैं।' हिन्दी-साहित्य के मर्मज्ञ पण्डित आचार्य शिवपूजन सहाय ने इनके सम्बन्ध में लिखा है—'विद्यामहोदधि श्रीरामावतार शर्मा अपने समय के एक नक्षत्री पुरुष और उद्भट प्रतापी विद्वान्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थे। उन्होंने विद्वत्ता और बहुभाषाभिज्ञता के क्षेत्र में अपने युग को निश्छत्र-सा कर दिया था। वे जहाँ कहीं, जिस किसी विद्वन्मण्डली में रहे, सर्वत्र ही उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा का लोहा माना गया।' पटना विश्वविद्यालय के अवकाशप्राप्त दर्शनविभागाध्यक्ष भारतीय दर्शन के विख्यात व्याख्याकार आचार्य हरिमोहन झा ने पं० शर्माजी के सम्बन्ध में लिखा है—ङ्घअर्वाचीन काल में बिहार की रत्नप्रसविनी भूमि पर जिन चिन्तकों को कपिल-कणाद की परम्परा जीवित रखने का श्रेय प्राप्त है, उनमें स्वर्गीय महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्मा का नाम अग्रगण्य है। उनका 'परमार्थदर्शन' विद्वन्मण्डली में सातवाँ दर्शन माना जाता है। वे सर्वस्वतन्त्र विद्वान् थे। उनकी अगाध विद्वत्ता एवं स्वतन्त्र चिन्तनशक्ति का परिचय उनके 'परमार्थदर्शन' से मिलता है। प्रसंगानुसार वे शंकराचार्य प्रभृति दार्शनिकों की खबर लेने में भी नहीं चूकते। मायावाद की तो उन्होंने धज्जियाँ उड़ा दी हैं। सांख्य, वैशेषिक वेदान्त—जो भी प्रतिपक्षी रूप में उनके सामने आता है, उसकी खैर नहीं। वे सचमुच प्रतिपक्षिभयंकर थे।ङ्ग शर्माजी में जैसा ही प्रगाढ़ पाण्डित्य था, वैसी ही अद्भुत प्रतिभा भी थी। इसलिए वे जो भी बात कहते थे, चामत्कारिक ढंग से, जैसे सोने के ऊपर मीनाकारी का रंग चढ़ गया हो। उनकी इस निर्झरिणी लेखनी की तुलना उनकी धाराप्रवाह वाग्मिता से ही की जा सकती थी। अपनी मौलिक सूझ, अकाट्य युक्तियों एवं आश्चर्यजनक प्रत्युत्पन्न मति की बदौलत ने शास्त्रार्थ में किसी को टिकने नहीं देते थे। बड़े-बड़े शास्त्रार्थदिग्गजों को वे पानी-पानी करके छोड़ देते थे।

विचार में विलक्षणता के भाण्डार और आचार में सरलता के अवतार थे महामहोपाध्याय शर्माजी। उनमें देहाती किसान की-सी सादगी थी। व्यक्तित्व ईश्वरचन्द्र विद्यासागर-सा था। समाज की मूर्खतापूर्ण रूढ़ियों के कट्टर शत्रु तो वे थे ही, बाह्य आडम्बर और वेश-भूषा को कभी इन्होंने अधिक महत्त्व नहीं दिया। मामूली-सी धोती और मोटा-सा कुरता, यही उनकी पोशाक थी। बड़े-बड़े दार्शनिकों में जो एक सहज अलौकिकता अथवा असांसारिकता आ जाती है, उसका पर्याप्त अंश उनमें था। बहुभाषाविद् शर्माजी की रचनाएँ संस्कृत, पालि, हिन्दी, अँगरेजी और लैटिन भाषाओं में लिखी मिली हैं। उनकी हिन्दी की मुख्य रचनाएँ हैं—१. यूरोपीय दर्शन, २. हिन्दीभाषा-तत्त्व, ३. हिन्दी-व्याकरण, ४. हिन्दी-व्याकरण रचना की लेखन-पद्धति, ५. मुद्गरानन्दचरित, ६. पद्यमय महाभारत, ७. निबन्धावली तथा ८. अन्य विविध निबन्ध। इन रचनाओं का लेखनकाल ईसवी-सन् १९०५ से १९१३ है। रचनाएँ नागरी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रचारिणी सभा, कलकत्ता से प्रकाशित मासिक पत्र 'देवनागरी' तथा मासिक पत्र, 'सरस्वती', 'सुधा' और 'माधुरी' में प्रकाशित हुई थी। 'यूरोपीय दर्शन' और निबन्धावली का सम्पादित संस्करण बिहार सरकार के प्रसिद्ध शोध-संस्थान बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से प्रकाशित हुआ है। उनके संस्कृत तथा पालि के लिखे प्रमुख ग्रन्थ हैं—१. सदुक्तिकर्णामृत, २. प्रियदर्शिप्रशस्तय:, ३. परमार्थदर्शन, ४. वाङ्मयमहार्णव, ५. मुद्गरदूतम् ६. भारतीयमितिवृत्तम्, ७. काशी की मित्रगोष्ठी एवं सूक्तिसुधा नामक मासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित विविध गद्यपद्यात्मक रचनाएँ। इन ग्रन्थों की रचनाएँ ईसवी-सन् १९०३ से १९२५ के बीच की है। अँगरेजी-भाषा में इनकी १९०२ ईसवी में लिखित रचना है 'फिलासफी ऑफ पुराणाज़'। सन् १९०४ ई० में लिखा ग्रन्थ है—'चैप्टर्स फ्राम इण्डियन साइकोलॉजी', सन् १९०८ ई० का है 'लेक्चर्स ऑन वेदान्तिज्म', सन् १९०९ ई० का लिखा है—'ए थिसिस ऑन द एज ऑफ कालिदास' तथा सन् १९११ ई० में लिखित है—'इण्ट्रोडक्शन टु परमार्थ'।

इन कृतियों के अतिरिक्त रामस्मृति, सत्यदेवकथा, साहित्यरत्नावली, नाटक, जयप्रकाशचरितचम्पू आदि रचनाएँ भी यत्र-तत्र बिखरी पड़ी हैं। पुरातत्त्वप्रेमी रामावतार शर्माजी ने गवेषण द्वारा उड़िया-लिपि में तालपत्रों पर लिखित दो काव्यग्रन्थों—भारतामृतम् और नारायणशतकम् का उद्धार किया था। भारतामृतम् उन्नीस सर्गों में महाभारत की घटनाओं पर रचित महाकाव्य है। नारायणशतकम् बड़ौदा के गायकवाड़ सीरीज से प्रकाशित है। इन्होंने 'कामन्दकीय नीतिसार' का अँगरेजी में तथा रघुवंश का लैटिन में अनुवाद किया था।

महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्माजी छपरानिवासी पं० देवनारायण शर्मा के पुत्र थे। इनका जन्म सन् १८७७ ई० में हुआ था। इनकी जन्मशताब्दी में अब, मात्र दो वर्ष बचे हैं। बारह वर्ष की अवस्था तक इन्होंने घर पर ही अपने पिता से शिक्षा पाई थी। संस्कृत की प्रथमा परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्णता प्राप्त करने के पश्चात् काशी के क्वीन्स कॉलेज में ये पढ़ने लगे, उस समय के प्रख्यात पण्डित महामहोपाध्याय पं० गंगाधर शास्त्री से पढ़ने लगे तथा कुशाग्रबुद्धि होने के कारण उनके स्नेहभाजन हो गए। इन्होंने सन् १८९० ई० में मध्यमा परीक्षा प्रथम श्रेणी में तथा सन् १८९३ ई० में कलकत्ता संस्कृत कालेज से काव्यतीर्थ और काशी से व्याकरण में आचार्य परीक्षा प्रथम श्रेणी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में पास की। सन् १८९५ ई० में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में इण्ट्रेंस, सन् १८९.८ ई० में पंजाब विश्वविद्यालय से एफ० ए०, सन् १९०० ई० में कलकत्ता विश्वविद्यालय से संस्कृत में ऑनर्स के साथ बी० ए० और सन् १९०१ ई० में एम० ए० परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में सर्वप्रथम होकर उत्तीर्ण कीं। कहा जाता है कि एम० ए० परीक्षा की उत्तर-पुस्तिका में इन्होंने ऋग्वेद से दो-सौ उद्धरण दिए थे। सन् १९०१ से सन् १९०५ ई० तक शर्माजी बनारस के सेण्ट्रल हिन्दू कॉलेज में संस्कृत के प्राध्यापक रहे और सन् १९०६ ई० से पटना कॉलेज में प्रोफेसर नियुक्त हुए। सन् १९०७ से सन् १९०८ ई० तक तथा सन् १९१९ से सन् १९२२ ई० तक क्रमशः कलकत्ता विश्वविद्यालय और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में व्याख्याता तथा प्रिन्सिपल के पद पर रहे। पी-एच्० डी० के तो सर्वमान्य परीक्षक थे ही, अनेक विश्वविद्यालयों ने इन्हें व्याख्याता और प्रश्नकर्त्ता बनाकर अपने को सम्मानित किया था।*

*यह आलेख खण्डित रूप में ही प्राप्त हुआ है। —सम्पा०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार के एक साहित्यिक स्तम्भ : श्रीमथुराप्रसाद दीक्षित

बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशनों में आप जब कभी सम्मिलित हुए हैं, आपने देखा है एक ऐसे व्यक्तित्व को, जो सीधे-सादे खादी वेश-भूषा में; सम्मेलन के विशाल वटवृक्ष को देख-देखकर प्रसन्न होता है और जिसके सामने बिहार प्रान्त के हिन्दी-आन्दोलन का पूरा इतिहास सजग हो उठता है। हिन्दी-साहित्य को और बिहार की नागरी हिन्दी को फलते-फूलते देखकर, तरुण पीढ़ी के उदीयमान साहित्यिकों की कृतियों को दाद देते हुए जो अपने आशीर्वाद से प्रोत्साहित करता है और भूतकाल पर दृष्टि डालते ही जिसकी आँखें सजल हो जाती हैं और अतीत के उन अध्यायों में ढूँढने लग जाता है अपने उन सहयोगियों को, जिनके साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर बिहार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की न केवल स्थापना ही की थी, अपितु बिहार में हिन्दी-प्रतिष्ठा की नींव भी जिसने डाली थी। आप जानते हैं, वह कौन है बिहार हिन्दी-आन्दोलन का सजग प्रहरी, जिसकी लम्बी भुजा, उन्नत ललाट, चौड़ी छाती और भारतीय प्राचीनता को स्मरण दिलानेवाली आर्यमूर्त्ति! वे हैं बिहार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सस्थापकों में प्रमुख पं० श्रीमथुराप्रसाद दीक्षित। देखने से मालूम पड़ता है, जो हिन्दी के विरोध करनेवालों को पंजा मिलाते ही पराजित कर देगा।

मैंने पहली बार जब देखा दीक्षितजी को, तो डर-सा गया। मुझे प्रतीत होने लगा कि किसान-सभा अथवा किसी राजनीतिक पार्टी का यह आदमी साहित्य-सम्मेलन के मंच पर गलती से तो नहीं आ गया है। हिन्दी जब विजय-यात्रा के लिए निकली होगी, सबसे पहले अपने विशाल मस्तक पर हिन्दी की कुमकुम बिन्दी लगाये और विजय-यात्रा के लिए निकले साहित्य-महारथियों का सारथी अथवा सेनापति यही रहा होगा। देखने में कठोर, किन्तु सहृदयता और अन्त:कोमलत्व की प्रतिमूर्त्ति। श्रीदीक्षितजी का व्यक्तित्व स्वयं साक्षात् बिहार का व्यक्तित्व है। एक साधारण किसान-सी वेशभूषा, मगध, वैशाली और कुँवरसिंह के भोजपुर की साक्षात् प्रकृति यदि एक साथ देखनी हो तो श्रीदीक्षितजी को खड़ा कर दीजिए। हिन्दी को आज राष्ट्रभाषा के पद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पहुँचने में जितनी लम्बी यात्रा करनी पड़ी है, बीच-बीच में जो द्वन्द्व सहना पड़ा है अपनों से, परायों से—दीक्षितजी उसके साक्षी हैं। आज भले ही हिन्दी के साहित्यिक कहे जानेवाले गुलछर्रें उड़ा लें या हिन्दी के उन्नायकों के पाँच सवारों में शरीक हो लें, जहाँ भी मन चाहे हिन्दी के नेता के रूप में अपनी टोपी ऊँची किये अथवा अपने चश्मे को सम्भाले दीख पड़ें; किन्तु दीक्षितजी उन व्यक्तियों में हैं, जिसने हिन्दी-आन्दोलन में भारतीय राष्ट्रीयता की रीढ़ हिन्दी को समझा था और आन्दोलन में सम्मिलित हुआ था। जिसने स्वराज्य-प्रश्न और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रश्न की समन्वय-भूमि पर ही आत्मोत्सर्ग किया था। जिसने साहित्य-देवता को राष्ट्रमाता के मन्दिर में प्रतिष्ठित किया, जिसने न तो विदेशी शासक और न देशी शासक को ही खुश करने के लिए कुछ लिखा था।

दीक्षितजी का जन्म सारन (छपरा) जिले के पिरारी गाँव में माघ मास में, सन् १८९५ ई० में हुआ। इनकी प्रवृत्ति प्रारम्भ से ही देशसेवा, शिक्षा-प्रसार और साहित्य-सर्जना की ओर रही है। नवयुवक समिति (मुजफ्फरपुर) और दुर्गा हाइ स्कूल (शाहपुर, सुतिहार, सारन) की संस्थापना आपने ही की थी।

सम्पादक के रूप में :

श्रीदीक्षितजी ने मुजफ्फरपुर से प्रकाशित 'नवयुवक' पटना से प्रकाशित 'तरुण भारत' और 'देश' का वर्षों तक सम्पादन किया था। आपके सम्पादकत्व में निकलनेवाले पत्रों में 'सदा आगे बढ़नेवाले', 'नये उगते पौधे के रूप में" अनेक नव साहित्यिकों को प्रोत्साहन मिलता था। आपने कभी ब्रिटिश शासन की समालोचना में अपनी लेखनी नहीं रोकी। वह युग था, जब भारतीय राष्ट्रीयता का शंखनाद कोटि-कोटि जनों तक पहुँचाने के लिए हिन्दी ही माध्यम थी। आपके द्वारा सम्पादित 'तरुण भारत' के अग्रलेखों ने वस्तुतः बिहार के तरुणों में क्रान्ति का बीज बोया। आपकी भाषा चुस्त, अलंकृत और आचार्यत्व के कोटि की होती थी।

जीवनी और संस्मरण लिखने में आप कुशल चित्रकार हैं। सेवा-क्षेत्र (विजय प्रेस, मुजफ्फरपुर), बाबू कुँवरसिंह (भारती प्रेस, कलकत्ता), नादिरशाह (बर्मन कम्पनी, कलकत्ता) गोविन्द-गीतावली (सम्पादित : पुस्तक भण्डार, लहेरियासराय), वैशाली और सर गणेशदत्त (अभिनव प्रकाशन, पटना), चाणक्य (श्रीअजन्ता प्रेस लि०, पटना) आदि आपके द्वारा रचित और सम्पादित पुस्तकें इसके सजीव उदाहरण हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप एक अनुसन्धायक और अच्छे समालोचक भी हैं। सन् १९२६ ई० से १९३३ ई० तक दरभंगानरेश श्रीरामेश्वर सिंह के साहित्य-सचिव और आप्त-सचिव के पद पर भी आप अनेक वर्षों तक थे। आपके द्वारा रचित बाबू कुँवर सिंह की जीवनी सम्भवत: बिहार का प्रथम जीवनी-साहित्य है।

आप जहाँ साहित्यिक, सम्पादक, समालोचक और देशसेवक हैं, वहीं एक सफल शासक भी। आपने प्रचार और आत्मज्ञापन से दूर रहकर साहित्य की मूक साधना में ही अपने को लगा रखा है। आप यद्यपि साहित्य के पदों और अधिकारों से दूर रहे हैं, तथापि आपका व्यक्तित्व, आपकी मिलनसारिता तथा संगठनप्रियता का स्वभाव इतना कोमल और आकर्षक रहा है कि साहित्य-सम्मेलन के, जब जिस अधिकारी को आपने परामर्श दिया है, उसे उसके मन्त्री अथवा सभापति ने शिरोधार्य किया है।

हिन्दी-सेवा को ही अपने जीवन का चरम लक्ष्य मानकर आपने अपना वर्त्तमान निवास प्रान्त के पश्चात्पद अहिन्दी क्षेत्र पूर्णिया जिले में रखा है। हम अपने इस साहित्यमहारथी को एक सफल शासक और साहित्यिक के रूप में देखने की कामना रखते हैं। भगवान् इन्हें चिरायु प्रदान करें।*

●

*शास्त्रीजी ने जिस व्यक्तित्व की चर्चा जिस कालसीमा में और जिस रूप में की है, उसे यथावत् रहने दिया गया है। —सम्पा०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलम का जादूगर–चल बसा!

मुझे सन् १९३५-३६ ई० के वे दिन अच्छी तरह याद हैं, जब मैं बिहटा से किसानों के मसीहा स्वामी सहजानन्द सरस्वतीजी का पत्रवाहक बनकर पटना के कदमकुआँ स्थित तिराहेवाले मकान के जनता प्रेस में आकर ठहरा करता था।

साप्ताहिक 'जनता' के कार्यालय में ही मुझे श्रीरामवृक्ष 'बेनीपुरी' का प्रथम सान्निध्य मिला था। जनता-कार्यालय में ही श्रीबेनीपुरीजी को 'केन्द्र' बनाकर, कलम के उस जादूगर के इर्द-गिर्द मैंने सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, योगेन्द्र शुक्ल, किशोरीप्रसन्न सिंह, कार्यानन्द शर्मा, शीलभद्र याजी, अवधेश्वर प्रसाद सिंह, कामरेड बसावन सिंह, शत्रुघ्नशरण सिंह, पं० धनराज शर्मा, हरगोविन्द मिश्र, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, रामायणशरण सिंह और श्रीअम्बिकाकान्त शरण सिंह प्रभृति अनेक देशभक्तों, क्रान्तिकारियों तथा साहित्यकारों के दर्शन किये थे। बिहार प्रदेश के उस युग के लाखों युवकों की आँखें साप्ताहिक 'जनता' के सम्पादकीय अग्रलेखों एवं उसके विभिन्न प्रेरणादायक शीर्षकों की ओर लगी रहती थीं।

मुझे सन् १९३५ ई० के जनवरी मास की छब्बीस तारीख स्मरण है, जिस दिन जनतन्त्र-दिवस मनाया गया था। पटना के कोने-कोने में अँगरेजी फौज, घुड़सवार बलूची तथा तनी बन्दूकें चारों ओर एक भीषण आतंक में जनता को डाले हुए थीं। पच्चीस जनवरी की आधी रात के बाद ही पुलिसराज और उसके आतंक की प्रेतछाया में पटना की शब्दहीन सड़कें, गलियों में कानाफूसी और सारा वातावरण गुमसुम था। प्रातःकाल से ही साप्ताहिक जनता का कार्यालय बन्द था। भोजन के व्यवस्थापक अनुपस्थित थे। स्वामीजी के आश्रम का मैं पत्रवाहक छात्र; एक अपरिचित व्यक्ति ने प्रातःकाल ही मुझे चूड़ा-दही खिला दिया और पटना स्टेशन की सड़क पकड़वा दी। रात को मैंने देखा था बेनीपुरीजी को बन्द कमरे में अपने बीस-पच्चीस साथियों के साथ उत्साहवर्द्धक बातें करते हुए और सुना था उनसे 'देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।'

स्टेशन पहुँच भी नहीं पाया था कि पता चला, पटना नगर में जनतन्त्र-दिवस मनाने, तिरंगे झण्डे को फहराने और 'इनक्लाब जिन्दाबाद' तथा 'वन्दे मातरम्' के नारों से आकाश को गुँजानेवालों का नेतृत्व श्रीबेनीपुरीजी के हाथों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में है। नगर के सभी मुख्य स्थानों में अँगरेजी हुकूमत की फौज के देखते-देखते प्रातः ९ बजे के पहले कौमी तिरंगा फहराने लगा। चारों दिशाओं से आनेवाले जुलूसों की समा बँध गई। जयकारों, कौमी नारों और वन्देमातरम् गीतों का नेतृत्व करते हुए श्रीबेनीपुरी जेल के सीकचों में बन्द कर दिये गये। मैं इन प्रेरणावर्द्धक समाचारों के साथ बिहटा-आश्रम लौट गया।

सन् बयालीस के अगस्त-आन्दोलन के पहले रामगढ़ में काँगरेस का महाधिवेशन—'करो या मरो' आन्दोलन से कई साल पहले द्वितीय महायुद्ध चल रहा था। मौलाना अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में काँगरेस-अधिवेशन के उस माहौल में कुछ दूरी पर काँगरेस-विद्रोही सुभाषचन्द्र बोस का 'समझौता विरोधी कान्फ्रेंस' और काँगरेस-कैम्प में ही पण्डित नेहरू के नेतृत्व को चुनौती देनेवाले एम० एन० राय के अन्तरराष्ट्रीय क्रान्ति के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर भारतीय क्रान्ति को नई दिशा देनेवाली चिनगारियाँ। इसके साथ-साथ द्वितीय महायुद्ध में हिटलर के विरोध में—धुरी राष्ट्रों के विरोध में, मित्रराष्ट्रों के कैम्प में रूसी साम्यवाद के सम्मिलन से रूसी नीति के साथ चलनेवाली भारतीय साम्यवादी साथियों का 'जनयुद्ध' का नारा—भारतीय राजनीति को चौराहे के एक विचित्र व्यामोह में लाकर खड़ा कर दिया था। उस समय राष्ट्रपुरुष श्रीबेनीपुरी की लौह-लेखनी ने साथी जयप्रकाश नारायण को एक मन्त्र दिया, जिसमें सुभाष बाबू का राष्ट्रप्रेम, साम्यवादियों की क्रान्ति, एम. एन. राय की चुनौतियाँ और गान्धीवादी नेतृत्व की सविनय अवज्ञा की सम्मिलित शक्ति थी—बेनीपुरीजी का वह देशव्यापी मन्त्र था—'हम नाहिं देंगे एक पाई-एक भाई।'

पटना के साप्ताहिक 'जनता' में बेनीपुरीजी की लेखनी से निर्झरित यह वाणी तो बाद में गान्धीजी का आशीर्वाद पाकर सकल राष्ट्र की वाणी में व्याप्त हो गई और एक बार अँगरेजी हुकूमत हिल गई। बेनीपुरीजी के उसी मन्त्र का प्रभाव था कि सन् बयालीस में उस मन्त्रबल को पाकर गान्धीजी के 'करो या मरो' के नारों से सशक्त भारतीय जनबल ने 'अँगरेजो, भारत छोड़ो' का उद्घोष किया। यह है उस कलम के ज़ादूगर का भारत की राष्ट्रीयता की स्थापना-संवर्धना में योगदान, जिसे देश नहीं भूल सकता है और इतिहास तो भूलेगा ही नहीं।

कौन जानता था कि मुजफ्फरपुर जिले के कटरा थाना के बेनीपुर ग्राम के एक अति साधारण परिवार में श्रीयदुनन्दन सिंह के पौत्र श्रीफूलवन्त सिंह के पुत्र श्रीरामवृक्ष सन् १९०२ ई० में जन्म ग्रहण कर बचपन में ही माता-पिता के आकस्मिक निधन के कारण माता-पिता के लाड-प्यार से वंचित हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने से अपने ननिहाल-वंशीपचरा में लालित-पालित होंगे। पन्द्रह वर्ष की उम्र में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की विशारद परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अट्ठारह वर्ष की जवानी में ही सर्वस्व त्याग कर सन् १९२० ई० के असहयोग-आन्दोलन में कूद पड़ेंगे। एक अति साधारण परिवार में विभिन्न संकटों से घिरी स्थितियों में भी भारतीय संस्कारों से संस्कृत इस महापुरुष में राष्ट्रीयता कूट-कूटकर भरी हुई थी।

राष्ट्रीयता, समाजवाद, साहित्य और कला के एकत्र सम्मिश्रण का नाम है रामवृक्ष 'बेनीपुरी'। जिसने सात साप्ताहिक, दस मासिक, एक दैनिक और दो हस्तलिखित (जेल में) पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। सन् १९२५-१९५३ ई० तक ८० से अधिक ग्रन्थ लिखे, १२ बार जेलयात्राएँ कीं और दर्जनों साहित्यिक संस्थाओं के संस्थापक तथा सभापति रहे।

जमीन्दारी-उन्मूलन का सबसे पहले नारा देनेवाले श्रीबेनीपुरीजी बिहार-प्रान्तीय किसान-सभा के सभापति थे और भारतीय किसान-सभा के उपसभापति। बिहार सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापकों में श्रीबेनीपुरी (सन् १९३१ ई० में) प्रमुख थे और अखिलभारतीय काँगरेस सोशलिस्ट पार्टी की पहली कार्यसमिति के सदस्य थे। बिहार सोशलिस्ट पार्टी के पार्लियामेण्ट्री बोर्ड के अध्यक्ष श्रीबेनीपुरी सन् १९२० से सन् १९४६ ई० तक काँगरेस में थे तथा पटना शहर काँगरेस-कमेटी के सभापति भी रह चुके थे। सन् १९२९ ई० में बिहार काँगरेस के मुँगेर-अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव इन्होंने ही पेश किया था।

बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के संस्थापन में सन् १९१९ ई० में इन्होंने सक्रिय भाग लिया था और सन् १९२९ ई० में अखिलभारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रचारमन्त्री के रूप में तत्कालीन सम्मेलन-सभापति श्रीगणेशशंकर विद्यार्थी को सहयोग दिया था।

इन सभी राजनीतिक, साहित्यिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और जनजागरण के अनेकविध क्रियाकलाप, के अतिरिक्त विभिन्न प्रतिष्ठानों तथा समायोजनों में संलग्न रहकर भी इन्हें कभी अभिमान ने न छुआ।

अट्टहास, उल्लास, बालसुलभ चापल्य, मनोरंजन और मनोविनोद की प्रतिमूर्त्ति थे बेनीपुरीजी। सभी क्षेत्रों में, जीवन के सभी अंगों में जन्मजात विद्रोही साहित्यकार की सबसे बड़ी सम्पत्ति थी उनकी कलाप्रियता, उनका कला-पारखीपन। वे स्वयं कहते हैं :

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अपने पैरों का वजन और वकत मुझे मालूम है, लेकिन किसी के पदचिह्न-मात्र पर चलना मैं कलाकार की मौत मानता हूँ।'

निस्सन्देह, श्रीबेनीपुरी लीकपन्थी नहीं थे। उन्होंने खुद लीक बनाई। वे साहित्य के क्षेत्र में स्वभाव से नाटककार थे और राजनीतिक क्षेत्र में राष्ट्रीयतावादी समाजवाद के उन्नायक। वे स्वयं लिखते हैं :

'बचपन में ही मेरा झुकाव नाटक-रचना की ओर हुआ था। हाइ स्कूल के चौथे या तीसरे ही वर्ग में मैंने एक नाटक लिखा था। लेकिन बाद में मैं कवि बन गया, तब लेखक हुआ, फिर पत्रकार बनकर रह गया। किन्तु हजारीबाग सेण्ट्रल ज़ेल के निश्चिन्त एकान्त में जब एक दिन बादल घिर आये कि अचानक मेरा नाटककार जाग उठा।

'लोकसंग्रह', 'युवक', 'योगी' और 'जनता' के अनेकानेक स्तम्भों में श्रीबेनीपुरीजी के राष्ट्रीयतावादी समाजवाद के सन्देश, उनकी सधी लेखनी से समाजवादी क्रान्ति की प्रेरणाएँ तथा भारतीय राष्ट्र की अनेकानेक करुण चीत्कार गाथाएँ पढ़ने को मिल सकती हैं। 'पतितों के देश में' बेनीपुरी ने मूरतें माटी की गढ़ीं। बच्चों को बगुलाभगत से सावधान रहने की चेतावनी देनेवाले का मतवालापन भी कम नहीं उभरा। खण्डवा के 'कर्मवीर' से लेकर वाराणसी के 'संघर्ष' तक में अपनी क्रियात्मिका शक्ति का परिचय देनेवाले शब्दशिल्पी ने भारत राष्ट्र के झोपड़ों का रुदन विश्व के पंचों को सुनाया। तभी तो राष्ट्रकवि को यह जान आश्चर्य हुआ कि 'यह कलम है या जादू की छड़ी।' जीवन जब प्रौढ़ हुआ, तब कथाकार ने भारतीय संस्कृति तथा कला को संस्पर्श देनेवाले इतिवृत्त को अम्बपाली, संघमित्रा, नेत्रदान, विजेता, सिंहल-विजय, तथागत, सीता की माँ, रामराज्य और शकुन्तला की ही याद नहीं दिलाई, नये समाज की परिकल्पना के भी ताने-बाने बुने।

भारतीय राजनीति, प्रशासन, समाजधर्म, साहित्य, भाषा, कविता और चिन्तन के भविष्य की ओर झाँकते हुए बिहार की मनीषा के प्रतीक तथा भारतीय प्रज्ञा के मूर्त्तिमान् विग्रह ने नये दिशा-निर्देश की ओर इंगित करते हुए 'नई धारा' चलाने का आदेश दिया। सचमुच में था वह कलम का जादूगर, जो चल बसा हमें छोड़कर। हम उस दिव्यात्मा का पुण्यस्मरण करते हैं और उसकी कीर्त्तिकाया को शत-शत अभिवादन देते हैं।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्ध और बौद्धमत का वैज्ञानिक अध्ययन एवं बौद्ध विहारों में शिल्प और उद्योग

जिस इक्ष्वाकु-वंश में दाशरथि राम का जन्म हुआ, उसी में सिद्धार्थ भी पैदा हुए थे। राम प्राग्-ऐतिहासिक काल के हैं और सिद्धार्थ लगभग ढाई हजार वर्ष पहले हुए थे। हजारों वर्षों से करोड़ों व्यक्ति प्रतिदिन राम और बुद्ध को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए अपने को पवित्र करते आ रहे हैं। राम ने कौटुम्बिक जीवन और सुराज्य का आदर्श उपस्थित किया, जब कि बुद्ध ने कुटुम्ब एवं राजपाट को छोड़कर सत्य और सन्मार्ग का स्वयं दर्शन किया और लोगों को भी उसका उपदेश किया।

वैशाखी पूर्णिमा का वह दिन धन्य है, जब भगवान् बुद्ध का जन्म हुआ था। जिस युग में भगवान् बुद्ध का अभ्युदय इस पवित्र आर्यभूमि में हुआ था, वह युग ब्राह्मणों के कर्मकाण्ड के रूढिवाद से जर्जर भारतीय समाज के पतन का काल था। भारतवासी धरती की बात छोड़कर आसमान की, परलोक की, अदृश्य लक्ष्य की ओर ही अहर्निश ताकते रहते थे। समाज और परिवार का प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने लिए ही स्वर्ग-कामना अथवा अभ्युदय-निःश्रेयस की प्राप्ति के लिए यज्ञ के सिद्धान्तहीन बाह्याडम्बर में संलग्न था। बुद्ध का अवतरण भारत के तत्कालीन धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जगत् की एक घटना थी। हम इसे आकस्मिक तो नहीं कह सकते, किन्तु धर्म और परलोक-प्राप्ति के आदर्शहीन सिद्धान्तों में परिलिप्त समाज इस झकझोर के लिए सर्वथा तैयार नहीं था। उस युग के ब्राह्मणवाद की वह पुंजीभूत अवैज्ञानिक, धार्मिक अधःपतन की पराकाष्ठा ने बुद्ध जैसे एक सामान्य सत्य की सृष्टि के लिए जिस मूलभूत कारणों की स्थिति उत्पन्न कर दी थी, महात्मा बुद्ध उसी के परिणाम थे।

प्रत्येक धर्म अथवा मजहब या सम्प्रदाय, जिसका प्रचार सामान्य जनता में होता है, उसमें कुछ ऐसी बातें आ ही जाती हैं, जो उस मत के प्रचारक अथवा प्रवर्त्तक के विचारों से मेल नहीं खातीं। किन्तु मत के साथ सामान्यतया धर्म के प्रचारक कुछ ऐसी बातें ले आते हैं, जो उस विशिष्ट मत को दूसरे प्रचलित मतों से अलग एक स्वतन्त्र रूप देती हैं। वैज्ञानिक रूप इसके विपरीत है। इसमें भावनाप्रधान व्यक्ति के लिए स्थान नहीं है। वैज्ञानिक सत्य पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक की निजी भावना का कोई असर नहीं पड़ता। इस प्रकार धार्मिक या आध्यात्मिक तथ्य की तरह ही वैज्ञानिक सत्य है; क्योंकि उसका भी आधार मनुष्य के शारीरिक भावों और प्रकृतियों का सूक्ष्म विश्लेषण ही है।

प्रत्येक धर्म का सिद्धान्त प्रायः वैज्ञानिक सत्य के समान ही व्यक्ति-निरपेक्ष होता है। धार्मिक सिद्धान्तों पर उसके प्रवर्त्तक या प्रवर्त्तन-काल का असर नहीं होता है, वह तो एक वैज्ञानिक सत्य के समान ही प्रवर्त्तक अथवा प्रवर्त्तन-काल से अक्षुण्ण रहता है। किन्तु, वही सिद्धान्त जब व्यवहार की भावभूमि पर आता है, उसकी कुछ अपनी मान्यताएँ हो जाती हैं, तब वह मत हो जाता है।

यद्यपि यह मानना पड़ेगा कि धर्म या विशेष मत का प्रतिपादक अपने जीवन के अनुभवों से भी कम प्रभावित नहीं होता। जीवन की अपनी अनुभूति को ही वह सत्य मानता है। इसी का परिणाम होता है भिन्न-भिन्न मतों का आपसी संघर्ष, चाहे वह युद्ध अथवा उत्पीडन के रूप में हो या वाद-विवाद अथवा कीचड़ उछालने के रूप में। किन्तु यह बात वैज्ञानिक सत्य के लिए नहीं होती। कोई भी वैज्ञानिक आविष्कार चाहे वह किसी भी देश अथवा काल में आविष्कृत क्यों न होता हो, इस विवाद से परे रहता है। विज्ञान का कोई भी विद्यार्थी अथवा जानकार प्रेमी इसलिए किसी वैज्ञानिक सत्य का विरोध नहीं करता है, कि वह अमुक व्यक्ति के द्वारा आविष्कृत है या अमुक देश में इस वैज्ञानिक सत्य का परीक्षण हुआ है। प्रारम्भकाल से ही धार्मिक और वैज्ञानिक सिद्धान्तों की उत्पत्ति या विकास का यह इतिहास रहा है।

इस मान्यता को दृष्टिपथ में रखकर जब हम महात्मा बुद्ध की मूल शिक्षाओं पर विचार करते हैं, तब यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि उन्होंने एक वैज्ञानिक के समान ही मानव की आध्यात्मिक समस्याओं पर विचार किया। सामाजिक समस्याओं अथवा रीतियों के साथ जो जीवन का सत्य अंश है, अविच्छिन्न, अपरिवर्त्तनीय जो ध्रुव सत्य है, उसे ही अपने चिन्तन, मनन और सिद्धान्त का आधार बनाया। जीवन सुख-दुःख की अनिवार्यता, प्राणों को कँपा देनेवाला मृत्युभय, प्रकृति-प्रतिकूल शारीरिक कष्ट, ये मनुष्य के वे कष्ट हैं, जो चाहे वह संसार के किसी भी कोने में क्यों न उत्पन्न हुआ हो, इससे निरपेक्ष नहीं रह सकता है, और ये सब जीवन के सत्य हैं। भगवान् बुद्ध की साधना और खोज का यही मूलभूत स्रोत था और यही जीवन के वे मौलिक प्रश्न, जिन्होंने राजमहल के व्यक्तिगत सुखों को छोड़ने के लिए बाध्य किया और वे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जीवन की ज्वलन्त समस्याओं के समाधान के लिए राजपथ से वनपथ की ओर चले। राजमार्ग को छोड़ वनमार्ग को अंगीकार किया। नागरिक जीवन में ही बुद्ध ने जहाँ प्रकीर्णोज्ज्वल पुष्पजालावेष्टित राजप्रासाद देखे, वहीं रोगग्रस्त भ्रूसंहताक्ष और शिथिलानतांग दृश्य उनकी दृष्टि में आये। तभी तो महाकवि अश्वघोष ने लिखा :

> कौतूहलात्स्फीततरैश्च नेत्रैर्नीलोत्पलार्धैरिव कीर्यमाणम्।
> शनैः शनैः राजपथं जगाहे पौरैः समन्तादभिवीक्ष्यमाणम्।

अर्थात्, कौतूहल से अति विकसित आँखें, जो आधे-आधे नीले कमलों के समान थीं, जिस राजपथ पर बिखर रही थीं, उसपर चारों ओर पुरवासियों द्वारा देखे जाते हुए उसने धीरे-धीरे प्रवेश किया।

राजपथ पर विचरण करते हुए जहाँ एक ओर महलों के झरोखों से राजकुमार को देखने के लिए पौर वधुएँ आकुलित थीं, वहीं नगर का वह भाग जो रोग, पीड़ा और मृत्यु से आक्रान्त था, अपनी समस्याओं के एकमात्र समाधान के दर्शन के लिए कम चंचल नहीं था। अश्वघोष के शब्दों में :

> वातायनेभ्यस्तु विनिःसृतानि परस्परायासितकुण्डलानि।
> स्त्रीणां विरेजुर्मुखपङ्कजानि सक्तानि हर्म्येष्विव पङ्कजानि॥
>
> ततो विमानैर्युवतीकरालैः कौतूहलोद्घाटितवातयानैः।
> श्रीमत्समन्तान्नगरं बभासे वियद्विमानैरिव साप्सरोभिः॥

अर्थात्, खिड़कियों से निकले हुए रमणियों के मुख-कमल इस प्रकार शोभित हो रहे थे, जिस प्रकार महलों में कमल लगे हों और वह श्रीसम्पन्न नगर विमानों में बैठी, झाँकती हुई रमणियों से, अप्सरायुक्त देवप्रासादों के समान भासित हो रहा था। जहाँ एक ओर नगर का यह रूप था, वहीं दूसरी ओर :

> ततः कुमारो जरयाभिभूतं दृष्ट्वा नरेभ्यः पृथगाकृतिं तम्।
> उवाच संग्राहकमागतास्थस्तत्रैव निष्कम्पनिविष्टदृष्टिः॥
> क एष भोः सूत नरोऽभ्युपेतः केशैः सितैर्यष्टिविषक्तहस्तः।
> भ्रूसंहताक्षः शिथिलानताङ्गः किं विक्रियैषा प्रकृतिर्यदृच्छा॥

कुमार ने अन्य पुरुषों से पृथक् आकृतिवाले उस जराभिभूत पुरुष की ओर देखकर सारथि से कहा कि—हे सारथि! सफेद केश, ढीले अंग और हाथ में डण्डा सम्भाले झुकी कमरवाला यह कौन व्यक्ति है!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपस्य हन्त्री व्यसनं बलस्य शोकस्य योनिर्निधनं रतीनाम् ।
नाशः स्मृतीनां रिपुरिन्द्रियाणामेषा जरा नाम ययैष मग्नः ॥

रूप की हत्यारी, बल की विपत्ति, शोक की उत्पत्ति, आनन्द की मृत्यु और स्मृति का नाश करनेवाली यह जरा 'बुढ़ापा' है—ऐसा सारथि छन्दक ने कहा।

उन्होंने जीवन के चरम सत्य, अर्थात् सुख-दुःख के प्रश्न को सबसे प्रधान समस्या मानकर और उसे न केवल शरीर में, किन्तु शरीर में अन्तर्निहित सूक्ष्म कृतियों में मूलीभूत मानकर एक वैज्ञानिक की तरह उसका हल निकाला। (आज का विज्ञान भी इस बात को मानने लग गया है कि महान् से महान् वैज्ञानिक सत्य के आविष्कार के बाद भी, पता नहीं और उससे कितने महत्तर सत्य विश्व में छिपे पड़े हैं। इस विषय में महात्मा बुद्ध का भी यही दृष्टिकोण था।)

महात्मा बुद्ध ने सारे वैज्ञानिक सत्यों को ही पकड़ा। उदाहरण के लिए, उनका यह विश्लेषण कि सारे दुःखों की जड़ 'हमारी इच्छा' है, एक महान् वैज्ञानिक सत्य है। इच्छा का दमन ही सुख है। यदि प्रत्येक व्यक्ति इस सामान्य सत्य को अपने सामने रख सके, तो बहुत अंशों में उसके कष्टों का निवारण हो जाय। महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं के अंग-प्रत्यंग पर मनोनिरोध जैसे वैज्ञानिक सत्य की छाप है, जो कभी मिट नहीं सकती है।

बौद्ध सिद्धान्त के वैज्ञानिक विवेचन के पश्चात् बौद्धमत पर दृष्टि जाती है। पहला युग वह है, जब गौतम बुद्ध की शिक्षाएँ अपनी प्रारम्भिक सीमा-रेखाओं को लेकर चल रही थीं, और दूसरा वह समय, जब भारत की सीमाओं से बाहर जाकर बौद्ध सिद्धान्त अन्य देशवासियों के सम्पर्क में आया। इसी के परिणाम से इन सिद्धान्तों की काया बदल गई। कनिष्क की धर्मसभा ने इस नये रूपान्तरित मत को निश्चित रूप से स्वीकार किया और इसे महायान और पुराने मत को हीनयान का नाम दिया गया। बौद्धमत का यह नया रूप एक साम्प्रदायिक काया को पकड़कर नया धर्म बना और अन्य मत या सम्प्रदायों में यह एक होकर रहा। उस समय से यह कहा जा सकता है कि बौद्धमत ने वैज्ञानिकता का दामन छोड़कर धार्मिकता का दामन पकड़ा। आगे जाकर इस मध्यममार्गी महायान से सिद्ध सन्तों की उत्पत्ति हुई और इन सिद्धों ने ही नाथ-सम्प्रदाय और अघोर-सम्प्रदाय को जन्म दिया—इस प्रकार तन्त्र-युग, वाममार्ग-युग आदि युग क्रमशः आते रहे। महात्मा बुद्ध ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तत्कालीन भारतीय समाज के वर्ग-वैषम्य को अच्छी तरह समझा था। उन्होंने विचार, व्यवहार आदि सभी क्षेत्रों में मध्यममार्ग अपनाने का उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि—'जीवन की तन्त्री की तार को इतना ढीला मत छोड़ो कि स्वर ही न निकले और न इतना कसो कि तार ही टूट जाय।' भगवान् बुद्ध ने सबसे बड़ा सन्देश हमें यह दिया कि कष्टों से परिपूर्ण इस संसार में शान्ति प्राप्त करने के लिए हमें आसक्ति और स्वार्थ से रहित परोपकार के पथ का अनुसरण करना चाहिए। मुक्ति की प्राप्ति का सर्वोच्च साधन सदाचार की आभा है।

सदा से धार्मिक भावना ने भारतीयता को सहायता पहुँचाई है। यह निर्विवाद सिद्ध है कि कला का उदय और विकास भी धार्मिक उत्थान-पतन पर निर्भर रहता है। बुद्ध के मध्यमार्ग का प्रसार होते ही समाज के दृष्टिकोण में परिवर्त्तन आ गया। लोगों में नवीन स्फूर्त्ति आ गई, जिसके कारण सामाजिक जीवन विभिन्न मार्गों से विकसित होने लगे। ललित कला का प्रारम्भ बौद्धयुग से ही माना जाता है। हीनयान-काल में गान्धार में बौद्ध प्रतीकों की पूजा होती थी। यह सत्य है कि भागवत धर्म के प्रभाव से ही बौद्धधर्म में नये ज्ञान का स्वरूप आया और मूर्त्तिपूजा का समावेश किया गया। महायान के प्रवर्त्तकों ने प्रतिमा-निर्माण की परिपाटी चला दी। मूर्त्तिकला, वास्तुकला अथवा चित्रकला को बौद्धधर्म की देन कहते हैं। भगवान् बुद्ध के जीवन से सम्बद्ध घटनाओं को चित्रों में स्थापित किया गया और प्रायः प्रत्येक कला-केन्द्र में वैसी प्रतिमाएँ बनने लगीं। सारनाथ स्कूल की धर्मचक्र-प्रवर्त्तन-प्रतिमा से लेकर मथुरा और पालयुग तक की प्रत्येक शैली में उसे महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया। इतना ही नहीं, 'विहारों' में भी पूजा के निमित्त इसी मूर्त्ति को प्रतिष्ठापित किया गया। इस प्रकार बौद्धकाल में जिस भारतीय कला का विकास प्रारम्भ हुआ, वह गुप्तकाल में पूर्णतः समग्र भारत में प्रसारित हो गया।

इन कलाओं के विकास के साथ ही काव्यकला ने भी नई करवट बदली। समग्र बौद्ध साहित्य को, जो महात्मा बुद्ध के उपदेशों से सम्बन्ध रखता है, 'त्रिपिटक' संज्ञा दी गई है। वे सुत्तपिटक, अभिधम्मपिटक तथा विनयपिटक के नाम से पुकारे जाते हैं। बौद्धधर्म के प्रचार से बौद्धसाहित्य का अध्ययन भी इन धर्मप्रचारक बौद्ध-भिक्षुओं ने भारतीय साहित्य और संस्कृति के साथ ही विभिन्न पूर्वोत्तर देशों में फैलाया। व्यापारियों द्वारा भी भारत से सुदूर देशों में, बौद्ध मत के प्रसार में सहायता मिली है। जातकों के अध्ययन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पता चलता है कि बौद्ध व्यापारियों और नाविकों का अन्तरराष्ट्रीय व्यापार होता था। उस युग में रूढिवादी ब्राह्मणों के लिए तो आर्यावर्त्त ही सब कुछ था। आर्यावर्त्त के बाहर के निवासी अनार्य और म्लेच्छ थे। खाने-पीने तथा विवाह इत्यादि में जातिवाद के नियम कठोर थे और इसीलिए समुद्र-यात्रा वर्जित थी, गोकि प्राचीन भारत में इस नियम का कितने लोग पालन करते थे, इसका तो सिर्फ अटकल ही लगाया जा सकता है। बौद्धों को इस जातिवाद के प्रपंच से विशेष मतलब नहीं था, इसीलिए हम प्राचीन बौद्ध साहित्य में समुद्र-यात्रा के अनेक विवरण पाते हैं। जातकों में समुद्र-यात्राओं के अनेक उल्लेख हैं, जिनसे उनकी कठिनाइयों का पता चलता है। बहुत से व्यापारी सुवर्णद्वीप, अर्थात् मलय-एशिया और रत्नद्वीप, अर्थात् सिंहल की यात्रा करते थे। बावेरूजातक से हमें पता चलता है कि बनारस के कुछ व्यापारी अपने साथ एक दिशाकाक लेकर समुद्र-यात्रा पर निकले। बावेरू यानी काबुल में लोगों ने दिशाकाक को खरीद लिया। दूसरी यात्रा में भी इन्हीं यात्रियों ने वहाँ एक मोर बेचा। यह यात्रा अरबसागर और फारस की खाड़ी के रास्ते होनी थी। सुप्पारकजातक से हमें पता चलता है कि प्राचीन भारत के बहादुर नागरिकों को खुरमाल (फारस की खाड़ी), अग्निमाल (लालसागर), दधिमाल, नीलवग्ग-कुसुमाल, नलमाल और बलभामुख (भूमध्यसागर) का पता था। पर जैसा इतिहास बतलाता है, ईसवी-सन् के पहले, भारतीय नाविक बाबेलमन्देर के आगे नहीं जाते थे, उस स्थान से भारतीयों के माल का भार अरब बिचवई ले लेते थे और वे ही उसे मिस्र तक ले जाते थे। मलय एशिया में भारतीयों की बस्ती शायद ईसा की आरम्भिक सदियों में बसनी प्रारम्भ हुई। शंखजातक में सुवर्णद्वीप की यात्रा का उल्लेख है। महाजनक जातक में एक डूबते हुए जहाज का आँखों देखा वर्णन है। दीर्घनिकाय के केवट्टसुत्त में भी दिशाकाक लेकर यात्रा करने का वर्णन मिलता है। जातक हमें बतलाते हैं कि भारत के पश्चिमी समुद्र-तट पर भरुकच्छ, सुप्पारक तथा सौवीर मुख्य बन्दरगाह थे। इसी प्रकार पूर्व समुद्र-तट पर करम्बिय, गम्भीर और सेरिन बन्दरगाहों का भी आपस में व्यापार चलता था।

बौद्ध साहित्य में आयात और निर्यात होनेवाली वस्तुओं का भी स्पष्ट उल्लेख मिलता है। महावग्ग के अनुसार सूती कपड़ों का तो विशेष स्थान था ही, ग. धार के लाल कम्बल, उड्डीयान और शिवि के शाल, पठानकोट के बेशकीमती ऊनी कपड़ों का भी विशेष व्यापार होता था। विदेश से भी भारत में कपड़े आते थे। बौद्ध-साहित्य में अनेक स्थलों पर प्रयुक्त 'गोणक' शब्द से लम्बे बालोंवाले बकरे के बने कालीन के व्यापार का पता चलता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार के विदेशी व्यापार का पता महाभारत और रामायण में भी मिलता है। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ और मर्यादापुरुषोत्तम राम के राज्याभिषेक में बहुत से राजे और गणतन्त्र के प्रतिनिधियों ने, विशेषत: मध्य एशिया और पूर्व एशिया के प्रदेशों से, अनेक प्रकार की वस्तुएँ भेंट में लाये थे। महाभारत के अनुसार तो, दक्षिणसागर के द्वीपों से चन्दन, अगर, सोना और चाँदी तो वर्मा और मध्य एशिया से आते थे। इसी प्रकार मोती सिंहल से, मूँगे भूमध्यसागर से तथा हीरे बोर्नियो से आते थे। अपनी उत्तर की दिग्विजय में अर्जुन को (पश्चिमी तिब्बत) से हाटक और घोड़े मिले थे। कम्बोज (ताजकिस्तान) अपने तेज घोड़ों, खच्चरों, ऊँटों और पशमीनों के लिए प्रसिद्ध था।

इस सम्बन्ध में दिव्यावदान, आर्यशूर की जातकमाला, अश्वघोष का बुद्धचरित, अवदानशतक, महावस्तु, मिलिन्दप्रश्न और बृहत्कथाश्लोकसंग्रह के अध्ययन से बौद्धकालीन अनेक रहस्यों का पता चलता है।

महात्मा बुद्ध ने समस्त भारत की यात्रा की थी। एक स्थान पर इन्होंने मथुरा की यात्रा करते हुए मथुरा के पाँच दुर्गुण बताये हैं। यथा—किनारों के ऊपर चले जानेवाला पानी (उत्कूलनिकूलान्), खूँटों और काँटों से भरा देश (स्थूलकण्टकप्रधाना:), बलुही और कँकरीली भूमि, रात के अन्तिम पहर में खानेवाले (उच्चन्द्रभक्ता:) और बहुत-सी स्त्रियाँ। मथुरा से बुद्ध ओतला पहुँचे और वहाँ से दक्षिण पांचाल में 'बैरम्य' जो पालि-साहित्य में 'वेरंजा' है। यहाँ उन्होंने कई ब्राह्मणों को दीक्षित किया।

'दिव्यावदान' में एक पूर्ण नाम के व्यापारी की चर्चा है, जो बाद में अनाथपिण्डक के साथ बुद्ध भगवान् से मिलता है और उनके द्वारा दीक्षित होकर भिक्षु बन जाता है। उसके साथ बुद्ध के जो वार्त्तालाप हुए थे, उसका चित्रण अजन्ता की गुफाओं में अंकित, चित्रों में हुआ है—यह चित्र दूसरे नम्बर की लेण भित्ति-चित्र में पूर्ण के बड़े भाई भविल ने चन्दन की खोज के लिए जो यात्रा की थी, उसकी भी चर्चा इस चित्र में है। साथ ही गिलगित मैनुस्क्रिप्ट्स की हस्तलिखित पोथियों के अध्ययन में पूर्ण और उसके भाई की समुद्रयात्रा, विदेशी व्यापार तथा बौद्धमत के प्रचार-प्रसार में योगदान की चर्चा मिलती है।

उस युग में भी वर्ण-विभाग थे। कर्म और श्रम के अनुसार श्रेणियों में जनसमाज बँटा हुआ था। ग्राम-पंचायत का भी पूर्ण प्रचलन था और अपने स्थानीय नियमों, कानूनों को बनाने तथा आपसी मतभेदों के निंबटाने का पूर्ण अधिकार इन ग्रामीण न्यायालयों को रहा करता था। 'दिव्यावदान' में, अनेक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ग्रामीण मतभेदों के निबटाने के प्रसंग का उल्लेख मिलता है। 'बृहत्कथा-श्लोकसंग्रह' में लिखा है कि एक बार राजा उदयन के समक्ष दो व्यापारी आये और दरबार में उन लोगों ने अपनी रामकहानी सुनाई। उस युग की इन कहानियों से उच्च नैतिकता का पता चलता है। 'महावस्तु' नामक ग्रन्थ के अध्ययन से बौद्ध युग के विभिन्न वर्गों, श्रेणियों और जातियों का पता चलता है। उस युग में जो कारीगर, बढ़ई, लोहार, माली, धोबी आदि श्रमिक होते थे, उन्हें पालि-साहित्य में 'महत्तर' कहा जाता था। उनकी निम्नांकित प्रमुख श्रेणियाँ थीं—सौवर्णिक, प्रावारिक (चादर बेचनेवाले), शांखिक (शंख का काम करनेवाले), दन्तकार (हाथी के दाँतों का काम करनेवाले), मणिकार (मनियारे), प्रास्तारिक (पत्थर का काम करनेवाले), गन्धिक (इत्र बेचनेवाले), कोशाविक (रेशमी और ऊनी कपड़ेवाले), घृतकण्डिक (तेली, घी बेचनेवाले), गौलिक (गुड़ बेचनेवाले), वारिक (पान बेचनेवाले), कार्पासिक (कपास बेचनेवाले), दंध्यिक (दहि बेचनेवाले), पूपिक (पूए बेचनेवाले), खण्डकारक (खाँड़ बेचनेवाले), मोदकारक (लड्डू बेचनेवाले), फलवणिज् (फल बेचनेवाले)।

महात्मा बुद्ध ने मनुष्य को जरा-मरणभय से मुक्ति दिलाने के लिए एक खोज प्रारम्भ की। उनकी तपस्या के इसी उद्देश्य ने उन्हें अपनी उपलब्धि तक पहुँचा दिया और उन्हें जो ज्ञान का प्रकाश मिला, वह इसी समस्या का हल था।

जीवन की इस अटल सत्य-परिणति को खोजना और उसका समाधान ढूँढ निकालना ही बौद्ध-सिद्धान्त का लक्ष्य था। इसीलिए बुद्ध भगवान् की शिक्षाएँ किसी भी प्रचलित मत के विपरीत नहीं थी। यद्यपि यह एक विचित्र विरोधाभास है कि विभिन्न विरोधी मत-मतान्तरों के बीच रहकर और विभिन्न सम्प्रदायों के संघर्ष के बीच उत्पन्न होकर भी महात्मा बुद्ध ने किसी की निन्दा नहीं की। उनका उद्देश्य और उपदेश सदा रचनात्मक रहा, खण्डनात्मक नहीं। उनके द्वारा प्रचारित सत्य किसी भी मत अथवा सम्प्रदाय में इसीलिए स्वीकृत होते हैं; क्योंकि उनका ध्येय केवल वही है, जिसे हम नीतिशास्त्र कहते हैं। सत्य, अहिंसा आदि की भी सच्ची परिभाषा यही है, जो प्रत्येक धर्म के आचार्य व्यक्ति के जीवन का उच्चतम आदर्श कहकर स्वीकार करते हैं। यही कारण है कि अन्य मतों की अपेक्षा बौद्ध-सिद्धान्तों का सामीप्य, वैज्ञानिकता से अधिक है। महात्मा बुद्ध ने सिर्फ जीवन-चर्या के उच्चतम सिद्धान्तों को छोड़कर और बातों की ओर ध्यान दिया ही नहीं। बुद्ध ईश्वर या उसके अस्तित्व के विवाद में अपने-आपको अथवा तत्कालीन समाज को डालना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित नहीं समझते थे। उनका विचार था कि ईश्वर के अस्तित्व, रूप और गुण की समस्या बड़ी पेचीदी है और हर मनुष्य के लिए इसे समझना बड़ा कठिन है।

कुछ थोड़े व्यक्तियों के लिए नहीं, उनके सामने उस युग का समग्र पीड़ित-समाज था। उन्होंने अपनी आँखों से महलों में रहनेवाले और राजप्रासादों से नीचे नहीं उतरनेवालों के लिए पण्डित समाज को नई-नई धार्मिक मान्यताओं, कर्मकाण्ड-समर्थित विधियों और उच्चवर्ग के पाखण्ड को फैलते देखा था और अनुभव किया था कि किस प्रकार वे अपने क्षणिक और ऐहलौकिक सुख के लिए धनी राजवर्ग, गरीब प्रजावर्ग को ही सीढ़ी बनाकर स्वर्ग के पारलौकिक काल्पनिक लोक में जाना चाहते हैं। बड़े-बड़े याग इसलिए तो किये जाते हैं कि जीवन्मुक्ति अथवा स्वर्ग-आनन्द मिले, किन्तु उन्हीं यागों में लकड़ी काटकर लानेवाले लकड़हारों, गाएँ चरा-चराकर घी देनेवाले गोपालकों अथवा अन्य प्रकार के सहायकों के जीवन अथवा श्रम का उनके पुण्य या स्वर्ग-प्राप्ति में कोई भी भागधेय नहीं है। उन्होंने राजा से अधिक प्रजा के लिए, व्यक्ति से अधिक समष्टि के लिए, अल्पमत से अधिक बहुमत के लिए चिन्तन किया और सामाजिक दृष्टिकोण से जीवन के सत्य को आँकने के बाद उन्होंने संघ की कल्पना की।

बुद्ध ने धार्मिक अन्धविश्वास के कीचड़ में पड़े हुए व्यक्तियों में ईश्वर के अस्तित्व को अन्तिम साँस लेते हुए देखा था।

बुद्ध भगवान् ने जीवन का जो सत्य अंश है, उसे ईश्वर से भी अधिक ऊँचा स्थान दिया। बाद में आचार्य शंकर ने भी बुद्ध द्वारा प्रवर्त्तित सत्य को ही ईश्वर की परिभाषा माना है—'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।' उनके उपदेशों का निचोड़ है—सत्य ज्ञान, सत्य संकल्प, सत्य सम्भाषण, सत्य आचरण, सत्य जीवन, सत्य प्रयत्न, सत्य विचार और सत्य समाधि।

प्रत्येक शब्द के पूर्व 'सत्य' का व्यवहार हुआ है। सत्य का हमारे जीवन की वास्तविकता से अटूट सम्बन्ध है। यही सरल सत्य की भावना जीवन-क्षेत्र में निर्मलता और व्यवहार-क्षेत्र में अहिंसा को उत्पन्न करती है।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसन्तपंचमी : एक सांस्कृतिक त्यौहार

ऋतुराज वसन्त के आगमन पर, नये पीत परिधान में सज-धजकर, प्रकृति मधुपर्व मनाने के लिए एवं ऋतुराज और धरती के पुनर्मिलन के लिए, समस्त प्राणिजगत् में नव-उल्लास तथा नवोन्माद की मंदमाती सम्मोहक चेतना से सृष्टि का शृंगार कर रही है। खेतों में फूली, पीली सरसों, आम्रवृक्षों पर झूलती मंजरियों की मदिर सुगन्ध और हवा में लहराता कोयल का मृदु संगीत, जड़ प्रकृति भी जैसे सहसा प्राणवान् हो गई हो। प्रकृति का यह उल्लास मानव को छुए बिना कभी नहीं रहा। भावनापूर्ण हृदयों ने अपने काव्यों में, कलात्मक कृतियों-चित्रों आदि में इसे मुखरित किया। विश्वकाव्य वसन्त की रंगीनियों से भरा पड़ा है। भारत के प्राचीन और अर्वाचीन सभी कवियों ने अपने-अपने स्वरों से वसन्त-श्री की आराधना की है।

इस सांस्कृतिक पर्व का सम्बन्ध सृष्टि के प्रारम्भकाल से है। धरातल पर जब प्रथम मानव का अभ्युदय हुआ और उसने वसन्त-श्री से सुशोभित धरा को पहले-पहल हँसते देखा, वह मुखरित होकर बोल उठा :

मधु वाता ऋतायते, मधु क्षरन्ति सिन्धवः
माध्वीः नः सन्त्वोषधीः, मधुमत् पार्थिवं रजः
मधु द्यौरस्तु नः पिता, माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

समस्त धरातल, सभी सागर और प्रकृति का सम्पूर्ण वातावरण, मधु के मधुर आगमन पर मदमस्त हो जाता है। जब मधु-माधव संज्ञक वसन्त का सुहावना ऋतु आता है, समस्त वनस्पति-वर्ग में और प्राणिजगत् में मधुर रस का संचार होने से सृष्टि में स्वतः ही स्वाभाविक मधुरता आती है। माधुर्य-सम्पन्न होने पर वृक्ष, लतादि वनस्पतियों और सन्धियों में किसलय, नव कुसुम, फूल-पत्तियाँ और कोपलें फूट निकलती हैं। इससे धरातल का वातावरण शीतल मन्द सुगन्ध सुरभि सौम्य तथा फलोत्पादक बनता है। यही है माधव का रूप।

वसन्त का समय चैत्र और वैशाख माना गया है। वास्तव में अत्यन्त प्राचीन समय में वसन्त ऋतु का आगमन इन्हीं मासों में हुआ करता था। कालक्रम से आज सूर्य और पृथ्वी की स्थिति में कुछ अन्तर पड़ गया प्रतीत होता हैं, जिसका मूल-कारण सूर्य और पृथ्वी का स्थितिभेद ही है। प्रारम्भ-काल में यह स्थिति ऐसी थी कि वसन्त चैत्र से वैशाख तक रहता था अथवा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माना जाता था। किन्तु कालक्रम से आज तो यह ऋतु वसन्तपंचमी से आरम्भ होकर चैत्र के मध्य तक रहता है। इस ऋतु में प्राणबल तथा अग्नि के उत्तरोत्तर तेज के प्रभाव से जीवात्मा और समस्त प्राणी-जगत् में अनन्त आयु और बल का आधान होता है।

वसन्त सभी ऋतुओं का मुख है और सृष्टि का 'रथन्तर' है। यह संवत्सर का मस्तक है। गीता के शब्दों में यह 'ऋतूनां कुसुमाकर:' है। यह ऋतुराज, प्रथम ऋतु और प्रकृति का राजा है। इसे कल्पपर्व भी कहते हैं। वसन्त में सृष्टि बसानेवाले तत्त्व प्रादुर्भूत होते हैं। प्राणी-जगत् के आविर्भाव का यही मुख्य काल माना जाता है। इसी में प्रकृति के पदार्थ यौवन धारण करते हैं और समस्त संसार स्फूर्त्ति, चेतनता और प्रगति को प्रकट करता है। ओषधियाँ बलवती होती हैं, और उनमें भर्ग—ज्योति. उत्पन्न होती है। यह वसन्तकाल कहीं-कहीं मदनोत्सव के रूप में मनाया जाता है। वेद में इसका बड़ा ही अनूठा वर्णन किया गया है :

वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः।
रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः॥ (यजु० २१.२३)

वसन्त ऋतु में दिव्य अष्ट वसुलोक त्रिवृत, अर्थात् प्रबल रूप में प्रकट होते हैं। निवासयोग्य पृथिव्यादि लोकों में नवीन जागृति उत्पन्न होती है। रथन्तर, अर्थात् उत्तरोत्तर प्रबलता को धारण करते हुए सूर्य के प्रकाश से अन्नादि की खेती पकती है और प्राणिवर्ग वय और बल धारण करता है। वसन्त में सूर्य-ताप के प्रभाव से अन्नादि पकते, प्राणों में बल आता, मन प्रफुल्लित होता और बलदायक नवान्न और ओषधियों के सेवन से अंग-अंग पुष्ट होता है। सूर्य का अनुपम प्रभाव प्राणी एवं वनस्पति-जगत् पर इस ऋतु में पड़ता हुआ दिखाई देता है।

जिस प्रकार दीवाली के दिन से नया खाता या हिसाब शुरू किया जाता है, उसी तरह वसन्तपंचमी बालकों के लिए अक्षराभ्यास का नया दिवस समझा जाता था। शिष्य को मन्त्र-दीक्षा भी इसी दिन दी जाती थी और जिसे इस दिन सरस्वती-कवच मिल जाता, वह विशेष प्रतिभाशाली होता था।

प्रथा ऐसी थी कि प्रातः सरस्वती का आवाहन करके दावात-कलम का अर्चन होता था। बालक को उसके माता-पिता नवीन वस्त्र पहनाकर अध्ययन-शाला में ले आते थे या घर पर ही गुरु को बुलाकर बच्चे के लिए पट्टी लिखवा देते थे। गुरु पहले बोलता, अनन्तर बालक। उस दिन उसे 'ओं नमः श्रीगणेशाय' तीन बार बोलवाया जाता। प्रसन्नता प्रकट करने के लिए मिठाई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाँट दी जाती थी। प्राचीन काल में इस पर्व का नाम ही 'सरस्वत्युत्सव' पड़ गया था। विद्या प्रारम्भ करने के लिए वसन्त-ऋतु को ही उत्कृष्ट माना जाता था। इसका कारण भी था। वसन्त के दिन आनन्द-उल्लास के होते हैं और ऐसे समय में किया हुआ काम फिर आनन्द और स्फूर्त्ति क्यों न दे?

यह पर्व सरस्वती का जन्मदिन है। कहा जाता है इसी समय चारों दिशाएँ भगवती वीणावादिनी के वीणा-वादन से मुस्कराई थीं। वाल्मीकि, व्यास, कपिल, कणाद और गौतम ने इसी पावन वेला में अपने अनुपम काव्य-ग्रन्थों और दर्शनशास्त्रों का समारम्भ किया था। महाकवि श्रीहर्ष, कालिदास, भवभूति आदि की रचना-चातुरी का यही मुहूर्त्त था और इसी दिन बड़े-बड़े प्रतापी राजाओं ने अपने-अपने भवनों और प्रासादों की आधारशिलाएँ रखीं थीं। यही दिन सम्राटों के सिंहासनारोहण का गौरवपूर्ण दिन रहा है। और वसन्त के दिनों में ही लोग शास्त्र-विधि से जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन और नववस्त्र-धारण आदि शुभकार्य प्रारम्भ करते हैं। प्राचीन भारत में भगवती भारती के इसी उपासना-पर्व में सहस्त्रों की संख्या में विद्यालयों में बालक प्रविष्ट किये जाते थे। उत्साह और उल्लासमय वातावरण में उनका पठन-पाठन आरम्भ होता था । विद्या-वैभव के इस पर्व को आज भी समग्र भारत का सरस्वती-उपासक समाज उल्लास और उमंगों से जिस प्रकार मनाता है, किसी अन्य पर्व को नहीं।

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की उपासना के लिए तीन उत्सव का विधान है। इनमें नवरात्र का व्रत पार्वती की तुष्टि के लिए और तेज संग्रह के लिए किया जाता है। लक्ष्मी की उपासना की जाती है और विद्या-व्रत का प्रारम्भ वसन्तपंचमी के सरस्वती-आवाहन से होता है।

शास्त्रों में सरस्वती का वाहन हंस माना जाता है। निश्चय ही, इसका यह अभिप्राय है कि जिनमें विद्या-श्री होगी, वे ही दूध को दूध और पानी को पानी बता सकते हैं। जिनमें हो नीर-क्षीर विवेक, वे ही हंस समझे जाते हैं।

बंगाल तथा दक्षिण के प्रदेशों में वसन्तपंचमी का नाम 'श्री-पंचमी' भी है। उसका कारण यह बताया जाता है कि नारद मुनि ने लक्ष्मी से पूछा कि आप स्त्रियों से कैसे प्रसन्न रह सकती हैं, तो लक्ष्मी ने उत्तर दिया कि जो सौभाग्यवती स्त्री इस दिन से व्रत प्रारम्भ कर पाँच वर्ष तक प्रतिमास पंचमी का व्रत करेगी, वह मेरे समान सुखी और पति को प्यारी होगी। तबसे इसे स्त्रियों ने अपनाया और इसका नाम 'श्री-पंचमी' पड़ गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वसन्त के आगमन से प्रकृति का समस्त वातावरण जब मधुरिम और मुखरित हो जाता है, तब पृथ्वी से गगन तक का स्फुरित और वसन्त-पराग से पीत वनवल्ली और मृदुल लताएँ झूम उठती हैं तथा पक्षिकूजन से चारों दिशाएँ गाने लगती हैं, तब कवि की आत्मा से वसन्त-वीणा बज उठती है :

नवपलाश-पलाश-वनं पुरः, स्फुटपराग-परागत-पङ्कजम् ।
मृदुलतान्त-लतान्तमलोकयत्, ससुरभिं सुरभिं सुमनोहरैः ॥

भारत का कोई सांस्कृतिक साहित्य नहीं, कोई रससिद्ध कवि-रचित काव्य-ग्रन्थ नहीं, जिसमें वसन्त-वर्णन न हुआ हो। जहाँ सरस्वती का निवास है, वहीं ऋतुराज वसन्त और अपने पाँच बाणों के तरकस को सम्भाले वसन्त के मित्र कामदेव भी विराजमान हैं। मध्यकाल के सभी नाटक, काव्य और महाकाव्य ग्रन्थ, वसन्त, कामदेव और उसी से प्रभावित अन्य प्राकृतिक उद्दीपनों तथा विशेषताओं के वर्णन से परिपूर्ण हैं। वसन्त आता है पुराने पत्तों का पतझड़ करने और नई कोपलों को विकसित करने। यह क्रम सृष्टि के प्रत्येक पग पर जारी है। पुराने आज झड़ रहे हैं और नई चेतना, समाज का नया रूप, संस्कृति की नई अविच्छिन्न धारा पुरानी परम्पराओं को पीछे छोड़कर आगे बढ़ रही है। जब-जब वसन्त का आगमन होगा, सृष्टि-चक्र अपने संवत्सर के एक रथन्तर को पूरा करके, आगे बढ़ेगा। प्रकृति, संस्कृति, विज्ञान और कला अपना नव रूप धारण करेगी। कवि की कोई कल्पना, चित्रकार के चित्र की कोई प्रकृत-आकृति नहीं, जिसमें वसन्त की उद्भावना न हो, सरस्वती की आराधना न हो। यह सभी युग में रहा है और आगे भी रहेगा। वसन्त के आते ही धरती पर मानव आया और वसन्त की देवी वीणावादिनी सरस्वती के आविर्भाव से मानव मुखरित हुआ। इसीलिए वसन्त और सरस्वती के आगमन से धरा का आँगन तबतक पवित्र होता रहेगा, जबतक दर्शन, साहित्य और कला के चिन्तन तथा गायन से प्रकृति-मानव अधिक सबल और कला का उपासक बना रहेगा; क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भकाल से आजतक वेद, सारे शास्त्र और जो कुछ भी गीत, नृत्य और वाद्य हैं, वह वसन्त-श्री, सरस्वती का ही प्रसाद है। कहा भी है :

वेदाः शास्त्राणि सर्वाणि नृत्यगीतादिकं च यत् ।
न विहीनं त्वया देवि तथा मे सन्तु सिद्धयः ॥
लक्ष्मी मेधा धरा तुष्टिः गौरी पुष्टिः प्रभा धृतिः ।
एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिः मां सरस्वति ॥

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागपंचमी : नागपूजा

पर्व और त्यौहार मानव की सामाजिक चेतना के क्रमिक विकास के ऐतिहासिक संस्मरण हैं। मनुष्य ने प्रारम्भ में जब कबीले के रूप में बसना प्रारम्भ किया, तभी से उसकी सामाजिक चेतना अथवा संघ-भावना ने भय या पूजा की प्रेरणा से आनन्द-प्राप्ति के लिए सामूहिक गानों, नृत्यों, भोजों आदि हलचलों को आरम्भ किया। चहल-पहल ही शनैः-शनैः मंगलमय उत्सवों के रूप में परिवर्त्तित होकर और विभिन्न परम्पराओं में बँधकर जाति और राष्ट्र के सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक बन गये।

प्रारम्भ में मनुष्य प्रकृति के अधिक समीप था। वह प्राकृतिक सौन्दर्य की उपासना किया करता था। वह सूर्य के आलोक को अपनी अर्चना का अर्घ्य दिया करता था; सर्वंसहा वसुन्धरा को जननी के समान पूजता था। वह पंचभूत का उपासक था। पंचभूतों की उपासना में ही यज्ञों का सृजन हुआ।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी देन यह रही है कि इसके पुजारी स्थल, जल और नभ में विचरनेवाले सभी देवता-दैत्य, नर-नाग, पशु-पक्षी सबके उपासक और पूजक रहे हैं। संस्कृति और धर्म इतने उदार रहे हैं कि जीवन से सम्बन्धित सभी प्राकृतिक वस्तुओं और नैसर्गिक उपादानों के साथ इनके जीवन का अविच्छिन्न सम्बन्ध बना रहा है। इतना तो स्पष्ट है कि सभ्यता के वर्त्तमान विकास के आदिकाल का मानव विज्ञान के विकास के पूर्व प्रकृति के अधिक समीप था। आरम्भ में वनोत्सवों और वन में निवसित जीवों के साथ तादात्म्य ही उनके आनन्दों, उमंगों और उल्लासों का प्रतीक था। वन और कृषि के अधिक समीप रहने के कारण ही अग्नि, जल, वायु और सूर्य की उपासना से नाग की पूजा तक की परम्परा हमारी संस्कृति में पाई जाती है।

श्रावण शुक्ला पंचमी के दिन नागपूजा की परम्परा बहुत दिनों से चली आ रही है। कभी-कभी ज्योतिष-शास्त्रविशेषज्ञों ने ग्रहों-उपग्रहों के गणना-क्रम से नागपूजा की तिथि और मास में व्यत्यय अथवा परिवर्त्तन भी किया है। कुछ लोग भाद्र शुक्ला पंचमी को भी नागपूजा की तिथि मानते हैं। हेमाद्रि, हारीत आदि ग्रन्थकर्त्ताओं और ब्रह्मवैवर्त्त, चमत्कार-चिन्तामणि एवं निर्णयसिन्धु आदि पुस्तकों में जहाँ नागपूजा की तिथि अथवा मास के परिवर्त्तन का विवाद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है, वहाँ समान रूप से नागपूजा की एक ही विधि अथवा परिपाटी बताई गई है। यथा 'चमत्कारचिन्तामणि' में :

पञ्चमी नागपूजायां कार्या षष्ठी-समन्विता।
तस्यां तु तुषिता नागा इतरा सचतुर्थिका॥

और 'मदनरत्नाभिधान' में :

श्रावणे पञ्चमी शुक्ला संप्रोक्ता नागपञ्चमी।
तां परित्यज्य पञ्चम्यश्चतुर्थी-सहिता हिताः॥

ब्राह्मण को एक काँसे के पात्र में सुवर्ण-निर्मित नाग और तिल रखकर, वस्त्र और दक्षिणा सहित सम्मानित करने से सभी प्रकार के क्लेश नष्ट हो जाते हैं। कालविवेककार ने लिखा है :

सुवर्णनिर्मितं नागं सतिलं कांस्यभाजनम्।
सदक्षिणं सवस्त्रं च ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥
सौवर्णं राजतं वापि बिम्बं कृत्वा स्वशक्तितः।
उपरागभवक्लेशच्छिदे विप्राय कल्पयेत्॥

अपने सामर्थ्य के अनुसार चाँदी के सर्पबिम्ब का भी दान किया जा सकता है।

'भार्गवार्चनदीपिका' के ज्योतिःसार में नागबिम्ब-दान की विधि और विस्तार से लिखी गई है :

सौवर्णं कारयेत् नागं पलेनाथ पलार्धतः।
तदर्धेन तदर्धेन फणायां मौक्तिके न्यसेत्॥
ताम्रपात्रे निधायाथ घृतपूर्णे विशेषतः।
कांस्ये वा कान्तलौहे वा न्यस्य दद्यात्सदक्षिणम्॥

अर्थात्, सोने का नाग बनाकर और उसके फण पर मोती जड़कर घृतपूर्ण ताँबे के पात्र में उसे रखकर दक्षिणा-सहित ब्राह्मण को देना चाहिए। सामर्थ्य के अनुसार ताँबे के स्थान पर काँसे या लोहे के पात्र में भी रखकर दान किया जा सकता है।

चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण से प्रभावित व्यक्ति के लिए भी नागपूजा और नागबिम्ब-दान की विधि बताई गई है :

चन्द्रग्रहे तु रूप्यस्य बिम्बं दद्यात्सदक्षिणम्।
नागं रुक्ममयं सूर्यं ग्रहे बिम्बं च हेमजम्।
तुरङ्गरथगो भूमिः तिल-सर्पिश्च काञ्चनम्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस नागबिम्ब-दानविधि के मन्त्र भी हैं, जिसे पढ़कर ब्राह्मण को नागबिम्ब का दान किया जाता है :

तमोमय महाभीम सोमसूर्य-विमर्दन।
हेमतारप्रदानेन मम शान्तिप्रदो भव॥
विधुन्तुद नमस्तुभ्यं सिंहिकानन्दनाच्युत।
दानेनानेन नागस्य रक्ष मां वेधजाद्भयात्॥

नागपूजा की विधि भारत के प्रायः सभी प्रदेशों में विभिन्न रूपों में प्रचलित है। यों तो हिन्दुओं के अधिकांश पर्वों में घर-आँगन और घर के दरवाजे को गोबर से लीपकर आटे और विभिन्न रंगों, फूलों से चौकने और सुसज्जित करने की परिपाटी है, किन्तु उत्तर की अपेक्षा दक्षिणवासी भारतीयों तथा विशेषतः असम, छोटानागपुर के आदिवासियों में घर के दरवाजे पर विभिन्न चित्रों से चौकने की परिपाटी है। आदिवासी अपने घरों को चौकते समय नाग की विभिन्न आकृतियों के चित्र अवश्य बनाते हैं। नागपंचमी के दिन विशेष रूप से सर्वत्र नाग के चित्र बनाये जाते हैं। उस दिन दूध और धान का लावा खाया जाता है। मिट्टी के पात्र (ढकनी) में दूध और धान का लावा सर्पदेवता के लिए घर के किसी कोने में, देवगृह में अथवा आँगन के बीच तुलसी-चौरे पर, गोबर का ढूह बनाकर उसपर रख दिया जाता है। हर गाँव के साथ जहाँ ठाकुरबाड़ी, देवमन्दिर, महादेवस्थान, शीतलामन्दिर या देवीस्थान देखा जाता है, वहीं नागदेवता का पूजास्थान—विषहर-स्थान भी होता है। वहाँ वटवृक्ष के नीचे मिट्टी की कुछ पिण्डियाँ और उनपर साँपों के केंचुल विशेष रूप से रखे रहते हैं। नागपंचमी के दिन गाँवों के सभी निवासी दूध और धान के लावा के साथ आते हैं और सर्पपूजा करते हैं।

नागपूजा से सम्बन्धित अनेक लोककथाएँ तो प्रचलित हैं ही, 'व्रतार्क' में भी इससे सम्बन्धित विधि उल्लेख हुआ है :

महादेवजी पार्वती से कहते हैं कि हे पार्वती! श्रावण मास की शुक्ल पंचमी अतीव पुण्यतम है। बारह वर्ष तक जो इस नागपंचमी व्रत को करता है, वह सभी प्रकार के विषों से मुक्त हो जाता है। चाँदी, सुवर्ण या लकड़ी अथवा मिट्टी का नाग बनवाकर पंचमी में पाँच पंचफण नागों की शतदल-कमल और गन्ध-धूप से पूजा करे। घृत और जौ के बने लड्डू से ब्राह्मणों को भोजन कराके अनन्तवासुकि, शेषपद्मकमल, कर्कोटक, अश्वतर, धृतराष्ट्र, शंखपाल, कालिय, तक्षक, पिङ्गल—इन नवों नागों की पूजा करके, व्रत के अन्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में पारण करे और दूध से मिश्रित वस्तु ब्राह्मण को भोजन कराये और सुवर्ण से बनाये नाग और गौ दान में दे। भक्तिपूर्वक नागों की पूजा करने से सभी प्रकार के विषदोष नष्ट हो जाते हैं। भविष्योत्तरपुराण में भी नागपंचमी-व्रत की विधि निम्नलिखित रूप में बताई गई है :

सुमन्त ऋषि कहते हैं—हे राजन्! नाग के काटने से मरा हुआ अधोगति को प्राप्त होता है और वह दूसरे जन्म में निर्विष सर्प होता है। राजा शतानीक के यह पूछने पर कि जिसके पिता, भाई, कन्या या स्त्री को सर्प काटे, तो भगवन्! यह कृपया बताइए कि मोक्ष के लिए उसे दान, व्रत या उपवास किस विधि से करना चाहिए। शतानीक के प्रश्न के उत्तर में ऋषि सुमन्त ने कहा कि भली भाँति बलवर्द्धनी नागपंचमी व्रत को वर्ष-पर्यन्त करे। इस व्रत में दिन अथवा रात्रि में सिर्फ एक बार भोजन करे। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को नागपूजा नित्य सुगति की कामना से करे। चतुर्थी के दिन एक बार भोजन करके, पंचमी के दिन रात्रि में भोजन करे। चाँदी या सुवर्ण का नाग अथवा मिट्टी या लकड़ी का सर्प बनाकर सामर्थ्य के अनुकूल पंचफण नाग को दुग्ध से स्नान कराके शतदल-पद्म, पुष्प, चन्दन और नैवेद्य से पूजा करे। तक्षक और पिंगल इन नागों की महीने-महीने में क्रम से पूजा करके पंचमी में नक्तव्रत करे और हे राजन्! श्रावण मास में यह पूजा बारह बार करके वर्ष के अन्त में महाभोज करके इतिहासवेत्ता ब्राह्मण अथवा यति को भक्तिपूर्वक कांचनचित्रित नाग और सम्पूर्ण सामग्री-सहित सवत्सा गौ दान में दे, तो उससे नागदेवता प्रसन्न होकर मोक्ष प्रदान करते हैं। नागपूजा के समय पठनीय मन्त्र है :

सर्वगं सर्वधातारमनन्तमपराजितम्।
ये केचिन्मे कुले सर्पैः दष्टाः प्राप्तास्त्वधोगतिम्।
व्रतदानेन गोविन्द मुक्तिभाजो भवन्तु ते॥

इस मन्त्र से अक्षत और सफेद चन्दन से मिश्रित जल, जल में छोड़े। इस विधि से पूजा करने से जो सर्पदंश से मरे हैं, उन्हें स्वर्ग मिलता है और उनके कुल का उद्धार होता है।

जो नागपंचमी की रात्रि में विशेष विधि से नागों की पूजा करता है, उसके घर में नागदेवता अभयदाता होते हैं और सभी प्रकार के भयों से उसकी रक्षा करते रहते हैं।

नागपूजा की यह विधि प्रायः भारत के सभी प्रदेशों में और जातियों में प्रचलित है। इससे सम्बन्धित दो लोककथाएँ भी हैं :

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण देश में एक राजा के सात पुत्र थे। एक-एक कर राजा ने अपने छः पुत्रों की शादी की। वधुओं को साथ लेकर मार्ग में जाते समय गाँव के बाहर निकटवर्त्ती वटवृक्ष के नीचे जब वे विश्राम कर रहे थे, अर्द्धरात्रि में सर्पदंश से सभी की मृत्यु हो गई। सातवें पुत्र का परिणय जिस कन्या से हुआ, वह सभी की मृत्यु की बात जानती थी। वटवृक्ष के नीचे पहुँचकर उसने निर्णय कर लिया कि आज रहस्य का पता लगाऊँगी। अपने दृढ़ निश्चय के अनुसार वह रात भर जागकर दुर्घटना की बाट जोहती रही। अर्धनिशा में उसने देखा विशाल वटवृक्ष की शाखाओं पर फुँफकारते हुए सर्पदेवता को। जब वह नाग समीप आया, देवी खड़ी हो गई और स्तुतिपूर्वक निवेदन किया कि मेरे पतिदेव का प्राण लेने से आपको क्या मिलेगा, इनका क्या अपराध है। सर्पदेव ने रहस्योद्घाटन करते हुए बताया कि इसके पिता ने नागपूजा नहीं की है। विवाह के समय भी मेरा आवाहन नहीं हुआ। उस महिला के द्वारा विधिपूर्वक विहित नागपूजा को स्वीकार करने तथा पिता के द्वारा प्रायश्चित्त कराने का वादा जान लेने के पश्चात् नाग ने उसके पति के प्राणों की भीख दी। दोनों प्रसन्न घर गये और प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला पंचमी को विधिपूर्वक दूध-लावा समर्पित कर नागपूजन करने लगे।

एक दूसरी कथा अधिक महत्त्वपूर्ण और विशेष लोकविश्रुत है—सती बिहुला की गाथा इस अवसर पर विशेष रूप से गाई जाती है। नागपंचमी के दिन महिलाएँ बैठकर बिहुला की कथा आपस में कहती-सुनती हैं। चाँद सौदागर के पुत्र बाला लखीन्द्र नामक एक ऐश्वर्यशाली व्यक्ति का परिणय परम सुन्दरी राजकुमारी बिहुला के साथ सम्पन्न हुआ, किन्तु उसके पिता कुलपरम्परागत नागपूजा प्रमादवश भूल गये। सर्पों की अधिष्ठात्री देवी विषहरी ने अपना अपमान समझा और सर्वाधिक भयंकर विष के साथ नाग को भेजा। किन्तु ग्राम के निकट आने पर एक सरोवर के समीप श्रान्त नाग, विष की पोटली को रखकर सो गया। नाग को सोया हुआ देखकर बिच्छू, चींटी, गिरगिट आदि विभिन्न जन्तु आये और उस विष की पोटली को मिल-जुलकर खा गये। इन जन्तुओं में जो थोड़ा-बहुत विष है, वह उसी नाग का है। और वह विषहीन नाग ढोंढ़ा नाम से विख्यात हुआ, जिसका काटना प्रभावकारी नहीं होता है। विषहरी देवी ने इसके बाद गेहुमन नाग को भेजा। फुँफकारता हुआ जब वह नाग आया, तब दम्पति को कोहवर में पर्यंकशायी, देखकर ऊपर पहुँचकर डँसने का उपाय सोचने लगा। पलँग से नीचे लटकी वधू की वेणी का सहारा लेकर वह पलंग पर पहुँचा और पुरुष के बगल में, उससे दबकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे काटकर लौट आया। अपने पति को मरा देख बिहुला देवी अपने पति को एक मंजूषा में रखकर प्राण के लिए गंगा-धारा में बह चली। मार्ग में सती बिहुला को गोदा घटवार मिला। मार्गावरोध के पश्चात् उसने सती को समझाया, मृत पति को छोड़ अपने साथ चलने का प्रलोभन दिया, किन्तु अपने मार्ग से अडिग बिहुला आगे बढ़ी। मार्ग में जोकासेनी घाट और बोचासेनी घाट पर रोके जाने पर वह नमक-चूने से जोंक को और हल्दी से बोचे को मार्ग से हटाकर अपने लक्ष्य की ओर चली। अन्त में दृढप्रतिज्ञ स्त्री के सामने विषहरी देवी प्रकट हुई और उसने उसे पिता की भूल का ज्ञान कराया। सती ने विषहरी देवी की पूजा की और अपने पति को लेकर घर लौटी। इसीलिए नवविवाहिता स्त्रियाँ इस दिन विशेष रूप से बिहुला-कथा का पारायण करती हुई व्रतोपवासपूर्वक नाग की पूजा करती हैं। शादी में कोहवर में जो चित्र अंकित किये जाते हैं, उसमें सर्प के चित्र विशेष रूप से बनाये जाते हैं। विवाह-मण्डप में लाजाहोम—भाँवर से अवशिष्ट धान की खील कोहवर में रखी रहती है।

भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में भी नागपूजा होती है। जापान में तो साँपों की पूजा करते और उन्हें खाते भी हैं। जापान में, सावन की नागपंचमी के समान ही, जुलाई मास में 'ओबोन' नामक एक धार्मिक त्यौहार मनाया जाता है, जिसमें एक वेदी बनाकर साँप मारनेवाला उसपर भेंट चढ़ाता है। इस त्यौहार में परलोकगत आत्माओं का आवाहन किया जाता है। ग्रीक-पुराणों में ओषधियों का देवता 'एसकुलापियस' को माना जाता है। उनकी मूर्त्ति के हाथ में जो दण्ड दिखाया गया है, उसमें दुहरे सर्प लिपटे दिखाये गये हैं। चिकित्सक का परम्परागत चिह्न और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की सेना के ओषधि-विभाग का चिह्न भी 'काडूसियम' है। जिसमें एक दण्ड में साँप का जोड़ा लिपटा दिखाया गया है।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि प्राय: सर्वत्र नागों की पूजा अथवा प्रतिष्ठा या प्रतीक के रूप में मानने की परिपाटी प्रचलित है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श को संस्कृति की मूल प्रतिष्ठा माननेवाली भारतीय जाति में तो नर और नाग के प्रति तथा चींटी से साँप तक को सम्मानित और अपना उपास्य देव मानने का विधान उसकी उदार, सांस्कृतिक चेतना का परिचायक है।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगही मुहावरे

मुहावरे भाषा की अभिव्यंजना-शक्ति में वृद्धि तो करते ही हैं, उसमें गति और प्रवाह लाकर उसे सजीव भी बना देते हैं। सीधी-सादी शब्दव्यापी अभिधा की परिधि से निकालकर व्यंजना की टेढ़ी-मेढ़ी, किन्तु हरी-भरी सुरम्य वाटिका में पहुँचा देना ही मुहावरों का कार्य अथवा प्रयोजन है। सहस्रशः शब्दों से युक्त अभिधा के विस्तृत पृष्ठों से जिन भागों को समझकर भी हम आनन्द नहीं ले पाते हैं, अभिव्यंजना के मात्र एक वाक्य के मुहावरे से ही वक्ता के अभिप्राय को समझ जाते हैं, मुहावरों के वाक्य-चमत्कार से आनन्द-विभोर हो झूम भी उठते हैं। हर्ष, शोक, क्रोध, घृणा आदि भावों और करुण, बीभत्स, शृंगार आदि रसों के वातावरण में मानसिक स्थिति को, जीवन की परिस्थिति को जिस शब्दचातुरी से मुहावरों द्वारा हम व्यक्त करते हैं, वह केवल शब्दों से सम्भव नहीं। यही कारण है कि हिन्दी की अपेक्षा उर्दू के लेखक अपनी रचनाओं में चुस्त मुहावरों का प्रयोग कर अपने पाठक और श्रोता पर जैसी सीधी चोट करते हैं, अधिकांश हिन्दी-लेखक नहीं कर पाते। प्राचीन संस्कृत-काव्यों और नाटकों के अध्ययन से तो यह और भी स्पष्ट हो जाता है। भास, कालिदास, भारवि, माघ और भवभूति के काव्यों तथा नाटकों में भी अनेक मुहावरे प्रयुक्त हैं। सामान्य मुहावरों के अतिरिक्त बहुत ऐसे हैं, जिनका प्रयोग केवल स्त्री-समाज में ही होता है। साथ ही कुछ ऐसे भी हैं, जिनका प्रयोग सिर्फ पुरुष ही करते हैं। और, कुछ मुहावरे जन-जीवन में सहस्रशः उदाहृत मिलते हैं। उन कवियों ने प्रभावशाली व्यंग्यप्रधान मुहावरेदार अभिव्यक्ति से अपने वाचक के मन को बरबस खींच लिया है, साथ ही कुछ ऐसे भी मुहावरे होते हैं, जिनका धार्मिक रीति-रिवाजों और विधि-विधानों में प्रयोग किया जाता है। वस्तुतः, मुहावरे जनता के जीवन की विविधता के अनुरूप ही विभिन्न प्रकार के होते हैं। विशिष्ट जनों की अपेक्षा सामान्य जनों में, सभ्य भाषा की अपेक्षा लोकभाषा में कहावतों और मुहावरों का प्रयोग स्वच्छन्द और बेरोक-टोक होता है।

हजारों-हजार वर्षों से लोकभाषाएँ लोककण्ठों से निकलती चली आ रही हैं। इसलिए उनमें मुहावरों का उन्मुक्त प्रयोग साहित्य की पिटी-पिटाई भाषा से भिन्न स्वच्छन्दता और प्रगल्भता से होता आ रहा है। प्रायः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सभी लोकभाषाओं के मुहावरे एक जैसे होते हैं, यदि उनकी भाषाओं की भिन्नता को अलग कर दिया जाय तो भाव और ध्वनि में वे एकरूप साबित होंगे। मुहावरे जन-जीवन के प्रवाह से छनकर प्रांजल और स्वच्छ होकर आते हैं। उनमें जनता की पैनी दृष्टि उभरी रहती है। वे जन-साधारण के ऊँच-नीच, भेद-भाव, गुण-अवगुण, हर्ष-विषाद आदि के प्रतिरूप होते हैं। अतएव, भाषा की विभिन्नता में भी उनमें भाव की समता बनी रहती है।

मगही-भाषा की अपनी पूर्व-संचित परम्परा आज साहित्य के रूप में वर्त्तमान नहीं है। आज की मगही अपने प्राचीन मूल रूप से बहुत दूर आ गई है। इसीलिए मंगही में साहित्य का अभाव तो अवश्य ही देखने में आता है, किन्तु परम्परा की अविच्छिन्नता में कटे-छँटे रूप में भी लोकभाषा का प्रवाह सतत प्रवाहित होता ही आ रहा है। यह मगध-प्रदेश सैकड़ों वर्षों तक राजनीति और संस्कृति के उत्थान-पतन का केन्द्र रहा है, अत: यहाँ की भाषा से सभी बाहरी भाषाओं का सम्पर्क और संगम होता रहा है। यही कारण है कि इसके रूप में बहुत-सी भाषाएँ अपना रूप देख पाती हैं। दूसरी भाषाओं के सम्पर्क से इसमें मिश्रण हुए और उसके चलते भाषा में निखार भी आया और निखार आज भी देखने को मिलता है।

बहुत दिनों के संघर्षों और तूफानों का सामना करने के बाद मगही क्षेत्र का जन-जीवन शान्त और बाहरी सीमाओं से संकुचित होकर एक सीमित परिधि में बह रहा है। इसमें वर्षा के प्रवाह के निकल जाने के पश्चात् शारदीय जलधारा की स्वच्छता, प्रांजलता और सौम्यता है। इसमें गति की स्थिरता है और जीवन की दीर्घ अवधि की अर्जित अनुभव की सहज गम्भीरता भी है। यही कारण है कि अन्य बोलियों की तरह इसमें जीवन के यौवन की रवानी नहीं है।

यहाँ मैं मगही मुहावरों के कुछ प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ। इन्हें सामान्य, स्त्रीविषयक, संख्याविषयक, भोजनविषयक, रोगादिविषयक, कृषि एवं विभिन्न पेशाविषयक वर्गों में बाँटा जा सकता है। 'लंका जीत के अयोध्या आवैत रस्ता में राम भरथ से अँकवारे भेंटलथिन, चारों तरफ फूल-पान बरसे लगलै अउर भरथजी के हिरदैया में आनन्द के सोत बहे लगलै, उहे घड़ी सीताजी अउर लछमनजी टुकुर-टुकुर ताकलखिन।' इन वाक्यों में—'अँकवारे भेंटलथिन', 'फूल-पान बरसे लगलै', 'सोत बहे लगलै' और 'टुकुर-टुकुर ताकलखिन' मुहावरे हैं। इनसे प्रसन्नता में आलिंगन के साथ मिलना, चारों ओर प्रसन्नता छाना, आनन्द का उमड़ जाना और निर्दोष तथा निश्चेष्ट दृष्टि से देखते रहने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का व्यंग्यार्थ ध्वनित होता है। इसी प्रकार स्त्री-विषयक मुहावरों में 'अँचरा पसारल, अँचरा-पसार के लेवल, माँग जरल, भरल-पुरल रहो' आदि मुहावरों में क्रमशः दुआ को प्रसन्नता से लेना और सौभाग्य बने रहने का आशीर्वाद व्यंग्यार्थ से परिलक्षित होता है। इसमें स्त्री के जीवन का ऊँच-नीच, आशा-निराशा, आक्रोश और आशीष प्रतिध्वनित हो रहे हैं। 'बाबू साहब के भैया के बिआह कि होलै कि केत्ते के हँड़िया सोंधावल; लोग के नेवता जाग गेलै; अउर जेकर घर में कहियो न पेट पुजाइल, ऊहो इ तीन दिन तक मलगजरी उड़ैलक।' मुहावरों से समाज का बाहरी और भीतरी चित्र प्रस्तुत हो जाता है। ग्रामीण जीवन की फाकाकशी और उत्सवों के समय में तीन दिन का मौज जितना इस मुहावरेदार वाक्य से स्पष्ट होता है, उतना सीधी-सादी अभिधा-प्रधान भाषा से नहीं।

ग्रहों और नक्षत्रों के फेर में पड़ी हुई, मनुष्य की विशेष मनोदशा सामान्य जीवन में मुहावरे के रूप में इस प्रकार चस्पाँ हो जाती है कि वस्तुतः उसे ग्रहदशा भासित होने लग जाती है। जैसे—'सतइसा के फेर में पड़ल, गरह के फेर में पड़ल', बुरी तरह उलझना। यहाँ 'सतइसा' और 'गरह' ज्योतिष की वस्तु है, किन्तु ग्रामीण जीवन में ये इस तरह आ गये हैं कि किसी भी ग्रह में पड़ने पर लोग पूरी जानकारी से इसका प्रयोग करते हैं और मुहावरों से यह स्पष्ट होता है कि अपनी बात को कहने का यह सरल उपाय है। जैसे—ये संख्याएँ गिनती के लिए हैं, किन्तु इनका प्रयोग इस प्रकार हुआ है कि प्रतीत होता है कि ये वस्तुतः मुहावरे हैं और इनसे जीवन के उत्कर्ष और अपकर्ष की अनुभूति हठात् हो उठती है। जैसे—तेरहो निनान करल, सैया निनानबे होअल, एक से एकैस होअल, छौ-पाँच करल, नौ-छौ करल आदि मुहावरों में क्रमशः अपमानित होना, दिनानुदिन अवनति पाना, फलना-फूलना, बहानेबाजी करना और अन्तिम निर्णय कर देना आदि अर्थ अभिव्यक्त होते हैं। यहाँ 'सैया-निनानबे' उल्टी गिनती है। बच्चों को गणना सिखाते समय अनुलोम-क्रम से एक से सौ तक और पुनः प्रतिलोम क्रम से सौ से एक तक गिनती सिखाई जाती है। यह एक से सौ तक का चढ़ाव और पुनः सौ से एक तक का उतार—जीवन के इस चढ़ाव-उतार को इस छोटे से मुहावरों में किस खूबी से व्यक्त किया गया है! इसी प्रकार 'एक से एकैस होवल' में एक से इक्कीस होना—'एकोहं बहु स्याम'—फलने-फूलने का अर्थ अभिव्यंजित है एवं पन्द्रह की विषय-संख्या को दो जगह पर बाँटने के लिए 'नौ-छौ' के मुहावरे से बाँटने का प्रयोग कितना सुन्दर और कितना उपयुक्त है!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ऐसे मुहावरे हैं, जो अभिधा से कृषि को और व्यंजना से मानव-जीवन की दशा को व्यक्त करते हैं, जैसे—'कोदो बूनल', 'पानी में दहल' और 'हथिया के मारल' आदि में बुराई करना, तकलीफ में होना आदि ध्वनित होता है। लोकजीवन का एक बहुत चुस्त मुहावरा है—'घोंघा में पका के सितुआ में खायल', अर्थात् गुप-चुप कोई काम कर लेना। इस अभिव्यक्ति के लिए घोंघा और सितुआ से बढ़कर अधिक उपयुक्त और कौन साधन हो सकता था। कुछ ऐसे भी मुहावरे हैं, जिनमें आधुनिक शब्दों की छाप लग गई है। जैसे—'हुलिया टैट होवल', अर्थात् परेशान होना और लड़ाई लगाने अथवा आग भड़काने में, 'सलाई लगावल'। यहाँ अँगरेजी का 'टाइट' शब्द लोक-जीवन में 'टैट' होकर प्रयुक्त हुआ है। इसी प्रकार 'सलाई' के आविष्कार से 'सलाई लगावल' का मुहावरा बन गया। इस तरह हम देखते हैं कि भाषा के और अंगों के साथ ही मुहावरे भी अपना जीवन-रस वर्त्तमान वातावरण से ग्रहण करते चलते हैं।

जिन मुहावरों का प्रयोग किया गया है, वे न केवल भोजपुरी और मैथिली में ही मिलेंगे, अपितु दूसरी लोकभाषाओं में भी उसी रूप में मिल सकते हैं। किन्तु मगही की अपनी विशेषता—प्रयोगसरलता और भाव-सुबोधता यहाँ इन मुहावरों में विशेष रूप से विद्यमान है। जहाँ भोजपुरी के मुहावरे जीवन की तरंगों को ठोकर देकर प्रतिध्वनित करते-से और मैथिली के मुहावरे विद्वत्ता की शालीनता और दुरूहता को व्यक्त करते-से दीखते हैं, वहीं मगही के मुहावरे सरल, सौम्य और प्रांजल प्रतीत होते हैं। इनमें जीवन की गति है, अनुरक्ति है और है भाषा की स्निग्धता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहावतों में लोकजीवन

सरल भाषा, प्रभावोत्पादक शैली और लोकरंजन ही कहावतों की विशेषता है।

कहावतों का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। मानव-जीवन से सम्बन्ध रखनेवाला कौन-सा ऐसा विभाग है, जो उनके दायरे के भीतर न आया हो? वे जीवन के सभी प्रकार के विविध रंगों को लिये हुए मिलती हैं। उनमें कहीं गम्भीर अनुभव-जन्य चातुर्य भरा है, तो कहीं प्रतिदिन के गृहस्थ-जीवन का पथ-प्रदर्शक व्यावहारिक ज्ञान छलछला रहा है। लोक-साहित्य के अन्यान्य अंगों की भाँति कहावतें भी बहुत प्राचीन हैं। लिखित साहित्य का जन्म होने के बहुत पूर्व उनकी उत्पत्ति हो चुकी थी। कहावतों का सम्बन्ध स्वाभाविक जीवन से अधिक है। कहावतें जाति के जिन्दादिल जीवन की सूचक होती हैं। भाषा में सुन्दरता, सरसता और चुस्ती कहावतों से आती है। कहावतों के प्रयोग से लेखों और भाषणों में न केवल माधुर्य की अभिवृद्धि होती है, अपितु भाषा सजीव और प्रभावोत्पादक बन जाती है। कहावतों का चोखापन और अनोखापन उन्हें लोकप्रिय बनाता है और उनमें अन्तर्निहित हमारा व्यावहारिक जीवन ही उन्हें लोकमान्यता प्रदान करता है। अनुभव जब सर्वजनीन हो जाता है, सबकी बुद्धि और मन को प्रभावित करने में समर्थ हो जाता है, तभी कहावत के रूप में उसका जन्म होता है। उत्साह और जिन्दादिली कहावत के जनन में सहायक होते हैं। दीर्घकालीन चतुराई से चुने हुए छोटे-छोटे कथन, व्यावहारिक जीवन में मार्गदर्शक वचन ही सर्वथा जनता की अपनी भाषा में सर्वमान्य सत्य को थोड़े शब्दों में प्रकट करते हुए कहावत का रूप धारण करते हैं।

ऋग्वेद से अबतक के भारतीय साहित्य में जो कहावतों का रूप उपलब्ध है, उनसे हम आसानी से जनसमाज के लोकजीवन का अथवा समाज के व्यावहारिक रूप का दर्शन कर सकते हैं। ऋग्वेद और ब्राह्मणग्रन्थ में :

नानानं वा उ नो धियो विव्रतानि जनानाम्[1] में तथा 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति सालावृकाणां हृदयान्येतेऽपि'[2] में और 'अक्षैर्मा दीव्यः, कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः'[3] में समान रूप से लोक-

१. ऋग्० ९.११२.१; २. शत० ब्रा० ११.५.१.९; ३. ऋग्० १०.३४.१३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जीवन परिलक्षित हुआ है। उपनिषद्, ब्राह्मणग्रन्थ, महाभारत, अष्टादशपुराण, बौद्धजातक, चाणक्यसूत्र और पंचतन्त्र आदि में लोकजीवन को अतिरंजित करनेवाली सहस्रशः लोकोक्तियाँ प्रयुक्त हुई हैं, जिनमें :

'एको हि दोषो गुणसंनिपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवांकः'; 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'; 'कः करं प्रसारयेत् पन्नगगरगुरूच्चये'; 'न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्'; 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'; 'कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु'; 'के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः'[१] आदि अति प्रचलित हैं।

आज की असंख्य कहावतों ने संस्कृत और प्राकृत-भाषाओं में प्रयुक्त लोकोक्तियों से लोकजीवन को प्रभावित करने का उत्तराधिकार प्राप्त किया है। संस्कृत-साहित्य के अध्येता साधारण बातचीत के समारम्भ में काकतालीय, अजाकृपाणीय, अरण्यरोदन, अन्धदर्पण आदि सैकड़ों न्यायों के रूप में संस्कृत की चुस्त कहावतों का प्रयोग करते हैं। राजशेखर का 'हत्थकंकणे किं दप्पणेण पेक्खीअदि' हिन्दी में 'हाथ कंगन को आरसी क्या' के रूप में बहुप्रचलित हो गया है। आज हम बड़ी सरलता से कहते हैं—'अकल बड़ी की भैंस'; अर्थात् हम बुद्धि की महत्ता परिमाण-कल्पना से करते हैं, किन्तु चाणक्य ने एक सूत्र में कहा है—बुद्धि असंख्य सेनाओं से बढ़कर है। 'न क्षुधार्त्तोऽपि सिंहस्तृणं चरति', 'आयसैरायसश्छेद्यः', 'श्वो मयूरादद्य कपोतो वरः' आदि कथन कहावत ही हैं। इस प्रकार, हम स्पष्ट देखते हैं कि वैदिक काल से आजतक के साहित्य में कहावतों की यह परम्परा अबाध गति से चली आ रही है और वस्तुतः व्यावहारिक जीवन के दर्पण के रूप में यह बहुमानित है। कालिदास, भारवि, माघ, श्रीहर्ष आदि संस्कृत-कवियों ने तथा कबीर, तुलसी, सूर, जायसी आदि हिन्दी-कवियों ने कहावतों के प्रयोग से अपनी भाषा के गागर में सागर भर दिया है।

दर्शन-ग्रन्थों के गूढ़ सिद्धान्त भी कहावतों में सरल ढंग से व्यक्त किये हुए मिलेंगे। 'जैसी करनी वैसी भरनी' अथवा 'अपनी करनी पार उतरनी' या 'जो जस करिय सो तस फल चाखा' आदि में दार्शनिक सारगर्भ उक्तियाँ हैं।

गार्हस्थ्य-जीवन में कई ऐसे पारिवारिक संकट के क्षण आते हैं, जब मानव-प्रकृति अति चंचल हो उठती है। उन अवस्थाओं की भूमिका में आर्थिक, सामाजिक, जातिगत, पारिवारिक तथा कौटुम्बिक विषमताएँ होती हैं। 'अकेला पूत कमाई करे, घर का करे या कचहरी करे' में घर में कार्य करनेवाले व्यक्ति के एकाकीपन को तथा 'अटका बनिया देय उधार' में

१. मेघदूत, पूर्वमेघ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य की स्वार्थपरता को एवं स्वार्थसिद्धि के लिए मानव की अत्यन्त हीन कार्यतत्परता को 'अपनी गरज में लोग गधा चराते हैं' में स्पष्ट अभिव्यंजित किया है।

यों तो 'अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग' गानेवाले ही तो अनुशासनविहीन जीवन यापित करते हुए स्वार्थान्ध होकर—'अपनी चिलम भरने को दूसरे का झोपड़ा जलाते हैं' और कोई-कोई दुष्ट तो दूसरे का काम बिगाड़ने के लिए अपनी भी क्षति करके 'अपनी नाक कटे तो कटे, दूसरे का सगुन तो बिगड़े' को चरितार्थ कर देते हैं।

किसी के दिवंगत होने पर उसके कुटुम्बियों को सान्त्वना देने के लिए 'अमरौती खाकर कोई नहीं आया' कहावत कितना प्राणवन्त है। अमीर और गरीब तथा सबल और निर्बल की भावना आज अधिक जागरित हो गई है, इसीलिए 'अबरा की जोरू सबकी भौजाई' एवं 'अमीर को जान प्यारी फकीर को एकदम भारी', 'आई माई को काजर नहीं, बिलाई को भर माँग', 'इराकी पर जोर न चला, गधी के कान उमेठें', 'करे कल्लू भरे उल्लू', 'गरीबों ने रोजे रखा तो दिन ही बड़े हो गये' आदि कहावत अतिप्रयुक्त हैं। 'कभी घी घना, कभी मुट्ठी भर चना, कभी वह भी मना', 'खेती खसम सेती', 'जहाँ चार बासन होंगे, वहीं खड़केंगे', 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' आदि कहावत गार्हस्थ्य-जीवन की अनेक परिस्थितियों तथा ज्वलन्त समस्याओं के प्राणवन्त कथन हैं। पढ़ने-लिखने से ही कोई लौकिक व्यवहार में प्रवीण नहीं हो जाता। इस स्थिति को—'पढ़ाये पूत से दरबार नहीं होता' कहावत में जैसी अभिव्यक्ति मिली है, साधारण भाषा में वह नहीं मिल पाती।

भारतीय समाज में गौने के पहले ससुराल जाना लोकमर्यादा के विपरीत माना जाता है। इस सम्बन्ध में घाघ की यह उक्ति :

बिन गौने ससुरारी जाय।
बिना माघ घिउ-खिचड़ी खाय॥
बिन बरखा के पहिरे पौवा।
घाघ कहें ये तीनों कौवा॥

जन-समाज में अत्यधिक प्रचलित है। एक मालवी कहावत में यही बात अन्य प्रकार से कही गई है :

परदेश जमाई फूल बराबर, गाम जमाई आधो।
घरजमाई गधा बराबर, मन आवे जब लादो॥

जिस प्रकार विज्ञपुरुष सम्भाषण में तथा कथोपकथन में सामान्य रूप से वैदिक अथवा शास्त्रीय अभ्युक्तियों या उल्लेखनीय वाक्यांशों से अपने कथन को परिपुष्ट करते हैं, उसी प्रकार साधारण जन अपने लौकिक जीवन में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपनी उक्तियों की पुष्टि और भड्डरी जैसे ज्ञात एवं अनेक अज्ञात कवियों की कहावतों से सम्पुष्ट कर देते हैं। गाँवों में अनेक ऐसे कथाकोविद ग्रामवृद्ध अब भी मिलते हैं, जिनके समस्त कथन क्रियापदों तथा संज्ञा-सर्वनामातिरिक्त कहावतों से अलंकृत होते हैं। सामाजिक जीवन में ममत्वहीन विरक्त मनुष्य 'आई मौज फकीर की, दिया झोपड़ा फूँक' वाले सिद्धान्त के भी मिलते हैं, जो सर्वस्व दान कर देते हैं, तो 'अरहर की टट्टी और गुजराती ताला' वाले विकृत मस्तिष्क के लोग भी हैं।

मन के उत्तेजित अथवा क्रोधाभिभूत होने पर जब कोई अण्ड-बण्ड काम करने लगता है, तब कहा जाता है—'औसर चूकी डोमनी गावे ताल बेताल'। किन्तु इस कहावत में जहाँ 'क्रोध' की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त हो रही है, वहीं 'डोमिनों' में प्रचलित नृत्यादि के प्रति भी व्यंग्य है। इसी प्रकार 'कलाल के दुकान पर पानी पियो, तो भी शराब का शक होता है'; 'कद्र खो देता है हर बार का आना-जाना'; 'काजल की कोठरी में कैसाहु सयानो जाय, एक ऐब काजल को लागिहें पै लागिहें'; 'घोड़े का गिरा सँभल सकता है, नजरों का गिरा नहीं सँभलता' आदि में उपदेशात्मक भाव है।

किसी की दम्भोक्ति अथवा न्यून योग्यता के अधिक प्रदर्शन पर 'खात निबौरी दाख बतावें'; 'घी खाया बाप ने, सूँघो मेरा हाथ'; 'घटो चून चौबेर रसोई'; 'नाना के टुकड़े खावे, दादा के पोता कहावे' आदि कहावतों का प्रयोग होता है। साथ ही—'कोई मरे कोई जीवे, सुथरा घोल बतासे पीवे'; 'गरीब तेने तीन नाम, झूठा-पाजी-बेईमान'; 'चना और चुगल मुहँ लगा छूटता नहीं'; 'दलाल का दिवाला क्या, मसजित का ताला क्या'; 'पहले लिख और पीछे दे, कमती हो तो मुझसे ले'; 'फिसल पड़े तो हर गंगा'; 'फटा मन और फटा दूध फिर नहीं मिलता' आदि कहावतें जानदार हैं और ये समाज की विभिन्न अवस्थाओं से परिचय कराती हैं। जब दो ग्रामीण महिलाएँ परस्पर 'झोंटा-झोंटौअल' का दृश्य प्रस्तुत करती हुई संघर्षरत होती हैं, तब 'सूप बोले तो बोले, चलनी क्या बोले, जिसमें बहत्तर गो छेद' तथा 'सकल तीर्थ करि आई, तो भी न गई तिताई' और 'साँच को आँच क्या' का अतिशय प्रयोग करती हैं। किसी योग्य पद पर अयोग्य व्यक्ति की नियुक्ति पर हम यह सुनते हैं—'हंसा वे सो उड़ गये, कागा भये दिवान।'

संक्षिप्तता तथा तुकसाम्य उत्तम लोकोक्ति की विशेषता अवश्य है, किन्तु इनका कहावत के साथ अव्ययीभाव सम्बन्ध नहीं। बहुत-सी ऐसी भी उत्कृष्ट कहावतें हैं, जिनमें तुकसाम्य होने पर भी संक्षिप्तता नहीं है। कहावतों के वैज्ञानिक अध्ययन से बहुत से ऐतिहासिक तत्त्वों का स्पष्टीकरण हो सकता है।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्धु और हिन्दू

जो लोग यह स्वीकार करते हैं कि वेद में साक्षात् 'हिन्दू' शब्द तो नहीं मिलता, वे यह कहते हैं कि वेद में 'सिन्धु' शब्द तो है। सिन्धु से विकसित होकर 'हिन्दू' हो गया। 'स' का 'ह' हो ही जाया करता है। 'श्री' का 'ह्री', 'सिरा' का 'हिरा', 'सरित:' का 'हरित:' इसी प्रकार 'सिन्धु' का 'हिन्दू' रूप हो जाता है।

उनका यह भी कहना है कि यूनानियों ने हमें इन्दु या इण्डु कहा और हमारे देश को इण्डिया नाम दिया। इन्दु या इण्डु से विकसित होकर हिन्दू नाम हो गया। इत्सिंग ने भी इस देश का नाम हिसन-तू लिखा है। हिसन्तु का अर्थ इन्दु और हिन्दू से है। यूनानियों के समय यहाँ चन्द्रवंशी राजाओं का राज्य था, उनको इन्दुवंशी भी कहते हैं, इस कारण यूनानियों ने हमें 'इन्दु' नाम दे दिया। महमूद गजनबी के साथ अलबेरूनी नाम का विद्वान् आया था। उसने भी इस देश के वासियों को 'हिन्दू' कहा है।

इस कथन से स्पष्ट है कि हमारा 'हिन्दू' नाम दूसरों का दिया हुआ है। प्रश्न यह है कि हमारा अपना नाम क्या है? यूनानियों के समय तो हमारे देश में सूर्यवंशी राजा भी राज्य करते थे। अलबेरूनी का प्रमाण स्वीकार नहीं किया जा सकता।

इत्सिंग चीनी यात्री था। उसने अपना यात्रा-वृत्तान्त चीनी भाषा में लिखा। उसका अनुवाद श्री ज. तककुसु ने अँगरेजी में किया। ये महाशय अपनी भूमिका में लिखते हैं :

'इत्सिंग भारत को सामान्यत: पश्चिम (सी-फङ्ग) भारत के पाँच देश (वू-तियेन : Wootien), आर्यदेश (आ-ली-या-त-इ-शा) मध्य देश (नो-त-इ-त-इ-श), ब्रह्मराष्ट्र (पो-लो-मे-कुओ) या जम्बूद्वीप (चन-पू-चोऊ) कहता है। वह कहता है कि हिन्दू (हिंस-तू) नाम का प्रयोग केवल उत्तरीय जातियाँ ही करती हैं और भारत के लोग स्वयं इस बात को नहीं जानते। (श्रीसन्तराम-कृत अनुवाद, पृ० १८-१९) स्वामी हरिप्रसाद प्रयत्न करके भी किसी आर्ष ग्रन्थ में या माननीय पुराण में 'हिन्दू' नाम नहीं दिखला सके।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्यपुराण के प्रतिसर्ग पर्व के चतुर्थ खण्ड के अध्याय २१ में श्लोक है :

दशकोटयः स्मृता आर्य्या बभूवुर्बौद्धपन्थिनः ।
पञ्चलक्षास्ततः शेषाः प्रययुर्गिरिमूर्द्धनि ॥३३॥

दस करोड़ आर्य बौद्धमार्गी बन गये। उनसे बचे पाँच लाख पहाड़ (विन्ध्याचल) के शिखर पर चले गये।

यदि हमारे पूर्वज पुराणकाल में हिन्दू कहलाते होते, तो श्लोक में 'आर्या बभूवुर्बौद्धपन्थिनः' के स्थान पर 'हिन्दवो बभूवुर्बौद्धपन्थिनः' पढ़ा जाता। स्पष्ट है, पुराणकाल में हमारे पूर्वज आर्य कहलाते थे, हिन्दू नहीं।

'हिन्दू' शब्द के समर्थक कहते हैं कि वेदों में आर्यों को मारने को लिखा है। यदि हमारा नाम आर्य होता तो, आर्यों के मारने का आदेश वेद में कैसे होता? वे निम्नलिखित मन्त्र प्रस्तुत करते हैं :

त्वं ताँ इन्द्रोभयाँ अमित्रान्दासा वृत्राण्यार्या च शूर ।
वधीर्वनेव सुधितेभिरत्कैरा पृत्सु दर्षि नृणां नृतम् ॥ (ऋ. ६.३३.३)

हे इन्द्र! हे पराक्रमी! तू उन दोनों शत्रुओं को मार, जो पापात्मा दस्यु और आर्य हैं। हे नेताओं में श्रेष्ठ नेता! जंगल जैसे कुल्हाड़ों से काटे जाते हैं, वैसे तू इनको तेज किए हुए शस्त्रों से अच्छी तरह काट!

इस मन्त्र का शुद्ध अर्थ इस प्रकार है : हे इन्द्र शूरवीर! तू इन दोनों प्रकार के शत्रुओं को जो दस्यु और आर्य-रूपधारी पापी हैं, मार दे। हे नेताओं में श्रेष्ठ नेता! जैसे जंगल कुल्हाड़े से काटे जाते हैं, वैसे तू इनको लड़ाइयों में तेज़ हथियारों से काट।

ऊपर से भलेमानस आर्य और अन्दर से कपटी जैसे प्रतीत होनेवाले आर्य अत्याचारियों से मनुष्य-समाज की अधिक हानि होने की सम्भावना होती है। इष्वास इन्द्र (राजा) का कर्त्तव्य है कि वह राष्ट्र की ऐसे लोगों से रक्षा करे।

बंगाल के विख्यातनामा और स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी के कट्टर विरोधी पं० तारानाथ तर्कवाचस्पति ने 'वाचस्पत्यभिधानकोष' बनाया, जो 'शब्दकल्पद्रुम' से कई गुना बड़ा है। उसमें 'उन्होंने' हिन्दू पद पर शब्दकल्पद्रुमवाला अर्थ और मेरुतन्त्रवाला श्लोक देकर अन्त में लिखा 'अप्रमाणमिदम्', अर्थात् यह प्रमाण नहीं है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हिन्दू' शब्द के समर्थन में निम्नांकित प्रमाण भी दिये जाते हैं :

१. नाम गुणोपमतुल्यरसः हिन्दूः पातु पतिर्नः।
हिनस्ति तपसा पापान्दैहिकान् दुष्टमानसान्।
हेतिभिः शत्रुवर्गांश्च स च हिन्दुर्विधीयते ॥ (पारिजातहरण नाटक)

अर्थात् नाम तथा गुण का बराबर महत्त्व है जिसका, ऐसा जो हमारा पति हिन्दू ईश्वर है, वह हमारी रक्षा करे। तप से दैहिक और दुष्ट मानसिक पापों का और शस्त्रों से दुष्ट शत्रुओं का जो नाश करता है, उसे हिन्दू कहते हैं।

यह नाटक अलाउद्दीन खिलजी के समकालीन मिथिलानिवासी उमापति उपाध्याय का बनाया हुआ है। यह श्लोक उस नाटक में है भी नहीं। अतः इसका प्रमाण देना व्यर्थ है।

२. कालेन वलिनाच्छन्ने धर्मे कवलिते कलौ।
यवनैरवनिराक्रान्ता हिन्दवो विन्ध्यमाविशन् ॥ (कालिकापुराण)

३. यवनैरवनिराक्रान्ता हिन्दवो विन्ध्यमाविशन्।
वलिना वेदमार्गोऽयं कलिना कवलीकृतः ॥ (शार्ङ्गधरपद्धति)

ये श्लोक साधु हरिप्रसाद ने अपनी पुस्तक में उद्धृत किये हैं, किन्तु इनके पते नहीं दिये। अतः ये भी मान्य नहीं हैं। स्वामी हरिप्रसाद ने यह माना है कि रामायण, महाभारत और पुराणों में 'हिन्दू' शब्द नहीं है। वे लिखते हैं—'हम यह स्वीकार करते हैं कि उनमें (रामायण, महाभारत और पुराणों में) सिन्धु या हिन्दू नाम का उल्लेख नहीं (पृ० ५९)। इसी प्रकार पृष्ठ ६४ पर वे मानते हैं कि हमारे पूर्वज आर्य थे।

१. हीनं दूषयतीति, पृषोदरादित्वात्साधुः जातिविशेषः। (शब्दकल्प.)

२. हिन्दु हिन्दूश्च प्रसिद्धौ दुष्टानां च विघर्षणे।
रूपशालिनि दैत्यारौ राज्ञि योगिजनेऽपि च ॥ (अद्भुतकोष)

३. हिन्दुर्दुष्टनृपः प्रोक्तोऽनार्यनीतिविदूषकः।
सद्धर्मपालको विद्वान् श्रौतधर्म्मपरायणः ॥ (रामकोष)

४. हिन्दूधर्म्मप्रलोप्तारो जायन्ते चक्रवर्त्तिनः।
हीनं च दूषयत्येव हिन्दुरित्युच्यते प्रिये ॥ (मेरुतन्त्र)

अर्थात्—

१. जो हिंसा को दूषित करता है, उसे हिन्दू कहते हैं। यह शब्द पृषोदरादि गण में भी सिद्ध होता और जातिवाचक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. हिन्दु और हिन्दू ये दो शब्द हैं, जो दुष्टों को दण्ड देने में, रूपवान् देव में, राजा में और योगी जन को कहने में प्रसिद्ध हैं।

३. दुष्ट मनुष्यों को दण्ड देनेवाला, अनार्यों की नीति को दूषित करनेवाला, श्रेष्ठ धर्म का पालन करनेवाला, श्रौत-स्मार्त्त धर्म का माननेवाला विद्वान् पुरुष हिन्दू कहलाता है।

४. आगामी समय में राजा लोग हिन्दू धर्म का नाश करनेवाले होंगे और हे प्रिये पार्वति! हिन्दू लोग हिंसा को दूषित करते हैं, इसलिए इनका नाम 'हिन्दू' है।

ये सब ग्रन्थ इस देश में मुसलमानों के आने के बाद बने हैं। मुसलमानों से पहले के किसी भी ग्रन्थ में 'हिन्दू' शब्द नहीं मिलता। शब्दकल्पद्रुम, अद्भुतकोष और रामकोष को बने हुए १२५ वर्ष भी नहीं बीते। मेरुतन्त्र २-३ सौ वर्ष पुराना है, किन्तु यह भी मुसलमानी काल का है। अतः 'हिन्दू' शब्द अर्वाचीन है।

मेरुतन्त्र तथा शब्दकल्पद्रुम के 'हीनं दूषयति' वाक्य का अर्थ किया गया है—'जो हिंसा को दूषित करता है' इन दोनों प्रमाणों में 'हिंसा' पद ही नहीं है। इनमें तो 'हीनम्' पद है, जिसका अर्थ है दुर्बल, कमजोर, अर्थात् कमजोर को सतानेवाले को 'हिन्दू' कहते हैं। क्या 'हिन्दू' शब्द के समर्थकों को यह स्वीकार होगा? 'आर्यजन' तो हीनों का उद्धार और उपकार ही करते हैं।

इसी प्रकार तारीख-फीरोजशाही में गयासुद्दीन तुगलक के सम्बन्ध में लिखा है कि—'हिन्द और सिन्ध' के समस्त देश तथा पूर्व और पश्चिम के सारे राजा और सेनापति अनेक वर्षों तक उसके डर से काँपते रहे।

इससे स्पष्ट है कि हिन्दू और सिन्ध दो पृथक्-पृथक् पद हैं। यदि 'सिन्धु' से 'हिन्दू' बना होता, तो सिन्ध के साथ हिन्द शब्द का प्रयोग कभी न होता।

भविष्यपुराण में इस देश का नाम 'सिन्धुस्थान' मिलता है। इसका समाधान आवश्यक है। श्लोक यथानिर्दिष्ट रूप में है :

सिन्धोः स्थानमिति ज्ञेयं राष्ट्रमार्यस्य चोत्तमम्।
म्लेच्छस्थानं परं सिन्धोः कृतं तेन महात्मना।

अर्थ—आर्य के उत्तम राष्ट्र को सिन्धुस्थान जानना चाहिए और उस महात्मा (कश्यप) ने सिन्धु से परले स्थान को म्लेच्छस्थान कहा।

Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वचन से स्पष्ट सिद्ध है कि कम-से-कम भविष्यपुराण के निर्माण-काल में इस देश का नाम 'सिन्धुस्थान' अवश्य था।

इस श्लोक का अर्थ समझने में थोड़ी भूल हुई है। इस श्लोक से तो पता लगता है कि सिन्धु नदी के इधर आर्यराष्ट्र है और सिन्धु नदी से परे म्लेच्छस्थान है। यदि देश का नाम 'सिन्धुस्थान' होता, तो अवश्य ही इस श्लोक में 'सिन्धुस्थान' शब्द होता, किन्तु यहाँ तो 'सिन्धोः स्थानम्' शब्द है। ये दो पद हैं। देश के नाम के लिए 'सिन्धुस्थानम्' पाठ होना चाहिए था। जो लोग कहते हैं कि हमारा नाम 'आर्य' कभी नहीं था, उनको अधिक प्रमाण न देकर हम भविष्यपुराण के 'राष्ट्रमार्यस्य चोत्तमम्' वाक्यविशेष पर ध्यान देने की प्रेरणा करते हैं। जिसको लोग 'सिन्धुस्थान' बनाना चाहते हैं, वह 'आर्य का उत्तम राष्ट्र' है। यदि हमारा नाम 'आर्य' न था, तो आर्य का उत्तम राष्ट्र का क्या अर्थ?

भविष्यपुराण का बहुत बड़ा भाग महारानी विक्टोरिया के काल में बना। उसमें सण्डे, जनवरी आदि अँगरेजी दिनों और महीनों के नाम एवं विक्टोरिया-पर्यन्त अँगरेजी राजाओं के नामों का भी उल्लेख है। अतः 'सिन्धुस्थान' अर्थ प्रमाण नहीं माना जा सकता। मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में तथा पुराणों में 'आर्यावर्त्त' आदि नाम ही इस देश के मिलते हैं, उन्हें ही अपनाना चाहिए। इसपर भी यदि कहा जाय कि हमारा नाम पुरातन काल से 'हिन्दू' है, तो इससे बढ़कर दुराग्रह और क्या हो सकता है। इत्सिंग लिख रहा है कि 'हिन्दू' नाम का प्रयोग केवल उत्तरीय जातियाँ ही करती हैं। भारत के उत्तर में तुर्किस्तान (तातार) और अफगानिस्तान देश हैं। इन आक्रमणकारियों ने हमें 'हिन्दू' नाम घृणा के कारण दिया। हम उस घृणा के नाम को क्यों स्वीकार करें?

कहा जाता है कि वेद में 'सिन्धु' शब्द देश के लिए प्रयुक्त हुआ है, उस सिन्धु का विकसित रूप 'हिन्दू' है : **'अमन्दान् स्तोमान् प्रभरे मनीषा सिन्धावधि क्षियतो भाव्यस्य।'**—ऋ० १.१२६.१

किन्तु, वेद में आर्यावर्त्त या भारतवर्ष शब्द कहीं भी नहीं मिलता, अतः हमारे देश का नाम 'सिन्धु' है, जो कालान्तर में 'हिन्दू' हो गया।

वेद के उपर्युक्त मन्त्र में प्राप्य 'सिन्धु' शब्द का अर्थ नदी या सागर है। इस मन्त्र-खण्ड का अर्थ होता है—संसार रूप नदी या सागर में रहनेवाले उच्च भावना-सम्पन्न मनुष्य की मैं बुद्धिपूर्वक उत्तम स्तुतियाँ करता हूँ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद इतिहास या भूगोल की पुस्तक नहीं, जो उसमें आर्यावर्त्त या भारतवर्ष का नाम मिलता। सृष्टि के आरम्भ में जब मनुष्य इस देश में आकर बसे, तब उन्होंने इसका नाम 'आर्यावर्त्त' रखा। बहुत काल पीछे प्रतापी भारत के कारण इस देश का नाम भारतवर्ष या भरतखण्ड भी पड़ा, किन्तु 'सिन्धु' या 'हिन्दू' तो इसका नाम विदेशियों और विधर्मियों का दिया हुआ है। 'सिन्धु' से हिन्दू बनने की बात तो नितान्त अनर्गल है। जिस 'सिन्धु' नदी के कारण कुछ लोग देश का नाम 'हिन्दू' होना मानते हैं, वह 'सिन्धु' नदी सिन्धु का सिन्धु ही बनी हुई है, हिन्दू नहीं बनी। सिन्ध प्रान्त, जहाँ मुसलमानों ने पहले आक्रमण किया, आजतक सिन्ध बना हुआ है। हिन्द न बन सका। बाबर ने अपने मित्र को पत्र लिखा, जिसमें उसने सिन्ध और हिन्द पर विजय पा लेने पर परमात्मा को धन्यवाद दिया है। जैसे—'हे बाबर! दयालु प्रभु की दया के लिए सैकड़ों धन्यवाद दो; क्योंकि उसने तुझे सिन्ध, हिन्द और सैकड़ों राज्य दिये हैं। —(Akbar by Col. Malkson) पृ० ३८ की टिप्पणी का अंशानुवाद।

हमारा नाम हिन्दू नहीं, किन्तु 'आर्य' है, इसके समर्थन में नीचे कुछ और प्रमाण दिये जाते हैं :

१. पहले संकल्प को लीजिए, जिसे पौराणिक भाई प्रत्येक शुभ कर्म के आरम्भ में पढ़ते हैं :

'ओं तत्सत् श्रीब्रह्मणो द्वितीयप्रहरार्द्धे वैवस्वते मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुक..............................जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैकदेशे..............।

इसमें देश का नाम आर्यावर्त्त है। आर्यों का आवर्त्त, सदा से व्यवहार का देश। यदि हमारा नाम आर्य न होता, तो देश का नाम 'आर्यावर्त्त' कैसे होता?

२. काशी पौराणिकों का परमतीर्थ है। उसमें भी विश्वनाथ का मन्दिर मुख्य माना जाता है। पौराणिक लोग काशी को विश्वनाथपुरी भी कहते हैं। उस मन्दिर के द्वार पर संगमरमर का शिलालेख है। उसपर लिखा है : **'आर्यधर्मेतराणां प्रवेशो निषिद्धः'** यदि हमारा नाम 'हिन्दू' होता, तो 'हिन्दूधर्मेतराणां.....' शब्द होते। इस प्रकार का लेख काशी के अन्नपूर्णा-मन्दिर के बाहर भी है।

३. संवत् १९२७ विक्रमाब्द (१७९२ शकाब्द) के श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को काशी के ४६ पण्डितों ने मिलकर एक व्यवस्था-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पत्र लिखा कि हमारा नाम 'हिन्दू' नहीं है। इसमें सबसे अन्त में हस्ताक्षर करनेवाले पण्डित दुर्गादत्तजी ने लिखा :

हिन्दूशब्दो हि यवनेष्वधर्मिजनबोधकः ।
अतो नार्हन्ति तच्छब्दं बोध्यतां सकला जनाः ॥

अर्थात्, हिन्दू शब्द मुसलमानों के यहाँ अधार्मिक के लिए प्रयुक्त होता है, अतः सब मनुष्यों का यह नाम नहीं होना चाहिए।

इस व्यवस्था-पत्र पर श्रीस्वामी विशुद्धानन्द सरस्वतीजी तथा पं० बालशास्त्रीजी के भी हस्ताक्षर हैं। ये दोनों महानुभाव अपने समय में काशी के सबसे बड़े पण्डित समझे जाते थे और इन्हीं दोनों ने श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वतीजी से शास्त्रार्थ करने की ठानी थी। यदि हमारा नाम 'हिन्दू' होता, तो स्वामी दयानन्द सरस्वती की विरोधी मण्डली कभी इस नाम के विरुद्ध व्यवस्था न देती। इस प्रकार, इस व्यवस्था का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

४. महर्षि पाणिनि ने अपने शब्दानुशासन (अष्टाध्यायी) में 'आर्यो ब्राह्मणकुमारयोः' (६.२.५८) सूत्र में और अन्य कई स्थलों पर 'आर्य' शब्द का उल्लेख किया है, किन्तु 'हिन्दू' शब्द का कहीं नहीं। परम पौराणिक भट्टोजिदीक्षित ने भी 'हिन्दू' शब्द की न सिद्धि की और न कहीं उल्लेख किया।

५. अनेक ग्रन्थों में 'आर्यवाचः' और 'म्लेच्छवाचः' शब्द आते हैं, जिनका अर्थ है—आर्यों की बोलीवाले और म्लेच्छों की बोलीवाले। यदि 'आर्य' शब्द केवल गुणवाची होता, तो 'आर्यों की बोलीवाला' यह पद कैसे बनता?

६. जैनों के 'तत्त्वार्थसूत्र' में 'आर्या म्लेच्छाश्च' (अ० ३) में आर्य और म्लेच्छ वाक्य हैं। इससे भी सिद्ध होता है कि आर्य शब्द मनुष्यों के एक समुदाय का वाचक है।

वेद से प्रारम्भ करके आधुनिक संस्कृत के नाटकग्रन्थों तक में आर्य शब्द का प्रचुर प्रयोग मिलता है।

कुछ लोग यह कहते हैं कि पहले 'हिन्दू' शब्द था, पीछे उससे 'सिन्धु' शब्द बना। यह बात निस्सार, प्रमाणहीन अतः सर्वथा उपेक्षणीय है। कुछ यह कहते हैं कि अब यह नाम चल पड़ा है और बहुत व्यापक हो गया है, देश-विदेश में भी हमारा यही नाम है, अतः इसका मिटना असम्भव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। संघटन की दृष्टि से भी यह नाम अनुपयुक्त है, क्योंकि देवसमाजी, राधास्वामी, ब्रह्मसमाजी आदि सम्प्रदायों के लोग अपने-आपको 'आर्य' कहलाना पसन्द नहीं करेंगे। 'आर्य' शब्द को वे आर्यसमाजियों के लिए रूढ़ समझते हैं। 'हिन्दू' शब्द से उन्हें कोई संकोच नहीं।

कहावत है कि बुद्धि का फल हठ न करना है। जब सिद्ध हो गया कि हमारा नाम 'हिंन्दू' नहीं है, तब इसको छोड़ने में विलम्ब न करना चाहिए। आयरलैण्डवालों ने अपने देश का नाम Ireland बदलकर Eair कर दिया। फारसीवालों ने अपनी भाषा के कठिन शब्द निकालकर उसका रूप बदल दिया। जब हम सब मिलकर त्यागने का निश्चय कर लें, तब बस यह समाप्त है। रही संघटन की बात, यह भी भ्रम है। राधास्वामियों, ब्रह्मसमाजियों तथा देवसमाजियों—इन तीनों की इकट्ठी संख्या से आर्यसमाजियों की संख्या कई गुना अधिक है। जैन अपने को 'हिन्दू' कहने को तैयार नहीं, किन्तु आर्य कहलाने में वे खुश हैं। बौद्ध को भी आर्य नाम पसन्द है। 'हिन्दू' नाम वे भी पसन्द नहीं करते। 'आर्य' नाम रखने से पारसी-वर्ग भी हमारे संघटन में सम्मिलित हो सकता है। हिन्दू-महासभा के काशी-अधिवेशन में उनके सम्भ्रान्त प्रतिनिधियों ने यह कहा—कि यदि 'हिन्दू-महासभा' का नाम 'आर्य महासभा' कर दिया जाय, तो हम भी सम्मिलित हो सकते हैं। पारसियों जैसे विद्यावान् और धनसम्पन्न वर्ग का सहयोग कितना मूल्यवान् एवं हितकारी है? बौद्धों के सहयोग से भी हमें अमित शक्ति प्राप्त हो सकती है।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्ध्या क्यों और कैसे

मानव-जीवन अन्य जीव-जन्मों से भिन्न है। प्राचीन शास्त्रविदों के मत से और अर्वाचीन वैज्ञानिकों के अभिमत से यह सिद्ध हो चुका है कि जीवों की असंख्य योनियाँ हैं। काया के विभिन्न रूपों में जीवात्मा प्रकट होता है अथवा जन्म ग्रहण करता है तथा पुनः अपने ज्ञान-अज्ञान कर्म-प्रभाव से देहान्तरित होता है। मानव-चोले को छोड़ अन्य सभी योनियाँ भोगयोनियाँ हैं। मानव-शरीर कर्मयोनि है। कर्ममय जीवन के लिए ही जीवात्मा इस मानव-शरीर में आता है। किन्तु यहाँ स्पष्ट रूप से विचारणीय यह है कि पशु-पक्षी अथवा अन्य योनियों में देहधारी जीवात्मा कर्मरत नहीं है? अवश्य है। उन योनियों में निरन्तर कर्मरत अविरत कार्यसंलग्न है। परन्तु अन्य अनेकानेक योनिधारी जीवात्मा की कार्यसंलग्नता और मानवदेही जीवात्मा की कार्य-तत्परता में बहुत बड़ा भेद है।

मानव जो भी कर्म करता है, उसमें 'मनन' की, चिन्तन की, विचार की अथवा यों कहें बौद्धिकता की प्रधानता होती है। मनन करने से ही मनुष्य 'मनुष्य' कहलाता है। 'मननात् मनुष्यः'—मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पदा है 'मनन', अर्थात् चिन्तन-आत्मचिन्तन, मन की एकाग्रता और अन्तश्चिन्तन।

चिन्तन अथवा मनन के दो प्रकार अथवा भेद हैं। पहला है चिन्तन, मात्र चिन्तन, जीवन की बाहरी प्रवृत्तियों, काया से सम्बन्धित कार्यव्यापार का चिन्तन, जिसे लोक-व्यवहार की भाषा में 'चिन्ता' कहते हैं, जिसमें आत्मिक शान्ति नहीं मिलती है। दूसरा है—'अन्तश्चिन्तन' : अन्तर्मुखी होकर, समस्त कायासम्मत क्रिया-व्यापार से निश्चिन्त होकर, अपनी वृत्तियों को भीतर की ओर उन्मुख करके, कायाभिन्न आत्मा की ओर अभ्यासपूर्वक अपने सभी दैहिक अंगों को समेट करके आत्मा की ओर ले जाकर आत्मोन्मुख हो जाने का ही नाम है 'अन्तश्चिन्तन' अथवा 'आत्मचिन्तन'। इस प्रकार अपने को 'आत्मदीप' बनाकर—आत्मा से प्रकाश पाकर परमात्मपथानुयायी होना ही जीवन का चरम साध्य है।

आत्मचिन्तन अथवा अन्तश्चिन्तन के योग्य अपने को पहले बनाना होता है। अन्तर्मुखी चिन्तन को प्रारम्भ करने के लिए यह आवश्यक है कि वातावरण, समय और स्थान उसके अनुकूल हो। स्थान, समय और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातावरण अनुकूल रहता भी है और बनाया भी जाता है। प्राचीन ऋषियों ने यों तो इसके लिए नदी का तट, पहाड़ की चोटी, एकान्तस्थान और अरण्यजीवन की स्थिति को श्रेष्ठ बताया है। साथ ही प्रातः और सायं, जिस समय हमारी कार्यसंलग्नता विराम ले लेती है, उस समय हम ईश्वर-प्रेम में निमग्न होकर जप करें। उपासना बाद में। जप शक्ति है और उपासना भक्ति है। जप साधन है और उपासना साध्य है। मानव कर्ममय जीवन में अपने को रखकर ही दीर्घ जीवन प्राप्त कर सकता है। जिस प्रकार किसी मशीन या मोटरकार का यन्त्र कार्य करते-करते शक्तिहीन हो जाता है, तब उसमें शक्ति दी जाती है—बैट्री दी जाती है—चार्ज किया जाता है, उसी प्रकार हमारा यह देह दिन-रात—अहर्निश कार्यरत है। उसकी कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए, अपने को कर्मयोग्य बनाने के लिए शक्ति चाहिए। 'जप' से मानव शक्ति-सम्पन्न होता है। कार्यरत रहने से जो शक्ति या ताकत खर्च होती है; 'जप' करने से वह मिल जाती है अथवा बढ़ती है। भौतिक शरीर को पौष्टिक पदार्थों के सेवन से शक्ति मिलती है, किन्तु सूक्ष्म शरीर (जिसका सम्बन्ध मन, चित्त, मस्तिष्क, बुद्धि और हृदय से है) को पुष्ट करने के लिए सूक्ष्म पदार्थ—जप अभीप्सित है।

तीन शरीरों से जीवात्मा परिलक्षित होता है। इस भौतिक देह के अतिरिक्त दो—सूक्ष्म और कारण शरीर होते हैं। शरीर की ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ तो जाग्रत स्थिति में ही कार्य करती हैं, स्वप्न में नहीं। परन्तु तब भी हम जीवित रहते हैं। उस समय सूक्ष्म शरीर कार्य करता रहता है। स्वप्नरहित सुषुप्ति की अवस्था में कारणशरीर काम करता है। कारणशरीर और सूक्ष्म-शरीर से जीव माता के गर्भ में पहुँचकर इस काया को धारण करता है और बढ़ता है। यह सूक्ष्म शरीर आत्मा की पहली चादर है।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल-बिहार का सीमान्त-संघर्ष

भारत-विभाजन, अर्थात् स्वाधीनता के बाद से बंगाल के कुछ प्रमुख नेताओं और पत्रों ने बिहार के कुछ भाग को काटकर बंगाल में मिलाये जाने का आन्दोलन प्रारम्भ किया है। इधर कुछ दिनों से बिहार, असम और उड़ीसा प्रान्तों की नई जागृति ने बंगालियों के 'बृहत्तर बंगाल' (Greater Bengal) के सपने को भी चोट पहुँचाई है और इसीलिए पड़ोसी प्रान्तों की नई चेतना से वे घबड़ा गये हैं।

इस आन्दोलन में अखिलभारतीय काँगरेस की भाषाधार प्रान्त-निर्माण-नीति भी सहायक हुई है। काँगरेस का भाषा के आधार पर प्रान्तों के निर्माण का प्रस्ताव जहाँ दक्षिणी भारत के लिए वरदान सिद्ध हुआ है, वहीं उत्तर भारत के लिए अभिशाप सिद्ध हो रहा है। काँगरेस ने जिस समय भाषाधार प्रान्त-गठन (Languister Provinces) के आत्मनिर्णयवाले सिद्धान्त को स्वीकार किया था, उस समय दक्षिण भारत के विभिन्न भाषाभाषियों को अपने-अपने भाषा-क्षेत्र में राजनीतिक जागरण तथा विभिन्न रचनात्मक कार्यों के सुसम्पादन के लिए भाषामूलक वर्गों (यूनिट्स) में बँटने की एक राजनीतिक समस्या थी। भारत के दक्षिणी भाग को अँगरेजों ने जिस समय अपने अधिकार में किया था और विभिन्न देशी राज्यों को युद्ध में परास्त कर उनके कुछ भागों और प्रान्तों को समझौते के अनुसार देकर उन्हें सन्तुष्ट रखने का उपक्रम किया था, उस समय दक्षिण की भाषा, संस्कृति, रिवाज और उसकी परम्परा को ध्यान में न रखकर फूट डालनेवाली अँगरेजी मनोवृत्ति का ही परिणाम था कि वे प्रदेश आपस में कुछ इस प्रकार घिच-पिच थे कि उनमें सांस्कृतिक और राजनीतिक एकता स्थापित नहीं हो पाती थी। राजनीतिक एकता और सांस्कृतिक समता स्थापित करने के लिए भाषा की एकता भी नितान्त आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में काँगरेस को अपने संगठनात्मक कार्य में अनेक प्रकार की दिक्कतें उठानी पड़ती थीं। इसीलिए तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, मराठी और गुजराती जैसी समृद्ध भाषाओं के आधार पर तमिलनाडु, आन्ध्र, केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा गुजरात प्रान्तों की रचना काँगरेस ने की थी। अवश्य ही, इन प्रान्तों के निर्माण अथवा रचना में काँगरेस का उद्देश्य मात्र यही था कि इन भाषाओं की अपनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

वासभूमि हो और अपनी परम्परा को सुविकसित और जीवित रखने का
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्वतन्त्र और निष्पक्ष प्रयास हो। काँगरेस का यह प्रयास भाषा के आधार पर इन प्रान्तों को छिन्न-विच्छिन्न करने का नहीं था। राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी ने कहा था—'भाषा प्रदेशों के लिए कोई मतभेद न हो, बाहर के लोग हमें बंगाली, बिहारी, गुजराती और मराठी के रूप में नहीं जानते, बल्कि जानते हैं केवल भारतीय के रूप में। स्वायत्त-शासन का अर्थ कदापि विच्छिन्न होना नहीं है।' किन्तु, स्वाधीनता के बाद भी काँगरेस ने अपने इस प्रान्त-निर्माण को राष्ट्र पर लादा नहीं, अपितु राष्ट्र के जीवन में इसकी आवश्यकता का नितान्त अनुभव करके, प्रदेशों के नवीन गठन के लिए काँगरेस सरकार ने एक कमीशन बना दिया है। अवश्य जिन भाषाभाषियों के लिए अपने स्वतन्त्र प्रदेश नहीं हैं, उनके लिए समस्या विचारणीय है, किन्तु भाषा के नाम पर हाय-तोबा मचानेवाले बंगाल को तो अपनी भाषा और साहित्य के विकास के लिए दो-दो प्रान्त मिले हुए हैं।

जब से भाषा-कमीशन ने देश-भ्रमण प्रारम्भ किया है, तभी से बंगाल के गैरजिम्मेवार पत्रों ने और निरंकुश नेताओं ने हल्ला मचाना प्रारम्भ कर दिया है। सौभाग्य से बंगालियों को कलकत्ता जैसा महानगर और वहाँ के अनेक प्रेस तथा पत्र मिले हुए हैं। बंगाली पत्रों ने अपनी माँग की पुष्टि और प्रचार के लिए नाजियों तथा जिन्नावाली प्रचारनीति अपनाई है। यदि किसी निराधार और निर्भ्रान्त झूठ को भी हजार बार दुहराया जाय, तो अन्त में वह सत्य हो जाता है अथवा प्रचार के चक्र में पड़ी जनता उसे सत्य मानने लग जाती है। इसे भी उन्होंने अपने प्रचार का मूलमन्त्र बनाया है। 'नाजीवाद खतरे में' और 'इसलाम खतरे में' की तरह भारतीय राजनीति के रंगमंच पर आज बंगालियों ने 'बंगाल खतरे में' का नारा लगाना शुरू कर दिया है और वे मुस्लिम लीग के समान ही जातीय साम्प्रदायिकता के स्थान पर प्रान्तीय साम्प्रदायिकता के विषवृक्ष को फैला रहे हैं। इनका बंगालीपन तबतक खतरे में है, जबतक बिहार के तथाकथित बँगला-भाषाभाषी क्षेत्र उन्हें नहीं मिल जाते हैं। किन्तु, जब हम इस समस्या पर गम्भीरता तथा कुछ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक तथ्यों के आधार पर विचार करते हैं, तब बात उलटी ही पाते हैं।

मुगलकाल में 'सूबे बंगाल' का अर्थ बंगाल-बिहार-उड़ीसा इन तीनों प्रदेशों से था। एक ही सूबेदार इन तीनों प्रान्तों का शासक होता था। मुर्शिदाबाद में मसनद पर बैठा-बैठा नबाब बिहार तक की देख-रेख करता था। उस समय बिहार की अपार धनराशि सिमट-सिमटकर बंगाल में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली जाती थी। विभिन्न युद्धों, सन्धि-विग्रहों में बिहार का जन-बल घसीटा जाता था। सर्वप्रथम बंगाल से ही अँगरेजी साम्राज्यवाद ने भारत में अपना जाल बिछाया। प्लासी के मैदान में बंगाल की ही धरती पर अँगरेजों का यूनियन जैक सर्वप्रथम फहराया गया था। अँगरेजों के सम्पर्क में आकर अँगरेजी शासन के चाकचिक्य में सर्वप्रथम बंगाली बाबू ही आये और अँगरेजी ताकत के समय में ही समग्र भारत में फैल गये। सन् १८५७ ई० के भारतीय स्वाधीनता-संग्राम में जब सारा देश अँगरेजों के विरोध में युद्ध तत्पर था, एकमात्र बंगाल ही ऐसा प्रदेश था, जो अँगरेजों का साथ दे रहा था। लॉर्ड मेकाले के मानसपुत्र के रूप में बंगाल ने 'बाबुओं', क्लर्कों और किरानियों की सृष्टि की एक कतार इस प्रकार खड़ी कर दी कि कुछ ही दिनों में ये किरानी इतने अधिक बढ़ गये और अपने प्रदेश के अतिरिक्त (Surplus) होकर दूसरे प्रदेशों में भी फैल गये। पर अब बाबुओं की बढ़ती के कारण वहाँ वे मन्द पड़ रहे हैं।

'सूबे बंगाल' के रूप में उड़ीसा, असम और बिहार इन तीनों प्रान्तों को पेट में रखकर बंगाल ने अपने मांस को खूब बढ़ाया, और उस समय, जिस समय कलकत्ता समग्र भारत का केन्द्र था। कलकत्ता से ही शासन होने के कारण पूरे भारत की नौकरियों में रेल, यातायात, शासन, न्यायालय और पोस्ट-ऑफिसों में बंगाली बाबुओं की भरमार हो गई। किन्तु, बंगाल स्वयं अपने में इतना घना और अनेक नदियों से आवेष्टित था कि इसके शासन में असुविधा होती थी। अतः लॉर्ड कर्जन ने सन् १८७५ ई० में शासन-सुविधा को ध्यान में रखकर बंगाल के विभाजन की एक योजना बनाई। सन् १९११ ई० में बंगाल से बिहार का पिण्ड छूटा और भारत का शासन-केन्द्र कलकत्ता से हटकर दिल्ली आया। बंगालियों ने इसे अँगरेजों की राजनीतिक चाल बताई और बंगाल के आतंकवादी आन्दोलन को कुचलना ही इसका एकमात्र अभिप्राय सिद्ध किया। किन्तु, बात ऐसी नहीं थी। अँगरेजों ने सर्वप्रथम बंगाल को अपने अधिकार में किया था, अतः जबतक पूरे भारत में वे शान्तिपूर्ण स्थिति लाने और अपनी सभा को सुदृढ़ करने में लगे हुए थे, कलकत्ता उनके शासन की राजधानी थी। समग्र भारत में ब्रिटिश शासन के मजबूत होते ही और सभी प्रदेशों में शासन की सुविधा को दृष्टि में रखकर जहाँ दिल्ली भारत की राजधानी बनाई गई, वहीं बिहार, असम और उड़ीसा को भी बंगाल से पृथक् किया गया। पृथक्करण के बाद भी बिहार के सरकारी और गैरसरकारी पदों पर बंगालियों का बाहुल्य था। कलकत्ता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जब बिहार के सचिवालय, हाईकोर्ट और शिक्षा आदि विभाग वापस आये, तब कागज-पत्रों के साथ ही बंगाली बाबू भी आये और यहाँ आकर बस गये।

कई बंगाली नेता बिहार के बंगाल से पृथक्करण की दुहाई देकर कहते हैं कि पहले ये भाग बँगाल के ही थे, अतः उन्हें मिलना चाहिए। किन्तु वे भूलते हैं। इतिहास की कड़ी को जोड़ते समय उन्हें थोड़ा और पीछे मुड़कर देखना चाहिए। उन्हें अपने सामने से मुगलकालीन मानचित्र को हटाकर देखना चाहिए। उस समय, जिस समय बंगाल की अपनी राजनीतिक और सांस्कृतिक सत्ता नहीं थी, पुराण और महाभारत के अनुसार तो बंगाल मात्र एक उपनिवेश था।

पाल-राँजाओं ने बंगाल पर शासन किया था। वे गुप्तवंश के ही थे, जिनकी राजधानी उदन्तपुरी (बिहारशरीफ) थी और जो विक्रमशिला-विश्वविद्यालय के संस्थापक थे। बंगाल में शेष राजा, जो सेनवंश से प्रसिद्ध हुए, वे दक्षिण से आये थे। इस प्रकार, हम देखते हैं कि मुगलकाल के कुछ दिन पूर्व तक बंगाल का न तो अपना कोई प्रादेशिक स्वरूप था और न कोई संस्कृति अथवा राजनीतिक सत्ता ही थी। बंगाली अपने से थोड़ी दूर पश्चिम स्थित प्रदेश को 'छातूखोर देश' कहते हैं और हीन दृष्टि से देखते हैं, किन्तु जब हम इतिहास के थोड़ा और गम्भीर अध्ययन की ओर जाते हैं, तब पाते हैं—बंगाल के राजा आदिशूर को जब यज्ञ के लिए निष्ठावान् पुरोहित नहीं मिले, तब कन्नौज से पंचब्राह्मणों को बुलाकर बसाया और आज उन्हीं पच्छिमी कन्नौजियों के वंशज बंगाली ब्राह्मण हैं। जब हम बंगाल के पुराने क़ागज-पत्रों में चटर्जी-बनर्जी-मुखर्जी लोगों के मूल स्रोत खोजते हैं, तब उनकी उपाधि पाते हैं—मिश्र, त्रिवेदी आदि। महाप्रभु चैतन्यदेव के पिता मिश्र ही थे। यही बात बंगाली कायस्थों की भी है। वे भी पंचब्राह्मणों के साथ ही पंचकायस्थों से आये थे और वही उनका उद्गम-स्रोत है । अब रही भाषा की बात।

जिस भाषा के आधार पर बंगाली सबसे अधिक हाय-तोबा मचा रहे हैं और बिहार की सीमान्त बोलियों को बंगाल-विनिःसृत बताकर सीमान्त-संघर्ष में लगे हुए हैं, जरा उस बंग-भाषा और बंग-साहित्य की प्राचीनता पर भी दृष्टिपात कीजिए, तो इनकी गहराई का पता चलेगा। बंग-भाषा और साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् और पश्चिम बंग राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के मन्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
श्रीरेवतीरंजन सिन्हा लिखते हैं : "बँगला-भाषा की उत्पत्ति साहित्यिक प्राकृत से हुई है। मागधी अथवा गौड़ीय प्राकृत से बंगाली भाषा विकसित हुई है। बँगला-भाषा की उत्पत्ति हुए हजार वर्ष से अधिक हो गये। इस भाषा का आदि अथवा प्राचीन युग सन् १२०० ई० तक माना जाता है।"

बँगला भाषा के आदियुग (सन् ९५०-१२०० ई०) की इन पंक्तियों को वर्त्तमान बँगला तथा मगही और हिन्दी से मिलाइए :

ऊँचा ऊँचा पाबत तहिं बसइ शबरीवाली।
मोरङ्गो पीच्छ पर हि न शबरी जीवत गुभुरीभाली॥
नाचत शबरो पागल शबरो पाकर गुलिगुहाड़ा तोहार।
निअघरनी नाम सहज सुन्दरी॥
नाना तरुवर मौलि लरे गअनत लागेली डाली।
एकेली शबरी एवन हिण्डई कर्मकुण्डल वज्रधारी॥
तिआ छाऔ खाट पड़िला शबरो महासुहे सेजि छाड़ली।
शबरो भुजङ्ग नैरामनि दाही पेन्ह पोहाइलि राति॥

और भी, जरा प्राचीन बँगला को इस नमूने में देखिए :

छाड़ु छाड़ु महँ जाइबो गोविन्द सह खेलन.....
नारायण जगह केरू गोसाईं.....

इस गद्यांश में भी :

'जे बाभनेर कलें उपजिआं कितबिया जेनें बाहुकर से खग्गिआ परशुराम देउशे मोहर मङ्गलकरउ।'

बँगला को मगही और हिन्दी के क्रियापदों और शब्दों से मिलते-जुलते देखिए। वस्तुतः उत्तर भारत की प्रायः समस्त भाषाओं का उत्पत्ति-केन्द्र मागधी और अर्धमागधी है। अर्धमागधी अथवा शौरसेनी प्राकृत से ही अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी की बोलियाँ विकसित हुई हैं और मागधी से चार शाखाएँ निकलीं, जिनमें पश्चिमी शाखा से भोजपुरी, पूर्व-दक्षिणी से उड़िया, उत्तर-पूर्वी से असमिया और मध्य शाखा से मैथिली, मगही और बँगला-भाषा निकली हैं। लगभग साढ़े चार करोड़ लोगों में बोली जानेवाली यह बंग-भाषा १४वीं सदी के लगभग पूर्ण विकसित रूप में आगे बढ़ी है। इसकी समृद्धि चण्डीदास के केन्द्र प्रारम्भ हुई है। चण्डीदास के पदों में :

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आझर झरए मोर नयनेर पानी।
बाँशीर शबदें बड़ायि हारायिलों परानी॥
आकुल करितें किबा आमार मन।
बाजाए ससुर बाँशी नान्देर नन्दन॥
पाखी नहों तार ठाइ उड़ि पड़ि जाओ।
मेदनी बिदार देउ पसिआँ लुकाओं॥
वनपोड़े आग बडायि जगजने जानी।
मोर मन पौड़ येन्ह कम्मारेर पनी॥
आन्तर सुखाए मोर कान्ह अभिलासे।
बासली शिरे बान्धी गाइल चण्डीदासे॥

स्पष्टतः, मागधी शब्दों के बीच से बँगला बोली के शब्द झाँकते दीखते हैं। कहा जा सकता है यह बँगला के विकास का प्रथम युग था। भाषा-वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार करने पर बँगला में अब भी मागधी अथवा बिहार की एवं भारत की अन्य बोलियों के दस प्रतिशत शब्द हैं।

पश्चिम बंगाल को बढ़ाने का दावा करनेवाले बंगी भाई कमजोर और दुर्बल हैं, यह तब और भी स्पष्ट प्रतीत होने लगता है, जब हम उन लोगों को पिटते देखते हैं। वे कहते हैं, बिहार के पूर्णिया, भागलपुर, सहरसा, किसनगंज, हजारीबाग, सिंहभूम, मानभूम और खारसावाँ सरायकेला के लोग बँगला-भाषाभाषी हैं। इन जिलों के निवासियों की हिन्दी भी बँगलामिश्रित है। इनकी बोली बिहार के अन्य उत्तरी पश्चिमी जिलों की बोलियों से भिन्न है। अतः, इन प्रदेशों में कई तो समूचे तथा कइयों के अंश-विशेष को भी बंगाल में मिला देना चाहिए। कुछ प्रगतिशील बंगाली तो बिहार को बँगला-प्रदेश का प्रवेशद्वार कहकर भी मिलाना चाहते हैं। एक ओर तो बंगाल के विस्तार की बात कहते हैं, दूसरी ओर बिहार के टुकड़े कराने के लिए कलह का बीज बोते हैं। कभी झारखण्ड, कभी मिथिला-प्रदेश और कभी क्रिस्तानों के मौलिक अधिकार के नाम पर आन्दोलन चलाये जा रहे हैं। कहा जाता है बिहार में हिन्दी नाम की भाषा नहीं है। असल में मिथिला, मगध, भोजपुर तथा झारखण्ड में विभक्त बिहारवासियों की अलग-अलग भाषा और लिपि है। किन्तु उन्हें मालूम होना चाहिए कि समूचे बिहार की साहित्यिक और सांस्कृतिक भाषा उसी प्रकार हिन्दी है, जिस प्रकार नाना उपभाषाओं और बोलियों के रहते बंगाल की बँगला। बिहार के अधिवासी तो सभी एक

CC-0. Gurukul Kangri Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे की भाषा समझ भी लेते हैं, किन्तु बंगाली तो अपने ही घर में एक दूसरे से अलग हैं। उनमें उच्चारण-भेद इतना प्रबल है कि एक ही जिले के दो सब-डिवीजनों के निवासी बंगाली एक दूसरे की भाषा सुनकर हँसते हैं। ढाका और चटगाँव की भाषा विभिन्नता के कारण ही पश्चिमी बंगाली उन्हें 'बांगाल' कहते हैं। हिन्दी में प्रयुक्त 'एक आदमी के दो लड़के थे' को बँगला के विविध नमूनों में : कलकतिया बँगला—'एक व्यक्तिर दुटि पुत्र छिल', मेदिनीपुर की बोली—'लोक्कोर दुट्टो पोथाइल', बगुड़ा में—एक झनेर दुइ ब्याटा छैल आछिल', मैमनसिंह में—'एक जन मान लग दुइ दापला याकिवार' और नोआखाली में—'ए गुआ माइनसेर दुगा होला आछिल' —कहा जायेगा।

इस प्रकार, उच्चारण, वाक्य-विन्यास, क्रियापदों और कारकों में विभिन्नता होते हुए भी जब समग्र बंगाल की भाषा एकमात्र बँगला हो सकती है और चटगाँव, ढाका, मेदिनीपुर, मैमनसिंह के आदिवासियों की आवास-भूमि पृथक् नहीं हो सकती, तब बिहार के मैथिलों और आदिवासियों के लिए मगर के आँसू बहाकर व्यर्थ सहानुभूति दिखाई जा रही है!

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भास के नाटक

किसी राष्ट्र या जाति का वास्तविक इतिहास उसका साहित्य है। साहित्य ही समाज की समसामयिक चिन्ताओं, धारणाओं, भावनाओं, आकांक्षाओं और आदर्शों का सम्पुटित चित्र हमारे सम्मुख उपस्थित करता है। इस दृष्टि से संस्कृत-साहित्य भारत के गौरवमय अतीत का मणिमय मुकुट है। प्राचीन भारत के सांस्कृतिक उत्कर्ष का जैसा सजीव प्रतिबिम्ब संस्कृत के सर्वांग-सुन्दर साहित्य में उपलब्ध होता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। संस्कृत-भाषा और साहित्य भारत की अमूल्य एवं अनुपम निधि है। अनादि काल से हमारे देश के जातीय जीवन पर उसका अपरिमित प्रभाव पड़ा है। भारतीय साहित्य और संस्कृति उससे पूर्णतया अनुप्राणित हैं। भारत के प्राचीन इतिहास का सम्यक् पर्यालोचन संस्कृत-साहित्य के अध्ययन के बिना नहीं हो सकता। संस्कृत-साहित्य का इतिहास केवल भाषा का इतिहास नहीं, वह तो प्राचीन भारत के आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, व्यावहारिक एवं राजनीतिक जीवन का ज्वलन्त चित्रण है। संस्कृत-साहित्य का इतिहास पिछले चार हजार वर्षों में हमारे पूर्वजों के मानसिक एवं बौद्धिक विकास का इतिहास है। संस्कृत-साहित्य के अपार ग्रन्थ यद्यपि नष्ट हो गये अथवा कर दिये गये, तथापि अब भी इसके विशाल साहित्य-भाण्डार में पचास हजार से अधिक ग्रन्थ विभिन्न विषयों के हैं। वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत के भेद से इसके मुख्यतः दो विभाग हैं।

लौकिक संस्कृत का 'काव्य-साहित्य' अपने-आपमें जहाँ व्यापक अर्थ रखता है, वहीं व्यापक इतिहास भी। इसके अन्तर्गत महाकाव्य, नाटक, गद्यसाहित्य, गीतिकाव्य, ऐतिहासिक काव्य, चम्पू और नीतिकाव्य आदि का समावेश है।

संस्कृत काव्य-साहित्य के श्रव्य और दृश्य मुख्य उपभेदों में हमें अभी दृश्यकाव्य के आदिकवि 'भास' और उनके नाटकों पर विचार करना है।

चरित्र-चित्रण में निपुण, पात्रों को, मनोवैज्ञानिकता, मार्मिकता और वास्तविकता के अभिव्यक्ति-वैशिष्ट्य से दर्शकों एवं वाचकों के लिए मनोहर बनाने में सफल कवि 'भास' का स्थितिकाल, स्थान आदि प्रसंग विवादास्पद तथा सन्दिग्ध हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुतः भास जैसे महाकवि और कला के चतुर मनोमोहक शिल्पी के सम्बन्ध में विचार करते समय हमें उनके नाटक इतने मोह लेते हैं और धरातल से ऊपर उठाकर एक ऐसे कल्पना-लोक में ले जाते हैं कि हम कवि को स्थान तथा कालनिरपेक्ष मानने लगते हैं। हम अपने वातावरण को उसके चमत्कारी श्लोकों, कवि के नाटकों तथा उनके पात्रों के वर्णन में प्राप्त ओज-प्रसाद-गुणमयी मनोवैज्ञानिक भाषा के कथोपकथनों में ही डूब जाते हैं।

भास ने दूतकाव्य, कर्णभार, दूतघटोत्कच, ऊरुभंग, मध्यमव्यायोग, पंचरात्र, अभिषेकनाटक, बालचरित्र, अविमारक, प्रतिमा, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्त और चारुदत्त नामक तेरह नाटक रचे हैं। इसके अतिरिक्त वीणावासवदत्त और 'यज्ञफलम्' दो और नाटक भी मिले हैं, जो इनके ही रचित बताये जाते हैं। भास के नाटकों की पृथक्-पृथक् चर्चा करने अथवा परिचय देने के पूर्व यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि संस्कृत-नाट्यसाहित्य के इस आदिकवि की प्रशंसा अथवा चर्चा कालिदास, दण्डी, बाणभट्ट, भामह, वाक्पतिराज, वामन, राजशेखर, अभिनवगुप्त और जयदेव ने की है।

सन् १९०९ ई० में स्व० महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री को त्रावणकोर-राज्य में भास के तेरह नाटक खोज में मिले थे। उनके अनुसार इन नाटकों के रचयिता वही महाकवि भास हैं, जिनका उल्लेख कालिदास ने 'मालविकाग्निमित्र' नाटक की प्रस्तावना में निम्नांकित शब्दों में किया है :

'प्रथितयशसां भाससौमिल्लककविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य कथं वर्त्तमानस्य कवेः कालिदासस्य कृतौ बहुमानः।'

निःस्सन्देह, ये तेरहों नाटक एक व्यक्ति की कृतियाँ हैं। निम्नलिखित सादृश्य इनमें हैं, जो एक कवि के ही कृतित्व होने की बात को पुष्ट करती हैं। सभी आकार में लघु हैं; सभी की भाषा और शैली एक-सी सरल और प्रांजल है; सभी में एक जैसी संस्कृत में कुछ अपाणिनीय और आर्ष प्रयोग मिलते हैं; सभी नाटकों में प्रयुक्त मुहावरे, वाक्य, पद्य और श्लोकों के चरण समान हैं तथा एक ही सुन्दर भाव अथवा विचार प्रकारान्तर से पुनरुक्त हुए हैं; सभी की प्राकृतों में समानता और पात्रों के नामों तक में अनुरूपता; सभी में नाटककार के नामोल्लेख का अभाव; सभी में प्रस्तावना के स्थान पर 'स्थापना' का प्रयोग और सभी के प्रारम्भ में 'नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधारः' का नाटकीय निर्देश प्राप्त होता है। साथ ही, सभी के भरतवाक्य भी प्रायः समान हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भास के नाटकों का रचनाकाल अवश्य ही कालिदास से पूर्व का है। इसकी पुष्टि न केवल उन नाटकों की शैली से होती है, अपितु उनकी भाषा में प्रयुक्त अनेक अपाणिनीय आर्ष प्रयोगों और नाटकों में चित्रित पुरातन वातावरण से भी होती है। कालिदास ने अपने 'मालविकाग्निमित्र' में भास का जो उल्लेख किया है, उससे यह स्पष्ट है कि कालिदास के समय भास अपने नाटकों में एक यशस्वी प्राचीन नाटककार के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे। कालिदास का समय यदि ईसवी-पूर्व प्रथम शताब्दी मानते हैं, तो उनसे एक सौ वर्ष पूर्व भास की स्थिति मानने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

भास के इन नाटकों की खोज के पूर्व संस्कृत का आदिनाटक 'मृच्छकटिक' माना जाता था। किन्तु भासकृत 'चारुदत्त' नाटक के उपलब्ध हो जाने के बाद 'मृच्छकटिक' का और उसके नाटककार शूद्रक का समय उसके बाद का सिद्ध हुआ है। अँगरेज अन्वेषकों और विंसेण्टस्मिथ एवं एस० के० बेलवलकर जैसे आलोचकों ने शूद्रक का समय २२०—१९७ ई० पूर्व माना है। इस मान्यता के अनुसार 'मृच्छकटिक' द्वितीय अथवा तृतीय शताब्दी ईसवी-पूर्व की रचना सिद्ध होती है और भास की नाट्यकृति 'चारुदत्त' तीसरी या चौथी शताब्दी ईसवी-पूर्व की रचना। साथ ही, कौटिल्य के अर्थशास्त्र में **'नवं शरावं सलिलैः सुपूर्णं सुसंस्कृतं दर्भकृतोत्तरीयम्। तत्तस्य माभून्नरकं च गच्छेद् यो भर्तृपिण्डस्य कृते न युध्येत्॥'** श्लोक उद्धृत हुआ है। जो भास के 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' में पाया जाता है। किन्तु, भास के 'प्रतिमानाटक' में आचार्य बृहस्पति के अर्थशास्त्र का उल्लेख है। इससे प्रतीत होता है कि कौटिल्य के अर्थशास्त्र की रचना भास के समय नहीं हुई थी और कौटिल्य के समय ई० पूर्व चतुर्थ शताब्दी के उत्तरार्ध में भास एक प्रामाणिक नाटककार अथवा साहित्यिक के रूप में यशस्वी हो चुके थे। इस प्रकार, सिद्ध होता है कि भास कौटिल्य के पूर्ववर्त्ती हैं और उनके नाटकों की रचना ई० पू० चौथी शताब्दी में हो चुकी थी। इसके अतिरिक्त जब हम भास के नाटकों में चित्रित सामाजिक जीवन का अध्ययन करते हैं, तब उसमें छठी से चौथी शताब्दी-पूर्व के भारत का चित्र स्पष्टरूपेण परिलक्षित होता है। उनके नाटकों के भरतवाक्यों में भी नन्दवंश के किसी राजा का संकेत मिलता है।

भास की नाट्यकला-कुशलता पर कुछ कहने के पूर्व हमें उनके उन तेरहों नाटकों से परिचित होना आवश्यक है। उनके तेरहों नाटकों में से छः की कथा महाभारत से ली गई है और दो नाटक रामायण पर आश्रित हैं। अन्य पाँच नाटकों की कथा प्राचीन और ऐतिहासिक घटनाओं अथवा किंवदन्तियों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से सम्बन्ध रखती हैं। भास के नाटकों का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है :

१. **दूतवाक्य**—यह एक एकांकी 'व्यायोग' है। इसमें पाण्डवों की ओर से सन्धि-प्रस्ताव लेकर श्रीकृष्ण दुर्योधन के शिविर में जाते हैं और वहाँ से विफलमनोरथ लौटते हैं।

२. **कर्णभार**—यह भी एक एकांकी नाटक है, जिसमें ब्राह्मणवेशी इन्द्र कर्ण से कवच-कुण्डल दान में प्राप्त करते हैं।

३. **दूतघटोत्कच**—इसमें अभिमन्यु-वध के पश्चात् अर्जुन जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा करते हैं। इसमें घटोत्कच को दूत बनाकर कौरवों के सन्निकट भेजते हैं। दुर्योधन उसका अपमान करता है और वहीं से युद्ध प्रारम्भ हो जाता है।

४. **ऊरुभंग**—में दुर्योधन और भीम के बीच अन्तिम गदायुद्ध का वर्णन है। दुर्योधन के देहावसान का करुण दृश्य बड़ा हृदयद्रावक है। सम्भवतः, संस्कृत का यही एकमात्र दुःखान्त नाटक है। कर्णभार और ऊरुभंग में समय और स्थान की अन्विति की नाटकीयता का पूर्णतः पालन हुआ है।

५. **मध्यमव्यायोग**—यह एक अंक का 'व्यायोग' है। इसमें मध्यम पाण्डव भीम ने एक भयंकर राक्षस से एक ब्राह्मणपुत्र की रक्षा की है।

६. **पंचरात्र**—यह तीन अंकों का 'समवकार' है। इसमें द्रोणाचार्य पाण्डवों को आधा राज्य देने के लिए दुर्योधन को परामर्श देते हैं। उस समय पाण्डव अज्ञातवास का जीवन बिता रहे थे। दुर्योधन आधा राज्य देना स्वीकारता है, किन्तु पाण्डवों को प्रकट देखना चाहता है। द्रोणाचार्य के प्रयत्न से पाण्डव प्रकट होते हैं और दुर्योधन उन्हें आधा राज्य दे देता है। इस नाटक की कथा महाभारत की घटना से भिन्न है।

७. **अभिषेकनाटक**—इसमें छः अंकों में बालिवध से प्रारम्भ और रावणवध तथा रामराज्याभिषेक तक की रामकथा सुन्दर, सरस और ओजस्वी शैली में वर्णित है।

८. **बालचरित**—सात अंकों के इस नाटक में जन्म से लेकर कंस-वध तक की कृष्णकथा का वर्णन है।

९. **अविमारक**—यह भी छः अंकों का नाटक है। इसमें कुन्तिभोज की रूपवती कन्या और राजकुमार अविमारक की प्रेमकथा तथा प्रच्छन्न विवाह का वर्णन कवित्वपूर्ण सरस नाट्यशैली और चुस्त भाषा-प्रवाह के साथ उपन्यस्त है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. प्रतिमा—सात अंकों के इस नाटक में राम-वनवास से रावणवध तक की रामकथा का वर्णन है। ननिहाल से लौटते समय मार्ग में अयोध्या के निकट भरत प्रतिमा-मन्दिर में अपने अन्य पितरों के साथ दिवंगत दशरथ की प्रतिमा देखते हैं और वे शोकान्वित हो जाते हैं। इसी से इसका नाम 'प्रतिमानाटक' है।

११. प्रतिज्ञायौगन्धरायण—छ: अंकों में समाप्त होनेवाले इस नाटक में मन्त्री यौगन्धरायण के प्रयत्न से सम्पन्न अवन्तिकुमारी वासवदत्ता और वत्सराज उदयन के रहस्यमय प्रेम-विवाह का वर्णन है।

१२. स्वप्नवासवदत्त—में सात अंक हैं। मन्त्री यौगन्धरायण की दूरदर्शिता से वासवदत्ता के अग्नि में जलकर भस्म हो जाने का प्रवाद प्रचारित कर उदयन का विवाह मगध-राजकुमारी पद्मावती के साथ सम्पन्न होता है। इसे पूर्वोक्त नाटक 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' का उत्तरार्द्ध समझना चाहिए। इस नाटक में कविवर 'भास' की नाट्यकृति का अनुपम निदर्शन हुआ है।

१३. चारुदत्त—नाटक अथवा प्रकरण भी अपने-आपमें बड़ा महत्त्व रखता है। इसके चार अंक ही उपलब्ध हो सके हैं। सम्भवत: 'भास' की मृत्यु हो जाने के कारण, कवि की यह कृति सम्पूर्ण नहीं हो सकी। इसमें कथा है कि निर्धन, किन्तु सर्वगुण-सम्पन्न चारुदत्त नामक एक ब्राह्मण था, जिसपर वसन्तसेना नाम की प्रसिद्ध वारांगना अनुरक्त थी।

उज्जैन-सम्राट् पालक के साले 'शकार' ने वसन्तसेना को हथियाने की बहुत कोशिश की, पर सफल नहीं हो सका। एक दिन जब गहन अन्धकार में वसन्तसेना अभिसार के लिए निकली थी; 'शकार' ने अपने मित्रों के साथ उसका अनुगमन किया और जनशून्य पथ पर वह उससे आक्रान्त हुई, किन्तु सामने चारुदत्त के भवन का द्वार खुला देख आत्मरक्षा के लिए वह उसमें प्रविष्ट हुई और बलि-प्रदान के लिए मैत्रेयक के साथ आती हुई रदनिका वसन्तसेना के भ्रम में पकड़ी गई और उसका मानमर्दन हुआ। विदूषक मैत्रेय ने शकार की विविध भर्त्सना की। शकार ने चारुदत्त के पास सन्देश भेजा कि वसन्तसेना को सौंप दो, नहीं तो हमारी-और तुम्हारी आजीवन शत्रुता रहेगी। वसन्तसेना अपने सभी आभूषणों को धरोहर के रूप में सुरक्षित रखने के लिए चारुदत्त को सौंपकर चली आई।

नामी और चतुर चोर शर्विलक ने चारुदत्त के घर में घुसकर अपनी प्रेमिका मदनिका के लिए वसन्तसेना की धरोहर रूप में सुरक्षित सभी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभूषण चुरा लिये, किन्तु अपनी प्रेमिका की प्रेरणा से उसने वह आभूषण वसन्तसेना को लौटा दिया।

विदूषक मैत्रेय के हाथों से चारुदत्त द्वारा प्रेषित रत्नावली को पाकर वसन्तसेना अत्यन्त प्रसन्न हुई और सायंकाल चारुदत्त के पास अभिसरण करती हुई प्रातः जब लौटी, तब चारुदत्त के पुत्र रोहसेन को सोने की गाड़ी—रथ के लिए रोते देख उसने अपने सारे आभूषणों को उतारकर 'मिट्टी की गाड़ी' में उसे दे दिया और उन आभूषणों से उसे सोने की गाड़ी बनवा लेने के लिए कहा।

उसके बाद सवारी की प्रतीक्षा में वह भूल से 'शकार' के रथ में बैठ गई और 'पुष्पकरण्डक' नामक उद्यान में पहुँच गई। 'शकार' ने उसे अपने प्रेमपाश में अनेक प्रकार से फँसाना चाहा, किन्तु अनेक प्रलोभनों की भी उपेक्षा करके उसके प्रेम-प्रस्ताव को उसने ठुकरा दिया। शकार ने बलपूर्वक उसकी गरदन को मरोड़ दिया। और उसे मरी हुई समझकर, छोड़कर चलता बना। बौद्धभिक्षु संवाहक ने वसन्तसेना की सेवा की और उसके प्राण बच गये।

शकार ने न्यायालय में वसन्तसेना की हत्या का चारुदत्त पर मिथ्या आरोप लगाकर, उसे अभियुक्त बनाया और राजसाहाय्य से चारुदत्त के लिए मृत्युदण्ड दिलवाया। जब वधिक चारुदत्त को वध-स्थल पर ले जा रहे हैं, उसी समय बौद्ध भिक्षु के साथ वसन्तसेना वहाँ पहुँच जाती है और वस्तुस्थिति से उपस्थित जनसमूह को परिचित कराती है। उसी समय विद्रोही प्रजा का नेतृत्व करते हुए गोपालपुत्र 'आर्यक' ने उज्जैन के राजा पालक को पदच्युत किया और राज्यसिंहासनासीन होकर 'शकार' के वध की सजा (आज्ञा) सुनाई। किन्तु आर्य चारुदत्त ने उसे जीवित छुड़वा दिया। वसन्तसेना और आर्य चारुदत्त आपस में मिलते हैं। सत्य और प्रेम की विजय होती है। सत्य और प्रेम के उत्सर्ग की परम्परा को ही यहाँ व्यक्त किया गया है।

ब्राह्मण चारुदत्त वेश्या वसन्तसेना के गुणों पर मुग्ध हो जाता है। कवि ने दोनों के प्रेम का वर्णन किया है। कहा जा सकता है कि 'मृच्छकटिक' के शूद्रक ने अपनी नाट्यकृति की कथावस्तु का आधार इसे ही बनाया है।

भास के अन्य दो नाटक भी उपलब्ध हुए हैं। 'वीणावासवदत्ता' और 'यज्ञफलम्'। प्रथम नाटक के आठ अंकों में चार अंक ही मिले हैं। इसकी कथा और 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' की कथा में समानता है। डॉ० कुन्हन ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ए न्यू ड्रामा ऑफ भास' शीर्षक लेख में इसे भासकृत सिद्ध किया है। दूसरी कृति 'यज्ञफलम्' रामायण के बालकाण्ड पर आश्रित है। इसमें वैदिक यज्ञों की महत्ता और उससे जनसमाज को होनेवाले लाभ दिखाये गये हैं।

भास के नाटकों की विविधरूपता तथा वर्णन-शैली की अनेकता से कवि की मौलिकता एवं नाट्यकला-कुशलता का परिचय मिलता है। नाट्यशास्त्र के नियमों की अनेकशः अवहेलना अथवा उपेक्षा करने पर भी भास के नाटक श्रेष्ठ, जन-मनोरंजक और अतिशय रोचक हुए हैं। महाभारत के आधार पर रचित अपनी कृतियों में कवि ने अपनी अनूठी कल्पना-शक्ति से चमत्कार ला दिया है। संस्कृत के प्रायः अधिक नाटक अनभिनेय होते हैं, किन्तु भास के नाटक रंगमंच के लिए सर्वथा उपयुक्त हैं। संस्कृत में एकांकी नाटक के प्रणयन का प्रारम्भ सर्वप्रथम भास ने ही किया है। अपने वर्णन-चातुर्य और नाट्य द्वारा भास अनुपस्थित पात्रों या परोक्ष घटनाओं को रंगमंच पर उपस्थित या घटित किये बिना ही दर्शकों के मन में उनका ऐसा आभास करा देते हैं, कि प्रतीत होता है उन दृश्यों का प्रत्यक्ष चित्रण हो रहा है। 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' में वासवदत्ता और उदयन रंगमंच पर कभी नहीं आते, किन्तु दर्शकों को उनकी उपस्थिति का निरन्तर आभास बना रहता है। भास के नाटकों में नाटकीय तत्त्वों एवं हृदयावर्जक घटनाओं की मनोहारिणी छटा दीख पड़ती है। उदयन को कैद में डलवाकर वैभवशालिनी वारवनिता वसन्तसेना दरिद्र ब्राह्मण चारुदत्त के प्रति अनुरक्ति दिखलाकर तथा अर्जुन और अभिमन्यु, भीम और घटोत्कच जैसे पिता-पुत्रों को परस्पर युद्धभूमि में उतारकर भास ने अपनी कृतियों में जहाँ मनोरंजन की सामग्री प्रस्तुत की है, वहीं शिक्षा की भी प्रभूत सामग्री दी है। अपने पौराणिक पात्रों को वास्तविकता, मनोवैज्ञानिकता और मार्मिकता के साथ चित्रित कर उन्हें सर्वथा नवीन एवं प्रभावोत्पादक बना दिया है। भास चरित्र-चित्रण में तो निपुण हैं ही, इनके नाटकों के संवाद बड़े-चुस्त, संक्षिप्त और नाटकीय दृष्टि से प्रभावजनक हैं। पद्यों का आश्रय लेकर पात्रों के परस्पर संवाद की प्रस्तुति भास की अपनी अनूठी शैली है।

ओज, प्रसाद एवं माधुर्य भास की रचना-शैली के विशेष गुण हैं। विकट बन्ध, क्लिष्ट कल्पना और समासबहुलता का इनमें अभाव है। स्वाभाविक पदविन्यास, भावसौष्ठव और भाषिक प्रवाह प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। भास ने अपनी उपमाओं के लिए प्रकृति से ही उपादान चुने हैं :

सूर्य इव गतो रामः सूर्यं दिवस इव लक्ष्मणोऽनुगतः।
सूर्य - दिवसावसाने छायेव न दृश्यते सीता॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

इस उपमा को देखिए :

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।
एवं लोकस्तुल्यधर्मा वनानां काले काले छिद्यते सह्यते च॥

मृत्यु के समय कौन किसकी रक्षा कर सकता है? रस्सी टूट जाने पर घड़े को कुएँ में गिरने से कौन सम्भाल सकता है? जिस प्रकार वन में वृक्ष काटे जाते हैं और फिर उगते हैं, उसी प्रकार संसार में मनुष्य मरता है और पुनः जन्म लेता है।

किसी घटना या स्थल के दृश्य का वर्णन करते समय महाकवि भास अन्य संस्कृत-कवियों के समान रमणीय कल्पना का पुट चढ़ाकर उसे अधिक रँगीला या चटकीला बनाने का प्रयास नहीं करते, अपितु उसके नैसर्गिक रूप का ही वर्णन कर हृदयग्राही दृश्य उपस्थित कर देते हैं। सायंकाल के इस वर्णन में मनोरमता, नैसर्गिकता और सहजानुभूति की मार्मिकता द्रष्टव्य है :

ऋज्वायतां हि मुखतोरणलोलमालां
भ्रष्टां क्षितौ त्वमवगच्छसि मूर्ख सर्पम्।
मन्दानिलेन निशि या परिवर्त्तमाना
किञ्चित् करोति भुजगस्य विचेष्टितानि॥

कभी-कभी कवि ने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भावों की अभिव्यक्ति, पात्रों की आत्मगत उक्ति अथवा आकाशभाषित से दिखलाकर काव्यसौष्ठव का परिचय दिया है। जैसे :

इयं बाला नवोद्वाहा सत्यं श्रुत्वा व्यथां व्रजेत्।
कामधीरस्वभावेयं स्त्रीस्वभावस्तु कातरः॥

कवि के इस सरस वर्णन में जहाँ उनकी प्रकृति की अभिव्यंजन-शैली की कुशलता परिलक्षित होती है, वहीं साथ-साथ, नक्षत्र-विज्ञान से भी उनके परिचय का अवबोध होता है :

खगा वासोपेताः सलिलमवगाढो मुनिजनः
प्रदीप्तोऽग्निर्भाति प्रविचरति धूमो मुनिवनम्।
परिभ्रष्टो दूराद् रविरपि च संक्षिप्तकिरणो
रथं व्यावर्त्त्यासौ प्रविशति शनैरस्तशिखरम्॥

कहीं-कहीं महाकवि भास यमक और अनुप्रास के माध्यम से चमत्कारपूर्ण शैली का भी उपयोग करते हैं :

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रघुकुलप्रदीपस्य सर्वलोकनयनाभिरामस्य रामस्य च सुविपुलमहाग्रीवस्य सुग्रीवस्य च।'

एक ध्वनिवाले अक्षरों के प्रयोग भी भास ने किये हैं। जैसे— 'सजलजलधर', 'समीरनीरव', 'कुलद्वयं हन्ति मदेन नारी कूलद्वयं क्षुब्धजला नदीव' आदि।

सूक्ति-प्रयोग में कवि ने अपनी विशेषता 'स्वप्रवासवदत्त' में दिखाई है— 'प्रियनिवेद्यमानानि प्रियाणि प्रियतराणि भवन्ति।' 'सर्वमलंकारो सुरूपाणाम्।' 'वाचानुवृत्तिः खलु अतिथिसत्कारः अल्पं तुल्यशीलानि द्वन्द्वानि सृज्यन्ते।' 'कालक्रमेण जगतः परिवर्त्तमाना चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः।'

भास की कृतियों और उनकी शैली का जब हम विस्तृत अध्ययन-अनुशीलन करते हैं, तब यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि महाकवि कालिदास बाणभट्ट, जयदेव प्रभृति अन्य महाकवि अपनी कृतियों में यदि उनका सादर उल्लेख करते हैं, तो कोई आश्चर्य नहीं।

भासकृत उपमा की यह मनोरम योजना द्रष्टव्य है :

ऋज्वायतां च विरलां च नतोन्नतां च
सप्तर्षिवंशकुटिलां च निवर्त्तनेषु।
निर्मुच्यमान - भुजगोदर - निर्मलस्य
सीमामिवाम्बरतलस्य विभज्यमानाम्॥

तपोवन का यह वर्णन कितना स्वाभाविक और संस्कार-सम्पन्न है :

विश्रब्धं हरिणाश्चरन्त्यचकिता देशागतप्रत्यया
वृक्षाः पुष्पफलैः समृद्धविटपाः सर्वे दयारक्षिताः।
भूयिष्ठं कपिलानि गोकुलधनान्यक्षत्रवत्यो दिशो ?
निःसन्दिग्धमिदं तपोवनमयं धूमो हि ब्रह्माश्रयः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता में समाजवाद

वर्त्तमान काल से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व कथित श्रीमद्भगवद्गीता को सब उपनिषदों का सार और अमृतोपम ज्ञानदुग्ध कहा गया है। संसार के इस अद्वितीय ग्रन्थ का विश्व की सभी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और प्रायः सभी देशों के विद्वान् विवेचक तथा सुधी साहित्यिक इस अमृतमयी दुग्धोपम वाणी के भोक्ता रहे हैं। लिखा है :

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के मतानुसार यह ग्रन्थ हमारे धर्मग्रन्थों में एक अत्यन्त तेजस्वी और निर्मल हीरा है। संसार के दुःखित मनुष्य को शान्ति देकर, उसे निष्काम कर्त्तव्य के आचरण में लगानेवाला, गीता के समान सर्वभूतहितरत, अर्थात् पूरे मानव-समुदाय को अथवा पूरे समाज को समूह के साथ लेकर चलने एवं सभी की भलाई के लिए ज्ञान की शिक्षा और प्रेरणा देनेवाला इसके जैसा ग्रन्थ संस्कृत-भाषा में ही नहीं, संसार के किसी भी भाषा-साहित्य में नहीं मिल सकता है।

योगी अरविन्द के शब्दों में "प्रत्यक्ष अनुभव से यह स्पष्ट दिखाई देता है, कि गीता वर्त्तमान युग में भी उतनी ही नावीन्यपूर्ण एवं स्फूर्त्तिदात्री है, जितनी कि महाभारत-काल में थी। गीता के सन्देश का प्रभाव केवल दार्शनिक अथवा विद्वच्चर्चा का विषय नहीं है, अपितु आचार-विचारों के क्षेत्र में भी विद्यमान होकर मार्ग बतानेवाला है। एक राष्ट्र तथा संस्कृति का पुनरुज्जीवन ही गीता के उपदेश का मर्म है। मानवी श्रम, जीवन और कर्म की महिमा का उपदेश अपनी अधिकार-वाणी से देकर सच्चे अध्यात्म और समाजवाद का सन्देश गीता दे रही है।"

यद्यपि यूरोपीय देशों में समाजवाद और साम्यवाद की कल्पना एवं विचार-सृष्टि बहुत बाद हुई है, तथापि पाश्चात्य देशों के विचारकों की दृष्टि में, अट्ठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में सम्पूर्ण समाज के समानहित, अपि च सामूहिक सामाजिक विकास की चिन्तनधारा विकसित हुई है, किन्तु भारत देश में, महाभारत-काल में ही नहीं, अपितु इससे भी पूर्व 'समाजवाद' की दृष्टि एवं समानहित तथा समाजवाद पर आधृत समाज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

के निर्माण एवं विकास की धारणा सम्यक् प्रकार से सुपरीक्षित हो चुकी थी, जिसके प्रमाणस्वरूप कर्मयोगी श्रीकृष्ण द्वारा कथित और महर्षि वेदव्यास द्वारा सुसम्पादित गीता में वर्णित समाजवाद का स्वर स्पष्टतः मुखरित है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः' तथा 'समत्वं योगमुच्यते' और 'येषां साम्ये स्थितं मनः' के साथ 'लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन् कर्त्तुमर्हसि' का उपदेश देती हुई गीता-वाणी ने स्पष्टतः उद्घोषणा की है कि समाज में पण्डित, अर्थात् पवित्रबुद्धि एवं प्रशंसनीय मेधावाले व्यक्ति वे होते हैं, जो पूरे समाज के प्रति समदर्शिता रखते हैं तथा 'कर्मयोग' की स्थिति तब आती है, जब श्रम में, शासन में, अर्थवत्ता में तथा प्रत्येक वर्ण और वर्ग में 'समत्व' की बुद्धि व्यवहृत होती है। जिनकी मानसिक स्थिति में समता, समूहवादिता, लोककल्याण एवं लोकसंग्रह की भावना का जागरण होता है, उन्हें सर्वविध मोक्ष, अर्थात् सामाजिक जीवन में 'मुक्ति' का आनन्द मिलता है।

आरिस्टॉट्ल, साक्रेटीज, हीगेल, एंगेल्स, रूसो, कार्लमार्क्स और लेनिन से बहुत पहले ही गीता में कर्मवाद का और कर्मफलभोक्ताओं के लिए सम्पूर्ण समाज तथा सर्वभूतहित में रत रहनेवालों के श्रेयोमार्ग की घोषणा हुई है। प्रत्येक मनुष्य को पूरे समाज की भलाई के लिए उद्योग करना 'सर्वभूतहिते रताः' ही गीता के उपदेश का तत्त्व है। मिल, स्पेन्सर और काण्ट प्रभृति आधिभौतिकवादियों का यह कथन कि 'नीति' की पराकाष्ठा अथवा कसौटी यही है कि 'प्रत्येक मनुष्य को सारी मानवजाति के हितार्थ उद्योग करना चाहिए' यह गीता में वर्णित 'स्थितप्रज्ञ' की परिभाषा में समाहित होता है।

महाभारत के शान्तिपर्व का श्लोक है :

सर्वेषां यः सुहृन्नित्यं सर्वेषां च हिते रतः।
कर्मणा मनसा वाचा स धर्मं वेद जाजले ॥

अर्थात् उसी ने धर्म को जाना, जो कर्म से, मन से और वाणी से 'सबका हित' करने में लगा हुआ है और जो सबका सदा स्नेही है।

सभी प्राणियों में 'एक आत्मा' को जान लेनेवाला ही 'साम्य' को, अर्थात् साम्यवाद को परख लेने में समर्थ हो सकता है। उसी की वासना, अर्थात् लोकाचरण शुद्ध हो सकता है।

गीता के बारहवें अध्याय में स्पष्ट कहा गया है कि 'यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः', अर्थात् जिससे लोग पीड़ित और शोषित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होते तथा जो लोगों को शोषण, उत्पीड़न से उद्विग्न नहीं करता है, वह स्थितप्रज्ञ एवं लोककल्याण में सदा संलग्न रहता है। यह गीता-ग्रन्थ, अट्ठारहवें अध्याय के चौवनवें श्लोक में स्पष्ट घोषणा करता हुआ कहता है :

समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्।
भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः ॥

जो, समस्त समाज में और प्राणियों में समता की भावना रखता है, वही मेरा भक्त हो सकता है, मुझे जान सकता है तथा मेरा अपनापा पा सकता है। समाज के समदर्शी नेता श्रीकृष्ण, पूरे समाज को आवाहन देते हुए कहते हैं अर्जुन से—"तू अपनी बुद्धि को सम और स्थिर कर तथा कर्म को त्याग देने के व्यर्थ भ्रम में न पड़कर स्थितप्रज्ञ की-सी बुद्धि रखकर और स्वधर्म के अनुसार प्राप्त हुए सभी सांसारिक कार्यों को पूरे समाज की सम्यक् अभ्युन्नति के लिए कर्मरत होकर कर्मयोगी बन।" साम्यबुद्धि से समाज के पूरे वर्ग के प्रति समता की भावना रखनेवाले को कभी किसी भी प्रकार का कष्ट तथा संकट परेशान नहीं करता है।

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥

चेतनशील और जागरूक व्यक्ति की दृष्टि समाज के विद्याविनयसम्पन्न वर्ग, समाज के सर्वतोभावेन सतत संरक्षण में संलग्न वर्ग, गौ आदि पशु तथा कृषि के द्वारा समाज के उत्पादन-पक्ष को समृद्ध करनेवाले वर्ग एवं समस्त राष्ट्र की सर्वविध सेवा में रत रहनेवाले वर्ग के प्रति समता की दृष्टि होती है। 'सर्वभूतहित' अथवा 'अधिकांश लोगों के अधिक कल्याण' वाला नीतितत्त्व ही गीता के 'स्थितप्रज्ञ' धर्म का मर्म है। प्राणिमात्र में 'एक आत्मावाली' स्थितप्रज्ञता ही साम्यबुद्धि अथवा समाजवादी दर्शन की रीढ़ है। गीता के ?वें अध्याय में 'तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्' की घोषणा पूर्णतः समाजवाद की मूलप्रेरणा का उत्स है।

'यत्र वा अस्य सर्वमात्मैवाभूत्', अर्थात् जिसे सर्व आत्ममय हो गया, वह साम्यबुद्धि से ही सबके साथ बरतता है, यह बृहदारण्यकोपनिषद् का कथन है। इसे ही ईशावास्य और कैवल्य-उपनिषदों में और मनुस्मृति के बारहवें अध्याय में भी व्याख्यायित किया गया है। गीता के छठे अध्याय में 'सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि' का अक्षरशः उल्लेख हुआ है। सर्वभूतात्मैक्य अथवा साम्यबुद्धि के इसी तत्त्व का रूपान्तर आत्मौपम्य दृष्टि है और इसे ही वर्त्तमान युग के सन्दर्भ में समाजवाद कहते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पाश्चात्यदेशीय आधिभौतिकवादियों द्वारा प्रतिपादित समाजवाद का क्षेत्र केवल मानवमात्र—श्रमिक और पूँजीपति-वर्ग से सम्बन्धित है, किन्तु गीता में प्रतिपादित समाजवाद का विचार-विस्तार समस्त जीवधारियों से सम्बन्ध रखता है। समाज में मनुष्यों के पारस्परिक व्यवहार के विषय में 'आत्मौपम्य' बुद्धि की सहज और सर्वग्राह्य सन्देश गीता में प्रतिपादित हुआ है। गीताकाल में चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था जारी थी और उस समय सामाजिक कर्म चातुर्वर्ण्य के विभाग के अनुसार हर एक के हिस्से में आ पड़ते थे। अट्ठारहवें अध्याय में गुणकर्म-विभाग पर आधृत समाजवाद की विस्तृत व्याख्या गीता में हुई है।

गीताज्ञान का सर्वान्तः निचोड़ जिन शब्दों में अभिव्यक्त हुआ है, वह है :

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः॥

अर्थात्, इस संसार को उन लोगों ने इसी जन्म में जीत लिया है, जिनके अन्तःकरण में सबके प्रति 'समता' का, साम्यवाद का अथ च समाजवाद का भाव है; क्योंकि 'ब्रह्म' की अवस्थिति समंता की है, समत्व की है, सबके प्रति समानता की है। अतएव जो पूरे समाज को साथ लेकर समता के रथ पर चलते हैं, समाजवाद के पथ पर चलते हैं, वे निश्चय ही पूर्णतः 'ब्रह्म' को प्राप्त करते हैं तथा 'ब्रह्ममय' हो जाते हैं। तब सारी वसुधा कुटुम्बवत्, अर्थात् अपनापा-सम्बन्ध से संयुक्त लगने लगती है। इस प्रकार, गीता में कथित समाजवाद किसी देशविशेष के लिए नहीं, अपितु सारी वसुधा पर निवसित प्राणिमात्र के लिए है।

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता।
योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः॥ (गीता : ६.१९)

जिस प्रकार वायु-रहित स्थान पर दीपशिखा चलायमान नहीं होती, उसी प्रकार योगी का चित्त जब परमात्मा में लग जाता है, तब वह स्थिर हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैशन बनाम विदेशीपन

पश्चिम चम्पारण जिले के श्रीरामभजन सिंह, सुदूर देहात के अंचल में जीवन व्यतीत करनेवाले एक साधारण ग्रामीण किसान हैं। इनका प्यारा ज्येष्ठ पुत्र वाराणसी के विश्वविद्यालय में गत चार वर्षों से विज्ञान का छात्र है। गत एक वर्ष से जब उसका न कोई पत्र अथवा समाचार बाबू साहब को मिला, तब वे वात्सल्य-करुणा से पीडित होकर अपने प्यारे पुत्र को देखने के लिए वाराणसी नगर में पधारे।

उनका पुत्र विनयकुमार विश्वविद्यालय-परिसर में छात्रावास में रहता है। गाँव से जब वह नगर के लिए चला था, भोला-भाला देहात का वह तरुण, कन्धे पर अँगोछा, पाँव में चप्पल, ठेहुने तक धोती, साधारण-सा कुरता और मुण्डित-केश आया था। पिता ने चलते समय बारम्बार आगाह किया था, शहरी चाकचिक्य से अथवा फैशनपरस्ती से बचने के लिए। आज जब रामभजन सिंह ने रात्रि के एक बजे अपने दोस्तों के साथ सिनेमा और होटल से लौट आनेवाले अपने प्यारे पुत्र को छात्रावास के उस कमरे की बिजली बत्तियों के दूधिये प्रकाश में देखा, तब वे सूटेड-बूटेड अपने बेटे को कुछ देर तक पहचान नहीं पाए, भौंचक्के रह गये। कहाँ वह ग्राम का लिवास और कहाँ यह विदेशीपन के बोझ से बोझिल नगर का फैशन। धोती, चप्पल और कन्धे का अँगोछा गायब, सूट, टाई, सारे तंग कपड़े और पैर की स्वाधीनता को बाँध रखने वाला छः इंच ऊँचा बूट, बूढ़े बाप को अचम्भे में डाले हुए था।

अपने प्यारे बेटे के अन्य दूसरे साथियों को तो देखकर वे और भी हक्का-बक्का रह गए। हिप्पी कट, होची मिन्ह कट और न जाने क्या-क्या कट बनाए हुए उसके सभी साथी एक अजीब तरह के पहनावे और विचित्र भाव-भंगिमा में परस्पर वार्त्तालाप कर रहे थे।

बाबू साहब भूल गए कि वे काशी विश्वनाथ की नगरी वाराणसी में हैं या टेम्स नदी के किनारे लन्दन में।

आखिर यह फैशन और विदेशीपन देश को कहाँ ले जा रहा है! युवा पीढ़ी किस तरह से आँखें मूँदकर विदेशीपन को अपना रही है और भारत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्राचीन परम्परा तथा उसके मौलिक स्वरूप से दूर बहुत दूर चलती चली जा रही है।

उन्नीस सौ उनहत्तर की बात है। नई दिल्ली में निवसित अपने एक मित्र के यहाँ मैं आतिथ्य-लाभ कर रहा था। गरमी का मौसम था। सुहावनी और स्वेदकण को हरनेवाली शीतल हवा रात्रि के लगभग दस बजे बहने लगी थी। हम सब बाहर के बरामदे पर अभी-अभी भोजन समाप्त करने के बाद बैठकर लघुवार्त्ता में तल्लीन ही थे कि मेरे मित्र की बीस वर्ष की वयस्का, प्राप्तयौवना पुत्री और उससे कुछ ही अधिक उम्रवाली पुत्रवधू कनाट प्लेस से लौटी थी। तंग चोलियों में लिपटी, रक्त रंग से रंजितोष्ठी, कुछ सहमी, कुछ घबड़ाई, कुछ डरी और पिता की सम्भावित तनी भृकुटियों से आशंकित पिछले दरवाजे को खुला न पाकर सामने से ही हौले-हौले पाँवों से बरामदे तक पहुँच ही पाई थी कि अनिच्छुक होकर भी पिता के सान्निध्य होने की उपेक्षा न कर पाई। मैं जो एक अभिवादनीय अतिथि बैठा था! अभिवादन के अनन्तर तेज गति से कमरे में दाखिल होना ही चाहती थी कि पिता की दृष्टि पुत्री के पीछे की उस तंग वेश-भूषा पर पड़ी जो कमर के नीचे फटी हुई थी और चीख-चीखकर भोंड़े विदेशीपन की फैशनपरस्ती की मर्सिया पढ़ रही थी। विस्तृत वार्त्ता के बाद पिता को यह ज्ञात हुआ कि तंग सलवार ने कनाट प्लेस आते समय बस पर चढ़ते समय पाँव को उठने नहीं दिया। कण्डक्टर के सहारा देने पर भी आखिर सलवार का पिछला हिस्सा फट पड़ा और नंगी जाँघ विदेशी वेश-भूषा की नग्नता पर फूट-फूटकर रोने लगी।

यह आँख मूँदकर विदेशीपन की अन्धानुकरण-प्रवृत्ति का उदाहरण है। भारत के बाहर के कई देश ऐसे हैं, जहाँ भयंकर ठण्ड पड़ती है और आसमान बारहों महीने बर्फ गिराता है। कुछ देश ऐसे भी हैं, जहाँ वर्ष-पर्यन्त बारिस होती रहती है। अनेक ऐसे भी देश हैं, जहाँ सदैव गरमी, लू और बालुओं का तूफान चारों दिशाओं से उड़ता रहता है। उन-उन देशों के अनुकूल, उन सभी देशों की प्राकृतिक परिस्थिति के उपयुक्त वेश-भूषा और रहन-सहन का तरीका प्रचलित है। समझ में नहीं आता है कि भारत जैसे समशीतोष्ण देश में उन विदेशी वेश-भूषाओं का अन्धानुकरण क्यों किया जाता है। इस प्रकार, विदेशी अनुकरण के परिणामस्वरूप भारतीय प्रकृति से विपरीत होने के कारण अनेक प्रकार के रोग और व्याधियाँ इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैशन की देन हैं। इसका आर्थिक पहलू भी है। शृंगार-सज्जा और विदेशी फैशन के चाकचिक्य की वस्तुएँ जितनी मांत्रा में भारत के बाजारों में बिकती हैं, उतनी अन्य देशों में नहीं। विविध प्रकार की अँगरेजी दवाइयों की खपत जितनी इस देश में है, उतनी अन्य देश में नहीं। हम आये दिन भारत के नगरों के बाजारों में विदेशी कम्पनियों के बने हुए 'लक्ज़री' के सामान की खपत जितनी मात्रा में भारत में देखते हैं, उतनी अन्य वस्तुओं की होते नहीं देखते। जिसका फल है भारतीय मुद्रा का अथवा भारतीय अर्थ का विदेशों में विस्तार और विनिमय।

अनेक ऐसे परिवार हमें मिले हैं, जहाँ नई पीढ़ी का युवक धोती पहनना ही नहीं जानता है। उसने जन्म से लेकर तरुणाई तक धोती पहनी ही नहीं। कई आभिजात्य परिवारों में यज्ञोपवीत अथवा विवाह आदि संस्कारों के कर्मकाण्ड के समय यज्ञमण्डप पर हमें युवा पीढ़ी के यजमान को पहली बार धोती पहनने से हिचक होते देखकर आश्चर्य में ही नहीं पड़ना पड़ा, अपितु मुझे स्वयं धोती पहनाना सिखाना पड़ा। कई परिवारों में युवतियों को साड़ी पहनने में इसलिए असुविधा हुई है कि वे जन्म से ही सलवार पहनती रही हैं और तंग चोलियों में जकड़ी रही हैं।

विदेशी फैशन की सबसे अधिक प्रवृत्ति महिलाओं में देखी जाती है। वे सिनेमा देखती हैं और उसमें तारिकाओं के जितने भी नये-नये कट और नये-नये फैशन आते हैं, उसका अनुकरण करती हैं। बिना बाँह का ब्लाउज और कटि से ऊपर भाग की नग्नता तथा वक्षस्थल का अधिकाधिक उद्दीपन नये फैशन की देन है। इससे जहाँ परिवार का आर्थिक पक्ष प्रभावित होता है, वहीं समाज में कामोद्दीपन भी होता है, जिसके अनेक अनर्थकारी प्रभाव प्रतिदिन सुनने को मिलते हैं। आज बाजार में जाने पर भारत की प्राचीन परम्परा और भारतीय प्रकृति के अनुकूल जीवन-यापन-पद्धति की सामग्री अति न्यून मात्रा में देखने को मिलती है, नये फैशन की सामग्री अधिक मिलती है।

शहरों की सड़कों पर धोती और भारतीय वेश-भूषा में रहनेवाले दो प्रतिशत ही मिलते हैं। विश्वविद्यालय का परिसर हो या सचिवालय का कक्ष, न्यायालय की परिधि हो या चिकित्सालय की चहारदीवारी, सभी जगह नये-नये फैशन, नये-नये कपड़े का कट और नई पीढ़ी के लोगों के सोचने का नया ढंग देखने को मिलता है। भारतीय सभ्यता पर विदेशी सभ्यता छा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई है। विदेशी भौतिकवाद ने भारत को मानसिक रूप से गुलाम बना डाला है। इसी का परिणाम है भ्रष्टाचार। आवश्यकता बढ़ती है, फैशन बढ़ता है, उसके लिए साधन चाहिए और साधन जुटाने के लिए धनराशि। धनराशि एकत्रित करने के लिए भ्रष्ट तरीके, तस्करी, जमाखोरी, घूस का लेना-देना आदि अनाचार अपनाये जाते हैं। अतः भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए, समाज को बदलने के लिए, राष्ट्र को पवित्र, प्रगतिशील, शुद्ध और समग्र क्रान्ति में चलने के लिए विदेशी फैशनपरस्ती को मिटाना होगा, छोड़ना होगा, तभी भारत नया बनेगा तथा नये भारत का निर्माण होगा, देश की समृद्धि होगी और राष्ट्र का कल्याण होगा।

●

त्यागो गुणो गुणशतादधिको मतो मे
विद्या विभूषयति तं यदि किं ब्रवीमि।
शौर्यं हि नाम यदि तत्र नमोऽस्तु तस्मै
तच्च त्रयं न च मदोऽस्ति विचित्रमेतत्॥

मेरी दृष्टि में सौ गुणों से भी बढ़कर पहला गुण त्यागवृत्ति है और यदि वह त्याग विद्या से विभूषित हो, तब तो कहना ही क्या है! उसपर भी यदि तीसरा गुण शूरता का भी किसी में हो, तो वह वस्तुतः नमस्य है। और, इन तीनों गुणों से मण्डित होते हुए भी यदि किसी में अहंकार नहीं है, तो यह और अधिक आश्चर्य का ही विषय है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदों में इतिहास

भारतीय वाङ्मय का अमर-रत्न वेद सदा से अनेक रहस्यों का भाण्डार रहा है। वस्तुतः वेद में जिस विद्या की तथा जिस सामाजिक अवस्था की परिकल्पना की गई है, वह अद्भुत है। वेद में राजधर्म, लोकधर्म, आचार्यधर्म, यजमान तथा पुरोहित के धर्म, अर्थात् कर्त्तव्य के सूक्ष्म और विस्तृत, दोनों प्रकार के विवेचन किये गये हैं। दार्शनिक अथवा सिद्धान्त-पक्ष की व्याख्या 'उपनिषद्' है और साधन अथवा कर्त्तव्य या कर्मकाण्ड-पक्ष की व्याख्या 'ब्राह्मणग्रन्थ' (कर्मकाण्ड-ग्रन्थ) करते हैं।

वेद में इतिहास अथवा ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या करनेवाले विद्वान् तथा भाष्यकार वेदों में वशिष्ठ, विश्वामित्र, सुदास आदि व्यक्तियों, बबर, प्रवहनी, गन्धर्व आदि देशों तथा सिन्धु और यमुना आदि नदियों को पाते हैं और इतिहास की अनेक घटनाओं की सविस्तर व्याख्या का समावेश करते हैं। वेदों में इतिहास सिद्ध करने से जहाँ इतिहास के अनेक रहस्य-सूत्र उत्तानित हुए हैं, वहीं वेदों की नित्यता और स्वतः प्रामाणिकता तथा अनादिता पर दोष भी आये हैं। भारतीय वैदिक विद्वान् जहाँ वेदों की नित्यता सिद्ध करने के लिए वेदमन्त्रों की आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक व्याख्या करते रहे हैं, वहीं कतिपय आर्यों के इतिहास के प्रति सदाग्रही होने के कारण पाश्चात्य विवेचकों को उनकी अनुचिन्तना को आधार मानकर वेद में इतिहास सिद्ध करने तथा श्रुति की नित्यता पर आक्षेप करने का अवसर मिला है। यों तो वेद में इतिहास माननेवाला पक्ष भारत में भी प्रारम्भ से ही रहा है। या एक आचार्य के समय में भी वेदमन्त्रों को ऐतिहासिक दृष्टि से देखनेवाले विद्वान् थे, जिनका उल्लेख निरुक्त में स्थान-स्थान पर हुआ है। यास्क के सम्बन्ध में तो 'कुत्स' नामक व्यक्ति के अनुयायी 'कौत्सों' ने वेदों को अनर्थक बतलाकर बहुत अपवाद फैलाया था, जिसका तत्कालीन विद्वानों ने सफल समाधान किया था।

वेदों के सम्बन्ध में इस ऐतिहासिक अर्थ करनेवाले आक्षेपकों ने न केवल भारत की नई समस्याओं को उलझाया है, अपितु वैदिक सभ्यता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर भी कलंक के छींटे लगाये हैं। जैसे ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के १२६वें सूक्त के तीसरे मन्त्र में लिखा है :

उप मा श्यावाः स्वनयेन दत्ता।
वधूमन्तो दश रथासो अस्थुः ॥

आचार्य सायण के शब्दों में—मुझे स्वनय से दिये गये श्याम वर्ण के घोड़े से जुते वधुओं से (बहुओं से) युक्त दस रथ प्राप्त हुए हैं। यहाँ 'वधूमन्तः' शब्द ही अनर्थ का कारण हो गया है। 'वधूमन्तः आरूढाभिर्वधूभिस्तद्वन्तः' : वधू उसपर चढ़ी थी, उन वधुओं से ही वे रथ वधूमान् थे। उपर्युक्त उद्धरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार शब्दों का गाम्भीर्य न समझकर अनर्थकारी ऐतिहासिक पक्ष उपस्थित किये गये हैं। यहाँ पर वशिष्ठ जैसे ऋषि को रथ, गउएँ और कन्याएँ दान में मिलीं और वशिष्ठ उनपर चढ़कर और सुदास के दान की प्रशंसा करते हुए पुत्र के पास जाते हैं। ऐसे वर्णन से वशिष्ठ पर तथा भारतीय संस्कृति पर चिन्तनीय आक्षेप हो जाता है। वस्तुतः, 'वधूमन्तः' शब्द का अर्थ वधुओं से युक्त नहीं, अपितु वहन करनेवाली घोड़ियों से है। वधू शब्द से स्त्रियों का यहाँ ग्रहण नहीं हो सकता।

यदि ऐतिहासिक अर्थ को युक्तियुक्त मान लिया जाय, तो ऋग्वेद के मण्डल सात, सूक्त अट्ठारह के बाईसवें तथा तेईसवें मन्त्र का 'वधूमन्तः' और 'तोकाय श्रवसे' से यह स्पष्ट हो जाता है कि वशिष्ठ ऋषि को सुदास राजा के द्वारा दान में गायें आश्रमस्थ छात्रों को दूध पीने के लिए मिली थीं। ये वधुएँ स्पष्ट उनके पुत्रों के लिए उसी प्रकार मिली थीं, जिस प्रकार वृद्ध ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने राजकुमारों के लिए काशीराज की कन्याएँ प्राप्त की थीं। वेदमन्त्र में यह नहीं लिखा कि वे वशिष्ठ को ब्याह दी गई थीं। इस प्रकार का अर्थ भी एकमात्र केवल ऐतिहासिक पक्ष के पोष के लिए ही हो सकता है, किन्तु वस्तुतः वेदार्थ-शैली के प्रतिकूल ही यह कहा जायगा। भारतीय व्याख्याताओं के इस प्रमाद के कारण ही 'वैदिक रिलिजन' नामक ग्रन्थ में मैकडॉनल ने भी लिखा है :

On his starting up the Raja accosted him with cordialy and married him to his ten daughters.

चारों वेदों के अँगरेजी-रूपान्तरकार ग्रिफिथ ने लिखा है :

Horses of dusky colour stood to beside me ten chariats Swanaya's with mares to draw them.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पष्ट है कि ग्रिफिथ सायण के अनुसार वधू, कन्या, स्त्री आदि नहीं मानते। वे वधू शब्द से निरुक्तार्थ 'वधूर्वहनात्' ढोने से वधू शब्द मानते हैं। अतः, यहाँ रथ को खींचनेवाली घोड़ियाँ अर्थ ही उपयुक्त है।

हमें समझ में नहीं आता कि ज्ञानमय ग्रन्थ वेद में वशिष्ठ जैसे महा तपस्वी आत्मविद् ऋषि के लिए प्रसन्नतापूर्वक सुदास या विजवन के पुत्र की दी हुई कन्याओं, गायों और रथों की दान-सूची बतलाना सम्भव हो सकता है? इसमें वेद का दार्शनिक तत्त्व नष्ट हो जाता है और उसका काव्य-पक्ष तथा इतिहास-पक्ष परिपुष्ट होता है। वेद के सम्बन्ध में इससे अधिक अपवाद की और क्या बात हो सकती है। उव्वट, महीधर और सायण आदि व्याख्याकारों ने पूर्वाग्रह-युक्त होकर जो वेदार्थ किये हैं, उसी के आधार पर यूरोपियन लेखकों ने तथा वेदों में इतिहास के समर्थकों ने निम्नलिखित परिणाम निकाले हैं—वेदकाल में नरबलि थी, ऋषि लोग अपने लड़कों को बेचते थे और राजा लोग खरीदते थे। वरुण को ब्राह्मण-पुत्रों की बलि चढ़ती थी। ऐसे यज्ञों के करानेवाले विश्वामित्र जैसे तपस्वी थे। वेदकाल में बहु-विवाह तथा क्षत्रियों द्वारा ब्राह्मण-वध बहुत प्रचलित था। उपर्युक्त आक्षेपों के आधार वेदमन्त्रों के वे अर्थ थे, जो इतिहासपरक किये गये हैं। इससे हमारी उन्नत और ज्ञानमय सभ्यता पर, वेद जैसी सर्वमान्य पवित्र पुस्तक के आधार पर आक्षेप लगता हो तो चित्त को खेद होता है।

ऐतिहासिक पक्ष के निम्नलिखित मानबिन्दु हैं, जिसकी वैज्ञानिकता न समझने के कारण भ्रम हो गया है।

१. वेद में ऋषियों, राजाओं, पर्वतों, नगरों और जनपदों के नाम से मिलते-जुलते-से ऐसे नाम प्रयुक्त हुए हैं, जो वस्तुतः इनके नहीं हैं, अपितु अपना विशिष्ट आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक अर्थ रखते हैं, किन्तु वे नाम लौकिक इतिहास में बहुधा सुने जाते हैं, इसी से अनेक भ्रम उत्पन्न हो गये हैं।

२. वेद में क्रियापदों के वे रूप प्रयुक्त हैं, जो लोकभाषा में भूतकाल के बोध के लिए प्रयुक्त होते हैं।

३. वेद के मन्त्रों तथा सूक्तों के साथ अनेक ऋषियों के नाम जुड़े हुए हैं। वे ऋषि वेदमन्त्रों के अर्थद्रष्टा और अपनी अनुभूति से वेदार्थ-प्रदाता थे, वेदमन्त्रों के कर्त्ता नहीं थे। किन्तु ऐतिहासिकों के द्वारा वे वेदमन्त्रों के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्त्ता अथवा रचनेवाले मान लिये जाते हैं। ऐसा मान लेने से ऋषि (मानव) ही वेद के कर्त्ता (ज्ञाता अथवा रचयिता या दिव्य ज्ञान के प्रेरक) मान लिये जायँ, तो वेद का नित्यत्व नष्ट हो जाता है, और वेद को नित्य नहीं मानने से भारतीय संस्कृति की वह अविच्छिन्न परम्परा जो अनादि तथा अनन्त काल से प्रवाहित होती रही है, कलुषित हो जायेगी और भारत की सर्वश्रेष्ठ मान्यताएँ टूटकर बिखर जायेंगी। अतः, वेद की महत्ता को अक्षुण्ण रखने के लिए ऐतिहासिक पक्ष की परीक्षा आवश्यक हो गई है। वेद में ऐतिहासिक आख्यानकों के माननेवाले लोगों ने आर्यों को भारतीय सिद्ध करने तथा आर्य शब्द की गुण या विशेषताबोधक अर्थ को भुलाकर जाति या वर्ण से सम्बन्धित ऐसे अर्थ की कल्पना कर डाली है, जिससे 'आदिवासी' शब्द की अराष्ट्रीय कल्पना करके अनायास ही एक राजनीतिक समस्या वर्त्तमान भारत में खड़ी हो गई है। आशा है, वेदार्थ के सत्यपक्ष को ग्रहण करके हम असत्य मतों का निराकरण करने में समर्थ होंगे।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान और अन्धविश्वास

सामाजिक विकास और समाज के स्थिरीकरण के निमित्त विश्वास एक ऐसा स्तम्भ है, जिसपर समाज-विकास का दृढीकरण निर्भर है। विश्वास अपने-आपमें विकास-क्रम से तीन रूपों में व्यवहृत होता है—१. विश्वास, २. अतिविश्वास और ३. अन्धविश्वास।

पूर्ववर्त्ती मान्यता के अनुसार विश्वास सदैव 'फलदायक' होता है। अतिविश्वास से कभी-कभी संकल्प अथवा गतिशीलता में व्यवधान आता है और धारणा तथा भरोसा आहत होकर गत्यवरोध की स्थिति तक पहुँच जाता है। इसी से समाज के विकास में अथवा व्यक्ति और परिवार के परिपोषण में 'अतिविश्वास' फलप्रद नहीं है। समाज-विकास के क्रम में सामयिक परिस्थितियों के कारण कुछ ऐसे आचरण और क्रिया-कलाप स्वीकृत होकर, परम्परा की सीढ़ियों पर चढ़कर ऐसे बिन्दु पर पहुँच जाते हैं, जिन्हें अन्धविश्वास कहा जाता है। समाज-संस्था के विकास-क्रम में इतिहास के आदिकाल से कुछ ऐसी धारणाएँ तथा स्थापनाएँ व्यक्ति के आचरण-संवर्ग में प्रचलित होती रही हैं। स्थायी रूप में, सामयिक रूप में, जातीय रूप में और उपासना-पद्धति के रूप में, जिससे पृथक् होना व्यक्ति के लिए और समाज के लिए असम्भव तथा अव्यावहारिक हो गया है। अन्धविश्वास की यह जड़ता मानव-प्रगति और समाज के विकास में चिन्तनीय बाधा उपस्थित करती है। विभिन्न प्रकार के अन्धविश्वासों और रूढ़ियों में जकड़ा हुआ समाज शताब्दियों तक प्रगति की दौड़ में पिछड़ा रह गया, यह ऐतिहासिक सत्य है। फलस्वरूप, प्रकृति-प्रदत्त अनेकानेक संसाधनों से और ज्ञान को विकसित करनेवाले प्रकाश-किरणों के संस्पर्श एवं सदुपयोग से समाज वंचित रह गया।

युगों-युगों तक अन्धविश्वास के कीचड़ में फँसा हुआ समाज जब पंगु हो गया, तब विज्ञान ने प्रकाश की किरणें दीं और अन्धविश्वास के कुहरे को काटकर पूरे के पूरे समाज को प्रकृति के चरम सत्य विश्वास के धरातल पर लाकर खड़ा किया। विज्ञान की यह देन अद्भुत, तथ्यपरक, स्वीकरणीय तथा व्यक्ति-परिवार एवं समाज के विकास के लिए मूल्यवान् सिद्ध हुई है। धरती के स्वरूप और उसकी गति के सम्बन्ध में अवस्थित सूरज-चाँद और राहु-केतु की गतिमत्ता के फलस्वरूप होनेवाले भौगोलिक परिवर्त्तनों ने विविध प्रकार की धारणाओं के आधार पर अन्धविश्वास को स्थापित किया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। इन अन्धविश्वासों का समर्थन परम्परा के परिपोषक लेखकों ने पौराणिक आख्यानों में भी कर दिया था। विज्ञान जितना ही आगे बढ़ा, विज्ञान के विकास के फलस्वरूप, नये-नये यन्त्र तथा अभियन्त्र विकसित होने लगे। तकनीक के अनेकानेक आयाम प्रकट हुए। फलस्वरूप, अन्धविश्वास के निविड़ अन्धकार से निःसृत मानव-समुदाय ने विज्ञान के विस्तृत प्रांगण में साँस ली और विचरण करने लगा। अन्धविश्वास और विज्ञान का यह संघर्ष शताब्दियों से जारी है। विवेकहीनता की बुनियाद पर खड़ा यह अन्धविश्वास मानव-प्रगति को अपनी पूरी शक्ति के साथ अवरुद्ध करता है। किन्तु विज्ञान तथा तकनीक की अपरिमित तथा अपराजेय शक्ति से पराजित होकर अन्धविश्वास मानव-प्रगति के मार्ग से अलग तो हो जाता है, किन्तु पुनः आसुरी वृत्ति के समान कुछ दूर हटकर, कुछ दूर चलकर प्रगति के चौराहे पर आकर, नया अन्धविश्वास बनकर, नये रूप में रोड़ा बनकर, प्रगति के मार्ग को अवरुद्ध कर देता है। समाज की स्थानीय तथा सामयिक समस्याओं के समाधान के लिए जो भी उपाय अथवा प्रयोग जारी किये जाते हैं, उनकी व्यर्थता सिद्ध हो जाने के बाद भी समाज उनको पकड़ लेता है और अन्धविश्वास को नया क्षितिज मिल जाता है। एक समय था, जब समाज ने गगनविहारी नक्षत्रों तथा ताराओं से सम्बन्धित गलत धारणाओं को न केवल पाल ही रखा था, अपितु वनों, वृक्षों, वनचारी हिंसक जीव-जन्तुओं तथा नागों और सर्पों से भी तादात्म्य स्थापित करके अन्धविश्वास की रीतियों को अंगीकृत किया था। समाज में प्रचलित विवाह आदि संस्कारों की परम्परा के कर्मकाण्ड में रूढ़िवत् अन्धविश्वास की परम्पराएँ तथा व्रतों-त्योहारों में आयोजित पूजा-पद्धतियों में अन्धविश्वास और रूढ़ियों का जंगल इस प्रकार बन जाता है कि आज का बुद्धिजीवी वर्ग उसमें केवल अपनी न केवल व्यर्थता का ही अनुभव करता है, अपितु अन्धविश्वास के साथ न कोई समझौता कर पाता है और न समरस हो पाता है।

आधुनिक पूजा-पद्धति पर व्यवहृत अन्धविश्वास की रीतियों से अपने को न मिला पानेवाला विज्ञानवादी बुद्धिजीवी वर्ग जब तटस्थ हो जाता है, तब समाज का परम्परानुयायी अन्धविश्वासी वर्ग उसे नास्तिक या धर्मविरोधी कहने लगता है। अन्धविश्वास और विज्ञान का यह संघर्ष सतत जारी है। वस्तुतः रीति-परम्पराओं से आबद्ध होकर व्यक्ति के कर्मकाण्ड क्रिया-कलाप अगर जारी रहेंगे, तब न तो विज्ञान को अपने आविष्कारों को आयाम देने का अवकाश मिलेगा और न विज्ञान के नव्यतम आविष्कारों से होनेवाले असाधारण तथ्यों से ही समाज लाभान्वित होगा। कल्पना कीजिए—आज का मानव उपग्रहों द्वारा संचार-व्यवस्था का सम्बन्ध धरती के साथ जोड़ रहा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। किन्तु एक युग था, जब अन्धविश्वास ने समुद्र-यात्रा तक को अपवित्र और गर्हित मान रखा था। यदि इस अन्धविश्वास को मानव नहीं छोड़ पाता और अन्धविश्वास में अपने को लिपटाये रखता, तब दूर-ग्रह संचार की व्यवस्था का, विज्ञान के करिश्मा का लाभ कैसे मिलता?

इसी प्रकार एक दूसरी कल्पना है। गुरुत्वाकर्षण की उपलब्धि आविष्कर्त्ता को वृक्ष से टूटे फल के गिरने से मिली। किन्तु अन्धविश्वास के संस्कार से जड़ित भूत समाज की आस्था, वृक्षदेवता के प्रति जैसी थी, उसे मानने पर क्या उस आविष्कारक की सार्थकता सिद्ध हो सकती? धार्मिक अन्धविश्वासवादियों ने पृथ्वी को चिपटी तथा अचला कह दिया था। किन्तु विज्ञान के चक्षु-गोलक ने पृथ्वी को न केवल गोल सिद्ध किया, अपितु उसकी अचलता को भी तथ्य से रहित साबित किया। ग्रहों की अवान्तर स्थिति की सत्यता प्रकट हुई और सूरज-चाँद के साथ राहु-केतु के संघर्ष की कल्पना भी विज्ञान के प्रदीप के समक्ष अपनी असामान्य तथ्यपरक तत्त्व के साथ प्रकट हुई। इस प्रकार, निःसन्देह कहा जा सकता है, अन्धविश्वास की दुर्गम घाटियों में पथ-विस्मृत मानव-समुदाय जब-जब प्रगति के पथ का अनुसरण नहीं कर पाता है, तब-तब विज्ञान का प्रदीप-स्तम्भ मानव-समाज को अन्धविश्वास के भूलभुलैया से निकालकर विकास के समतल धरातल पर ला उतारता है। किन्तु विचार का एक पक्ष और भी है। जिस प्रकार विश्वास के चरम सत्य से हटकर अन्धविश्वास मानव की प्रगति को रोकता है, उसी प्रकार विज्ञान निरा विज्ञान के रूप में जब उपस्थित होता है, तब वह कठोर निर्दय और भाव-संवेगों से मानव को अति दूर ले जाकर कभी-कभी उसकी आस्था और अस्तित्व पर अट्टहास करने लगता है। मानव में जो पवित्रता और आचरणगत शुचिता के भाव उसे पारस्परिक सम्मेलन के अवसर प्रदान करते हैं, वे निरा विज्ञान-की उपासना के परिणामस्वरूप उसे नीरस संवेदना-विहीन और असामाजिक बना देते हैं। व्यक्ति समाजपरक कम होकर आत्मपरक अधिक हो जाता है। पूरे समाज और परिवार के लिए कम सोचता है, केवल अपने लिए ही सोचता और स्वार्थी बन जाता है।

अतः, आज के सन्दर्भ में तात्त्विक चिन्तन यह होगा कि अन्धविश्वास को अपनी जडता छोड़कर विश्वास की मंजिल तक लौटना होगा और विज्ञान को कठोरता का परित्याग कर समाज में संवेदनशीलता तथा विज्ञान के उपासकों में लचीलापन लाना होगा, तभी अन्धविश्वास और विज्ञान का सामंजस्य हो पायेगा।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपाष्टमी

भारत की ऐतिहासिक परम्परा में तथा धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जनजीवन की निष्ठा तथा समाज के विकास में पर्वों का, महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। किसी भी देश और समाज में पर्व-परम्परा उसकी पूर्णता के द्योतक होते हैं। पर्व का शाब्दिक अर्थ भी है; पूर्णता और पालन-परिपुष्टता के संकल्पों का नवीकरण। हमारे भारतीय जन-समाज में पर्व ही उसकी परिपूर्णता तथा सम्पोषणता के प्रतीक हैं। प्रचलित पर्वों की मीमांसा से हमारे सामाजिक विकास के रोचक तथा मनोबल को बढ़ानेवाली कड़ियों का उद्‌घाटन होता है। पर्वों की इन कड़ियों में ही आज का गोपाष्टमी-पर्व विचारणीय है।

वर्षा ऋतु के बाद शरद् ऋतु के आते ही भारतीय कृषि-जीवन से सम्बन्धित तथा किसानों के अन्न-उत्पादन एवं अन्न-सम्पदा को बढ़ाने से सम्बन्धित पर्वों का सिलसिला शुरू होता है। धान के पकते समय पर्वों क़ी एक परम्परा है और गेहूँ के पकते समय फाल्गुन, चैत्र में पर्वों की दूसरी परम्परा है। अभी मैं पर्वों की विस्तृत व्याख्या और उनकी उपयोगिता के विस्तार में नहीं जाना चाहता हूँ।

आज से पाँच हजार साल पहले ही बात है, इस देश क़ी धरती को भगवान् कृष्ण ने पवित्र किया था। उस समय देश की सामाजिक, राजनीतिक और राष्ट्रवादी परिस्थितियाँ, आपस की फूट, ईर्ष्या-द्वेष, कुलाभिमान तथा अनेक प्रकार के पारस्परिक कलह के कारण प्रतिकूल हो गई थीं। देश की एकता और राष्ट्र-सम्पदा को बिखरते देखकर ही श्रीकृष्ण भगवान् ने महाभारत-संग्राम के द्वारा 'महान् भारत' की परिकल्पना की थी। उनके इस संकल्पों तथा क्रिया-कलाप से उस युग के प्रतिक्रियावादियों तथा निहित स्वार्थवाले दुष्ट प्रकृति के लोगों की स्वार्थपूर्त्ति में बाधा होने लगी। क़िन्तु, महात्मा कृष्ण ने अपने बल-वैभव से तथा राजनीतिक कूटनीतिक व्यवहार-कुशलता से एक-एक को अपनी रणनीति (स्ट्रेटेजी) के द्वारा पराजित किया था। उस युग के एक समाज-शत्रु नरकासुर का वध उन्होंने दीपावली से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन पहले आश्विन मास की कृष्ण-पक्ष की चतुर्दशी के दिन किया था। उसी की स्मृति में आज भी 'नरक चतुर्दशी' का व्रत मनाया जाता है।

भगवान् राम के रावण-विजय की स्मृति में उस युग से ही प्रचलित विजय-पर्व की परम्परा में, नरकासुर के वध के बाद, श्रीकृष्णयुगीन नरकासुर-वध प्रसन्नता-सूचक दीप-पर्व की एक दूसरी परम्परा आकर जुड़ गई। दीपावली के दूसरे दिन प्रातः-प्रातः ही उस युग के किसानों ने 'अन्नकूट' का अभियान चलाया और गो-संवर्धन का सिलसिला भी तभी से शुरू हुआ। 'गोपाष्टमी' का पर्व इन्हीं महत्ताओं का द्योतक है।

ऋग्वेद कहता है :

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ॥१॥
इन्द्रो यज्वने पृणते च शिक्षत्युपेद्ददाति न स्वं मुषायति।
भूयो भूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम् ॥२॥
न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामित्रो व्यथिरा दधर्षति।
देवाँश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह ॥३॥

(ऋ० ६.२८.१-३)

हमारे गोष्ठ (गौओं के रहने का स्थान) में गौएँ आवें, बैठे रहें और हमारे लिए मंगल करें। हमारे बीच आनन्दपूर्वक रहती हुई, हमारे घर में ये गौवें प्रजापति (उत्तम सन्तानोंवाली) होकर, अनेक प्रकार के राज्य के लिए बहुत दिनों तक दुग्धवती बनी रहें। हमारी गौएँ उसी प्रकार हमारे साथ रहें, जिस प्रकार परिवार के सभी सदस्य सदा आनन्दित हों, विविध स्थितियों तथा रूपों में रमण करते रहें ॥१॥

जो व्यक्ति और शासक, परिवार तथा राज्य के संघटन के लिए अपने गोधन की आय में से परिवार और राज्य को अपना देयांश देता रहा है, राज्य उसकी गौओं की रक्षा करता है और उस गोरक्षक समाज तथा राज्य पर किसी प्रकार के बाहरी आक्रमण के होने पर गोधन-प्राप्त वह शासक, समाज तथा राष्ट्र की रक्षा करने में समर्थ होता है। राज्य अथवा शासन का भी कर्त्तव्य होता है कि वह (भूयो भूयो रयिमिदस्य वर्धयन्) प्रजा अथवा सर्वसाधारण जन को उन उपायों का प्रोत्साहन दे, जिससे गोधन की उत्तरोत्तर वृद्धि हो सके ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे गौएँ, जिनसे राष्ट्र तथा शासन की सुरक्षा होती है, वे नष्ट नहीं होतीं, चोर उनपर प्रहार नहीं करता, शत्रु के, पीड़ा देनेवाले शस्त्रों के प्रहार का उनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और जिन गौओं से अथवा गोधन की आय से राज्य शासक और संचालक देवों का यजन, अर्थात् राज्य-शासन का संघटन करता है और जिनके घृतादि से अग्निहोत्रादि यज्ञ किये जाते हैं तथा अतिथि का घृतदुग्धादि से सत्कार किया जाता है, उन गौओं के साथ गोपालक गृहस्थ तथा राज्य-संचालक दीर्घकाल तक अपना, अपने शासन का तथा अपने राष्ट्र का पोषण एवं विकास करता है। शासन के गो-संवर्धन और गोरक्षण-योजना से रक्षित गौएँ न स्वयं नष्ट होती हैं और न राष्ट्र को नष्ट-भ्रष्ट होने देती हैं ॥३॥*

●

* यह लेख अपूर्ण प्रतीत होता है। —सम्पा०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की राष्ट्रीय एकता

सन् १९४७ ई० के अगस्त मास की पन्द्रह तारीख को जिस स्वाधीनता-यज्ञ की पूर्त्ति हुई तथा जिस स्वराज्य की उपलब्धि हुई, उसका प्रारम्भ महर्षि दयानन्द ने किया था। काँगरेस की स्थापना से दस वर्ष पूर्व (सन् १८७५ ई०) महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज का संगठन अथवा प्रवर्त्तन किया तथा देश में गणतन्त्र-शासन की स्थापना के लिए समाज-सुधार-आन्दोलन के माध्य. से राज्यक्रान्ति का बीजारोपण किया था।

विदेशियों के शिकंजे से अपने देश को मुक्त करने के लिए महर्षि में जो तड़प और बेचैनी थी, वह अन्य देशभक्तों में नहीं थी। महर्षि लिखते हैं—'यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है कि जिसके सदृश भूगोल में दूसरे देश नहीं हैं। आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है, जिसको लोहे-रूपी विदेशी छूते ही सुवर्ण, अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।'

महर्षि के ग्रन्थों में स्वदेशाभिमान कूट-कूटकर भरा हुआ है। वे भारतवासियों के हृदय में देशभक्ति की भावना उत्पन्न करना चाहते थे और राष्ट्र को यह सन्देश देते रहे कि एक दिन यह देश शक्ति-सम्पन्न था और स्वाधीन था। यदि प्रयास किया जाय तथा देश के प्रत्येक निवासी में ठीक शिक्षा तथा स्वदेशभक्ति की भावना भर दी जाय, तब देश पुनः स्वाधीनता की उपलब्धि तथा उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है। 'सत्यार्थप्रकाश' के एकादश समुल्लास में प्रस्तावित पंक्तियों में महर्षि का कथन है—सृष्टि से लेकर पाँच सहस्र वर्षों से पूर्व (महाभारत काल-पूर्व) समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्त्ती, अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देश में माण्डलिक, अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे; क्योंकि कौरव-पाण्डव पर्यन्त यहाँ के राज्य और राज्य-शासन को भूगोल के सब राजा और प्रजा चलाते थे।

दूसरे स्थान पर महर्षि अपना विचार देते हैं—'जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है और आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब मिलकर प्रीति से करें।'

महर्षि ने अपने उपर्युक्त कथन में स्वराज्य की लालसा तो व्यक्त की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही है, 'स्वदेशभक्ति' को स्वराज्य-प्राप्ति का प्रमुख-साधन बताते हुए 'राष्ट्रीयता' की एक सर्वोत्तम व्याख्या भी प्रस्तुत की है तथा राष्ट्रीय बने रहने के लिए देशवासियों से अपील की है।

सचमुच, जिनका देश के पदार्थों से शरीर बनता है, अर्थात् जिनकी यह भूमि जन्मभूमि है, जो यहाँ की धरती में जनमते हैं और जो इस देश की उपज (अन्न, खनिज तथा औद्योगिक साधनों से) से पुष्ट होते हैं, वे इस देश के राष्ट्रीय हैं। अर्थात्, जो इस देश को जन्मभूमि तथा पितृभूमि (पालित-पोषित एवं संरक्षित होने से) मानते हैं, वे ही इस देश के राष्ट्रीय हो सकते हैं और उनमें तन-मन और धन से जो परस्पर प्रीति होगी, वही उनकी 'राष्ट्रीय एकता' कही जायेगी। मिलाइए महर्षि दयानन्द के इस कथन को—'तन-मन-धन से सब मिलकर इस देश की उन्नति प्रीति से करें।'

हमारे कथन का विशेष अभिप्राय यह है कि आज हम जिनके साथ मिलकर राष्ट्रीय एकता का संकल्प करना चाहते हैं, उन देशवासियों का महर्षि के कथन के आलोक में एक बार परीक्षण तो करें कि वे राष्ट्रीय हैं या नहीं और उनमें 'राष्ट्रीयता' का तत्त्व है भी या नहीं?

यह स्पष्ट है, जो इस देश से अधिक पवित्र तथा पाक-साफ दूसरे किसी और देश को मानते हैं, जो भारत के धर्म, मजहब, सन्त, महात्मा, पैगम्बर की अपेक्षा स्वर्ग, बहिश्त या 'हेवुन' दिलानेवाले सुधारक के रूप में भारतीयेतर को श्रेष्ठ मानते, जानते तथा स्मरण करते हैं, वे भारत के 'राष्ट्रीय' नहीं हैं, देशभक्त नहीं हैं और इस भूमि या देश के साथ 'वफादार' नहीं हो सकते हैं। इसी प्रकार जो भारत के राजनीतिक सूत्रधार के बताये मार्ग की अपेक्षा मार्क्स, लेनिन, स्टालिन और माओ आदि दूसरों के बताये मार्ग को अधिक स्पष्ट तथा युक्तियुक्त समझते हैं, विरोधी देश की आक्रामक सेना को 'मुक्ति-सेना' कहकर सम्बोधित करते हैं, वे न तो इस देश के राष्ट्रीय हैं और न उनके साथ शेष देशवासियों की एकता ही हो सकती है।

राष्ट्रीय एकता के लिए वर्त्तमान समारम्भ में हमें उपर्युक्त स्थिति पर विचार करना होगा। इस समय देश, सीमाओं के संकटों से तथा देश के भीतर की अनेक समस्याओं की उलझनों से, जिस प्रकार विपन्न स्थिति में है, वैसी स्थिति में सम्भवतः इतिहास में कभी नहीं रहा होगा। यद्यपि ये प्रायः, सभी उलझन, जिसमें यह देश अथवा इस देश के शासक स्वयं उलझ गये हैं और यह उनकी स्वनिर्मित उलझन है, वह ऐसी नहीं है, जिसे सुलझाया न जा सके, तथापि यह स्थिति चिन्तनीय अवश्य है।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुश्मन को जीतने के उपाय

प्राचीन काल में जब बनारस में ब्रह्मदत्त राज्य करते थे, 'बोधिसत्त्व' ने वानर-योनि में जन्म लिया। उनकी, पूर्वजन्म की बुद्धि थी और वह अत्यन्त प्रखर थी। पूर्ण अवस्था होने पर वे घोड़े के समान बलयुक्त हो गये। वे अकेले ही किसी नदी के किनारे रहा करते थे। उस नदी के बीच में, आम, कटहल आदि विविध फलवृक्षों से युक्त एक द्वीप था। 'बोधिसत्त्व' जिस पार में रहते थे, उसके और द्वीप के बीच में एक चट्टान थी। वे प्रतिदिन नदी-तीर से उछलकर चट्टान पर जाते थे और वहाँ से उछलकर द्वीप पर पहुँच जाते थे। द्वीप पर पहुँचकर दिन भर फल आदि खाते थे और शाम को फिर उसी तरह लौट आते थे। यह उनका प्रतिदिन का दैनिक जीवन हो गया था। इसी नदी में एक मगर भी अपनी स्त्री के साथ रहता था। उसकी स्त्री गर्भिणी थी। प्रतिदिन बोधिसत्त्व (वानर) को इस प्रकार आते-जाते देखकर उस मगर की गर्भिणी भार्या के हृदय में उनके (वानर-बोधिसत्त्व) हृदय के मांस खाने की इच्छा हुई और अपने पति मगर से बोली—'आर्य, इस वानरेन्द्र का हृदयमांस खाना चाहती हूँ। मगर बोला—अच्छा! तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगे। आज शाम को इसे द्वीप से लौटने दो, उसी समय इसे पकड़ेंगे।' यह सोचकर वह मगर चट्टान पर जा बैठा।

वानरेन्द्र 'बोधिसत्त्व' प्रतिदिन नदी के जल के बढ़ने और घटने, चट्टान के डूबने और बाहर निकलने की स्थिति से अवगत थे—आते-जाते देख लिया करते थे। दिन भर घूमने के बात शाम को चट्टान की ओर देखकर उन्हें विस्मय हुआ। नदी का पानी न बढ़ा, न कम हुआ, चट्टान का अगला हिस्सा ऊँचा क्यों उठा हुआ है। जरूर कुछ रहस्य है। उन्हें समझने में देर नहीं लगी कि कोई मगर आज मुझे पकड़ने के घात में बैठा है। वस्तुस्थिति को अच्छी तरह समझकर उन्होंने पत्थर को, 'क्यों जी पत्थर!' कहकर तीन बार पुकारा। किन्तु, पत्थर ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। अन्त में पुनः कहा—'क्यों भाई पत्थर! आज कुछ भी उत्तर क्यों नहीं दे रहे हो?'

इस प्रकार, बोधिसत्त्व वानरेन्द्र की पुकार और प्रश्न सुनकर धूर्त मगर ने सोचा कि 'मालूम पड़ता है, प्रतिदिन इस वानर के पुकारने पर पत्थर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उत्तर देता है। आज हम ही उत्तर देंगे।' तब वह बोला—'क्या है वानरराज!' बोधिसत्त्व ने पूछा 'तुम कौन हो' और यहाँ क्यों बैठे हो?' मगर ने कहा—'हम मगर हैं, तुमको पकड़कर, तुम्हारे हृदय का मांस खाने के लिए बैठे हैं।' बोधिसत्त्व वानरेन्द्र ने सोचा कि 'हमारे लिए इस मगर से बच निकलने के सिवा और कोई दूसरा मार्ग नहीं है', 'ऐसा सोचकर उन्होंने कहा कि—'सौम्य मगर! आज हम तुम्हारे लिए तैयार हैं। तुम अपना मुँह खोले रहो। जब हम तुम्हारे पास आयें, मुझे पकड़ लो।' मूर्ख मगर ने कुछ भी न सोचा और वानरेन्द्र के मांस के प्रलोभन में मुँह खोलकर तैयार हो गया। वह इतना भी नहीं सोचा कि मुँह खोलते ही आँखें बन्द हो जायेंगी। वह मुख खोलकर और आँखें बन्द करके पड़ा रहा। बोधिसत्त्व द्वीप से उछले, मगर के सिर पर पहुँचकर उसका सहारा लिया और फिर उछलकर, बिजली के समान लपककर, तुरन्त उस पार जाकर खड़े हो गये। मगर ने इस आश्चर्य को देखा और वानरेन्द्र की बुद्धि तथा धैर्य के सम्बन्ध में सोचकर कहा—'हे वानरेन्द्र! इस संसार में चार धर्मों से युक्त व्यक्ति ही अपने शत्रुओं को जीत सकता है।' 'धीरज, धरम, त्याग और सत्य ही मूल हैं सद्धर्म के। इस प्रकार तव तुल्य जिसमें चार ये हों धर्म, वह रिपु जीत ले।' इस तरह बोधिसत्त्व की प्रशंसा करता हुआ मगर अपने निवासस्थान को चला गया।

बच्चो! जानते हो, भगवान् बुद्धदेव ही पूर्वजन्म में वानर थे और उन्होंने देवदत्त को, जो पूर्वजन्म में मगर था, इस प्रकार पाठ पढ़ाया था। सत्य, धर्म, धैर्य और त्याग को जीवन में धारण कर दुश्मनों पर इसी प्रकार विजय प्राप्त करनी चाहिए।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के सांस्कृतिक रत्न

वीर सावरकर

स्वधर्म तथा स्वदेश की स्वतन्त्रता के लिए जीवन की अन्तिम साँस तक लड़ते-लड़ते मरण का वरण करनेवाले, स्वराज्य-संघर्ष के दीवाने, देश के राष्ट्रीय इतिहास एवं स्वाभिमान के मान-बिन्दुओं पर आघात करके चतुर कूटनीति का सहारा लेकर देशवासियों के मनोबल को गिरानेवाले अँगरेजों की घृणित हरकतों को अपने क्रान्तिकारी कदमों से प्रभावहीन करनेवाले, भारतीय स्वाधीनता-समर की रणभूमि महाराष्ट्र के नासिक जिले में स्थित भवूर ग्रामनिवासी दामोदर पन्त के प्रतिभावान् पुत्र, विनायक दामोदर सावरकर का जन्म सन् १८८३ ई० के मई मास में हुआ था। सन् १८९९ ई० मे 'अभिनव भारत' नामक सभा के संस्थापक और 'मित्र-मेला' नामक विप्लववादी संगठन के नेता समुद्र के उत्ताल तरंगों में जहाज से कूदकर अत्याचारी ब्रिटिश सैनिकों को ललकारते हुए, समुद्री तरंगों के बीच सैनिकों की संगीनों से निकलनेवाली गोलियों के बीच पराधीन भारत की आवाज को बुलन्द करते हुए गुलामी की जंजीर को तोड़ने में बेजोड़ बलिदानी भारत माँ के इस सपूत का शत-शत अभिवादन!

गुरु गोविन्दसिंह

सिक्खों के दशम गुरु, गुरु तेग बहादुर के यशस्वी पुत्र, खालसा-पन्थ के प्रवर्त्तक और 'ग्रन्थ साहब' के प्रणेता गुरु गोविन्दसिंह का जन्म सन् १६६२ ई० में हुआ। आपने सन् १६७५ ई० में सिक्खों के पवित्र पन्थ 'खालसा' का संगठन किया और देश के समस्त हिन्दुओं को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में ग्रथित करने का ऐतिहासिक प्रयास किया। सन् १७०७ ई० में गोदावरी नदी के तीर पर एक हत्यारे ने भारतमाता के इस सपूत को हमसे छीन लिया।

चन्द्रगुप्त

प्राचीन भारत के पराक्रमी मौर्य सम्राट्, स्वार्थसिद्धि महानन्द के ज्येष्ठ पुत्र, कूट-राजनीति के प्रथम आचार्य चाणक्य के शिष्य, तक्षशिला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविश्वविद्यालय के स्नातक, ग्रीक के विश्वविजय स्वप्नद्रष्टा सिकन्दर की विजयवाहिनी को पराभूत करके भारतीय सीमाओं के संरक्षक और राष्ट्रीय स्वाभिमान के राष्ट्रध्वज को सदा समुन्नत रखनेवाले महामहिमामण्डित शूरवीर चन्द्रगुप्त मौर्य कोटि-कोटि देशवासियों के लिए सदा प्रणम्य हैं।

विद्यापति

जयदत्त के पौत्र, गणपति के आत्मज, मिथिला के राजा शिवसिंह के आश्रित सभापण्डित, बिहार-राज्य के दरभंगा जिलान्तर्गत बिसफी ग्रामवासी, चैतन्यदेव के पूर्ववर्त्ती, चण्डीदास के समसामयिक, 'देसिल बयना' के मधुर गायक, 'पुरुष-परीक्षा', 'दानवाक्यावली', 'गयापत्तलक', 'विवाद-सार', 'दुर्गाभक्तितरंगिणी', 'कीर्त्तिलता', 'कीर्त्तिपताका', 'पदावली' आदि अनेकानेक ग्रन्थों के रचयिता, शिवभक्त, परमभागवत, रसिक कविवर विद्यापति ने सन् १३१८ ई० में इस धराधाम को पवित्र किया था। बिहार के इस महाकवि को एक साथ तीन-चार भाषाओं के आदिकवि कहलाने का श्रेय प्राप्त है। यह श्रेय, सम्भवतः कुछेक ही भारतीय कवियों को मिला है। इस महाकवि के कोमलकान्त पदों ने हिन्दी, मैथिली, बँगला, और असमी आदि भाषाओं के साहित्य को प्रभूत मात्रा में प्रभावित किया है।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृतिशेष आर्यपुरुष शास्त्रीजी

पं० रामनारायण शास्त्री आर्यसमाज, कलकत्ता के वार्षिक समारोह में व्याख्यान देते हुए

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुण्यश्लोक पं० रामनारायण शास्त्रीजी अपनी दैनन्दिनी लिखते थे, परन्तु वह नियमित रूप से लिखी गई नहीं मिलती। यहाँ उनकी यथाप्राप्त दैनन्दिनी के बिखरे पन्नों से आकलित सामग्री को स्वतन्त्र रूप से व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है। –सम्पा०

शास्त्रीजी की दिनचर्या के दो पड़ाव

१. बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

१९५१ : बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में ९ फरवरी, सन् १९५१ ई० को डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री के द्वारा नियुक्ति—शिवपूजन सहाय से मिले। उसी दिन श्रीठाकुर धर्मवीरजी के साथ मनेर, हाथीटोला गये, जहाँ कबीरदास के युग की हस्तलिखित पुस्तकें मिलने की सम्भावना थी। रात में वहीं विश्राम। दूसरे दिन प्रातः मनेर से लौटकर पुनपुन गये। वहाँ श्रीमद्भागवतमहापुराण के दशम स्कन्ध की प्रति मिली, जो ५ अध्याय से १० अध्याय तक है और तुलसी-कृत रामायण के बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड भी मिले। दूसरे दिन डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारीजी को ये दोनों पुस्तकें उन्होंने दिखलाईं, वे अति प्रसन्न हुए। अब इनका, हस्तलिखित पुस्तकों की खोज का कार्य शुरू हुआ। गया, अरवल, जहानाबाद, मुँगेर, खोरमपुर, बेगूसराय आदि अनेक स्थानों का दौरा शुरू हुआ। गया में मन्नूलाल पुस्तकालय और बोधगया के महन्थ के पुस्तकालय में हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थों तथा दुर्लभ पुस्तकों का अपार संग्रह देखा। उनकी सूची लेकर अनुमति के लिए पटना आये और पुनः 'मन्नूलाल पुस्तकालय, गया चले गये। वहाँ से आकर ३ मार्च से १३ मार्च तक परिषद् के उद्घाटन-समारोह में व्यस्त। पुनः खुसरूपुर, भागलपुर, मुँगेर और गया पुस्तकों की खोज में गये। इस प्रकार वे पूरी निष्ठा से इस कार्य में जुट गये। १४ मई, १९५१ ई० को मुजफ्फरपुर गये और श्रीजानकीवल्लभ शास्त्री एवं श्रीपाण्डेजी से मिले। बेगूसराय में श्रीप्रफुल्लकुमार मुखोपाध्याय 'जागरी'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लेखक से मिले। जहाँ ताम्रपत्र भी मिला। यहाँ के जितेन्द्र मोहनदेव शर्मा ने आनन्दमयी आश्रम में कुछ ग्रन्थ दिया।

पटना सिटी में श्रीरामजी मिश्र 'मनोहर' इनके अभिन्न मित्रों में थे, वे उनके पास अक्सर जाया करते थे। सन्त दरिया साहब के मठ पर भी जाते थे। वहीं से उन्हें दरिया साहब का 'ज्ञानदीपक' मिला। २३ अगस्त, १९५१ ई० से पुनः मन्नूलाल पुस्तकालय में कार्य।

१ अक्टूबर, १९५१ ई० से २ अक्टूबर, १९५१ ई० तक पटना सिटी। हरिलालजी एवं मोतीलाल आर्यजी से कई पुस्तकें मिलीं, जो उर्दू और हिन्दी की थीं। ११ अक्टूबर, ५१ से १५ अक्टूबर, ५१ तक पिपरा-निवासी पं० गणेश चौबे से मिलकर कई ग्रन्थ प्राप्त किये।

सन् १९५१ ई० में प्राप्त पुस्तकें—१. ब्रह्मनिरूपण : ले० सद्गुरु; २. शब्द कबीर साहेब, ३. धर्मदास सम्बोध-कथा; ४. हंसमुक्तावली; ५. बीजक अप्राप्य, बीजक : कबीर; शिशुबोधिनी टीका; बीजक : कबीर, पूरनदास साहेब; ६. विचारसागर : कबीर; भानुप्रकाश : वैराग्यसागर, पंचग्रन्थी।

१९५३ : ७ जनवरी : हस्तलिखित पोथियों की खोज के सिलसिले में इन्हें सखीमत के किसी व्यक्ति से भेंट हो गई। ये सखीमतवाले श्रीराम के उपासक थे। श्रीराम के रूप के सम्बन्ध में इनकी धारणा थी—'अपाणिपादो जवनो ग्रहीता', इसी को ये राम का रूप मानते थे। बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना—सगुण और निर्गुण दोनों हैं राम के रूप। आगे इन्होंने लिखा—'बचपन में ही मुझे प्रतीत होता था कि मुझे रामभक्त होना है।' राम का रूप है, किन्तु उसे देखा नहीं जा सकता है, इसीलिए निर्गुण; रूपवान् हैं, इसीलिए सगुण हैं। स्थूल आँख से देखी जानेवाली चीजें नाशवान् हैं और यह आँख भी नाशवान् है। ईश्वर इस आँख से नहीं देखा जाता है, इसीलिए वह अविनाशी है। आगे स्पष्ट करते हैं—राम से मतलब दशरथपुत्र नहीं, अपितु सृष्टिकर्त्ता—बुद्ध तो केवल प्रकाश तक पहुँचे थे, किन्तु हमलोग तो उस ज्योति से भी परे राम को मानते हैं।

११ जनवरी : मुक्ति से जीवन नहीं लौटता, यह कहना गलत है। उसे मुक्तिरूपी घर से सृष्टि के काम आने के लिए आना आवश्यक है। जो सन्त आते हैं, वे तो मुक्ति से ही लौटे जीव हैं। स्वर्ग और नरक इसी पृथ्वी पर है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२ जनवरी : आरा, बक्सर, जगदीशपुर, डुमराँव, सासाराम, नोखा थाना और प्रयाग-संग्रहालय में घूम-घूमकर हस्तलिखित पोथियों का संग्रह। प्रयाग-संग्रहालय में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ करीब दस हजार हैं। मध्यप्रदेश और उड़ीसा की सीमा के भीषण जंगलों के निवासी आज भी रघुनथिया ब्राह्मण के नाम से विख्यात हैं, जिन्हें राम ने ब्राह्मण जाति में दीक्षित किया था। इस प्रकार, विभिन्न स्थानों और संग्रहालयों में घूमते हुए उन्हें कभी-कभी ऐसे सन्तों-भक्तों से भेंट हो जाती थी कि उनका अन्त: मुखरित हो जाता था।

११ फरवरी : प्रो० मुरलीधर श्रीवास्तवजी के द्वारा हस्तलिखित पोथी प्राप्त : ले० बा० हरदेव प्रसाद श्रीवास्तव। उपनाम : श्रीगोपालजी जमीन्दार, चौसा, डा० चौसा, रे० चौसा। पत्र-पत्रिकाएँ एवं 'साहित्यायन' प्राप्त। प्राप्तिस्थान : श्रीनागेश्वर प्रसाद, लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर।

१३ फरवरी : हस्तलिखित पोथियों की खोज के सिलसिले में राजगृह गये। वहाँ वैभारगिरि पर्वत पर गुप्तोत्तरकालीन कुछ खण्डहर देखने को मिले, उनमें एक मानव-कद की प्रतिमा है, जो आम्रवृक्ष की छाया में कमलासन पर बैठी स्त्री की है। जनता इस स्त्री को महाश्रमण महावीर की माता मानती है। देवी के मस्तक पर भगवान् नेमिनाथ की प्रतिमा अवस्थित है। वृक्ष की छाया में अम्बिका बैठी है। शारीरिक विन्यास बहुत ही सुन्दर और स्वाभाविक है। इस प्रकार की यह एक ही प्रतिमा बिहार में उपलब्ध है। स्त्रीमूर्त्ति-विधानशास्त्र की दृष्टि से इसका विशेष महत्त्व है।

—'खण्डहरों का वैभव', पृ० २२६

राजगृह के तृतीय पहाड़ पर फणयुक्त जो पार्श्वनाथ की प्रतिमा है, उसका सिंहासन एवं मुख-निर्माण सर्वथा गुप्तकला के अनुरूप है। इसी पर्वत पर एक ओर अष्ट प्रतिहार्य-युक्त कमलासन पर स्थित प्रतिमा है। राजगृह में पंचम पर्वत पर एक ध्वस्त जैन मन्दिर के अवशेष मिले हैं। बहुत-सी इधर-उधर प्राचीन जैन मूर्त्तियाँ भी बिखरी पड़ी हैं। इनमें से नेमिनाथवाली जैन प्रतिमा को गुप्तकालीन मूर्त्ति कह सकते हैं।

राजगृह में सोनभण्डार की दीवार पर जैनमूर्त्ति एवं धर्मचक्र खुदा हुआ है। विशेष के लिए देखिए :

—'राजगृह में प्राचीन सामग्री', जैनभारती : वर्ष २, अंक २

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३ सितम्बर : कलकत्ता में पं० अयोध्याप्रसादजी के साथ बौद्ध मन्दिर तथा पारसनाथजी के मन्दिर में हस्तलिखित पोथियों को देखा और पढ़ा। कलकत्ता में 'धर्मवेद' तथा गीता (दोहे और चौपाइयों में लिखी) पं० अयोध्याप्रसादजी से प्राप्त। उनसे हस्तलिखित पोथियों के बारे में बातचीत की तथा अन्य पोथियों को देखा।

१९५४ : १ जनवरी : सन् १८६१ ई० में भारत सरकार ने प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों के महत्त्व को पहले-पहल समझा। लाहौर-निवासी पं० राधाकृष्ण के प्रस्ताव को स्वीकृत कर उसने भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में हस्तलिखित पुस्तकों की खोज का काम शुरू कराने का निश्चय किया। पर इससे केवल संस्कृत को लाभ हुआ, हिन्दी अछूती ही रही। एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना सन् १८९५ ई० (कलकत्ता) में हुई। पर उसका भी काम अपने ही प्रान्त तक सीमित रहा।

१ जनवरी को पं० अयोध्याप्रसादजी वैदिक रिसर्च स्कॉलर ८५९३, बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता के यहाँ निवास। आज ११ हस्तलिखित पोथियों को देखा और उनके संक्षिप्त विवरण पण्डितजी के कथनानुसार लिखे। इनमें दो-तीन पंचतन्त्र, दाराशिकोह का उपनिषद्-भाष्य आदि कई अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ देखे। पं० अयोध्याप्रसादजी द्वारा प्रस्तुत किये जानेवाले ग्रन्थ 'वैदिक गणित विज्ञान' की रूपरेखा तथा भूमिका आज २ जनवरी से लिखना प्रारम्भ किया गया।

टैगोर बिल्डिंग में भी हस्तलिखित पोथियाँ देखीं। ४ जनवरी से ६ जनवरी तक पण्डितजी के साथ बैठकर 'वैदिक गणित-विज्ञान' की रूपरेखा में यत्र-तत्र संशोधन किया। उसकी प्रतिलिपि तथा बंगीय हिन्दी-परिषद् की हस्तलिखित पोथियों के सम्बन्ध में बातचीत हुई। उसपर होनेवाले भाषण की योजना पण्डितजी के साथ मिलकर बनाई गई।

५ सितम्बर : मोतिहारी, धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री और पं० गणेश चौबे के साथ सरभंग-सम्प्रदाय-सम्बन्धी अनुसन्धान के लिए योजना।

१७ सितम्बर : बँगरी, हापुर और पण्डितपुर। हापुर में वैष्णव साधु श्रीराम गोविन्ददास से भेंट और इस मठ का इतिहास लिया तथा २६ अन्य मठों के पते नोट किये। कुछ मठों के साधुओं के नाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिले। पण्डितपुर में सूर्यवंशी छतर बाबा का पता चला। बँगरी-महुआवा—रामगढ़वा के वैष्णव साधु श्रीसुरुजदास से भेंट। ८ मठों के पते मिले। महुआवा के सरभंग साधु रामदास से भेंट।

२२ नवम्बर : पटना सिटी—लल्लूलाल गन्धर्व के साथ श्रीबालगोविन्द मालवीय द्वारा स्थापित श्रीवराहमिहिर पुस्तकालय देखा।

२२ नवम्बर : सासाराम। श्रीगुप्तेश्वर गोस्वामी जयरामदास ब्रह्मचारी से गुप्त महादेव (जिसके सम्बन्ध में महादेव और भस्मासुर की पौराणिक गाथा है) का पता लगा, जो सासाराम से १२ मील दक्खिन में है। ब्रह्मचारीजी की २४ रचनाएँ मिलीं। सगुण और निर्गुण दोनों प्रकार की रचनाएँ इन्होंने की हैं। गीता का सरल हिन्दी-अनुवाद भी है। ये सभी ग्रन्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को सौंप दिया गया है। उनकी दो कन्याएँ थीं—भैदेही और वैदेही। समस्त रचना की लिपिकार वैदेही है। भैदेही लिखती नहीं थी। अभी १५० वर्ष पूर्व ये लोग योगिमा में रहते थे। कहा जाता है कि हनुमान् का उन्हें दर्शन हुआ था। सिद्धजी सद्गुरु स्वामी दण्डी के शिष्य थे।

१९५५ : २१ मार्च : पं० गणेश चौबे से १५० ग्रन्थ प्राप्त और श्रीमकेश्वरनाथ मिश्र से सरभंग-सम्प्रदाय-सम्बन्धी ४ ग्रन्थ मिले।

२३ मार्च : पंचाननजी, पंजाब से १८ हस्तलिखित पोथियाँ मिलीं।

९ अप्रैल से चैतन्य पुस्तकालय पटना में कार्य। पुनः २६ अप्रैल से ७ मई तक चैतन्य पुस्तकालय में कार्य। फिर ११ जून से २७ जून तक। १ नवम्बर से ६ नवम्बर तक मन्नूलाल पुस्तकालय गया में कार्य।

३ सितम्बर : भागलपुर-मीरजानहाट पुस्तकालय में अलभ्य ग्रन्थों को देखा। भागलपुर में अनुसन्धान-कार्य करने की योजना डॉ० ब्रह्मचारीजी के साथ। वहाँ भगवान् पुस्तकालय में हस्तलिखित पोथियों का संग्रह देखा। इस प्रकार ३ सितम्बर से १७ सितम्बर तक भागलपुर, मीरजानहाट, नाथनगर, चम्पानगर आदि स्थानों में घूम-घूमकर १५० हस्तलिखित पोथियों की विवरणात्मक सूची तैयार की और ११ हस्तलिखित पोथियाँ प्राप्त कीं। पुनः २७ सितम्बर को लक्खीसराय की यात्रा पुरानी पोथियों की खोज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए की, वहाँ पुरानी बाजार से इंगलिश बाजार पहुँचकर किसान पुस्तकालय में संगृहीत हस्तलिखित पोथियाँ देखीं। तीन हस्तलिखित ग्रन्थ मिले। रामपुर जाकर जयप्रकाश पुस्तकालय में अलभ्य ग्रन्थों को देखा।

१९६४ : २८ फरवरी को परिषद् के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दूसरी रात्रि में बज्जिका-परिषद् का गठन डॉ० योगेन्द्र मिश्र की अध्यक्षता में।

२७ मार्च : परिषद् का वार्षिकोत्सव डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल की अध्यक्षता में सम्मेलन-भवन में सम्पन्न।

१९६६ : शरीफ मंजिल का केस चलता रहा। १ मई, १९६७ ई० तक कोई खास घटना नहीं है।

१९६८ : १ जनवरी से ४ जनवरी तक परिषद् के वार्षिकोत्सव में व्यस्त। २१ फरवरी को परिषद् में वरीय अनुसन्धान-पदाधिकारी के साथ प्रकाशनीय ग्रन्थों के सन्दर्भ में विमर्श। प्रो० रामखेलावन रायजी से काफी समय तक इन सब विषयों पर बातें।

५ जनवरी : श्रीरामखेलावन राय के साथ रामलोचन पाण्डेय से मिला काफी समय तक।

९ सितम्बर : राँची में परिषद् से सम्बन्धित कार्य।

१९७५ : २७ जनवरी : भाषासर्वेक्षण-यात्रा : चाईबासा, सरायकेला, आदित्यपुर, चाण्डिल, भाईडीह ग्राम, निरुलडीह, टाटा, साकची, नीमडीह, रघुनाथपुर, घाटशिला, आमचुड़िया ग्राम, कालचित्ती आदि विभिन्न ग्रामों में सुबह से रात्रि तक घूम-घूमकर भाषा-सर्वेक्षण का कार्य। केवल रात्रि में विश्राम मिलता था। इस प्रकार की दिनचर्या से शरीर अस्वस्थ। १६ फरवरी को पटना वापस। पटना आकर भाषा-सर्वेक्षण-संगोष्ठी हुई, जिसमें उच्च कोटि के विद्वान् डॉ० देवीशंकर द्विवेदी, पं० छविनाथ पाण्डेय, डॉ० देवराज उपाध्याय, डॉ० उदयनारायण तिवारी, डॉ० आइ० दत्त और डॉ० उप्रैती ने भाग लिया। पुनः इसी प्रकार भाषा-सर्वेक्षण-संगोष्ठी बोधगया में हुई। जिसमें डॉ० रामगोविन्द, डॉ० पूर्णमासी राय, डॉ० नर्मदेश्वर प्रसाद ने भाग लिया। गया में भी ३ मार्च से ७ मार्च तक यह गोष्ठी हुई। पुनः ३१ मार्च को भाषा-सर्वेक्षण के कार्य से टाटा, साकची, मुसावनी, डुमरिया आदि स्थानों से ९ अप्रैल को पटना वापस। २८ अप्रैल को पुनः डालटेनगंज, हमीदगंज,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

रजवाडीह, लेस्लीगंज, कुराई पतरा, चौरा, बखइया पाँकी, लातेहार,
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चन्दवा बाजार, बालूमाथ, डाढ़ाग्राम आदि स्थानों से १९ मई को पटना वापस। पुनः २८ जून से डाल्टेनगंज। टाटा ६ जुलाई तक भाषा-सर्वेक्षण-कार्य। ११ जुलाई को डॉ० उप्रैती का आगमन और परिषद् में १४ जुलाई से २१ जुलाई तक भाषा-सर्वेक्षण-शिविर में व्यस्त।

१९७६ : ४ जनवरी से परिषद् के रजत-जयन्ती-समारोह के कार्यों में १३ जनवरी, १९७६ ई० तक व्यस्त। १ नवम्बर से केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से आये शोधछात्र की सहायता। 'हरिचरित' के ग्रन्थकार लालचदास से सम्बन्धित जानकारी उसको दी गई।

१९७७ : ८ जून से विधानसभा के आम चुनाव में प्रतिनियोजित। पालीगंज निर्वाचन-क्षेत्र में। दण्डाधिकारी के रूप में फतुहा, पुनपुन, कमलपुरा में। १३ जून को वापस आकर पटना सिटी मतदान-केन्द्र में कार्य किया। १७ जून, १९७७ ई० को मतदान-कार्य समाप्त।

१७ सितम्बर को १०४ बुखार में ही कार्यालय गये।

१९ सितम्बर से अर्जित अवकाश।

१४ अक्टूबर को अवकाश के बाद कार्यालय गये। पूरे महीने बीमार ही रहे। १४ अक्टूबर के बाद दुर्गापूजा की छुट्टी हुई। पुनः २७ अक्टूबर को कार्यालय खुलने पर गये और कार्य प्रारम्भ किया।

८ नवम्बर : फतुहा के कबीर मठ के सन्त रामचरित्र दास परिषद् में पधारे और हस्तलिखित पोथियों के सम्बन्ध में बातें कीं। मठ के महात्मा हनुमानदासजी रामचक (नूरसराय के पास) गये। वहाँ दो सौ पुस्तकें हैं।

२. आर्य-समाज

१९४५ : २२-२३ फरवरी : बिहार प्रान्तीय आर्य-सम्मेलन सभा-कार्यालय से बाँकीपुर स्टेशन पर जाकर श्रीघनश्यामसिंह गुप्त का स्वागत। दानापुर में २३-२४ फरवरी को आर्यसमाज में प्रान्तीय सम्मेलन, मध्यप्रान्तीय असेम्बली के माननीय स्पीकर तथा अखिलभारतीय सत्यार्थप्रकाश-रक्षा-समिति के प्रधान माननीय श्रीघनश्यामसिंह गुप्त को सभापति बनाने के लिए श्रीशास्त्रीजी ने आर्यकुमार सभा की ओर से समर्थन किया। उसी बैठक में स्वामी ध्रुवानन्दजी से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेंट हुई और बातें हुईं। आर्यसमाज की उन्नति कैसे हो, इसपर विचार-विमर्श हुआ।

२३ फरवरी को विषय निर्धारिणी समिति की बैठक हुई, जिसमें कई प्रस्ताव पास किये गये। उसी दिन रात्रि में प्रधानजी को आर्यकुमार-परिषद् की ओर से अभिनन्दनपत्र शास्त्रीजी ने तैयार करके दिया। उसी दिन दोपहर में इन्होंने प्रेस कान्फ्रेंस का आयोजन किया था। पुनः सभी बाँकीपुर-कार्यालय में चले आये।

२६-२७ फरवरी को शुद्धि के लिए हजारीबाग जाना था। 'काव्य-प्रकाश' का अध्ययन किया।

३ मार्च को स्वामी सहजानन्दजी ने किसान-सभा के प्रधान पद से त्यागपत्र दे दिया।

बिहार प्रान्तीय आर्य-सम्मेलन-समारोह का कार्यारम्भ—प्रतिनिधि-सभा की अन्तरंग बैठक में २२-२३ फरवरी को दानापुर आर्यसमाज में बिहार प्रान्तीय आर्य-सम्मेलन करने का विचार हुआ। यह सम्मेलन २२ फरवरी को प्रातःकाल बृहद् यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। द्वितीय दिन बिहार प्रान्तीय आर्यकुमार-परिषद् की विशेष बैठक हुई, जिसमें पं० चन्द्रगुप्त वेदालंकार की असामयिक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट किया गया।

रामनारायण शास्त्रीजी ने निम्नलिखित प्रस्ताव रखा—बिहार प्रान्तीय आर्य-सम्मेलन अखिलभारतीय रेडियो की हिन्दी-विरोधी नीति का घोर विरोध करता है और आज जो रेडियो एवं सिनेमा आदि में हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू का प्रचार किया जा रहा है, उसे राष्ट्रीयता की दृष्टि से विषाक्त तथा घृणित समझता है। साथ ही अखिलभारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा किये गये रेडियो के बहिष्कार का समर्थन करता है।

प्रस्तावक : पं० रामनारायण शास्त्री 'विद्यारत्न'; समर्थक : श्रीयुत् गुरुप्रसादजी, एम० ए० एवं श्रीयुत् जगन्नाथ चौधरीजी।

१९४६ : सिन्धु-सत्याग्रह : ४ दिसम्बर में जब श्रीस्वामी अभेदानन्दजी ने सिन्ध में 'सत्यार्थप्रकाश' पर लगाये गये प्रतिबन्ध का विरोध करते हुए अ० भा० सत्यार्थप्रकाश-रक्षा-समिति के निश्चय पर व्यक्तिगत सत्याग्रह करने के लिए अपील की, तब सैकड़ों आर्यवीरों ने अपना नाम सत्याग्रहियों की सूची में लिखाया। उस समय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पं० श्रीरामनारायण शास्त्री, बिहार प्रान्तीय आर्यकुमार-परिषद् के मन्त्री थे। वे हाल ही गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथधाम से स्नातक होकर आर्यसमाज के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे, अतः उन्हीं के कन्धों पर यह गुरुतर भार दिया गया। उन्होंने इसे बड़ी तत्परता से निबाहा, उनके काम से सारे प्रान्त के नवयुवकों में एक जोश की लहर दौड़ पड़ी। हर समाज में आर्यकुमार सभा की स्थापना हुई। नवयुवक प्रतिदिन आर्य विचारों से प्रभावित हो रहे थे। विवरण देखने से विदित होता है, उस समय परिषद् का कार्य बहुत ही प्रशंसनीय था। आर्यवीर दल का प्रचार पर्याप्त था, उसमें व्यायाम एवं बौद्धिक शिक्षा होने के कारण नवयुवकों का आकर्षण विशेष था। पं० शिवमित्र शास्त्री प्रान्तीय सेनापति थे। पूरे प्रान्त में इसकी शाखाओं का गठन हुआ और बहुत अधिक संख्या में नवयुवक आते थे। पं० श्रीरामनारायण शास्त्री 'विद्यारत्न' आर्यवीर-दल की शाखाओं में जाकर भाषण करते थे।

१९४७ : इस वर्ष उपदेशक के पद पर आर्य-प्रतिनिधि-सभा में शास्त्रीजी थे।

१९५१ : ५ अगस्त को प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन में इन्हें सहमन्त्री का पद मिला और कार्यालय एवं प्रकाशन का कार्य दिया गया।

१९५२ : २९ जनवरी : जबलपुर के लिए प्रस्थान ।

जबलपुर औरं भेड़ाघाट-मार्ग का सुन्दर मनोहर वर्णन। नर्मदा-नदी तट और आसपास का मोहक दृश्य अंकित है। त्रिपुरी ऐतिहासिक स्थान, जहाँ श्रीसुभाषचन्द्र बोस के दुबारा राष्ट्रपति चुने जाने पर गान्धीजी के पक्ष के लोगों ने काँगरेस-अधिवेशन में उन्हें इस्तीफा देने के लिए बाध्य किया था। यहाँ के ग्रामवासियों का पहनावा मद्रास और महाराष्ट्र के जैसा है। खूब सम्पन्नता और खुशहाली है। यहाँ मीठापुर के श्रीरामचंन्द्रजी साहित्याचार्य के ज्येष्ठपुत्र श्रीभानुप्रकाशजी का विवाह सम्पन्न कराना था।

जबलपुर में अपने मित्र श्रीशिवसहाय बाबू के बाग में भ्रमण के लिए गये, जहाँ हींग और कपूर का पेड़ देखा। शिवसहाय बाबू बड़े ही बहादुर और शिकारी आदमी थे। इन्होंने ५-६ शेर स्वयं मारे थे, जिनकी खाल इनके घर की शोभा बढ़ा रही है। यहाँ का वातावरण शास्त्रीजी को बहुत पसन्द आया। रात्रि में उनका भाषण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी हुआ, जिससे सभी बड़े प्रभावित हुए। दूसरे दिन भी रुकना पड़ा और पुनः भाषण हुआ। दूसरे दिन ही पटना वापस।

२ मार्च : जौनपुर का उत्सव।

९ मार्च : पटना का उत्सव।

१४ मार्च : कलकत्ता का उत्सव।

१५ मार्च :

आनन्द सुधा सार दया कर पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया॥
काँटे कराल जाल अविद्या अधर्म के।
विद्या-वधू को धर्म-धनी से मिला गया॥
ऊँचे चढ़े न क्रूर कुचाली गिरा दिये।
यज्ञाधिकार वेद-पढ़ों को दिला गया॥
खोली कहाँ न पोल ढके ढोंग ढोल के।
संसार के कुपन्थ मतों को हिला गया॥
शंकर दियां बुझाय दिवाली को देह का।
कैवल्य के विशाल वदन में विला गया॥ —ज्ञानप्रदीप

कार्त्तिक अमावस्या की अँधेरी रात। मेघाच्छन्न आकाश से वज्रपात हो रहा था। इधर मदान्ध अन्धड़ अपने रौद्र गर्जन से दिशाओं को हिला रहा था और जनकण्ठ से मुखरित प्रार्थनाओं का घोष प्रतिध्वनित हो रहा था।

१९५५ : मठगुलनी-काण्ड में फादर मैथ्यू ने आर्यसमाजियों के विरुद्ध एक अभियोग का षड्यन्त्र किया तथा आरोप लगाया कि जिस समय ईसाई प्रार्थना में थे, तभी आर्यसमाजियों ने बन्दूक आदि से लैस होकर चर्च पर आक्रमण कर चर्च को लूट लिया और गिरजाघर को अपवित्र कर दिया।

२५ जनवरी : टीटागढ़-कलकत्ता आर्यसमाज का उत्सव—नैतिकता और स्वाधीनता पर भाषण।

२७ जनवरी : ईश्वर और उपासना पर भाषण। रात्रि में धर्म और राजनीति पर भाषण।

२९ जनवरी को भावुकता पर तथा ३० जनवरी को विश्व-शान्ति की समस्या पर भाषण।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१ जनवरी : हितैषी पुस्तकालय में वेद की आवश्यकता पर तथा हिन्दू-मुस्लिम-एकता और पाकिस्तान से हानि पर भाषण। हिन्दू जाति और संस्कृति अमर है, मूर्त्तिपूजा और उससे हानि पर भाषण। भाषण का निष्कर्ष—हिन्दू धर्म प्रजातन्त्र धर्म है।

१९५६ : १६ मार्च को आर्य-शिक्षण-संस्थाओं की स्थिति पर विचार करने के लिए बैठक हुई। इस बैठक में पूज्य श्रीध्रुवानन्दजी सरस्वती महाराज भी थे।

१९ अगस्त के निर्वाचन में शास्त्रीजी प्रधानमन्त्री चुने गए। इससे बिहार राज्य के आर्यसमाजों में एक नये अध्याय का पदार्पण हुआ। आर्यों ने एक नई भावना तथा प्रेरणा से कार्य करना प्रारम्भ किया।

राजगृह आर्यसमाज की स्थापना—बिहार में राजगृह का स्थान बहुत महत्त्व रखता है। राजगृह में गरम जलप्रपात एवं कुण्ड है। शीतऋतु में दूर-दूर के यात्री वहाँ आकर स्वास्थ्य-लाभ करते हैं। जापानी, बर्मी तथा सिंहलद्वीप आदि बौद्ध देशों के मन्दिर वहाँ हैं। जैनों द्वारा सुन्दर धर्मशालाएँ बनाई गई हैं। सुन्दर होटल एवं जलपानगृह भी वहाँ हैं, किन्तु वहाँ आर्यसमाज का मन्दिर नहीं था, जो बड़े दुःख की बात थी। नौरंगीलालजी, श्रीगंगाविष्णु आर्य एवं काली साव ने सन् १९४३ ई० में वहाँ आर्यसमाज की स्थापना की थी। सन् १९४८ ई० में प्रतिनिधि सभा, बिहार की सहायता से राजगृह में भूमि आर्यसमाज के लिए खरीदी गई। आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी श्रीआनन्दस्वामी महाराज एवं सेठ श्रीदीपचन्द पोद्दार वहाँ गये थे, उन्होंने आर्यसमाज मन्दिर-भवन बनवाने की आवश्यकता प्रकट की। अतः सभा के प्रधानमन्त्री शास्त्रीजी ने दिनांक ९ सितम्बर को राजगृह में आर्यसमाज-मन्दिर बनाने का प्रस्ताव किया और सबने अपनी सहमति दी और राजगृह में आर्यसमाज का भवन बना।

१९५७ : २ फरवरी को नेपाल-प्रचार की व्यवस्था करने के लिए समिति गठित हुई। उसमें सभामन्त्री शास्त्रीजी को भी नेपाल में प्रचार के लिए रखा गया। ईसाई लोग नेपाल के पोखरा में स्कूल खोलकर वहाँ छात्रों में ईसाई धर्म की भावना भर रहे थे। शास्त्रीजी ने सभामन्त्री की हैसियत से सार्वदेशिक सभा का विशेष रूप से उस ओर ध्यान आकृष्ट किया। शास्त्रीजी के मन्त्रित्व-काल में नेपाल में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक धर्म के प्रचार की विशेष व्यवस्था हुई और आर्यसमाज, बैरगनियाँ के सहयोग से हिन्दी-विद्यालय और दयानन्द सेवा-सदन के रूप में दातव्य औषधालय का निर्माण हुआ।

१९५८ : इस वर्ष शास्त्रीजी पुनः दूसरी बार सभा के प्रधानमन्त्री चुने गए। इनके काल में सभा का कार्य पुनः सुचारू रूप से चला। उनचालीस आर्यसमाजों का उत्सव हुआ। १५४ गाँवों में प्रचार का कार्य हुआ। छोटानागपुर, सन्ताल परगना, जहाँ ईसाइयों का बहुत प्रचार था, इन्होंने स्वयं तथा अन्य मन्त्रियों और सदस्यों के द्वारा भी प्रचार कराया। राँची-आर्यसमाज ने जिला आर्यसमाज राँची की स्थापना की और उपदेशकों तथा संन्यासियों के द्वारा ईसाई-विरोधी प्रचार-कार्य कराया। इनके मन्त्रित्व-काल में प्रायः सभा के सभी महत्त्वपूर्ण दायित्वों का पालन हुआ। वेद-प्रचार-सप्ताह, विजयादशमी, ऋषि-निर्वाण (दीपावली), गोपाष्टमी, वसन्तपंचमी, ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि), आर्यसमाज-स्थापना-दिवस आदि आर्य-पर्वों को बड़े उल्लास के साथ प्रान्त के समाजों ने मनाया।

यज्ञ, वैदिक कथा और वैदिक संस्कार का आयोजन विभिन्न स्थानों पर किया गया। आर्यसमाज, पटना सिटी में प्रभु आश्रितजी महाराज के निर्देशन में योग-प्रशिक्षण-शिविर तथा महात्मा आनन्द स्वामीजी की आध्यात्मिक कथा का भी आयोजन हुआ।

इनके समय में जो भी आर्य-शिक्षण-संस्थाएँ चल रही थीं, उनका परीक्षाफल बहुत ही सन्तोषप्रद हुआ। अनाथालय और आश्रमों की देखभाल भी मुस्तैदी से की गई। इनके मन्त्रित्वकाल में विद्वानों को सम्मान देने हेतु स्वामी श्रीअभेदानन्द सरस्वती (सार्वदेशिक के अध्यक्ष), सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य-समिति के अध्यक्ष श्रीघन-श्यामसिंह गुप्त और मन्त्री श्रीप्रकाशवीर शास्त्री का अभिनन्दन-समारोह मनाया गया।

पंजाब हिन्दी-रक्षा-आन्दोलन में बिहार से जानेवाले ग्यारह जत्थों के स्वयंसेवकों-सहित अधिनायकों को खूब सम्मान देकर उन्हें उत्साहित करके भेजने के लिए विशेष आयोजन किया गया।

शास्त्रीजी के समय में सभा के उपदेशक, भजनोपदेशक और कार्यालय के कार्यकर्त्ता बड़े ही परिश्रम तथा मनोयोग से कार्य किया करते थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी हिन्दी-रक्षा-आन्दोलन के सिलसिले में श्रीओउम्प्रकाश त्यागी, स्वामी श्रीअभेदानन्द सरस्वती, पं० श्रीप्रकाशवीर शास्त्री और श्रीघनश्यामसिंह गुप्त ने बिहार के विभिन्न स्थानों का दौरा किया।

१९५९ : इस वर्ष पुन: शास्त्रीजी को प्रधानमन्त्री सभा के लिए चुना गया। पिछले वर्ष की भाँति ही इस वर्ष भी लोगों ने बड़े उत्साह से सभी विभागों का कार्य किया। इस वर्ष ४८ आर्यसमाजों का वार्षिकोत्सव हुआ। १६६ स्थानों में ग्राम-प्रचार। छोटानागपुर में ईसाई मिशनरियों के विरोध में बड़ी मुस्तैदी और लगन से योजनापूर्ण कार्य किया गया। शुद्धि और दलितोद्धार का कार्य भी किया गया। आर्य प्रतिनिधि-सभा के कार्यालय में छायालाल दास, वनितालाल दास और सुन्दरी टी० सी० एनिया की शुद्धि की गई। मीठापुर आर्य-समाज में पटना जिला के ढिबरा ग्राम-निवासी श्रीरमाकान्त पण्डित को, जो पिछले सात वर्षों से ईसाई हो गये थे, ईसाई मिशन स्कूल में कार्य कर रहे थे, उन्हें भी परिवार-सहित शुद्ध किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना के अनुसार दयानन्द सेवा आश्रम का कार्य भी मुसाढ़ी, नेपाल (साहबगंज और सन्ताल परगना) में किया गया।

नेपाल में भी प्रचार-कार्य जारी रहा। सभा-कार्यालय का कार्य भी सुचारु रूप से चला। अनाथालय और आश्रमों का कार्य पूर्ववत् किया गया।

भूतपूर्व प्रधान साधु ब्रजनन्दन के नाम पर 'साधु ब्रजनन्दन आर्य' निवास का निर्माण कराया गया था। इस भवन में कुल ११ कमरे थे। भोजनालय आदि भी थे। इस वर्ष पुन: तीन नये कमरों का निर्माण हुआ। इन कमरों के निर्माण हेतु शास्त्रीजी ने अपने प्रभाव से इनके लिए चन्दा एकत्र किया।

पिछले वर्ष की भाँति ही इस वर्ष भी शास्त्रीजी ने विद्वानों के सम्मान में अभिनन्दन-समारोह मनाया। सभा-प्रधान डॉ० दुखन रामजी विश्व-पर्यटन करके लौटे थे। भारत वापस आने पर हवाई अड्डे पर उनका शानदार स्वागत किया गया और २१ दिसम्बर को बिहार के शिक्षामन्त्री की अध्यक्षता में सभा-भवन में उनका अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर पटना की सभी शिक्षण-संस्थाओं के प्रतिनिधिगण, प्रमुख आर्य सदस्य एवं गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा अभिनन्दन-समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री और आर्यवीर-दल के प्रधान संचालक का हुआ। मीठापुर कन्या दयानन्द विद्यालय के अभियोग के लिए उच्चतम न्यायालय में अपील की गई थी। किन्तु फैसला आर्यसमाज के पक्ष में हुआ और आर्यसमाज का स्वत्व संस्था पर कायम रहा, यह बहुत उल्लेखनीय घटना है।

१९५९ : शास्त्रीजी पटना में कुछ दिनों से काफी अस्वस्थ थे। थोड़ा अच्छा होने पर २५ जनवरी से २७ जनवरी को खगड़िया और पटना सिटी के आर्यसमाज के उत्सवों में गये।

११ अप्रैल से १५ अप्रैल तक खिदिरपुर (कलकत्ता) का उत्सव।

१६ अप्रैल से गोगरी। जमालपुर १९ अप्रैल तक।

१९६१ : सन् १९५९ ई० में पं० श्रीवासुदेव शर्मा प्रधानमन्त्री हुए। उन्होंने शास्त्रीजी को बिहार-सभा की ओर से संस्कृत में मानपत्र दिया।

इस वर्ष २६ अगस्त को आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन हुआ, जिसमें प्रधान डॉ० दुखन रामजी और उप-प्रधान शास्त्रीजी हुए।

बिहार राज्य द्वादश आर्य महासम्मेलन के लिए २३-२७ नवम्बर की तिथि निश्चित की गई। इसके लिए स्वागत-समिति का गठन हुआ। स्वागत-समिति के अध्यक्ष डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री और पं० रामनारायण शास्त्रीजी को बनाया गया। सभा-प्रधान डॉ० दुखनरामजी इस समिति के संरक्षक बने। इस सम्मेलन का शास्त्रीजी ने बड़ी मुस्तैदी और अपनी अद्भुत सूझ-बूझ से बड़ा ही शानदार आयोजन कराया।

कसबा के उत्सव में बड़े-बड़े विद्वान् लोग पधारे थे। स्वामी अभेदानन्दजी का थियोसॉफिकल सोसाइटी तथा प्रान्तीय आर्यसमाज की स्थिति पर विचार और परामर्श। साथ ही रामनारायण शास्त्रीजी और रामानन्द शास्त्रीजी का भाषण बड़ा ही प्रभावपूर्ण हुआ। शास्त्रीजी के भाषण का विषय था 'आर्यसमाज का रचनात्मक कार्यक्रम और सत्यार्थप्रकाश', जिसे लोगों ने बहुत पसन्द किया।

वहाँ से लौटने पर शास्त्रीजी आर्यसमाज, गुरहट्टा, पटना सिटी के उत्सव में गये। वहाँ पं० बुद्धदेव और पं० कालीचरणजी से परिचय हुआ। बाद में ४ अप्रैल को भागलपुर में देश की वर्त्तमान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

JPP\vishnu_press\...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति और आर्यसमाज पर भाषण किया। १२ अप्रैल को गुरुकुल वैद्यनाथधाम गये। २२ अप्रैल को पटना वापस। १७ मई से प्रतापटाँड़ का उत्सव। २० मई को मन्त्रीजी के रूखे व्यवहार से खिन्न। १५ अगस्त को पटना वापस। २९ अगस्त को मुजफ्फरपुर, मसौढ़ी और गया का उत्सव। गया में ११ सितम्बर को अखबार में सुभाष बाबू के जीवित रहने का समाचार पढ़ अत्यन्त प्रसन्न। स्वामी भजनानन्दजी महाराज से भेंट, जमशेदपुर-प्रचार की चर्चा हुई।

१ नवम्बर को 'सदाकत आश्रम' में चुनाव के सम्बन्ध में। राजेन्द्र बाबू ने चुनाव के सम्बन्ध में नामांकन के लिए निर्णय किया। स्वामी सहजानन्दजी को काँगरेस में लेने पर वाद-विवाद हुआ।

३ नवम्बर को मोकामा में देशरत्न राजेन्द्र बाबू को जाना था। उनका स्वागत बड़े भव्य ढंग से किया गया, मोकामा की जनता उमड़ पड़ी, फिर भी लोगों में अनुशासन और सुन्दर प्रबन्ध देखकर राजेन्द्र बाबू अति प्रसन्न हुए। ४०००/- रु० की थैली उन्हें दी गई। शीलभद्रजी और जगत बाबू से आवश्यक बातों पर विचार-विमर्श। गया-उत्सव, यज्ञ एवं शुद्धि का कार्यक्रम। प्रान्तीय सम्मेलन, आर्यवीर-दल का कैम्प आदि में स्वामी ध्रुवानन्दजी से विचार। रात्रि में टेहटा के लिए प्रस्थान। स्वामी ध्रुवानन्द साथ थे।

४ दिसम्बर को पटना में राजेन्द्र बाबू की ६६वीं जयन्ती मनाई गई।

१९६२ : २८ जनवरी से ३१ जनवरी तक मिर्जापुर का उत्सव।

यहाँ कुँवर सुखलालजी से भेंट। सुबह में यजुर्वेद का पाठ किया। आचार्य विश्वश्रवा से भेंट।

२५ अप्रैल : 'सरगम' नामक पत्र में, जनवरी के अंक में फिराक साहब नामक लेखक ने श्रीपुरुषोत्तमदास टण्डन के हिन्दी-भाषा के प्रति प्रेम को 'कमीनापन' कहा।

३० अगस्त से ४ सितम्बर तक बलिया का उत्सव।

१२ अक्टूबर को दिल्ली से कालका, फिर शिमला का, नामा स्टेट का उत्सव १९ अक्टूबर तक। प्रकाशवीरजी भी साथ आये।

१९६३ : १ जनवरी को पं० वासुदेव शर्माजी के साथ विचार-विमर्श— श्रीप्रकाशवीर शास्त्री के स्वागत के सम्बन्ध में वे ३ जनवरी को पटना आनेवाले थे। २ जनवरी को पुनः दानापुर, मीठापुर,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाँकीपुर तथा पटना सिटी के प्रमुख अधिकारियों तथा आर्यसमाजी स्कूलों के प्रधानाध्यापकों की मीटिंग—श्रीप्रकाशवीरजी के स्वागत की पूरी योजना का प्रारूप-निर्माण। पटना जंक्शन पर स्वागत का प्रबन्ध। सूचना-पत्र छपने के लिए दिया गया।

३ जनवरी : प्रात: पटना स्टेशन पर पं० श्रीप्रकाशवीर शास्त्रीजी का शानदार स्वागत। डॉ० रामजी के निवास पर चाय-गोष्ठी, सभा में भोजन। अपराह्न में गान्धी-मैदान में जनसभा। बाँकीपुर आर्यकन्या विद्यालय का प्रशंसनीय सहयोग। सायंकाल दानापुर आर्यसमाज द्वारा आयोजित जनसभा में सम्मिलित। दोनों स्थानों पर सभापतित्व डॉ० राम ने किया।

रात्रि में राज्यपाल महोदय से पं० श्रीप्रकाशवीर शास्त्री की बातचीत।

रात्रि में श्रीविष्णुदेव बाबू के नये मकान में भोजन-गोष्ठी। रात्रि में डॉ० रामजी के अतिथिगृह में शयन।

४ जनवरी को श्रीप्रकाशवीरजी के साथ आरा आर्यसमाज आरा द्वारा आयोजित जनसभा में प्रकाशवीरजी का शानदार भाषण। रात्रि में पटना वापस, फिर दिल्ली-यात्रा।

पटना में आर्य-महासम्मेलन।

२ नवम्बर को शोभायात्रा। ३-४ नवम्बर को आर्य महासम्मेलन।

२३ नवम्बर से ३० दिसम्बर तक शाहगंज, आजमगढ़, टाँडा, झाँसी और मिर्जापुर में उत्सव।

१६ दिसम्बर को धनबाद में स्वर्गीय दीवान बहादुर बलीराम तनेजा के जयन्ती-समारोह में शामिल। आचार्य रामानन्द शास्त्री भी सम्मिलित हुए।

१९६४ : कलकत्ता, खुसरूपुर, जमालपुर और धनबाद में १ जनवरी से १९ जनवरी तक उत्सव।

२५ जनवरी से मऊनाथभंजन, डनलप, रानी की सराय, झाँसी और दलसिंहसराय का भ्रमण कर पटना ६ फरवरी को वापस।

६ फरवरी को माताजी कैलाशवासिनी देवी का ५०वीं स्वर्णजयन्ती-जन्मदिवस, सन्ध्या को यज्ञ में सम्मिलित।

११ फरवरी से १४ फरवरी तक ग्वालियर में उत्सव। पं० वाचस्पति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शास्त्री आये। उनके साथ गुजरी महल और ग्वालियर का किला देखा। भारतभूषण त्यागीजी के साथ लश्कर में महाराजा का बैंकवाला मकान तथा सभास्थल देखा। दोपहर के बाद चिड़ियाखाना, म्यूजियम, मोतीमहल, झाँसी की रानी का स्मारक पं० वाचस्पतिजी के साथ देखा तथा सिन्धिया पब्लिक स्कूल देखा। रात्रि में प्रस्थान।

१८ फरवरी को स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वतीजी का अभिनन्दन उनकी थाईलैण्ड की यात्रा के सम्बन्ध में। इसी दिन स्वामी शरणानन्दजी का श्रीविष्णुदेव बाबू के यहाँ आना और प्रवचन की व्यवस्था।

२० फरवरी से २३ फरवरी तक गुना का उत्सव।

२६ फरवरी को बम्बई के लिए प्रस्थान—बम्बई सान्ताक्रूज का उत्सव। २९ तक पुनः बम्बई कल्याण कैम्प का उत्सव ७ मार्च तक। ८ मार्च को बम्बई से प्रस्थान। २२ मार्च को साहबगंज।

२९ मार्च को जमानिया का उत्सव के लिए प्रस्थान। ३१ मार्च तक जमानिया का उत्सव।

१७ मई से २६ मई तक राँची, लोहरदग्गा, बाढ़, मुँगेर, लक्खीसराय। २७ मई को भारत के प्रधानमन्त्री नेहरूजी का २ बजे दिन में दिल्ली में देहावसान।

१८ जून, १९६४ ई० : आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक। इसमें डॉ० दुखन राम, वासुदेव शर्मा, रामगोपाल शालवाले एवं प्रकाशवीरजी सम्मिलित हुए थे। मठगुलनी के मामले पर विचार-विमर्श।

५ जुलाई को जमालपुर, मुँगेर का उत्सव।

१७ जुलाई को धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री का पटना-अस्पताल में देहान्त।

५ अगस्त को बम्बई के लिए प्रस्थान। माटुंगा में आवास। बम्बई में सार्वदेशिक सभा की साधारण बैठक २ दिनों तक—८ और ९ अगस्त तक। १० अगस्त को प्रताप भाईजी के घर पर अन्तरंग बैठक। सन्ध्या समय उत्सव में भाषण। साथ में प्रकाशवीरजी, दुखनराम, नवीनचन्द्र पाल, विष्णुदेव नारायण। १४ तक बम्बई। १५ को पटना वापस। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री चुने गए।

१५ अक्टूबर को अलीगढ़ का उत्सव—१८ अक्टूबर तक।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९ अक्टूबर से राँची-धुरवा। कलकत्ता में ३ नवम्बर तक।

६ नवम्बर से १२ नवम्बर तक दिल्ली।

१२ दिसम्बर को हावड़ा और हिलसा का उत्सव—१४ दिसम्बर तक।

२५ दिसम्बर को मोकामा का उत्सव—१ जनवरी, १९६५ तक।

१९६५ : ४ जनवरी से ८ जनवरी, १९६५ ई० तक पटना सिटी आर्यसमाज का उत्सव। १६ जनवरी से १९ जनवरी तक खगड़िया, खुसरूपुर का उत्सव।

३० जनवरी को आर्यसमाज विलोनिया, अगरतल्ला। ५ फरवरी से दिल्ली, अलीगढ़—८ फरवरी तक। २७ फरवरी से फतेहपुर, कानपुर, झाँसी, गुना, ग्वालियर।

१७ अप्रैल से २३ अप्रैल तक दिल्ली में।

२ मई से नासरीगंज, खगड़िया, जमानिया, आरा और भागलपुर—३० मई तक।

१४ जून से १८ जून तक राँची, राउरकेला।

२२ जून को श्रीमती शारदा वेदालंकार की पुत्री (स्व० चन्द्रगुप्त वेदालंकार की पुत्री) कु० पूर्णिमा का विवाह मोहन एण्ड कम्पनी के मालिक के पुत्र श्रीमहेन्द्रजी के साथ।

२९ जून को प्रात: परम पूजनीय स्वामी ध्रुवानन्दजी का बम्बई के कच्छ में हृदयगति बन्द हो जाने से देहावसान हो गया। यह समाचार रात्रि में ९ बजे घनश्याम प्रेस से लौटने पर मिला। रात में शास्त्रीजी आर्य प्रतिनिधि सभा में ही रहे और रात भर रोये और जगे रहे, नींद नहीं आई।

१ जुलाई को वायुमण्डल में अत्यन्त तूफान वर्षा के कारण वायुयान नहीं जा सका। अत: स्वामी ध्रुवानन्दजी की अन्त्येष्टि में शामिल नहीं हो सके। सभा-भवन में सायंकाल शोकसभा। दैनिक 'हिन्दुस्तान' दिल्ली में शोकसभा का विवरण प्रकाशित।

३ जुलाई से ५ जुलाई तक कानपुर में।

७ जुलाई को प्रो० सीताराम 'प्रभास' के ज्येष्ठ पुत्र श्रीमधुरेन्द्रभूषण कुमार का विवाह छपरा के डॉ० रामचन्द्र प्रसाद की पुत्री डॉ० शारदा के साथ कराया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२ अक्टूबर : देहली, लखनऊ और शाहगंज के उत्सव पर १५ अक्टूबर तक। ४ नवम्बर से ८ नवम्बर तक हैदराबाद, धारूर (हीरक-जयन्ती)। ९ नवम्बर से १५ नवम्बर तक औरंगाबाद, मनमाड, देहली। ५ दिसम्बर से ७ दिसम्बर तक झाझा का उत्सव।

१९६६ : २५ जनवरी से कलकत्ता में श्रीगम्भीर सोप फैक्ट्री के यहाँ पुत्र के विवाह में सम्मिलित। वहाँ श्रीदिनेशजी, हरिश्चन्द्र वर्मा, महाशय रघुनन्दनलाल, श्रीचोपड़ाजी और पं० वाचस्पतिजी से वार्त्ता। दिन में पूनमचन्दजी के घर पर भोज।

२८ जनवरी : श्रीनरेन्द्र नारायणजी (श्रीविष्णुदेव बाबू के अनुज) के निवास पर गये और एक दिन रुके।

२९ को श्रीरघुवीरगुप्ताजी की जीप में दमदम हवाई अड्डे पर विलोनिया-अगरतला के लिए प्रस्थान।

विलोनिया के अकिंचन बाबू, श्रीचौधरीजी तथा श्रीदत्तजी से बातें। इन लोगों से काफी प्रभावित हुए। आर्यवीर-दल के युवकों की गोष्ठी में शामिल। वहाँ के एस० डी० ओ० से बातें। ३१ जनवरी को दमदम आकर कलकत्ता में पुनः पं० सदाशिवजी, हरिश्चन्द्रजी, पूनमचन्दजी आदि से गम्भीर वार्त्ता।

१ फरवरी को पटना वापस।

४ फरवरी को मठगुलनी के केस के लिए डॉ० राम के साथ मठगुलनी गये।

१५ फरवरी : सुधारानी की शादी ठीक हुई। इससे अति प्रसन्न। पं० वासुदेव शर्माजी ने इनसे काफी विचार-विमर्श किया। पुनः डॉ० राम तथा डॉ० लाल साहब में इनसे विवाह की व्यवस्था के लिए परामर्श किया। श्रीविष्णुदेव बाबू एवं डॉ० लाल ने बरात आदि के ठहरने की व्यवस्था का भार दूर कर दिया।

२१ फरवरी को विवाह पूरे समारोह के साथ सम्पन्न।

२७ फरवरी को फतेहपुर का उत्सव। यहाँ कुँवर सुखलालजी से भेंट। यहाँ का उत्सव सफल रहा।

३ मार्च को पटना वापस।

५ मार्च को कानपुर, झाँसी और गुना का उत्सव।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११ मार्च को पटना वापस।

२७ अप्रैल को गोविन्दपुरी-पुनाईचक में आर्य बालिका विद्यालय का सन्ध्या समय शिलान्यास-समारोह और यज्ञ। यज्ञ में श्रीकृष्णवल्लभ सहाय और श्रीरामलखनसिंह यादव द्वारा यज्ञोपवीत धारण। दक्षिणा मिली।

२ मई : नासरीगंज, खगड़िया और बारो का उत्सव।

१२ मई : जमानिया में श्रीकेशवजी की कन्या का विवाह। जमानिया में भाषण दो दिनों तक।

२० मई को आरा आर्यसमाज की हीरक-जयन्ती पर पढ़ने के लिए डॉ० राम का भाषण १८ पृष्ठों में तैयार।

११ मई को साहेबदयाल (भागलपुर) के पुत्र का विवाह।

१४ जून को राँची एक्सप्रेस से श्रीविष्णुदेव बाबू के साथ प्रस्थान। राँची में लोहरदगा-निवासी के संगम होटल में श्रीविष्णुदेव बाबू के साथ ठहरे। वहाँ से २५ जून को राउरकेला के लिए प्रस्थान।

१७ को प्रातः सिन्दरी-निवासी श्रीहरिश्चन्द्र तनेजा अपनी सहधर्मिणी तथा बच्चों के साथ आश्रम में इनसे मिलने आये। इनके घर साथ ही गये और वहाँ की पंचायत में वहाँ की परिस्थिति पर विचार-विमर्श।

३० जून को श्रीसुधीर नारायण (श्रीविष्णुदेव नारायणजी के पुत्र) का फलदान-यज्ञ कराया।

३ जुलाई : कानपुर में सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन। इन्हें पुनः एक वर्ष के लिए उपमन्त्री चुना गया।

६ जुलाई को बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् की ओर से शरीफ मंजिल के मुकदमें में व्यस्त। प्रतिदिन सरकारी वकील और सिद्धि बाबू के यहाँ जाना और मुकदमे की पैरवी करना। ९ अगस्त तक व्यस्त।

२ सितम्बर श्रीविश्वनाथ नायक एडवोकेट (श्रीविष्णुदेव नारायण के जामाता) की नवजाता पुत्री का जातकर्म एवं नामकरण-संस्कार कराया।

५ अक्टूबर श्रीमोहनबाबू (मोहन प्रेस पटना के मालिक, अबुलास लेन) के नव-निर्मित भवन का उद्घाटन तथा गृह-प्रवेश-संस्कार सन्ध्या ५ बजे सम्पन्न कराया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
४ नवम्बर से हैदराबाद, धारूर (महाराष्ट्र) मनमाड का उत्सव।

२७ अगस्त, १९६६ ई० को सेवानिवृत्ति के लिए आवेदन-पत्र दिया। इसके बाद लगातार छुट्टी में दिसम्बर ६६ तक।

६ सितम्बर, १९६६ ई० को ग्वालियर के लिए प्रस्थान।

११ सितम्बर, १९६६ ई० को बुखार के साथ पटना-आगमन।

८ अक्टूबर, १९६६ ई० को परिषद् में चार्ज देने के लिए बुलाया गया।

३० अप्रैल को दिल्ली के लिए प्रस्थान। सार्वदेशिक सभा की बैठक। १ मई को दो वर्षों के बाद त्यागीजी के अमरीका से लौटने पर भेंट। पूनमचन्दजी से भेंट। वे अपनी जन्मभूमि भिवानी के उत्सव पर ले गये। भिवानी आर्यसमाज-मन्दिर शानदार है। श्रीपूनमचन्द्रजी से अनेकविध बातें। श्रीचतुरसेनजी से भी सार्वदेशिक के प्रकाशन के सम्बन्ध में बातें। कार द्वारा श्रीशालवालेजी, श्रीत्यागीजी, बालरेड्डीजी और चतुरसेनजी के साथ मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) के उत्सव में गये। खतौली के उत्सव में सम्मिलित। ४ मई को पटना वापस।

१९६७ : १ जनवरी

मंगलमय मंगल करना, करुणा-किरणें बरसाकर।
पथ के शूल फूल हो जाएँ, तेरा इंगित पाकर॥

ओउम् जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

३० अप्रैल : डॉ० बृजलालजी का विवाह राँची में।

३ मई को डॉ० आर० पी० लाल के यहाँ वधू के आगमन पर स्वागत-समारोह।

४ मई को श्रीविष्णुदेव बाबू के पुत्र श्रीसुधीर बाबू का तिलक।

६ मई को विष्णुदेव बाबू की पुत्री पद्मिनी का विवाह, कलकत्ता-निवासी श्री एस०पी०जायसवाल के पुत्र दिलीपकुमार जायसवाल से।

११ मई को श्रीसुधीर नारायण का विवाह नासरीगंज के श्रीगया बाबू की पुत्री से सम्पन्न कराया।

१३ मई को नव वर-वधू का स्वागत।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ जून : दिल्ली में सार्वदेशिक सभा की बैठक के लिए डॉ० दुखनरामजी के साथ प्रस्थान।

१८ जून को पटना वापस।

२७ दिसम्बर, पटना :

किसी की शबे-वस्ल सोते कटी है,
किसी की शबे-हिज्र रोते कटी है।
मेरी कौन-सी शब में शब है इलाही,
न सोते कटी है, न रोते कटी है॥

(१. शबे-वस्ल : मिलन की रात। २. शबे-हिज्र : जुदाई की रात।)

१९६८ : ५ जनवरी को आसनसोल।

१९ फरवरी को श्रीमती शान्ति ओझा (जिला शिक्षा-निरीक्षिका) से खुसरूपुर के दयानन्द कन्या उच्च विद्यालय के सम्बन्ध में परामर्श। वे खुसरूपुर भी गईं। उनसे काफी अपनापा मिला समस्याओं के हल करने में।

१९६९ : १० अप्रैल को आगरा के उत्सव में गये। २ मई को वापस पटना आये। कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी। ९ सितम्बर को राँची के उत्सव में गये।

१९७० : २३ नवम्बर को कलकत्ता लखोटियाजी के यहाँ। २५ को पटना वापस।

२९ नवम्बर को दिल्ली लखोटियाजी के यहाँ पुत्र के विवाह में।

१९७३ : २७ जनवरी से ही अस्वस्थता के कारण अवकाश। २८ को मधुबनी गये विवाह संस्कार कराने, ३० जनवरी को वापस आये। ९ फरवरी को गोरखपुर का उत्सव। १४ फरवरी को वापस। १३ फरवरी को आर्यसमाज, गया का स्वर्ण-जयन्ती-समारोह। १ जुलाई रविवार को लन्दन की एक बालिका का विवाह-संस्कार भारत के श्रीतारकेश्वर प्रसाद एडवोकेट के डॉक्टर भतीजे से हुई। संस्कार-पद्धति की व्याख्या आरा के श्रीइन्द्रदेव नारायण एडवोकेट ने अँगरेजी में की। यह संस्कार बहुत महत्त्वपूर्ण था। शुद्धि के बाद विवाह-संस्कार सम्पन्न किया गया।

१३ अक्टूबर को अमरोहा के लिए प्रस्थान। महात्मा आनन्दस्वामी का स्मृति-महोत्सव १६ अक्टूबर तक।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८ नवम्बर से ११ नवम्बर तक जमशेदपुर का उत्सव।

१९७४ : २५ मार्च को आर्यसमाज बरौनी का उत्सव—गड़हरा, समस्तीपुर, हजारीबाग, रक्सौल का लगातार उत्सव। आरा, खुसरूपुर, गया, दरभंगा और तारापुर का उत्सव।

१८ मई से २१ मई तक आर्यसमाज, मुगलसराय का उत्सव।

८ जून से ११ जून तक बरेली का उत्सव।

१७ सितम्बर से बक्सर का उत्सव।

१९७५ : ६ मार्च से ८ मार्च तक आर्यसमाज मल्लिक बाजार का उत्सव।

१४ मार्च से १६ मार्च तक आर्यसमाज जोड़ासाकूँ का उत्सव।

४ अप्रैल से १२ अप्रैल तक जमशेदपुर, टेल्को और पुरानी गोदाम गया का उत्सव।

१९ अप्रैल से आरा-शताब्दी-समारोह।

२८ अप्रैल से ४ मई तक तारापुर, देवरिया।

६ मई से डाल्टेनगंज राँची, कलकत्ता, हैदराबाद शताब्दी-महोत्सव। भोपाल का उत्सव।

६ नवम्बर : आर्यसमाज, मिर्जापुर का उत्सव—८ नवम्बर तक।

१८ नवम्बर : आर्यसमाज कलकत्ता का उत्सव।

२३ दिसम्बर : आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी-समारोह दिल्ली में।

३१ दिसम्बर को पटना वापस।

१९७६ : २४ जनवरी से २६ जनवरी तक गोपालगंज का उत्सव।

३ मई से आरा और व्यासपुर का उत्सव। आरा में आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक की सारी बातें इन्द्रदेव बाबू से ज्ञात हुईं। बैठक में हुई अशोभनीय बातों से बहुत दुःखी। बरौनी में आर्यसमाज-शताब्दी-समारोह मनाने की तैयारी में व्यस्त। ८ मई को बरौनी के लिए प्रस्थान।

१३ मई को नई दिल्ली के लिए प्रस्थान। नई दिल्ली जाकर शिवसागर मिश्र, श्री डी० एन० पी० यादव, श्रीबलिराम भगत तथा पं० श्रीकमलापति त्रिपाठीजी को बरौनी आने का निमन्त्रण। १७ मई को पटना वापस। १७ मई को हवेली खड़गपुर और १८ मई को सुलतानगंज-तारापुर का उत्सव।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३ मई को बरौनी के शताब्दी-समारोह के लिए प्रस्थान। १७ जून तक वहीं रहे और समारोह को बड़े शानदार ढंग से सम्पन्न किया। उसके बाद मोकामा गये और २३ जून को पटना वापस आये। इस एक मास में प्रवास और कठिन परिश्रम ने उनके शरीर को तोड़ दिया, स्वास्थ्य गिर गया। १० जुलाई को कलकत्ता के लिए प्रस्थान। वहाँ कथा कहने का आयोजन श्रीचतुर्भुज लखोटियाजी ने किया था। श्रीमद्भागवतपुराण की कथा ९ बजे से ११ बजे तक और शाम को ७ बजे से ९ बजे तक कहते थे। श्रीचतुर्भुज लखोटियाजी के यहाँ ही ठहरने का प्रबन्ध हुआ था। ३० जुलाई को पटना वापस आये।

२५ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक कलकत्ता आर्यसमाज का उत्सव।

इससे आगे की दैनन्दिनी अप्राप्य है। शास्त्रीजी की उपर्युक्त दैनन्दिनी से उनके यायावरीय जीवन की झाँकी स्पष्टत: मिलती है, साथ ही उनके जैसे मानवतावादी व्यक्ति के, लोकप्रियता, मिलनसारिता, समाज की उपकार-भावना और लोकसेवा के लिए तिल-तिल अपने को होम देना जैसे दुर्लभ गुणों की भी सूचना मिलती है। अवश्य ही, शास्त्रीजी एक कल्याणमित्र आर्यपुरुष थे।

प्रस्तुति : ईश्वरी आर्या

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रीजी : पत्रों के वातायन से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान्यवर,

'मुक्तकण्ठ' अध्ययन-केन्द्र की स्थापना का उद्देश्य बौद्धिक विलास नहीं, मानसिक अनुराग है। इसका शुभारम्भ डाकबँगला रोड-स्थित पारिजात प्रकाशन में २३ जनवरी, १९७८ को सन्ध्या ४ बजे आदरणीय श्रीगंगाशरण सिंह द्वारा होने जा रहा है।

आपकी व्यस्तता का अनुमान मुझे है। क्या मैं आशा करूँ कि उसमें से तीस मिनटों का समय इस अनुष्ठान के लिए देंगे।

डाकबँगला रोड, पटना-१

सादर

शंकर दयाल सिंह

सम्पादक, 'मुक्तकण्ठ'

●

मॉरिशस

आदरणीय पण्डितजी, १३.१२.७६

सादर नमस्ते ।

मैं आपसे विदा होकर वाराणसी आया, फिर उज्जैन होते हुए बम्बई पहुँचा, जहाँ से हवाई जहाज द्वारा ता. २०-११ को मॉरिशस वापस आया। घर आकर आनन्द तो हुआ, पर आपके साथ होने के आनन्द से कम। मैं जब-जब भारत जाता हूँ, आपके जैसे एकाध लोगों से क्षणिक मिलन होता है और अतृप्त ही लौटना पड़ता है। कई आर्यसमाजी कार्यकर्त्ता एवं उपदेशकों से मेरी भेंट हुई है, पर पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्दजी के बाद आपसे मिलकर जितनी प्रसन्नता हुई है, उतनी और किसी से नहीं। मन बार-बार पछताता है कि क्यों न अधिक से अधिक समय आपके साथ रहा। क्या, हम प्रयत्न करें कि आप एकाध मास के लिए प्रचारार्थ मॉरिशस पधारने का कष्ट करेंगे? यदि आपके हवाई जहाज के किराये-मात्र का प्रबन्ध हो जाय तो शेष सारा भार मैं अपने ऊपर ले लूँगा। एक निवेदन—आप श्रीगौतम तिलकजी को एक पत्र लिखने का कष्ट करें। उसमें केवल यह लिखें कि आप मॉरिशस आने के लिए इच्छुक हैं। उनको लिखने की सूचना मुझे दें। मैं आर्यसभा के माध्यम से आपको बुलवाने का प्रयत्न करूँगा। ता. २०-१२ को हमारे देश के आम चुनाव का दिन निश्चित हुआ है। चुनाव-आन्दोलन जोरों पर है। देखें, देश का भविष्य क़ौन-सा मोड़ लेता है। हमारा सब समाचार ठीक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह-विधि के मन्त्रों की व्याख्या अवश्य करके मेरे लिए भेजने का कष्ट करेंगे। आशा है, मेरा तुच्छ पत्र तब आपके श्रीचरणों में पहुँचे, जब आप प्रसन्नचित्त हों।

आपका ही
रामेसर ओरी

●

प्रिय श्रीशास्त्रीजी,

मैं कुछ अस्वस्थता के कारण कल नहीं आ पाया। अब मैं ९ को बरौनी आऊँगा और सन्ध्या आपके कार्यक्रम में भाग लूँगा।

आशा है कि आप सब सकुशल होंगे।

बिहार सांस्कृतिक विद्यापीठ
शेखपुरा, पटना-१४

शुभेच्छु
स्वामी हरिनारायणानन्द

●

२७-५-७६

मान्यवर पण्डित श्रीरामनारायणजीशास्त्री,

नमस्ते।

आपका पत्र मिला, और कल ही मिला, इसलिए पत्रोत्तर में विलम्ब हो गया, क्षमाप्रार्थी।

आपने मेरे जैसे एक साधारण सेवक को कर्त्तव्य-प्रतिपालनार्थ स्मरण किया है, इसलिए गौरवान्वित हूँ।

मार्गव्यय आने में विलम्ब होगा; क्योंकि पत्र विलम्ब से मिला और उत्तर के साथ स्वीकृति भी विलम्ब से मिल रही है।

आप निश्चिन्त रहें। मैं आगामी जून को आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा। मार्गव्यय की चिन्ता न करें।

मेरा प्रोग्राम २ से ७ तक रखने की कृपा करें; क्योंकि ९.६.७६ को यहाँ मेरा एक आवश्यक कार्य, याने प्रोग्राम है। उसे नष्ट करने का विचार नहीं है।

मुझे प्रसन्नता है, यदि बंग-भाषा का साहित्य ले जाना है, वह भी लिखें। पता ऊपर है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे पास आर्याभिविनय; यथार्थता; वैदिक धर्मधारा; अमर आर्य; श्राद्धपरलोक; व्यवहारभानु; आर्योद्देश्यरत्नमाला और ये सब पुस्तकें हैं। योग्य सेवा से सूचित करें।

८३।१, विवेकानन्द रोड
कलकत्ता-६

भवदीय
प्रियदर्शन

●

प्रिय भाई,

२२ मई, ७६

आपका २८ अप्रैल का कृपापत्र मुझे १५ मई को मिला। उन दिनों मैं 'राजभाषा-समारोह' में व्यस्त था, अतः तत्काल सामग्री न भेज सका। १८ से 'नेशनल बुक ट्रस्ट' द्वारा आयोजित सेमिनार में व्यस्त हो गया। वहाँ पर आपकी परिषद् के निदेशक श्रीहंसकुमार तिवारीजी से भेंट हुई। उसी समय श्रीमती ज्ञानवती दरबार ने श्रीतिवारीजी को बताया कि श्रीमान्‌जी, १५ मई को श्रीप्रकाशवीर शास्त्रीजी के साथ 'मावलंकर हॉल' में पधारे थे। आपके आज्ञानुसार अपने मॉरिशस-सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण की कटिंग भेज रहा हूँ। इसे आप अपनी 'स्मारिका' में 'मॉरिशस' शीर्षक से छाप सकते हैं।

गुप-चुप आकर इस प्रकार बिना मिले चले जाना अच्छा नहीं।

अजय निवास, दिलशाद कॉलोनी
शाहदरा, दिल्ली-३२

सस्नेह
क्षेमचन्द्र सुमन

●

२८.५.७६

आदरणीय शास्त्रीजी,

सादर नमस्ते।

बड़े दुःख के साथ लिखती हूँ कि मुझे आपके द्वारा बरौनी शताब्दी-समारोह का निमन्त्रण मेरे बीस दिन से बाहर रहने के कारण आज ही घूमता-घामता प्राप्त हुआ है। मैं वाराणसी ३१ मई को पहुँच रही हूँ। वहाँ विद्यालय के अत्यावश्यक रुके कार्य समेटने हैं, अतः २ जून को तो तत्काल पहुँचने में तो असमर्थ हूँ। सखेद क्षमा-याचना करती हूँ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे लिए यह सम्भव है कि आप मुझे मेरे कार्यक्रम से सूचित करें, जिस-जिस समय जैसे होगा, पूर्ण प्रयत्न करके पहुँचूँगी। आखिर, आपकी आज्ञा का पालन करना भी तो हमारे लिए अनिवार्य है। आशा है, मेरी विवशता समझकर आप बुरा नहीं मानेंगे।

किमधिकं सुविज्ञेषु।

जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय — भवदीया बहिन
पो०-बजरडीहा, तुलसीपुर — **प्रज्ञा**
वाराणसी-५

●

तिथि : १४.५.१९७६

श्रीयुत् बबुआ रामनारायण शास्त्रीजी साहित्याचार्य,
सौभाग्यवती दुलहिन, एवं दोनों मेरे लाल को सतत शतशः शुभाशीर्वादाः।
प्रियवर शास्त्रीजी,

मैं कुशली हूँ और सपरिवार आपकी कुशलता ईश्वर से सदा चाहता हूँ। आपका तथा स्वागतमन्त्रीजी का पत्र प्राप्त हुआ। समाचार से अवगत हुआ। मैं ता. ६.५.७६ को पटना से छपरा आया, परन्तु उपर्युक्त महाविद्यालय के चौदह छात्र आचार्य एवं शास्त्री परीक्षाओं में सम्मिलित होनेवाले थे, अतः पटना नहीं उतर सका। अस्तु;

मैं ता. २.६.७६ को बरौनी पहुँच जाने का प्रयत्न करूँगा, मेरे साथ दो-एक गुरुकुलीय विद्वानों की जरूरत हो, तो लिखवायेंगे, साथ लेता आऊँगा। यदि वहाँ ही प्रबन्ध हो जाय, तो मैं स्वयं पहुँच जाऊँगा। मार्गव्यय भेजने का स्वागतमन्त्री को संकेत कर देंगे।

आपके सबसे छोटे भाई उमानाथ की भी मैथन, चन्द्रपुरा में नियुक्ति हो गई है, प्राणनाथ के प्रयत्न से। करीब सात सौ मिलेंगे। इस हालत में यदि पण्डितपुर रहने की बात आयेगी, तो बाहरी संस्कार-सम्बन्धी प्रोग्रामों से सूचित करेंगे। गरमी की छुट्टी के बाद निर्णय होगा जुलाईं में।

आपका अभिन्न शुभचिन्तक
आचार्य जगन्नाथ शास्त्री साहित्याचार्य

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े बाबू प्राणनाथ आपकी अपनी भाभी (दुलहिन) जी तथा बच्चों के विषय में पूछते थे, मैंने कहा कि कुछ दिनों से समाचार नहीं है, पर अनामय है। मैथन का समाचार अच्छा है। अन्तर्विद्यालय अँगरेजी भाषा-प्रतियोगिता में आशाकुमारी (बड़ी पोती) सैकड़ों में प्रथम आई, बहुत-सा पुरस्कार एवं पदक उसको मिले। शेष कुशल हैं। अपने श्वसुरजी का समाचार लिखेंगे। फोटो भी भेज रहा हूँ।

गुरुकुल मेहियाँ
सारण, छपरा

जगन्नाथ शास्त्री

●

आदरणीय परमपूज्य पण्डितजी, दि. ७ मई, १९७६

चरणों में श्रद्धासमन्वित सप्रेम नमस्ते स्वीकार हो। मैं अपनी शक्ति से उस अन्तर्यामी दयालु परमेश्वर से सर्वदा कामना किया करता हूँ कि आप पूर्णरूपेण स्वस्थ रहें। मेरी प्रार्थनाएँ आप, आपके मित्र एवं आपके परिवार के साथ है। मैं व्यग्र हृदय से बहुत दिनों से आपके पास पत्र लिखने को सोच रहा था, लेकिन कुछ कारणवश मैं लिख तो सकता था, पर 'पोस्ट' नहीं कर सकता था; क्योंकि शायद आपको याद होगा, जब पिछली बार आप कलकत्ता पधारे थे, मैं आपको हावड़ा स्टेशन पर छोड़ने आया था और मैं आपका पता एक पाँच रुपये के नोट पर लिखा था। उस नोट को मैं एक ऐसी पुस्तक में रख दिया था कि बड़ी देर से मिली, खैर मिल ही गई, आपको धन्यवाद।

आपके ओजपूर्ण प्रभावशाली व्याख्यान को सुनकर मैं ही नहीं, सारे कलकत्ता के लोगों में आप चर्चा का विषय बन गये। बुद्धिजीवियों का कहना था आखिर कौन-सा ऐसा व्यक्ति है, जो कि हर विषय पर प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों को आह्वान (चैलेंज) करता है। यही कारण था कि जिस समय आपका व्याख्यान होता, सारा का सारा पण्डाल जन-समूह से भर जाता। ओह ! वैसा साहित्यिक, ऐतिहासिक भाषण कभी भुलाया जा सकता है क्या ? नहीं।

एक दिन के व्याख्यान में आप सांस्कृतिक भाषा को समझाते हुए कह रहे थे। उदाहरण, शकुन्तला सरोवर के किनारे कलश को अपने कमर पर रखे हुए मृगों के चरे हुए तृण के टुकड़ों पर हौले-हौले चलते हुए—कुछ इसी प्रकार था। आप तो भूल गये होंगे, पर जिस वक्त मैं कॉलेज से लौटने के बाद आपके व्याख्यान को सुन रहा था, उस समय मानों मानस-पटल पर चलचित्र चल रहा था, आप धन्य हैं। एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन लोग खुलेआम कहते हुए देखे गये कि आप ही एक ऐसे समर्थ विद्वान् हैं, जो कि अचानक माइक के चले जाने पर भी हजारों की जनसंख्या को सम्बोधित करना, नियन्त्रण करते हुए अपनी बात लोगों तक पहुँचाना असाधारण पुरुष का ही कार्य है।

मेरे हृदय में बहुत ही तीव्र इच्छा थी कि पत्र-व्यवहार करूँगा, इसीलिए आपसे मुलाकात पूरी करेंगे। उसे मैं अगले पत्रों में लिखूँगा। अभी रात के ११ बजकर ५५ मिनट होने जा रहे हैं। यदि मुझसे कोई गलती हो गई होगी, तो क्षमा चाहता हूँ। मैं अपने दोनों हाथों को जोड़कर सिर झुका नमस्ते कहता हूँ। आपके अविलम्ब पत्रों का इन्तजार कर रहा हूँ।

आपका ही

सत्यप्रकाश

६, किंग्सरोड, हावड़ा
वेस्ट बंगाल

●

प्रिय बन्धु,

इस तथ्य से आप सुपरिचित हैं कि प्राचीन ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियाँ एकत्र करना कितना कठिन कार्य है। सारा कृतित्व यदि सुसम्पादित होकर प्रकाशित हो जाये, तो कितना अच्छा हो। आपकी संस्था इस दिशा में अग्रणी है, अतः मैं आपको प्रसिद्ध रीतिमुक्त स्वच्छन्द कवि आलम के कृतित्व की उपलब्ध पाण्डुलिपियों की सूचना भेज रहा हूँ। यदि आप आलम-ग्रन्थावली शीर्षक से आलम की रचनाओं का प्रकाशन कर सकें, तो कृपया सूचित करें। इस सम्बन्ध में कोई और सूचना चाहें तो लिखें।

१. माधवानल-कामकन्दला, (क) भरतपुरवाली प्रतिलिपि, (ख) माधवानल-कामकन्दला (छोटा संस्करण), आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी की हस्त-प्रतिलिपि, (ग) फैजाबाद-निवासी श्रीरामरक्षाप्रसाद त्रिपाठी 'निर्भीक' वाली प्रतिलिपि, (घ) हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयागवाली प्रति, (ङ) हिन्दी के कवि और काव्य में प्रकाशित प्रति, सम्पा. श्रीगणेशप्रसाद द्विवेदी, (च) रागमाला, काव्यनिर्णय और माधवानल-कामकन्दला, सम्पा. शमशेर सिंह अशोक।

२. श्याम सनेही—(क) डॉ. भवानीशंकर याज्ञिक के यहाँ से प्राप्त सन् १९७५ ई. में लिपिबद्ध की गई प्रति, (ख) जुलाई, सन् १९६९ ई. में, 'रसवन्ती' में प्रकाशित श्याम सनेही की प्रति।

३. सुदामाचरित— आचार्य पं. विश्वनाथप्रसाद मिश्रजी से प्राप्त प्रति।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

४. रसकवित्त, आलम का संग्रह, आलम के कवित्त, कवित्त आलम-कृत, आलमकेलि, छन्द आलम के।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. चतुःशती (काँकरोली की प्रति)।

६. आलम के छन्द (नाथद्वारा की प्रति)।

७. अक्षरमालिका।

८. कवित्त शेखसाई—शेख आलमकृत।

९. आलम के कवित्त (हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन) प्रयाग से प्राप्त हस्तलिखित प्रति की प्रतिलिपि।

आशा है, आप उत्तर देकर कृतार्थ करेंगे। यदि इस सम्बन्ध में अपनी कोई विशेष शर्त्त हो, तो उन्हें भी लिखें।

स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
डी. ए. वी. कॉलेज
जालन्धर (पंजाब)

आपका
मुरारीलाल शर्मा सुरस
दानापुर कैण्ट

आदरणीय शास्त्रीजी, १२.१.७६

नमस्ते।

आर्यसमाज की शताब्दी के अवसर पर आपको मिले सम्मान-पत्र के लिए मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। सचमुच, आपने बिहार की गौरव-गरिमा को बचा लिया। इससे यह स्पष्ट हो गया कि बिहार का एकमात्र आर्य विद्वान् कौन है। आशा है, भविष्य में भी इसी तरह बिहार को आगे बढ़ाने में आप अपने त्याग का परिचय देंगे तथा मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक दिन आपके नेतृत्व में बिहार के तमाम आर्यसमाज महर्षि दयानन्द के महान् उद्देश्य को सफल करने में अग्रणी रहेगा। मुझे हार्दिक अभिलाषा है कि आपके हाथों महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज, दानापुर की भूमि से जातीय विरोधी अभियान का सूत्रपात हो। मैं भी आपके साथ आगे आने को दृढ़प्रतिज्ञ हूँ। मैंने इस विषय पर बहुत लोगों से बात भी की है तथा बहुतों का समर्थन भी मिला है। आर्य-बन्धुओं से भी बात हुई है। वे लोग पहले की अपेक्षा अधिक उत्साही नजर आ रहे हैं। कुछ लोग तो चाहते हैं कि यह दूर हो, पर समाज से वे लोग भय खाते हैं। उन्हें भय है कि समाज उन्हें जाति से निकाल देगा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा उनके बाल-बच्चों की शादी में काफी कठिनाई होगी। इसलिए आपको अथक प्रयास करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। ताकि, उन लोगों के मन से भय खत्म हो। मैं चाहता हूँ कि जिस प्रकार सर्वधर्मसम्मेलन का आयोजन आर्यसमाज की शताब्दी के अवसर पर हुआ, उसी प्रकार सर्ववर्णसम्मेलन का आयोजन भी आपके हाथों सम्पन्न हो।

शायद आप सोचते होंगे कि मैं कौन हूँ, तो मैं वही युवक हूँ, जिसने समाचार-पत्र में छपे दानापुर आर्यसमाज (तदर्थ समिति) का ९६वाँ वार्पिकोत्सव का खण्डन किया था तथा इस विषय पर मैंने आपसे बातचीत भी की थी तथा आपसे पूछा भी था कि मैंने जो खण्डन किया, वह उचित है या अनुचित। आपने कहा था– बिलकुल ही ठीक है। वैसे मैं दानापुर आर्यसमाज में बराबर जाया करता हूँ तथा सक्रिय आर्यप्रेमी में से हूँ।

आपको यह भी विदित हो कि मैं जातिविरोधी अभियान चलाना चाहता था, लेकिन मैं सोचता था कि इसे सामाजिक मान्यता कैसे मिलेगी। इसलिए मैं चिन्तित था। अब मुझे यह जानकर बेहद खुशी हुई है कि आर्यसमाज की शताब्दी के अवसर पर जातीय विषमता को दूर करने के लिए भी प्रस्ताव पारित हुआ है। इससे मुझे आशा की लौ दिखाई पड़ी है। मैं आशा करता हूँ कि आप इस प्रस्ताव के कार्यान्वयन के लिए जी-तोड़ प्रयास करेंगे, जिससे सामाजिक मान्यता मिलने में विलम्ब न हो। इससे मेरे अभियान को भी बल मिलेगा। इसलिए मुझे आपका आशीष अपेक्षित है। आशा है, पत्रोत्तर देंगे।

आपका आर्यप्रेमी
अखिलेश कुमार

सचिव
सर्चलाइट यूथ फोरम
कालीस्थान, दानापुर कैण्ट (पटना)

●

दिनांक १६-१०-७५

श्रीयुत् पं. रामनारायणजी शास्त्री,

सप्रेम नमस्ते।

निवेदन है कि आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी-समारोह के अवसर पर आपकी सेवाओं की अत्यन्त आवश्यकता है। कृपया शीघ्र-शीघ्र लिखें कि आप अपनी सेवाएँ कबसे दे रहे हैं। आपका पत्र प्राप्त होने पर बम्बई-कार्यालय से सूचित किया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेगा। आप अपने उत्तर को बम्बई के कार्यालय में लिखें। पता निम्नांकित है। उसकी प्रतिलिपि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भी भेजें।

श्रीयुत मन्त्रीजी,

आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी-कार्यालय

युनाइटेड इण्डिया बिल्डिंग, दूसरा माला

सर पी. एम. रोड, बम्बई

भवदीय

ओमप्रकाश त्यागी

संसद्-सदस्य

महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मैदान
नई दिल्ली-१

●

दिनांक : १३.९.७५

प्रियवर,

सप्रेम नमस्ते।

आपके पुस्तकालय में एक ग्रन्थ है, जिसमें पौराणिक पात्रों का विस्तारपूर्वक परिचय दिया हुआ है। मैं लिख रहा हूँ और मुझे कविवर पराशर के बारे में अधिक से अधिक जानकारी चाहिए। वे वशिष्ठ के पौत्र थे और व्यास के पिता थे। जीवन-वृत्त या विचारदर्शन के बारे में कुछ सूचना मिल सके, तो आभार मानूँगा।

आपका सस्नेह

केदारनाथ मिश्र प्रभात

पटना

●

दिनांक : १६.४.७५

मान्यवर महोदय,

सादर नमस्ते।

विषय : आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी-समारोह के लिए स्वीकृति।

आपने सभा की प्रार्थना को स्वीकार कर सभा द्वारा आयोजित किये जा रहे मई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास के द्वितीय सप्ताह में आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी-कार्यक्रम में पधारने की स्वीकृति प्रदान की है, जिसके लिए सभा आपकी आभारी है और आपका धन्यवाद करती है। आपसे प्रार्थना है कि आप प्रदत्त समय सुरक्षित रखने की कृपा करें। आशा है, निश्चित समय पर आप पधारेंगे ही।

भवदीय
देवेन्द्र नाथ भनोट
उपमन्त्री, सभा

आर्यसमाज स्था. शताब्दी-समारोह
आर्य प्रतिनिधि सभा (मध्यदक्षिण)
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार
हैदराबाद (आ. प्र.)

●

ओऽम् भवतु भव्याय

तारीख : १५.२.७५
बम्बईतः

स्वस्तिश्रीविद्वत्प्रवर-प्रातःस्मरणीयाचार्येभ्यः सकुटुम्बनमस्काराञ्जलयः शञ्च। भवत्कृपयाहं कुशलोऽस्मि, परन्तु मार्गे किंचित् शीतेन बाधितोऽयं शरीरोऽद्य स्वस्थो वर्त्तते। आशासे पूर्ववत् भवन्तोऽपि जमशेदपुरादागत्य सपरिवाराः कुशला भविष्यन्ति।

हा हन्त ! भवत्प्रदत्तं पत्रं न जाने कुत्रापतत्। यदा टाटानगरे आगच्छम् तदापश्यम् नासीत्। लज्जितः सन् यात्राया निवृत्तोऽस्मि। श्वः परश्वः वा तत्र गत्वा तत् सर्वं निवेदयिष्यामि तावत्।

आशासे, मदीयोऽयमपराधो नूनमेव क्षम्योऽस्ति। यथा कीटः सुमनःसङ्गात् सतां शिरः आरोहति तथा अहमपि वृद्धिं गमिष्यामि। आशीर्वादं दास्यन्ति। मां बालकं ज्ञात्वा त्रुटिं क्षम्यताम्। किमधिकं भवत्सदृशेषु।

श्रीमताम्
रविशंकर शास्त्री

माण्डूजकोर्ट श्वास्लालैन
कोलावा, बम्बई-५

●

दिनांक : २२ जुलाई, १९७४

श्रीशास्त्रीजी,

सादर नमस्ते।

उत्तरप्रदेशीय आर्यसमाज-शताब्दी-समारोह का द्वितीय अधिवेशन आगामी ११ से १३ अक्टूबर तक कानपुर में होने जा रहा है। अभी से शताब्दी-समारोह की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयारियाँ उत्साह से की जा रही हैं। कानपुर नगर और इसके आस-पास के सभी आर्यजन इस समारोह को सफल बनाने में जुट गये हैं।

मेरी और स्वागत-समिति के अधिकारियों की यह हार्दिक इच्छा है कि आप समारोह में तीनों दिन अवश्य उपस्थित रहें। आपके रहने से हमें सहयोग और बल दोनों मिलेंगे। आपका आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के साथ प्रारम्भ से ही जो स्नेहपूर्ण सम्बन्ध रहा है, उसे ध्यान में रखते हुए मुझे विश्वास है, आप शीघ्र अपनी स्वीकृति से अनुगृहीत करेंगे, जिससे कार्यक्रम बनाने में सुविधा हो।

मैं उत्सुकता से आपकी स्वीकृति की प्रतीक्षा करूँगा।

भवदीय
प्रकाशवीर शास्त्री
अध्यक्ष आ. प्र. सभा
उत्तरप्रदेश

आर्यसमाज
मेस्टन रोड, कानपुर
१ केनिंग लेन, नई दिल्ली

●

दिनांक : १.१२.१९७४

आदरणीय शास्त्रीजी,

सादर नमस्ते।

बोकारो इस्पात नगर में 'विवेकानन्द समिति' विगत सात वर्षों से कार्यरत है एवं लौह-निर्माण में लगे असंख्य हाथों को कर्मयोग एवं आध्यात्मिकता का सम्बल इससे मिलता रहा है। प्रत्येक वर्ष प्रातःस्मरणीय विश्ववन्द्य स्वामी विवेकानन्दजी की जयन्ती मनाने का भव्य आयोजन किया जाता है, जिसमें देश के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा स्वामीजी के कार्य एवं सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला जाता है। राष्ट्र के वर्त्तमान ऊहापोह में स्वामीजी के उदात्त स्वरों की गर्जना अपेक्षित है। हमें विश्वास है कि आपके द्वारा ही यह सम्भव हो पायगा। समिति के आयोजकों की यह उत्कट इच्छा है कि आप हमारे आगामी कार्यक्रमों को अपनी उपस्थिति से सफल बनायें। इस वर्ष स्वामीजी की जयन्ती दिनांक ११.१.७५ (शनिवार सायं) एवं दिनांक १२.१.७५ (रविवार) को मनाने का निश्चय किया गया है। इस कार्यक्रम के लिए कृपया आप अपनी स्वीकृति यथाशीघ्र भेजने का कष्ट करेंगे।

हमें पूरा विश्वास है कि आप हमलोगों की प्रार्थना पर पूरा ध्यान देंगे। समिति की ओर से आने-जाने के मार्गव्यय एवं आवास आदि की पूर्ण व्यवस्था रहती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वसूचना मिलने पर मार्गव्यय की अग्रिम राशि भी भेजी जा सकती है। हमारा यह कार्यक्रम सेक्टर-३ स्थित कम्यूनिटी सेण्टर हाल में होना सुनिश्चित हुआ है। कार्यक्रम का पूरा विवरण बाद में भेजा जायेगा।

अतएव, आपसे पुनः निवेदन है कि उक्त अवसर के लिए अपनी सहमति प्रदान कर हमें यथाशीघ्र सूचित करने का कष्ट करें। आपके पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

प्रमण्डलीय अभियन्ता आपका

क्वार्टर नं. ३११, सेक्टर-३ सी **सुखनन्दन सिंह**

बोकारो इस्पातनगर (धनबाद)

●

दिनांक : १३ जुलाई, १९७४ ई.

सम्माननीय महोदय,

सादर नमस्ते।

विषय : क्षेत्रीय विशाल सम्मेलन।

आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी के निमित्त सभा ने अपने तीनों क्षेत्र मराठवाड़ा, कर्नाटक और तेलंगाने में क्षेत्रीय विशाल सम्मेलनों के आयोजन का निश्चय किया है। इसी क्रम में अभी-अभी जून मास में गुलबर्गा में क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जा चुका है। मराठवाड़ा-क्षेत्र की दृष्टि से लातूर में भी सम्मेलन का आयोजन मई मास में किया जाना था, किन्तु रेलवे हड़ताल आदि की स्थितियों से नहीं किया जा सकता था।

अभी मैं लातूर गया था। वहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने विचार दरसाया है कि नवम्बर मास में सम्मेलन का आयोजन किया जाये। उनकी अपेक्षा है कि सम्मेलन में आप भी पधारें। मेरी आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप पधारने की स्वीकृति प्रदान करें। सम्मेलन की जो तारीखें निश्चित होंगी, वे बाद में निवेदन की जायेंगी। मैं आशा करूँगा कि आप स्वीकृति प्रदान कर अनुगृहीत करेंगे। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

आर्य प्रतिनिधि सभा (मध्यदक्षिण) भवदीय

महर्षि दयानन्द मार्ग **छगनलाल विजयवर्गीय**

सुलतानबाजार, हैदराबाद (आ. प्र.) मन्त्री, सभा

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनांक : २६.२.७४

माननीय श्रीशास्त्रीजी,

सादर नमस्ते।

आपका कृपापत्र मिला। आप अपनी रचना यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें। आवश्यकता पड़ने पर सम्पादन-कार्य में आपका सहयोग अवश्य लेंगे। आपकी सद्भावना के लिए आभारी हैं।

कर्मवीर पं. श्री आनन्दप्रियजी
अभिनन्दन-समिति
आर्यकन्या महाविद्यालय, कारेलीबाग
बड़ोदरा, गुजरात

भवदीय कृपाकांक्षी
दिलीप

●

भागलपुर : १७८.७३

प्रियवर शास्त्रीजी,

नमस्ते।

आपको मैंने एक पत्र लिखा था, किन्तु आपके यहाँ से कोई भी उत्तर नहीं मिला।

मैं समझता हूँ कि अपने पारस्परिक व्यक्तिगत सम्बन्ध के आधार पर मेरा यह अधिकार है कि आपको कुछ कष्ट दूँ।

आवश्यकता हो, तो आप अर्जित अवकाश ही लेकर कम से कम १५ दिनों के लिए भागलपुर चले आयें। यात्रा-व्यय मैं अपने पास से दूँगा। आप जानते हैं कि ता. ३१ अक्टूबर तक मुझे अपना निबन्ध तैयार करना आवश्यक है।

- दर्याफ्त कर लीजिएगा ३१ अक्टूबर ही है न ?

पत्रोत्तर अवश्य दें।

मैं ता. २०८ को प्रातः ७ बजेवाली गाड़ी से पटना पहुँचूँगा। या तो स्टेशन पर या प्रातः काल मेरे डेरे पर अवश्य मिलिए।

भवदीय
धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरेली
२१.१०.७३

प्रिय भाई पं. रामनारायणजी शास्त्री,

सादर सप्रेम नमस्ते।

आप नारायणस्वामी–जयन्ती पर नहीं पहुँचे, कैसे रुके, लिखें। पर इस समय आर्य-समाज, बिहारीपुर, बरेली के वार्षिक उत्सव में २६, २७, २८ अक्टूबर को बरेली अवश्य पधारें।

मार्गव्यय भेजने का समय नहीं रहा, आप २६ ता. को पंजाब मेल से अवश्य बरेली पहुँचे। आपको देखे बहुत दिन हो गये, मैं ३ मास से बीमार हूँ। बहुत-सी बातें भी करनी है। सभाओं से अब मैंने त्यागपत्र दे दिया। मैं प्रतीक्षा करूँगा।

बरेली

भवदीय
आचार्य विश्वश्रवा

●

दिनांक : १३.९.७३

श्रीमान् शास्त्रीजी,

नमस्ते।

आशा है, आप कुशल से होंगे। १ मास पूर्व पत्र लिखा था। पुनः हम अपने समाज के उत्सव पर दिनांक १४ से १६ अक्टूबर, ७३ तक के लिए निमन्त्रित कर रहे हैं। कृपया स्वीकृति भेजकर अनुगृहीत करें।

उत्तर की प्रतीक्षा में।

आर्यसमाज, अमरोहा
(मुरादाबाद)

भवदीय
रामाधार
उ. प्र. मन्त्री

●

माननीय शास्त्रीजी,

सादर नमस्ते।

कृपापत्र मिला, धन्यवाद। आपके स्वास्थ्य का समाचार जान अतीव प्रसन्नता हुई। आप आर्य प्रतिनिधिसभा, पंजाब तथा सार्वदेशिक सभा के विवाद को सुलझाने के लिए सचिन्त हैं, इसके लिए मैं अतीव कृतज्ञ हूँ और एक विद्वान् आर्यनेता होने के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाते आपके सद्भाव का पूर्ण सम्मान एवं विश्वास मेरे मन में है। मैं यह भी मानता हूँ कि इस विवाद का समाधान आपके विचारानुसार पारस्परिक वार्त्तालाप से ही सम्भव है।

आरम्भ में ही इस मामले में कठिनाई यह रही है कि हमारे व्यक्तिगत विरोधियों के हाथों में सार्वदेशिक सभा है और वे इसका उपयोग पंजाब सभा के संगठन को छिन्न-भिन्न करने के लिए कर रहे हैं। इन लोगों की दृष्टि इतनी संकीर्ण है कि ये कभी अपने स्तर से ऊपर उठकर आर्यसमाज के हित की दृष्टि से नहीं सोच सकते।

अब न्यायसभा ने निर्णय हमारे विरुद्ध कर दिया है। यह सब कैसे और क्यों हुआ, यह तो कभी साक्षात्कार होने पर ही बताया जा सकेगा। परन्तु, यह निश्चित है कि कोई भी स्वाभिमानी व्यक्ति ऐसे अनर्गल फैसले को स्वीकार नहीं कर सकता। हमने इस निर्णय के विरुद्ध पुनः न्यायालय में प्रार्थनापत्र भेज दिया है, अतः अभी यह मामला काफी लम्बा चलेगा, जल्दी निबटनेवाला नहीं है। हमारा विश्वास है कि न्याय तथा सत्य हमारे पक्ष में है।

अन्त में मैं पुनः निवेदन करना चाहता हूँ कि आप जैसे विद्वान् सज्जन प्रयास करें, तो आर्यसमाज के हित में होगा और हमारा आपको इस शुभ कार्य में पूर्ण सहयोग रहेगा। मैं आपके विचारों से प्रभावित हूँ। आशा है, कृपाभाव बनाये रखेंगे। योग्य सेवा लिखते रहें।

१८२, साउथ एवेन्यू — भवदीय

नई दिल्ली-११ — रघुवीर सिंह शास्त्री

सांसद

●

दिनांक : २२८७३

श्रीयुत शास्त्रीजी,

सादर नमस्ते।

शिक्षा-मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा गुरुकुलों के लिए एक सामान्य पाठ्यक्रम तथा उनके भावी ढाँचे के सम्बन्ध में निश्चय करने के लिए मेरी अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई है, जिसका एक सदस्य आपको भी मैंने १.४.७३ को मनोनीत किया था। उसके पश्चात् उस समिति की बैठक हो चुकी है और कार्य में प्रगति हो रही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। परन्तु आपकी ओर से किसी पत्र का कोई उत्तर नहीं मिला। सन्देह है कि आपको पत्र मिले भी या नहीं; क्योंकि आपका पता 'आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार, पटना' लिखा जाता रहा। अब मैंने श्रीप्रकाशवीरजी शास्त्री से आपका घरवाला पता ज्ञात कर अपने कार्यालय तथा शिक्षा-मन्त्रालय को नोट करवा दिया है। गत ९ अगस्त को उसकी छोटी कमेटी की एक बैठक शिक्षा-मन्त्रालय, दिल्ली में हुई थी, जिसमें पाठ्यक्रम की रूपरेखा पर विचार के साथ-साथ गुरुकुलों के भावी ढाँचे के सम्बन्ध में यह प्रस्ताव स्वीकार किया गया है कि समस्त गुरुकुल 'गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय' से सम्बद्ध हों। इस ९ अगस्तवाली बैठक की कार्यवाही गुरुकुल सम्मिति के सब सदस्यों को सम्मत्यर्थ भेजी जायेगी।

अतः, जब आपको वह प्राप्त हो तो, उसपर पूर्ण सहमति लिखने की कृपा करें। श्रीप्रकाशवीर शास्त्री तथा शिवकुमार शास्त्री आदि के विचार एवं परामर्श से ही यह कार्य हो रहा है। श्रीशिवकुमारजी शास्त्री, उपकुलपति, गुरुकुल, वृन्दावन भी सदस्य हैं।

आशा है, आप इस कार्य-महत्त्व को हृदयंगम करते हुए यथेष्ट सहयोग देने का अनुग्रह करेंगे।

योग्य सेवा तथा स्वास्थ्य-समाचार लिखें।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (सहारनपुर)

भवदीय
रघुवीर सिंह शास्त्री
कुलपति

●

पोर्टब्लेयर
२७.९.७२

परम आदरणीय शास्त्रीजी,

प्रणाम।

सुख से हूँ। आशा है, आप भी सपरिवार सुखी होंगे। आपकी सेवा में यह दूसरा पत्र लिख रहा हूँ। पहली चिट्ठी परिषद् के पते पर भेजा था, किन्तु पता नहीं, वह आपको मिला या नहीं। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में काफी समय बीत गया, और तब यह दूसरी चिट्ठी लिख रहा हूँ।

मैंने एक पत्र डॉ. रामतवक्या शर्मा के नाम से कॉलेज के पते पर भेजा है। उद्देश्य है पी-एच. डी. करने का। किन्तु भाग्य ने इतना दूर फेंक दिया है कि बुद्धि काम नहीं कर रही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। आपसे अनुरोध है कि आप शर्माजी से सलाह करके मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे कि मैं क्या कदम उठाऊँ इस सम्बन्ध में, जिससे इसमें प्रगति हो सके।

इधर बिहार का कोई समाचार नहा मिला है। पटना में गैरसरकारी सेकेण्डरी स्कूल के शिक्षकों की हड़ताल का क्या हुआ ? और, यदि कोई नई खबर हो, तो भेजिएगा। आचार्य श्रुतिदेवजी को प्रणाम कहिएगा। पत्र की प्रतीक्षा में।

पोकार पान शॉप
जंगली घाट
पोर्टब्लेयर, अण्डमान

भवदीय
एन. पी. सिंह

•

कानो
७ अगस्त, १९७० ई.

पूज्य शास्त्री भाईजी,

सादर नमस्ते।

आशा है, आप मेरी राखी पाकर अत्यन्त प्रसन्न होंगे। मुझे बहुत ही प्रसन्नता होगी, यदि आप इसे सहर्ष स्वीकार कर लेंगे।

वैसे तो आप हम सभी भाई-बहनों को बड़े भाई की तरह प्यार करते ही हैं, तो मैंने समझा कि इसे राखी के पवित्र धागों से क्यों न बाँध दिया जाय? जब भी आप लोगों को स्मरण करती हूँ, माताजी पूजा करती हुई सामने आ जाती हैं।

आप समझ सकते हैं मेरी परिस्थिति को। आशा है, आप बाबा की और उस घर की भी कभी-कभी खोज-खबर ले लिया करते होंगे।

अरे हाँ ! भाभी अब वकील हो गई हैं ! हम सबकी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आपका पता मुझे मालूम नहीं है, इसलिए आपके पास पत्र लिखने में आलस आ जाता है।

भाभी ने जो मेरी विदाई की है, वह क्या मैं जीवन भर भूल सकती हूँ? आप ही भाई-बहनों से तो अब पटना का आकर्षण है।

बाबा आजकल किसी राजनीति में तो भाग नहीं ले रहे हैं न ! कृपया आप भी प्रयत्न करेंगे, जिससे वह इन सबसे दूर रहें।

बहन अलका को मेरा प्यार तथा पवन और छोटन को मेरा आशीर्वाद।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी मैं बहुत जल्दी में पत्र लिख रही हूँ। भाभी को कहेंगे उत्तर देने को। विशेष पत्र मिलने पर। शुभ।

आपकी बहन

सरोज

●

दिनांक : २४.४.१९ ७०

प्रिय बन्धुवर रामनारायणजी शास्त्री

सस्नेह नमस्ते ।

शमत्र तत्राप्यस्तु ।

चि. अमिताभ के 'यज्ञोपवीत-संस्कार' एवं कु. अलका एवं अनिल रंजन के शुभ विवाह-संस्कार का स्नेह-परिपूर्ण निमन्त्रण-पत्र प्राप्त हुआ। हार्दिक प्रसन्नता के साथ मेरी सपरिवार सकुटुम्ब आपको बधाई है।

पत्र विलम्ब से मिला, आज चि. अमिताभ का यज्ञोपवीत-संस्कार सानन्द सम्पन्न हो गया होगा। इस पुनीत अवसर पर मैं स्वयं उपस्थित न हो सका, खेद है। प्रिय ब्रह्मचारी को अनेकशः आशीर्वाद के साथ मेरी शुभकामना है कि प्रभु उन्हें दीर्घ जीवन, सुन्दर स्वास्थ्य, सद्विद्या, सुविचारों से परिपूर्ण वातावरण, सत्कर्मों में प्रवृत्ति, सांसारिक सुख-समृद्धि के साथ गुरुजनों के प्रति भक्ति प्रदान करें। सुश्री अलका एवं श्रीयुत् अनिल रंजन को अभिनव-दाम्पत्य-जीवन सौभाग्य एवं सुख-सम्पदा से परिपूर्ण हो। इन्हें सुसन्तति, सुयश एवं सुहृज्जनों का सान्निध्य सदा उपलब्ध रहे। मंगलमय गार्हस्थ्य कल्याणकारी हो। सौभाग्यमस्तु, शुभं भवतु, ओऽम् स्वस्ति, स्वस्ति, स्वस्ति !

हमारी सपरिवार शुभकामनाएँ और आशीर्वाद ब्रह्मचारी एवं नव दम्पति को प्रदान कर दें। अनुपस्थिति के लिए क्षमा करें। तार पृथक् दिया है। मिला होगा। परिवार में हम लोगों की ओर से सप्रेम नमस्ते।

भवदीय

लक्ष्मण कुमार शास्त्री

शास्त्री-सदन
११७/४८६, पाण्डुनगर
कानपुर-५

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धेय शास्त्रीजी, दिनांक : २४.४.७०

सादर नमस्ते।

कल्याणीया अलका के शुभ परिणय संस्कार के अवसर पर आपका निमन्त्रण प्राप्त हुआ। अनुगृहीत हूँ। किन्तु कल ही विद्यालय की प्रबन्ध-समिति की बैठक है। अतः इस सौभाग्य का प्रत्यक्ष उपयोग करने में असमर्थ हूँ। अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए श्रीअवधेशकुमारजी को भेज रहा हूँ। उन्हीं से कृपया मेरा न्यौता भी स्वीकार करें। आगामी जून में मैं अवश्य किसी दिन आपसे मिलूँगा।

वर-वधू यशस्वी हों, दीर्घायु हों, सौभाग्यशाली हों, प्रभु से यह विनीत कामना है।

डी. ए. वी. हाइ स्कूल नं. २
आसनसोल (वर्द्धमान)

भवदीय
सूर्यकुमार चौधरी
प्रधानाध्यापक

●

माननीय शास्त्रीजी,

नमस्ते।

आपको प्रिय पुत्री अलका के शुभ विवाह का आमन्त्रण मिला। मैं विदेश जा रहा हूँ, अन्यथा अवश्य ही इस शुभ अवसर पर उपस्थित होता। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह प्रिय अलका के वैवाहिक जीवन को मंगलमय करें। इस अवसर पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

१, केनिंग लेन
नई दिल्ली

भवदीय
प्रकाशवीर शास्त्री
सांसद

●

दि. २९.४.७०

आदरणीय भाई रामनारायणजी शास्त्री,

सप्रेम नमस्ते।

बेटी अलका के शुभविवाह का निमन्त्रण २८.४.७० को, अर्थात् विवाह के ३ दिन बाद प्राप्त हुआ। इससे सारा कार्यक्रम कितनी शीघ्रता में निश्चित हुआ है, इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात का अनुमान होता है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्रीप्रकाशवीरजी शास्त्री ने कानपुर से संस्कार आदि की व्यवस्था करवा दी। मैं इस मांगलिक अवसर पर बेटी के अटल सुख-सौभाग्य की कामना करता हूँ और आप दम्पति को हार्दिक बधाई देता हूँ।

७, मीनाबाग
नई दिल्ली

आपका भाई
शिवकुमार शास्त्री

●

दिनांक : १४.५.७०

माननीय शास्त्रीजी,

नमस्ते ।

आशा है, प्रिय अलका के विवाह से आप सकुशल निवृत्त हो गये होंगे। बड़े भाग्यशाली आप हैं। इतनी आसानी से कन्धा आपने हलका कर लिया। मैंने कानपुर चलने से पूर्व सारी व्यवस्था कर दी थी। आशा है, वह समय पर पहुँच गये होंगे। बिहार के अपने सहयोगियों का ऐसे समय में असहयोग सुनकर हैरानी हुई। ऐसे अवसरों पर तो घोर शत्रु भी मित्र हो जाते हैं।

मेरी योरप-यात्रा में यह चौथा देश है। जर्मन से आस्ट्रिया और डेनमार्क होकर मैं यहाँ आ गया था। यहाँ से नार्वे होकर लन्दन चला जाऊँगा। यात्राएँ प्रायः सभी प्रेरणाप्रद हैं। मुट्ठी-मुट्ठी भर लोगों के इन देशों को देखकर हमें अपना मूल्यांकन करने में आसानी रहती है।

स्वीडन आठ महीने बर्फ में दबा रहता है। फिर भी संसार में प्रति व्यक्ति आय के बारे में अमेरिका के बाद यह दूसरा देश है। वृद्ध और बाल दोनों की ही जिम्मेदारी हर तरह की सरकार की है। इसीलिए किसी को जमा करने की चिन्ता नहीं है। कमाते और गँवाते साथ-साथ हैं।

परिवार में सबसे नमस्ते कहें। आशा है, आप सानन्द होंगे। श्रीविष्णुदेव बाबू से भी नमस्ते कहें।

स्टाकहोम, स्वीडन

आपका
प्रकाशवीर

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनांक : ३०.४.१९७०

प्रियवर,

वाराणसी से लौटने पर २४.४.७० को आपका निमन्त्रण-पत्र प्राप्त हुआ। आपकी पुत्री अलका के पुनीत परिणय के शुभ अवसर पर उपस्थित न हो सका, इसका मुझे खेद है। आशा है, विवाह-संस्कार पूरे आनन्द-समारोह के साथ सम्पन्न हो गया होगा।

मेरी ओर से नव दम्पति को वेद के शब्दों में आशीर्वाद दे दीजिए :

इहैव स्तं मा वियौष्टं
विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीडन्तौ पुत्रैः नप्तृभिः
मोदमानौ स्वे दमे ॥

स्नातकोत्तर विभाग
भागलपुर–विश्वविद्यालय
भागलपुर-७

भवदीय
वीरेन्द्र श्रीवास्तव

●

दि. २८.३.७०

परम श्रद्धेय श्रीशास्त्री रामनारायणजी,

सादर नमस्ते ।

पूना में ८ मई से १५ मई तक श्रीगायत्री महायज्ञ एवं हिन्दू-धर्म-सम्मेलन होने जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस सम्मेलन में १०, ११, १२ एवं १३ मई को अवश्य पधारें। आपका मार्ग-व्यय एवं उचित दक्षिणा समिति देगी।

चन्द्रेश्वर मन्दिर
१२५५, भवानी पेठ, पुणे-२

स्वामी जगदीश्वरानन्द

●

श्रीमाननीय अभिन्नहृदय,

सादर सप्रेम नमस्ते ।

हम सभी परमात्मा की कृपा से सकुशल सानन्द कलकत्ता से लोनावला अपनी जगह पर पहुँच गये। यात्रा तो बहुत ही उत्तम रही। कलकत्ता को वही पुराना आज से बत्तीस साल पहले का कलकत्ता पाया। सिर्फ रेलवे का प्लेटफार्म और हावड़ा ब्रिज ही बदल गया है। बाकी वही गन्दगी, वही रिक्शे, वही ट्रामवे और वही आदमी, जिन्हें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैरभाषा-भाषियों से वैमनस्य बिना कारण। अगर आप हिन्दी में बातें करेंगे, तो उत्तर कुछ और मिलेगा और बंगाली भाषा में उत्तर कुछ और, यह तो जनसमुदाय का व्यवहार, ठीक ही अपनी भाषा के प्रति इतना प्रेम स्वाभाविक है, परन्तु द्वेष अन्य भाषा से क्यों ? शायद इसीलिए कि इनके साथ किये गये दुर्व्यवहार का परिणाम है या सीमित वृत्ति। आज भी हमारे हिन्दी-समुदाय में इतनी विषमता, जब सारा अहिन्दी देश एक होकर, हिन्दी-सम्प्रदाय को कुछ देने को अग्रसर हो रहा है। अस्तु, आप लोगों के साथ के दो दिन क्षण में विलीन हो गये। इतना अगाध प्रेम तो जिन्दगी में कभी, किसी भी तपस्वी को शायद ही प्राप्त हो सके, मुझे सपरिवार प्राप्त हुआ। आपके संघर्षमय जीवन ने हम सबको 'आगे बढ़े चलो' की प्रेरणा दी है। आप कभी किसी भी नष्ट वस्तु की अकारण चिन्ता नहीं करेंगे। मैं आपका ही उदाहरण आपको ही दे रहा हूँ 'चिन्ता चिता द्वयोर्मध्ये चिन्ता एव गरीयसी' इत्यादि। चिन्ता से शरीर क्षीण होता है और इसका उपाय 'सन्तोषामृत' है, अर्थात् आगे का विचार करते हुए सन्तोष का सहारा लेना और सतर्कता रखना, ताकि चिन्ता का पुनर्निर्माण न हो। पहले ही से हमारा ध्येय रहा कि 'नेकी कर दर्या में डाल'। न जाने इस हातिमताई का वाक्य हमारे जीवन का अंग क्यों बन गया, या यों कहें कि 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन', काम करते ही रहना, फल की चिन्ता मत करना। जिसने किया है, वह तो इतना भोगेगा, जिससे फिर कभी सिर उठा नहीं सके। आपकी चिन्ता का प्रभाव आपके घर के सभी व्यक्तियों पर पड़ता है। चिन्ता मत करना। परमेश्वर की लीला बड़ी विचित्र है। जानते हैं, नारदजी क्या कहते थे—नारायण-नारायण-नारायण। भूत, वर्त्तमान और भविष्य तीनों कालों को जाननेवाले नारदजी जिस काम को करते थे, अज्ञानी मनुष्य उनका हास्य करते थे और कलह निर्माण करनेवाले की उपाधि से उन्हें अलंकृत करते थे, परन्तु जब जान जाते थे, तब क्षमायाचना से. फिर नारायण नारायण नारायण और आप तो श्रीरामनारायण रामनारायण रामनारायण हैं। आपको चिन्ता क्यों ? शायद आप भूल गये होंगे कि आपका भी एक अंग इधर है, चाहे जहाँ भी रहें, मैं भी आपके साथ दुःख में दुःखी हूँ। एक उपदेश के गृहीत जन एक ही हुआ करते हैं। सिर्फ बातों से नहीं, कार्य से भी। देखिए परमेश्वरी कितना छोटा था, कितने प्रेम से निःस्वार्थ भाव से उसके साथ हम थे। शायद आपने भी देखा, उसका जीवन कितना अच्छा और प्रगतिशील है, कितना मिलनसार। अब भी वही परमेश्वरी जो कि छोटा था, हमारी आँखों के सामने, आज एक बड़े आदमी बनकर भी उसमें कोई भी रद्दोबदल नहीं, इसका कारण क्या है। एक ही विद्यालय के विद्यार्थी, एक विचार, फिर एक मन का होना निश्चित ही है। हम तो आपके बिलकुल साथ ही में रहनेवाले, पढ़नेवाले, खेलनेवाले और विचारोंवाले, फिर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्ता क्यों ? ऐसा मत सोचना, मैं अकेला हूँ, ऐसा सोचो, हम एक हैं, अगर आपका घर राजेन्द्रनगर में है, तो लोनावला में भी है। आप अपनी पत्नी के साथ, बच्ची-बच्चों के साथ, अर्थात् हमारी छोटी भाभी के साथ हमारे भतीजे के साथ अवश्य आने का कष्ट करें।

आपकी भाभी आप सभी लोगों की याद में रोती रहती है। आज पाँच दिन हो गये, इनका रोना बन्द नहीं हो रहा है। ये कहती हैं कि ऐसा सुख जिन्दगी में कभी प्राप्त नहीं हुआ, जो आप लोगों के साथ मिला। सौभाग्यवती अलका भतीजी को उसकी चाची का सप्रेम नमस्ते और बच्ची को प्यार। अभिजित और अमिताभ को आशीर्वाद। अमिताभ को चाचीजी का कहना है कि खूब मन लगाकर पढ़ना और बाबूजी के साथ लोनावला माताजी को लेकर आना। शत्रुघ्न सिन्हा बनने की चिन्ता मत करना। पढ़ोगे तो अपने-आप ही शत्रुघ्न सिन्हा बन जाओगे। सौ. अलका भतीजी को भी हमारे घर ले के आना। श्रीशास्त्रीजी से कहना कि जरूर से जरूर हमारे घर आना।

शास्त्रीजी एक बात है, आपका पुरोगम (प्रोग्राम) क्या है; क्योंकि बाईस दिसम्बर से कलकत्ता आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव है, आपका भी नाम है। आप कलकत्ता जायेंगे तो यहाँ भी आने का कष्ट करेंगे। सपरिवार, अर्थात् हमारी छोटी भाभी, अभिजित, अमिताभ, अलका और बेबी को लेकर जरूर आवें। आते समय गाड़ी का पता और समय निश्चित कर दें, ताकि स्टेशन पर हम आपका इन्तजार कर सकें। आपका भाषण सुनने को हम सभी लालायित हैं। बम्बई आयें तो जरूर हमारे घर आवें और पहले हमारे घर लोनावला और बाद में आर्यसमाज या जैसा उचित हो, वैसा। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

बम्बई

आपका ही भाई

विश्वामित्र

●

८.२.१९७०

सेवा में,
श्रीरामनारायण शास्त्री
राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना

मान्यवर महोदय,

अपने के मालूम होयत कि बिहार मगही मण्डल के सलियाना अधिवेशन मार्च महीना के कोई तारीख के करे के निश्चय भेल हे। एकरा ला एगो स्वागत समिति बनावे के बात हे। स्वागत समिति के संयोजक अपने के बनावल गेल हे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामकरनी समिति के इतवार, १४ दिसम्बर, १९६९ के डॉ. कामेश्वर प्रसाद अम्बष्ठ के घर पर होयल। बइठकी में पास भेल प्रस्ताव के मोताबिक अधिवेशन के उद्घाटन डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी के भाई करथिना-विशेष अतिथि के रूप में श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा के बोले के बात भी ओही बइठकी में तय भेल। उनका से अपने बतियाँव करके निश्चित तिथि ठीक कर लीं।

फिर, १ मार्च, १९७० के दानापुर में भेल कामकरनी समिति के बैइठकी में तय भेल कि स्वागत समिति के अध्यक्ष के पद से श्रीकृष्णवल्लभप्रसाद नारायण सिंह (बबुआजी) इया डॉ. अवधेश कुमार नारायण सिंह के राजी कयल जाय।

अपने के अनुरोध हे कि अपने एकरा अनुसार अधिवेशन के सफल बनावे ला एगो मगही प्रेमी लोग के बइठकी बोला के स्वागत समिति के गठन कर लेल जाय आव आगे काम बढ़ावल जाय।

बिहार मगही मण्डल
पटना-५

भवदीय
कपिलदेव सिंह

●

पूना : ८.१.७०

श्रद्धेय श्रीशास्त्रीजी,

सादर नमस्ते।

सेवा में निवेदन है कि मैंने आपका व्याख्यान मुहम्मदअली पार्क, कलकत्ता में सुना था।

यहाँ एक विशाल अखिलभारतीय हिन्दू-सम्मेलन का आयोजन किया गया है। मेरी इच्छा है कि आपका तीन दिन का व्याख्यान इस शुभ अवसर पर रखा जाये। हो सकता है कि आपकी ओजस्वी वाणी पूना की जनता को नया मार्ग दे। आपके मार्गव्यय एवं दक्षिणा की पूरी व्यवस्था की जायेगी। अतः आप अपनी स्वीकृति अवश्य दें। हमारी तारीख है ९ मई से १५ मई तक। साथ में आप अपना विशेष परिचय तथा फोटो भी भेजें। ताकि, प्रचार-कार्य के निमित्त पोस्टर एवं पेपरों में देने में सुविधा हो। शेष कुशल।

चन्द्रेश्वर महादेव
१२५५, भवानी पेठ
पूना-२ (महाराष्ट्र)

जगदीश्वरानन्द

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri दि. २०.११.६९

श्रीयुत शास्त्रीजी

आज ता. २०.११.६९ सायं ६.३० बजे मेरे निवासस्थान पर उपस्थित होकर मेरे कन्या का विवाहोत्सव सम्पन्न करने की अनुकम्पा करें।

संस्कृत-विभाग
भागलपुर-विश्वविद्यालय
भागलपुर

प्रार्थी
बेचन झा

●

दिनांक : १९.१.६९

आदरणीय श्रीरामनारायण शास्त्रीजी,

नमस्कार।

मोकामा में आर्यसमाज का जलसा होने से आम जनता में उत्साह है तथा आपके भाषण से प्रभावित होकर मोकामा के चारों ओर से आपकी माँग हो रही है। मेरा आग्रह है कि आप समय निकालकर आर्यसमाज के प्रचार के लिए मोर तथा मराँची तथा टालक्षेत्र आदि स्थानों में आपका प्रचार-कार्यक्रम हो, जिससे आर्यसमाज का चारों ओर प्रचार हो। मैं चाहता हूँ कि आप अपना समय देकर मोकामा के आर्यसमाज को आगे बढ़ाने में योगदान करें।

आर्यसमाज, मोकामा
कार्यालय : चिन्तामणिचक
मोकामा (पटना)

आपका
नागेश्वर प्रसाद सिंह
मन्त्री

●

श्रीयुत भाई पं. रामनारायणजी शास्त्री,

सप्रेम नमस्ते।

पत्रोत्तर की देरी के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। मैं आर्यसमाज के कार्य से गोवा आया हुआ हूँ और २८ मई को ही दिल्ली वापिस पहुँचूँगा। मेरी लड़की-दुर्घटंना ग्रस्त हो गयी थी, परन्तु अब स्वस्थ है। सद्भावना के लिए आभारी हूँ।

सार्वदेशिक के चुनाव के सम्बन्ध में बात यह है कि मैं आर्यसमाज की वर्त्तमान अवस्था से निराश हूँ। मुझे इन चुनावों से घृणा हो गई है। चुनाव के अतिरिक्त अब समाज में कुछ नहीं रह गया है और चुनाव का अजगर इसे अवश्य निगल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेगा। इसके तथाकथित नेता स्वार्थान्ध हैं। उनके लिए आर्यसमाज साधन है, साध्य नहीं। आप चुनाव में रुचि रखते हैं, सो बढ़े चलिए। कभी तो मंज़िल हाथ आयेगी ही।

परिवार में श्रीमती बहिनजी को सादर नमस्ते तथा बच्चों को प्यार कहिएगा।

भवदीय

ओमप्रकाश त्यागी

सांसद

१५, केनिंग लेन, कर्जन रोड

नई दिल्ली

दिनांक : २१.५.६८

श्रीमान् आदरणीय पं. रामनारायण शास्त्रीजी,

सादर सप्रेम नमस्ते।

आशा है, सानन्द होंगे। आपका दि. ७.५.६८ का कृपापत्र कल यहाँ मुझे मिला, मैं अस्वस्थ हूँ, मेरे पेट के अन्दर घाव हो गया है। इसके कारण नाना रोग मुझपर आक्रमण करते रहे। यहाँ आगरा में मेरे एक डॉक्टर भक्त हैं। उन्होंने मुझे बुलाया। दि. १.५.६८ से मैं यहाँ रहकर इलाज करवा रहा हूँ और एक माह तक यहाँ रहना होगा। उड़ीसा में मेरा कार्य रहा, परन्तु राँची जिले में समाज की और दूसरी संस्था न होने से मुझे ही आवश्यकतानुसार काम करना पड़ा। परन्तु, कठिनाइयों का बहुत सामना करना पड़ रहा है। इसाई मिशनरी ने मेरी जान लेने के कई असफल प्रयत्न किये और अब भी कर रहे हैं। स्थिति इस प्रकार है।

१. राँची जिले के बलवा थाने में १९०० से अधिक इसाई नर-नारी शुद्ध हुए हैं। दि० २७.३.६८ को गाँव तलमंगा में ५०० से अधिक लोग शुद्ध होनेवाले थे, परन्तु सिमडेगा के एस. डी. ओ. ने ईसाई होने से, मिशनरियों की बात सुनकर वहाँ १४४ धारा लागू कर दी, रिजर्व पुलिस ने हमारे पण्डाल पर कब्जा कर लिया, फिर भी हमने घर के अन्दर ३४८ ईसाइयों की शुद्धि की। मुझे पकड़ने की कोशिश उनकी नाकाम हुई। ईश्वर ने मेरा साथ दिया। परन्तु हमारे १० वनवासी कार्यकर्त्ताओं को धारा १०७ के तहत सिमडेगा ले गये, अबतक केस चल रहा है, हम सबको जमानत पर छुड़ा लाये।

२. पुनः हमने बिहार के राँची जिले के अंचल पर उड़ीसा में दि० २०.४.६८ को एक शुद्धि-समारोह रखा था, जिसमें ५०० से अधिक लोग शुद्ध होनेवाले थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस शुद्धि के लिए सार्वदेशिक सभा से १००० रुपये मिले थे, परन्तु पादरियों ने गाँव-गाँव में ९० बोरी गेहूँ बाँट दिये, सीमा-पुलिस ने ईसाई होने से पादरियों का साथ दिया, अतः शुद्धिकार्य लोगों का आते समय रोक दिया गया। सिमडेगा के एस. डी. ओ. के और खुफिया पुलिस के ईसाई होने से हमें सरकारी बाधा हो रही है। कृपया आप वहाँ से ईसाई अधिकारियों को हटाने की कृपा करें और एस. पी. से मिलकर हमें पुलिस-संरक्षण दिलायें।

३. अगला शुद्धि-समारोह हम रामरेखा में करने जा रहे हैं।

४. मैंने लाला रामगोपालजी से मिलकर सारी बातें नोट कर दी हैं। मैं इस समय बीमार हूँ। आश्रम तथा प्रचार-कार्य में जो आर्थिक कष्ट है, वह दूर होना चाहिए, नहीं तो पादरी लोग हँसेंगे, समाज के काम में बाधा होगी।

५. श्रीमान् दयारामजी मन्त्री, आर्यसमाज, राँची सब कुछ जानते हैं। वह आपको सूचित करेंगे। बलका थाना में कुन्दुरमुण्डा गाँव में हम दयानन्द-सेवाश्रम खोलने जा रहे हैं। जमीन मिली है और मकान बनाने को हम आर्थिक व्यवस्था करके आये हैं।

६. हमारी शिक्षण-संस्था, शुद्धि-प्रचार आदि में मासिक ६५००.०० रुपये व्यय हुए हैं। सार्व. सभा तथा अन्यान्य दानियों से सिर्फ २५००.०० रु० मिलते हैं, बाकी ४०००.०० रु. मासिक मुझे संग्रह करना होता है। अब मैं बीमार हूँ, विस्तरे में पड़ा हूँ, कैसे संस्था चलेगी ? कलकत्तावालों ने २१ हजार रुपये में एक जीप दी है। आप आर्यजगत् की आशा की किरण हैं। प्रभु आपको दीर्घायु करें। इति ओम्।

स्वामी ब्रह्मानन्द

गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेदव्यास
पानपोस, पो. राउरकेला-४
जि. सुन्दरगढ़ (उत्कल)

पहाड़गंज, अजमेर
१३.५.६८

प्रिय बन्धु पं. रामनारायणजी शास्त्री

सस्नेह नमस्ते।

आपका पत्र मिला। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली से मुझे जून, १९६६ ई. से नियमपूर्वक एक सौ रुपये रु० मासिक प्राप्त हो रहे हैं। यह आर्थिक सहयोग आप सहृदय बन्धुओं की सक्रिय सद्भावना-सहानुभूति का ही परिणाम है।

आजकल अन्न, दूध, फल, औषधि आदि सभी मँहगी हैं। फिर मैं बीमार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ-पाँव से लाचार। चौबीसों घण्टे सेवक की आवश्यकता। पत्नी भी बीमार रहती है। तीन बार उसके पेट का ऑपरेशन हुआ है। इधर मेरा भी उपचार होता रहता है। इस कारण व्यय अधिक हो जाता है। सार्वदेशिक सभा के अतिरिक्त अन्य आर्यबन्धु भी सहायता कर देते हैं। इससे मेरा जीवन-निर्वाह ठीक प्रकार से हो रहा है। इसी सहायता में स्वरचित कृतियों का प्रकाशन साधारणरूपेण हो जाता है। लगभग १२ कृतियों का प्रकाशन कराना है, धीरे-धीरे प्रकाशित होती रहेंगी।

लगभग एक वर्ष से भी अधिक दिनों से अस्वस्थ हूँ। सारे शरीर में दर्द रहता है। हाथ भी अब बेकार होते जा रहे हैं। परन्तु कुछ न कुछ लिखता ही रहता हूँ।

इस संकट में आपने सार्वदेशिक सभा से सहायता कराके मुझे उत्साहित किया, तदर्थ मैं अत्यन्त आभारी हूँ। अभी कार्य मेरा ठीक ही चल रहा है। आवश्यकता पड़ने पर आप सहृदय बन्धुओं को ही कष्ट दूँगा।

आपकी आँखों का आँपरेशन हुआ था। ऐसी समाचार-पत्रों में सूचना आई थी। मैंने पत्र भी भेजा था। बड़ी चिन्ता रहती थी। कृपया सूचित कीजिए, अब स्वास्थ्य कैसा है। मेरी पत्नी, परिवार में पुत्री, बहिन, आपको सादर नमस्ते कहती हैं।

मेरे योग्य सेवा सूचित करें।

पहाड़गंज, अजमेर

आपका स्नेहपात्र
प्रकाशचन्द्र

●

श्रीयुत भाई रामनारायण शास्त्री,

सप्रेम नमस्ते।

मेरे दक्षिण भारत के दौरे से लौटने पर आपके पत्र इस कार्यालय के नाम देखने को मिले। जानकर प्रसन्नता हुई कि आप बिहार-राज्य में आर्यवीर-दल के संगठन को सुदृढ़ बनाने हेतु सतत प्रयत्नशील इन दिनों हैं। बन्धु ! बिहार प्रान्त में आर्यवीर-दल को अपने जन्मकाल से ही आपका सहयोग संरक्षक-संचालक के रूप में मिला और आपने अपने साथियों के सहयोग से इसे निस्सन्देह व्यापक भी बनाया। आपकी सेवाओं को देखते हुए सार्वदेशिक आर्यवीर-दल की ओर से आपको ही तभी से उसका संचालक बनाया गया। विगत कुछ वर्षों में दल का कार्य वहाँ शिथिल-सा हो गया, अतः हमने बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा से परामर्श किया कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप बिहार में दल-कार्य को व्यापक बनाते हुए अपनी ओर से सुझाव भेजें कि कौन सज्जन उपयुक्त अधिक हैं। उन्होंने हमें श्रीभाई हरिप्रसादजी का नाम भेजकर सहयोग का आश्वासन दिया। इसपर विगत साल के लिए उनकी नियुक्ति मैंने कर दी थी। मगर जब आपसे मैं मिला, तो मुझे मालूम हुआ कि श्रीभाई ब्रह्मदेवसिंहजी ने बिहार प्रान्त में आर्यवीर-दल के कार्य के संचालनार्थ आपकी नियुक्ति मेरी ओर से कर दी है, तो मैंने भाई हरिप्रसादजी को आपके ही विशेष आग्रह पर निवेदन किया कि वे दिसम्बर ६७ तक संचालक-पद का कार्य अपने नाम से न करें और आपने भी इसे यह कहते हुए स्वीकार किया था कि त्यागीजी, आपने इस प्रकार की व्यवस्था कर मेरी इज्जत को बढ़ाया है। अतः, मैं दिसम्बर, ६७ के बाद आपके आज्ञानुसार श्रीभाई हरिप्रसादजी को संचालक मानकर उन्हें सहयोग प्रदान करूँगा। मैंने आपकी बात और अपने निकटतम सम्बन्ध को ध्यान में रखते हुए ऐसा ही किया तथा श्रीहरिप्रसादजी को लिख दिया था कि वे जनवरी, ६८ से संचालक-पद का कार्य करेंगे।

अब इस कार्यालय से श्रीभाई हरिप्रसादजी शास्त्री को मैंने इस वर्ष के लिए संचालक आपके ही वचनानुसार बना दिया है। अतः, मैं आशा करूँगा कि आप अपनी सम्पूर्ण शक्ति से उन्हें सहयोग देकर उस पौधे को सींचेंगे, जिसे आपने अबतक सँभालकर रखा, उसे बड़ा होने में सहयोग दिया और आँधी तथा तूफान से बचाया। बन्धु ! आपपर मुझे गर्व है। आप मेरे निकटतम सहयोगियों में से हैं तथा अबतक आर्यवीर-दल के अनुशासन में रहे हैं तथा रात-दिन इसी का उपदेश भी आर्यवीरों को देते आये हैं। अतः, आशा करूँगा कि आप मेरे निवेदन पर अब भी अनुशासन का पालन करेंगे तथा श्रीभाई हरिप्रसादजी को दलकार्य में सहयोग देकर कृतार्थ करेंगे। दलकार्य हेतु आप तथा समस्त आर्यवीर बन्धु उन्हें सहयोग प्रदान करें। इसके लिए आप प्रान्त के समस्त आर्यवीरों के नाम अपील भी निकाल लें, तो आपकी महानता को चार चाँद लग जायेंगे। आपका यही उत्साह अगर भविष्य के लिए बना रहा, तो प्रान्त के तो क्या, आप केन्द्र में आर्यवीर-दल के कार्य करने हेतु भविष्य में आमन्त्रित हो सकेंगे। शेष शुभ। पत्रोत्तर दें। योग्य सेवा लिखें।

भवदीय

ओमप्रकाश त्यागी

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दि. २९ सितम्बर, ६५

भाई,

भुलाने की कोशिश बहुत हो रही है, मगर याद करने को जी चाहता है !

क्षेमचन्द्र सुमन

अजय निवास,
दिलशाद कॉलोनी
शाहदरा, दिल्ली-३२

●

८ मार्च, १९६५ ई०

श्रद्धेय श्रीशास्त्री महोदयजी,

सप्रेम नमस्ते ।

आपकी सेवा में हम सादर सूचित करते हैं कि मॉरिशस का विद्यार्थी तुलसीप्रसाद जयमंगल के पत्र द्वारा ज्ञात हुआ कि वह इस समय आर्यसमाज-मन्दिर में निवास करता है, सो आपकी महती कृपा है। हम सपरिवार कृतज्ञ होते हुए अति आभारी हैं और हृदय से आपको तथा आर्य महानुभावों को सप्रेम धन्यवाद समर्पण करते हैं।

पवित्र स्वर्णमयी पुण्य भारतभूमि से आये हुए आर्य संन्यासी इस समय मॉरिशस टापू भर में आर्यसमाज की ओर से श्रीपूज्य स्वामी अखिलानन्दजी महाराज द्वारा वैदिकधर्म-प्रचार-कार्य निर्विघ्नतापूर्वक हो रहा है। इनसे पहले पूज्यपाद श्रीमहात्मा आनन्दस्वामी योगी महाराजजी कुछ ही समय यहाँ रहकर अपनी अमृतवाणी द्वारा मुग्ध कर सबको चले गये। मॉरिशस आर्यसमाज के इतिहास में सर्वदा अंकित रहेगा कि प्रथम बार एक आर्य संन्यासी की शोक-घटना हुई, जिसके लिए हम मॉरिशसी अति दुःखी हैं। वह घटना भूतपूर्व सार्वदेशिक आर्य सभा के प्रधान के सम्बन्ध में हैं। यथा नाम तथा विचार वाणी और कर्म था उनका। उनका शुभ नाम था श्रीअभेदानन्द स्वामीजी। क्योंकि वे अभेद भाव से सभी प्रकार के मानवों से अति नम्रता, उदार भावना तथा प्रेम से मिलते-जुलते थे। स्वर्गीय पूज्यपाद श्रीस्वामी अभेदानन्दजी का आगमन यहाँ हुआ, जब श्रीस्वामी ध्रुवानन्दजी महाराज 'राजगुरु' भी उपस्थित थे। जब वे भारत को वापस हो गये, तब स्वामी अभेदानन्दजी महाराज प्रचार-कार्य में लग गये। कुछ समयों के बाद अति रुग्ण होने पर बहुत उपचार किया गया। अन्त में शल्यक्रिया भी हुई, फिर भी बच न सके। ईश्वर के अटल विधानानुसार अपने नश्वर शरीर को प्रसन्नतापूर्वक त्याग कर सदा के लिए

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम प्रभु की अमर गोद में वे विलीन हो गये। हा शोक ! तुम्हारी अबाध्य शक्ति से कौन बचनेवाला है, तुम्हारी माया और महिमा अपरम्पार है।

लेकिन, फिर भी हमें शोक के बदले में शौक इस बात का है कि उनकी आत्मा भवसागर पार करती हुई सद्गति को प्राप्त हो गई। उनका पवित्र विचार तथा शुभ सन्देश मॉरिशस के वायुमण्डल में गूँज रहा है, साथ-साथ उनकी पदरज तथा नश्वर शरीर की पाक धूल-राख से यहाँ की भूमि पवित्र बन गई है। हम भारतीय प्रवासी सन्तान भारत से दूर हिन्द महासागर के एक छोटे-से टापू में वास करते हुए हमेशा हमारी प्रतीक्षा और टकटकी लगी रहती है पुण्य भारत-माँ की ओर। जब कभी हम भारत का शुभ पवित्र सात्त्विक, धार्मिक, सामाजिक, नैतिक तथा शुद्ध सांस्कृतिक संवाद या समाचार सुनते या पढ़ते हैं, तो हम फूले नहीं समाते। लेकिन, जब हम इन बातों के विपरीत देखते हैं, अर्थात् प्रान्तीय भाषाई, धनी-गरीब, नीच-ऊँच का भेद-भाव, तो हम शोक-महासागर के अन्तःपुर में डूब जाते हैं।

हे परमपिता परमात्मा ! शीघ्रातिशीघ्र भारत-माँ के सुपुत्रों के हृदय और मस्तिष्क को शुद्ध एकता के अटूट जंजीर में बाँध दें, ताकि वे अपनी शक्ति को पहिचान लें।

श्रीशास्त्रीजी, पुनः हमारी ओर से आपको तथा सभा के सब मान्य कर्मचारी और सदस्यों को कृतज्ञता के साथ विनम्र हार्दिक धन्यवाद अर्पण है। आप सभी आर्य महानुभाव सज्जनों से एक हमारी विशेष प्रार्थना यह है कि जबतक वह विद्यार्थी समाज-मन्दिर में ठहरा करे, तबतक आप लोगों की दया-दृष्टि का आशीर्वाद पाता रहे; क्योंकि वह समय-समय अस्वस्थ रहता है। न मालूम उसकी देह की हालत और शिक्षा की स्थिति कैसी और कहाँतक है।

"हो उनको हमारा बार-बार नम्र नमस्कार।

कष्ट करते सदा जो गरीबों का करते महोपकार॥" इति

परिवार की ओर से आपकी सहानुभूति और कृपा का अभिलाषी

आनन्दकुमार जयमंगल

६, कैवेलरी लाइन्स, दिल्ली-६

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनांक : १४.६.६४

महोदय,

बिहार राज्य द्वादश आर्य महासम्मेलन पटना द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलन के अध्यक्षीय पद से श्रीक्षेमचन्द्र 'सुमन' द्वारा दिया गया भाषण मिला। इस भाषण में संकलित सामग्री अत्यन्त उपादेय है, विवेचन में स्पष्टता और विचारों में निर्भीकता है।

प्रतिलिपि
श्रीक्षेमचन्द्र 'सुमन'
साहित्य अकादमी
नई दिल्ली

भवदीय
नगेन्द्र

●

कलकत्ता
१६.७.६४

श्रीयुत् पं. रामनारायणजी शास्त्री,

सप्रेम नमस्ते।

प्रभु की कृपा से आप सपरिवार सानन्द होंगे। विनयपूर्वक बड़े आग्रह से निवेदन करता हूँ कि आप बम्बई अवश्यमेव पधारकर संशोधित नियमों को स्वीकृत कराकर पुण्य के भागी बनें। यदि आप न पहुँचे, तो मुझे महान् मानसिक क्लेश होगा। जिन्हें मैं अपना विश्वासपात्र समझता हूँ, यदि वे ही मेरा साथ न दें, तो मेरे जीवन को शत धिक्कार है।

बम्बई के निर्वाचन में मेरा अपना कोई स्वार्थ नहीं है। एकमात्र सार्वदेशिक सभा का ही हित है। परिवार में सबको सप्रेम नमस्ते कहें।

शुभेच्छु
स्वामी ध्रुवानन्द

●

१२ अक्टूबर, ६४

प्रिय भाई,

आपका ४ अक्टूबर का कृपापत्र परसों शाम को मिला। कल रविवार था। माताजी के असामयिक निधन के समाचार से हार्दिक वेदना हुई। मैं माँ के अभाव को अब अनुभव कर रहा हूँ। पिछली २५ अप्रैल को वे मुझे अनाथ करके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गारोहण कर गईं। आपके दुःख क॰ अनमान करके रोमांच हो रहा है। फिर भी आप विवेकी हैं, विचारशील हैं, अतः आपसे यहां आशा करता हूँ कि आप माँ के अभाव में स्वयं धैर्यपूर्वक अपने परिवार को सान्त्वना देंगे। क्यां करूँ? यदि पत्र कुछ पहले मिलता तो शायद मैं आता। इन दिनों मेरा भी मन अकारण दुःखी रहता है। एक पत्र दो दिन पूर्व भी लिखा था, उम्मीद है मिला होगा।

अजय निवास, दिलशाद कॉलोनी
शाहदरा, दिल्ली-३२

शोक-सन्तप्त
क्षेमचन्द्र सुमन

●

दिनांक : ८.१०.६४

मान्यवर शास्त्रीजी,

आपका पत्र मिला, जिससे आपकी माताजी के देहावसान का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ। आपको जो आघात पहुँचा है, उसका अनुमान लगाना कठिन है। वियोग तो किसी भी सम्बन्धी का हो, दुःखदायी होता है; क्योंकि उनकी जगह और कोई नहीं ले सकता। मेरी परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत की आत्मा को सद्गति प्रदान करें और आपको एवं आपके परिवार को शक्ति दें कि इस आघात को सहन कर सकें।

सम्पादक
दैनिक 'वीर प्रताप'
जालन्धरनगर

भवदीय
वीरेन्द्र

●

काशी-विश्वविद्यालय
२१.१०.१९६३

श्रद्धेय शास्त्रीजी,

नमस्ते ।

पटना में आयोजित वेद-सम्मेलन और यज्ञ का समाचार जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उसमें स्वयं उपस्थित न रह सकने के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। मैं ईश्वर से सम्मेलन की सफलता चाहता हूँ। वेद भारतीय साहित्य, संस्कृति, धर्म और दर्शन के परम स्रोत हैं। उनकी महिमा से ही यह राष्ट्र जीवित है। उनके परिचय के लिए इस प्रकार के आयोजन अत्यन्त आवश्यक हैं। वैदिक विज्ञान भारत की दीर्घकालीन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति का प्राण है। भारत में वाग्देवी सरस्वती की जो महिमा है, उसकी पराकाष्ठा वेद है। ब्रह्मा का विश्वासात्मक मन ही वेदरूप में प्रकट हुआ है। वेद-विद्या सृष्टि-विद्या का ही दूसरा नाम है। जितनी महती सृष्टि-विद्या है, वही पद-विस्तार और गाम्भीर्य वेद-विद्या का है। राष्ट्रकवि के शब्दों में :

उच्चारित होती चले वेद की वाणी ।
गूँजे गिरि-कानन सिन्धुपार कल्याणी ॥

पाण्डव-गीता में स्वयं व्यास का वचन है :

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं, भुजमुत्थाप्य चोच्यते ।
न वेदाच्च परं शास्त्रं न देवः केशवात्परः ॥

महाभारत, शान्तिपर्व के अनुसार ब्रह्मा ने वेदों के विषय में कहा है :

वेदा मे परमं चक्षुर्वेदा मे परमं बलम् ।
वेदा मे परमं धाम वेदा मे ब्रह्म चोत्तमम् ॥

स्कन्दपुराण के अनुसार :

वेदमूलाः परा यज्ञा यज्ञमूला हि देवताः ।

वेदों की महिमा का परिचय प्राप्त करने के लिए उनका अनुशीलन आवश्यक है।

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल
काशी-विश्वविद्यालय

●

नई दिल्ली
२२.५.६२

श्रीयुत् पं. रामनारायणजी शास्त्री,

सप्रेम नमस्ते ।

प्रभु की कृपा से आप सपरिवार सानन्द होंगे। ४ मई से मैं डॉक्टरों के अधिकार में हो गया हूँ। श्रीप्रताप भाई के गृहकक्ष के सेल में ४ से १६ मई तक रहकर १८ मई को यहाँ आ गया हूँ और दीवानचन्द नर्सिंग होम में खाट पर पड़ा हूँ। मैं ऐसे समय पर बीमार पड़ा हूँ कि सभा का वार्षिक निर्वाचन समीप है।

श्रीभल्लाजी ने वातावरण ऐसा विषाक्त बना दिया है कि जिसको सुनकर मुझे दुःख हो रहा है। आप ९ जून को ही दिल्ली आ जाओ, तो अच्छा हो। मैं चाहता हूँ कि सभा का निर्वाचन शान्तिपूर्वक हो जाये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सभा के पते पर उत्तर दें कि आप किस तारीख को यहाँ आ जाओगे ? परिवार में सबको मेरा सप्रेम नमस्ते कहना।

शुभेच्छु
स्वामी ध्रुवानन्द

●

सातेम
१०.१२.६२

श्रीमान् मान्यवर पं. रामनारायणजी शास्त्री,

सप्रेम सादर नमस्ते ।

निवेदन यह है कि बहुत समय से आप मौन हैं। मैंने एक पत्र लगभग एक मास हुए लिखा था, किन्तु प्रत्युत्तर न पाकर दूसरा पत्र भेज रहा हूँ। आपका पता बदल गया हो तो हमें सही पता लिख भेजें। आप लखनऊ में होनेवाले हीरक-जयन्ती में आनेवाले हैं या नहीं। यदि आप आ रहे हों तो मैं भी आने का विचार करूँ। वहीं सब बातचीत होगी। सौ. ईश्वरी देवीजी एम. ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गई होंगी। आपने कोई समाचार न दिया।

ज्ञात होता है, आपको भी रूठना आता है। आखिर आपका कुछ मुझसे बिगड़ा है ? यदि हो, तो लिख भेजें। मौन रहना आपका खलता है।

सर्व चि. वर्ग को शुभाशीष सप्रेम कहें। घर में सर्वजन कुशल-मंगल से हैं। आपको नमस्ते लिखते हैं। माननीय आचार्य श्यामानन्दजी तथा वासुदेवजी को सप्रेम नमस्ते। पत्रोत्तर देने की कृपा करें।

भवदीय
भगवानजी हीराभाई पटेल

ग्राम : सातेम, पोस्ट : सातेम
तालुक : नौसारी, जिला : सूरत (गुजरात)

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

द्वारा

विद्वद्-अभिनन्दनम्

'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।'

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभिनो निवर्त्तताम्।
देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।
(यजु० २५.१५)

परम श्रद्धेय विद्वद्वर्य !

पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री

सृष्टि के आद्य दिव्य महर्षि चतुर्वेदज्ञ ब्रह्मा द्वारा प्रतिपादित परम वैदिक पुनीत प्रणाली के परमोद्धारक, वेद-प्रसारक, श्रीमन्महामहिम महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा परम प्राचीन वैदिक पावन परम्पराओं के सम्पादक ! मूल वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिपादक ! विद्वद्वरेण्य ! आर्यसमाज स्थापना-शताब्दी-समारोह के शुभावसर पर हम आपका अभिनन्दन करते हैं और अपना परम सौभाग्य समझते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे इस परम पुनीत वैदिक सिद्धान्त के प्रचार में संलग्न आपको वैदिक-सिद्धान्त-मर्मज्ञ, परमधार्मिक एवं सुमेधावी बनाये रखें।

त्वं जीव शरदः शतम्।

विशेष कृतज्ञ	तिथि २६.१२.१९७५ ई०	स्वागतकर्त्ता
अधिकारी एवं सदस्य	दयानन्दाब्द १५१	समस्त अधिकारीगण
आर्यसमाज, नयाबाँस		सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा
दिल्ली		दयानन्द भवन, नई दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभकामनाओं के सन्देश

[पुण्यश्लोक शास्त्रीजी के बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद पर प्रतिष्ठित होने पर उनके शुभानुध्यायियों द्वारा प्राप्त शुभकामनाओं के सन्देश]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

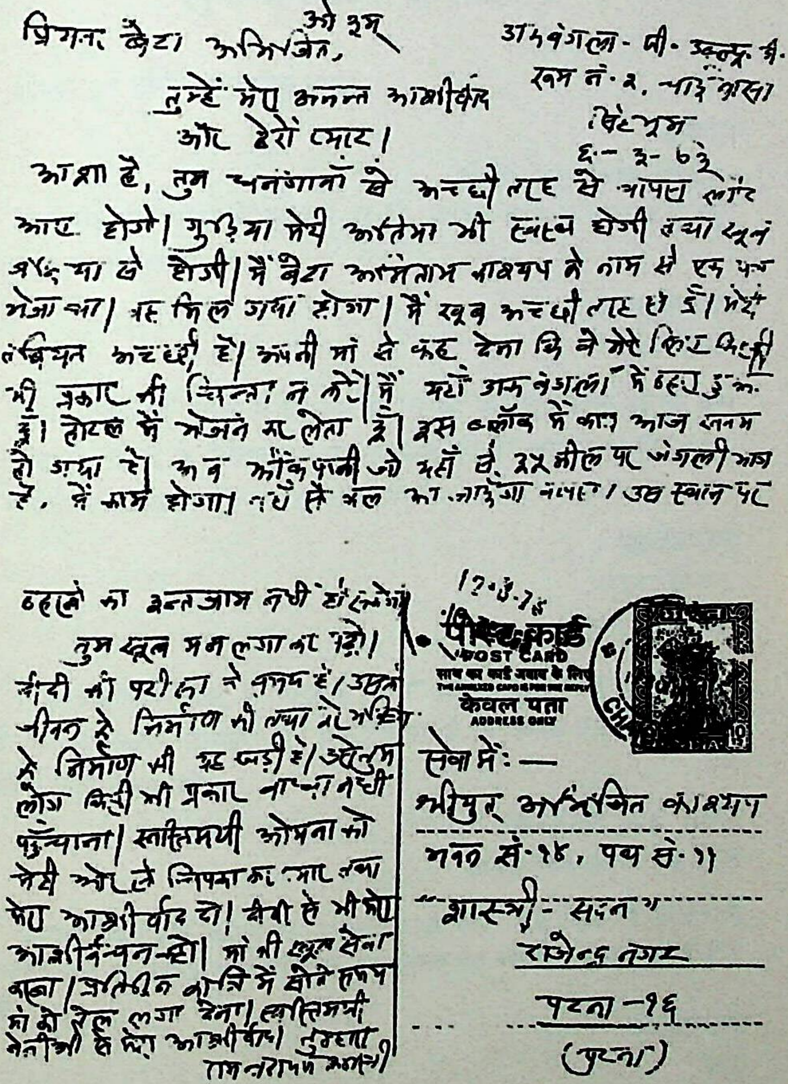
ओ३म्

प्रियवर बेटा अभिजित,

आनन्दबंगला - पी. डब्ल्यू. डी.
रूम नं. २, चाईबासा
सिंहभूम
६-३-७३

तुम्हें मेरा अनन्त आशीर्वाद
और ढेरों प्यार।

आशा है, तुम [illegible] से अच्छी तरह से वापस लौट आए होगे। गुड़िया मेरी अर्चना भी स्वस्थ होगी तथा स्कूल [illegible] होगी। मैं बेटा अमिताभ काश्यप के नाम से एक पत्र भेजा था। वह मिल गया होगा। मैं खूब अच्छी तरह से हूँ। मेरी तबियत अच्छी है। अपनी माँ से कह देना कि वे मेरे लिए किसी भी प्रकार की चिन्ता न करें। मैं यहाँ आनन्दबंगला में ठहरा हुआ हूँ। होटल में भोजन कर लेता हूँ। बस ब्लॉक में काम आज खतम हो गया है। अब [illegible] जो यहाँ से २२ मील पर जंगली भाग है, में काम होगा। यहाँ से कल [illegible] जाऊँगा [illegible]। उस स्थान पर ठहरने का इन्तजाम नहीं हो सकेगा।

तुम स्कूल मन लगाकर पढ़ो। दीदी की परीक्षा [illegible] है। उसके जीवन के निर्माण की तथा [illegible] के निर्माण की यह घड़ी है। अतः तुम लोग किसी भी प्रकार बाधा नहीं पहुँचाना। शान्तिमयी शोभना को मेरी ओर से निरुपमा का प्यार तथा मेरा आशीर्वाद दो। दीदी से भी मेरा आशीर्वचन कहो। माँ की खूब सेवा करना। प्रतिदिन रात्रि में सोते समय माँ को तेल लगा देना। शान्तिमयी नानीजी से मेरा आशीर्वाद। तुम्हारा
रामनारायण शास्त्री

17.3.73

पोस्ट कार्ड
POST CARD
साथ का कार्ड जवाब के लिए
THE ANNEXED CARD IS FOR THE REPLY
केवल पता
ADDRESS ONLY

सेवा में:—
श्रीयुत् अभिजित काश्यप
भवन सं. १४, पथ सं. ११
"शास्त्री-सदन"
राजेन्द्र नगर
पटना-१६
(पटना)

अपने ज्येष्ठ पुत्र श्रीअभिजित काश्यप को लिखित पं० रामनारायण शास्त्री का पत्र (उनकी ही हस्तलिपि में)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभकामनाओं के सन्देश

आपको इस सम्मान पर हार्दिक बधाई !

धर्मपाल

बी. डी. ओ., राधापुर (बिहार)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद को अलंकृत करने के उपलक्ष्य में आप मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

रामलखन आर्य

बाढ़ (बिहार)

परसों, 'आर्यावर्त्त' दैनिक से यह समाचार जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद पर सुशोभित हुए हैं। आप मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामना स्वीकार करें। आपका अभिनन्दन है। भगवान् मंगल करें।

महादेवशरण

मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल, वैद्यनाथधाम

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद पर आसीन होने के उपलक्ष्य में मेरी बधाई और अभिनन्दन स्वीकार करें। मुझे विश्वास है कि आपके निर्देशन में परिषद् स्पृहणीय स्थान आयत्त करेगा।

शंकरदयाल सिंह सांसद

कामता-सदन, बोरिंग रोड, पटना

आपकी पदोन्नति की खबर सुनकर पुरानी सारी बातें याद हो आईं। मैं व्यक्तिगत रूप से सन्तोष और सार्थकता का अनुभव कर रहा हूँ। आपको बहुत-बहुत बधाई !

गोपीवल्लभ

पटना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बधाई, बहुत-बहुत बधाई ! आपके निर्देशन में हिन्दी-भाषा और साहित्य की सत्प्रगति हो। आप दीर्घकाल तक 'भारती' की अर्चना करते रहें।

उमाशंकर बहादुर
नया कदमकुआँ
पटना-८०००३

परिषद्-संचालक के रूप में आपका चुनाव अत्यन्त ही उचित और समयानुकूल हुआ है। इस अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। परिषद् आपके योग्य नेतृत्व में अधिक से अधिक गतिशील हो, यही कामना है।

डॉ. महेश नारायण
मधुबनी, पूर्णिया

यह जानकर सचमुच बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक हुए हैं। बधाई स्वीकार करें।

हरिमोहन झा
संस्कृत-विभाग
भागलपुर विश्वविद्यालय

बड़ी प्रसन्नता है कि सरकार ने राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद पर आपको आसीन कराकर उसकी गौरवशाली परम्परा को स्थिर रखा है। अपनी इस भौतिक उपलब्धि के उपलक्ष्य में मेरी अशेष आत्मिक बधाइयाँ अंगीकार करें।

प्रो० रामप्यारे तिवारी
हिन्दी-विभाग, मालतीधारी कॉलेज, नौबतपुर (पटना)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक के पद पर आपकी प्रोन्नति के समाचार से मुझे अपार हर्ष हुआ है। मैं अपनी ओर से तथा 'पटना टाइम्स'-परिवार की ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ, साथ ही आपके दीर्घ जीवन की मंगलकामना भी करता हूँ।

ब्रजमोहन सहाय
सम्पादक : 'पटना टाइम्स'

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि आप बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक के पद पर नियुक्त हुए हैं। आप जैसे मूर्धन्य विद्वान् को इस पद पर इससे बहुत पहले पहुँच जाना चाहिए था। ईश्वर को कोटिशः धन्यवाद कि उसने प्रशासकों को सुबुद्धि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी, जिससे विलम्ब से ही सही, उन्होंने न्याय किया। परम पिता प्रभु से प्रार्थना है कि वह आपको शक्ति दे, जिससे आप इस नवीन पद को गौरवान्वित कर सकें।

शुभकामनाओं के साथ।

जगदीशचन्द्र शास्त्री
प्राचार्य, विद्या-विहार, मुजफ्फरपुर

आपकी इस अभूतपूर्व सफलता पर मैं हृदय से बधाई दे रहा हूँ। यह महान् उपलब्धि आपकी कार्य-कुशलता, वाणी की पवित्रता, जीवन की सरलता एवं सरस्वती की पवित्र प्रतिभा की परिचायिका है। यह विजय केवल आपकी ही नहीं, अपितु अन्धकार पर प्रकाश की, असफलता पर सफलता की, अयथार्थता पर यथार्थता की कही जा सकती है।

आशा है, आप इसी प्रकार उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर होते हुए देश एवं समाज के उन्नत भाल को चमत्कृत करने में सफल सिद्ध होंगे।

पं. राघव शर्मा
अध्यक्ष, भारत सेवक समाज
गिरिडीह

वर्ष के अन्त में महाकवि पं. सुमित्रानन्दन पन्त के निधन से मुझे घोर दुःख हुआ था। नवीन वर्ष के शुभारम्भ में, कल यह समचार पढ़कर अतीव हर्ष हुआ कि आप बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के नये निदेशक नियुक्त हुए। मैं कितना आह्लादित हूँ, इसका अनुभव आप स्वयं कर सकते हैं; क्योंकि आपके साथ मात्र मैत्री ही नहीं, एक सहज स्वाभाविक सम्प्रीति भी है। बिना आपसे मिले परिषद् में मेरी उपस्थिति मुझे शुभप्रद प्रतीत ही नहीं हुई। मेरा विश्वास है, आपके निर्देशन में परिषद् का अपूर्व विकास होगा। कृपया मेरी आन्तरिक बधाई स्वीकार करें।

पोद्दार रामावतार अरुण
कवि-निवास, समस्तीपुर (बिहार)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद पर आपका प्रतिष्ठित होना मुझे अपार प्रसन्नता से भर गया। प्रखर राष्ट्रीय चेतना और प्रौढ़ चिन्तन से समन्वित आपका व्यक्तित्व निश्चय ही निदेशक-पद को अपेक्षित गरिमा प्रदान करेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके निदेशकत्व में राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्रचेतना के गौरव में श्रीवृद्धि होगी, ऐसा विश्वास है।

सत्यनारायण
डी. ब्लाक, कदमकुआँ, पटना

समाचार-पत्रों से यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि आप परिषद् के निदेशक नियुक्त हुए हैं। पदोन्नति के लिए हार्दिक बधाई ! मेरी शुभकामना है कि आपके कार्यकाल में परिषद् की सर्वाधिक उन्नति होगी और आचार्य शिवपूजन सहाय की समृद्ध परम्परा का निर्वाह और पालन होगा।

नव वर्ष की शुभ कामनाओं के साथ।

डा. वासुदेवनन्दन प्रसाद
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

बिहार सरकार ने एक योग्यतम तथा अनुभवी शिक्षाशास्त्री को यह पद प्रदान कर राष्ट्र के उन्नयन के सन्दर्भ में उचित निर्णय किया है। इसपर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है।

कृपया मेरी शुभकामना स्वीकार करें।

हरिशंकर शर्मा
सदस्य-सचिव
बिहार राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, पटना

आपके द्वारा राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद को अलंकृत करने के उपलक्ष्य में मेरी हार्दिक बधाइयाँ स्वीकार करें। विश्वास करें, मैं आपके इस पदोत्कर्ष को अपना पदोत्कर्ष मानता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है, परिषद् आपके संचालन-काल में उत्तरोत्तर सम्मुन्नत होती रहेगी। शताधिक साधुवाद !

प्रो. सीताराम 'प्रभास'
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
जैन कॉलेज, आरा

यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ है कि बिहार सरकार ने आपके समान लोकप्रिय और विद्वान् साहित्यकार को बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक के पद पर प्रतिष्ठित किया है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्कर्ष की वासन्ती वेला में कृपया हमारा सभक्ति, सश्रद्ध अभिनन्दन स्वीकार करें।

श्रीरंग शाही
प्रधानमन्त्री, बज्जिका साहित्य-परिषद्
मुजफ्फरपुर

अपने के निदेशक-पद पर नियुक्त होये के समाचार पढ़के बहुत आनन्द भेल। हम अपने के हरदम उन्नति के कामना करइत भगवान से विनती करइत ही। ई शुभ अवसर पर मण्डल के तरफ से किरपा करके हार्दिक बधाई गरहन करू।

सन्त रामनगीना सिंह 'मगहिया'
मन्त्री, भारतीय मगही मण्डल
विक्रम, पटना (बिहार)

कल 'प्रदीप' में आपके अभिनन्दन का समाचार पढ़कर और पटना की आकाशवाणी पर प्रादेशिक समाचार में आपके निदेशक-पद पर पदस्थापन की खबर सुनकर मुझे बेहद खुशी हुई। मेरी अपनी ओर से बधाई तो स्वीकार्य ही, केन्द्रीय मगही परिषद् की ओर से भी मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ।

सुरेन्द्र प्रसाद जमुआर
साहित्य-सचिव
केन्द्रीय मगही परिषद्, पटना

परिषद् के निदेशक-पद पर आपकी नियुक्ति के समाचार से मुझे अपार हर्ष हुआ है। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप चिरायु हों और राष्ट्रभाषा की उन्नति और समृद्धि के लिए सदैव प्रयत्नशील रहें !

उमाशंकर वर्मा
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा-महाविद्यालय
महेन्द्रू, पटना

बिहार सरकार ने बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद पर तत्रत्य योग्यतम, कर्मनिष्ठ एवं वरिष्ठ पदाधिकारी को प्रोन्नति द्वारा नियुक्त कर नितान्त अभिनन्दनीय कार्य किया है। यह प्रोन्नति-परम्परा संस्था की श्रीवृद्धि के लिए नितान्त अपेक्षित है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी क्षमता एवं कर्मठता से परिषद् के सर्वांगीण क्रिया-कलाप में यथोचित गतिशीलता अवश्य आयेगी, यह विश्वास है।

डॉ. विधाता मिश्र
आर. एन. कॉलेज
हाजीपुर

परिषद् के निदेशक होने के शुभ अवसर पर आपको मेरा शत-शत बार नमस्कार और बधाइयाँ !

वीरसेन
सम्पादक : 'निषाद-जागरण'
काजीपुर, पटना

परिषद् के मर्यादापूर्ण निदेशक होने के उपलक्ष्य में हार्दिक बधाई !

मिथिलेश कुमार
आनन्दपुर (बिहार)

राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद के लिए बधाई स्वीकार करें।

कमलाप्रसाद 'बेखबर'
फारबिसगंज कॉलेज (पूर्णियाँ)

आज सायंकाल आकाशवाणी के प्रादेशिक समाचार से यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आप बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक के पद पर नियुक्त किये गये हैं। परमपिता परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि भविष्य में भी इसी तरह सफलताएँ आपका पग चूमें।

चित्तरंजन
प्रोजेक्ट इवैलुएशन ऑफिसर
मुजफ्फरपुर

निदेशक के पद पर आपके आसीन होने पर हार्दिक बधाइयाँ। आप सफल हों, यह प्रभु से कामना है।

सोमेन्द्र नारायण
भागलपुर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

आपको बिहार की विशिष्ट राजकीय हिन्दी-संस्था के सर्वोच्च पंद पर आसीन देखकर हम सब गौरवान्वित हुए हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी कामना है कि आप इस गुरुतर पदभार का संचालन सफल ढंग से करते हुए हिन्दी को गौरवान्वित बनायेंगे।

कृष्ण मुरारि
खगौल, पटना

परिषद् के निदेशक होने के शुभ अवसर पर मैं अपनी तथा अपने परिवार के सभी सदस्यों की ओर से आपको बधाई एवं शुभकामना देता हूँ।

काशीनाथ सिंह
आर्यनिवास, नालन्दा

राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक नियुक्त होने के उपलक्ष्य में बरबीघा-अंचल हिन्दी-साहित्य-परिषद् की ओर से बधाइयाँ स्वीकार करें।

दामोदर प्र. वर्मा
सचिव, साहित्य-परिषद्
बरबीघा (मुँगेर)

'सर्चलाइट' में प्रकाशित इस समाचार से मुझे अपार हर्ष हुआ कि आप बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक के पद को सुशोभित कर रहे हैं। इसके लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकृत हो। भगवान् आपको सुयश और श्रेयस् प्रदान करें, ऐसी मंगलकामना है।

गणेश चौबे
बँगरी (चम्पारन)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद को अलंकृत करने के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

अंजनी कुमार प्रताप
हथिदह (पटना)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक के रूप में आपका स्वागत है। हार्दिक अभिनन्दन स्वीकार करें।

अनिलकुमार 'आंजनेय'
सहमन्त्री : अ. भा. अन्तरजनपदीय परिषद्
बलिया (उ० प्र०)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद पर नियुक्ति के उपलक्ष्य में आप मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुभाषचन्द्र सरकार
बान्द्रा, बम्बई

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में निदेशक-पद पर आपकी नियुक्ति हेतु आपको मेरी बधाई स्वीकार हो।

विजयप्रकाश 'आर्यगुप्त'
पालीगंज (बिहार)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक चुने जाने पर मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है, आपके नेतृत्व में परिषद् अपनी पुरानी पद्धति एवं आधुनिक तरीकों से प्रगति के पथ पर अग्रसर होगी। भगवान् आपको दीर्घायु बनायें।

वैद्यनाथ प्रसाद राही
पत्रकार, बिहिया (भोजपुर)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक का पदभार ग्रहण करने के उपलक्ष्य में मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

आशा ही नहीं, विश्वास भी है, आपके संरक्षण में परिषद् दिनानुदिन और भी उन्नति करेगी और भारत की एतादृश संस्थाओं में अपना विशिष्ट महत्त्व दरसायेगी। एक बार पुनः मेरी बधाई !

डॉ. रमाकान्त झा
निदेशक, मैथिली अकादमी, पटना (बिहार)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक के रूप में आपकी नियुक्ति के लिए मेरी आन्तरिक शुभकामनाएँ !

रामशंकर सिंह
जमशेदपुर (बिहार)

यह जानकर अति हर्ष हुआ कि आप राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक नियुक्त हुए हैं। यह पद आपको वर्षों पूर्व मिल जाना चाहिए था, किन्तु काँगरेसी सरकार की अन्त तक नींद नहीं ही टूटी। जनता-सरकार के इस स्तुत्य कार्य की सराहना करते हुए मैं आपको बधाई देता हूँ।

रमेन्द्र
चिन्तामणिचक
मोकामा (बिहार)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक-संवेदना
और
शोक-प्रस्ताव

[पं० रामनारायण शास्त्री के दिवंगत होने पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ईश्वरी आर्या को प्राप्त शोक-संवेदनाएँ एवं शोक-प्रस्ताव]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक-संवेदना के पत्र

आपका दिनांक १० अक्टूबर, ७८ का पत्र विदेशमन्त्री श्रीअटलबिहारी वाजपेयी के नाम प्राप्त हुआ। उनकी ओर से हार्दिक शोक-संवेदना

विदेश-मन्त्रालय, भारत-सरकार

भवदीय

प्रदीप्त घोष

यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि पं. रामनारायण शास्त्री का स्वर्गवास हो गया है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति दे और आपको इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

रक्षा-मन्त्रालय, भारत सरकार

आपका

शेर सिंह

परम मित्र पं. रामनारायणजी शास्त्री का स्वर्गवास हो गया है। वास्तव में यह आर्यसमाज की महती क्षति है। उनके जैसा विद्वान् एवं प्रखर वक्ता आर्यसमाज को मिलना कठिन है। परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ। आशा है, आप सब इस दैवी आघात को साहस के साथ सहन करेंगे।

१, फीरोजशाह रोड, नई-दिल्ली

भवदीय

ओमप्रकाश त्यागी, सांसद

यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि पं. रामनारायण शास्त्रीजी का निधन २४ जनवरी, १९७८ को हो गया। शोक-सन्तप्त परिवार के साथ मेरी भी समवेदना है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

राज्यमन्त्री, श्रम तथा संसदीयकार्य, भारत सरकार

नई दिल्ली

आपका स्नेहाकांक्षी

रामकृपाल सिंह

श्रीरामनारायण शास्त्री के देहावसान का दुःखद समाचार मिला। अभी हाल ही में उनसे हमारी भेंट हुई थी, तब वे काफी स्वस्थ एवं प्रसन्नचित थे। राष्ट्रभाषा-परिषद् के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

निदेशक के रूप में उनकी नियुक्ति अभी हाल ही में हुई थी और उन्हें परिषद् का मार्ग-निर्देशन करना था, किन्तु ईश्वर को ऐसा मंजूर न हुआ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर से मेरी कामना है कि दिवंगत की आत्मा को चिर शान्ति एवं उनके शोकसन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

नगर विकास-मन्त्री, बिहार सरकार भवदीया

सुमित्रा देवी

श्रद्धेय शास्त्रीजी इस दुनिया में नहीं रहे, यह हृदय-विदारक समाचार मिलते ही हृदय को गहरी ठेस लगी। मन चेतनाशून्य-सा हो गया। निरभिमान, सरल स्वभाव, निष्कलंक जीवन, असाधारण वक्तृत्व, ये सब उनकी विशेषताएँ थीं, जिनसे अब बिहार ही नहीं, भारत भी निर्धन हो गया ! दुर्दैव ने यह क्या किया ? इसी अल्पायु में उन्हें छीन लिया !

मेरी तो आँखें बार-बार उनके पुराने कई पत्रों को देखकर डबडबा जाती हैं, हृदय थमता नहीं, आप कैसे धैर्य धारण कर रही होंगी, यह सोचती हूँ। अभी तो हम बम्बई में आपसे मिले थे पर......!

मेरा तार शोक-संवेदना का मिला होगा। आपसे मिलने की इच्छा हो रही है। देखूँ ईश्वर की क्या इच्छा है।

शास्त्रीजी की सच्ची श्रद्धांजलि तो यही होगी कि आप उन जैसा, लगन का धनी एवं परिश्रमशील बनकर समाजसेवा करें।

भगवान् आपको और आपके समस्त परिवार को धैर्य एवं साहस दे कि वह इस अनभ्र वज्रपात को सहन कर सके।

आचार्या, पाणिनि कन्या महाविद्यालय *डॉ. प्रज्ञा देवी*

वाराणसी-१०

अपने अभिन्न मित्र और सहपाठी शास्त्रीजी के निधन से गहरा दुःख पहुँचा है। ईश्वर उनके सन्तप्त परिवार को शान्ति दें।

रक्सौल (बिहार) *देवनारायण प्रसाद शास्त्री*

हम दिवंगत शास्त्रीजी के शोकतप्त परिवार के महादुःख में सहभागी हैं।

नई दिल्ली *डॉ. सत्यवीर सिंह त्यागी*

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्रवर श्रीरामनारायण शास्त्रीजी के असामयिक एवं आकस्मिक निधन का दुःखद समाचार सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। प्रभु दिवंगत शास्त्रीजी की आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करें।

करंजा (पटना) *शुकदेवप्रसाद वर्मा 'विप्लवेन्द्र'*

आर्यजगत् का श्रेष्ठतम, उच्चतम, कुशल तथा स्वस्थ विचारक छिन गया, जिसकी क्षतिपूर्त्ति नहीं हो सकती। भगवान् उनकी पवित्रात्मा को शान्ति प्रदान करें।

गाजियाबाद (उ० प्र०) *वेगराज*

श्रीरामनारायणजी के निधन का समाचार बड़े खेद के साथ पढ़ा। मैं और मेरा सारा परिवार अत्यन्त दुःखी है। मैं हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूँ।

साधु आश्रम, अलीगढ़ *भद्रपाल आर्य*

आदरणीय शास्त्रीजी के निधन का शोक-संवाद सुनकर मेरा सारा परिवार दुःखी है। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए भगवान् से प्रार्थना है।

मोतीहारी (बिहार) *डॉ. विक्रमादित्य गुप्त*

आदरणीय शास्त्रीजी के निधन का समाचार पढ़कर हम सपरिवार बहुत दुःखी हैं। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दें।

कानपुर *लीलावती*

शास्त्रीजी के निधन का समाचार पाकर हम सभी को हार्दिक दुःख हुआ। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें, यही हमारी प्रार्थना है।

पी. रोड, कानपुर (उ० प्र०) *कृष्ण प्रसाद वर्मा*

ब्रह्मर्षिवंशशिरोमणि बृहस्पति के समान सफल वक्ता रामनारायण शास्त्री की मृत्यु से आहत हो उठा। वज्रपात हो गया ! प्रभु से प्रार्थना है कि शास्त्रीजी की आत्मा चिर शान्ति प्राप्त करे।

पण्डितपुर, छपरा (बिहार) *आचार्य जगन्नाथ शास्त्री*

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई रामनारायणजी के अप्रत्याशित निधन की हृदयविदारक सूचना से हम सभी स्तब्ध हैं। परम पिता से उनकी आत्मा की शान्ति के प्रार्थी हैं।

प्राणनाथ पाण्डे

मैथन (बिहार)

महान् वक्ता और विद्वान् तथा बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के नवनियुक्त निदेशक पं. श्रीरामनारायण शास्त्री के अचानक असामयिक निधन का समाचार सुनकर मैं सन्न रह गया। उनके निधन से एक ऐसा हिन्दी-हितैषी नेता उठ गया, जिसने अपनी ओजस्वी और तेजस्वी वाणी से जन-मन पर एक स्मरणीय प्रभाव छोड़ा था। पं. रामनारायण शास्त्रीजी की परिषद्-सेवा सदा याद की जायेगी। वे एक साथ साहित्यिक, समाजसुधारक और सांस्कृतिक व्यक्ति थे। मैं उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

पोद्दार रामावतार 'अरुण'

कवि-निवास, समस्तीपुर (बिहार)

पं. रामनारायण शास्त्रीजी के असामयिक निधन का समाचार पढ़कर अत्यन्त कष्ट का अनुभव हुआ। एक कर्मठ साधक का आकस्मिक निधन परिवार एवं प्रियजन को तिलमिला देता है। जगन्नियन्ता की जैसी इच्छा ! दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति एवं शोक-सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना है।

शम्भुनाथ बलियासे 'मुकुल'

सम्पादक : 'आयुर्वेद-विकास', नई दिल्ली

प्रिय पण्डित रामनारायण शास्त्री के आकस्मिक निधन के समाचार से हृदय को बहुत बड़ा आघात पहुँचा। उन्होंने आर्यसमाज और हिन्दी-भाषा एवं साहित्य का प्रभूत कार्य किया है। वह बड़े ही अच्छे प्रभावशाली वक्ता थे। उनके निधन से महती क्षति हुई है, जिसकी पूर्त्ति कठिन है।

भगवान् दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। मैं उनके सभी परिवारजनों के प्रति अपनी समवेदना प्रकट करता हूँ।

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

फतहगंज, बड़ौदा

शास्त्रीजी के निधन का दुःखद संवाद पढ़कर स्तब्ध रह गया। आपको पत्र लिखने का साहस नहीं जुटा पा रहा था। आखिर क्या लिखूँ ? काल के कराल हस्तक्षेप के हम मूक दर्शक ही तो हैं। विचलित मैं, इस कारण अधिक होता हूँ कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझसे छोटी आयु के लोग एक बाद एक चले जाते हैं और पत्थर बनकर मुझे यह सब देखना पड़ता है। ईश्वरेच्छा में हमारा क्या वश है !

आशा है कि आप धैर्य और साहस के साथ इस महान् विपत्ति के समय अपने को और बच्चों को सँभालेंगी और अपना दुहरा कर्त्तव्य पालन करेंगी।

टैगौर पार्क, दिल्ली — ***प्रफुल्ल चन्द्र ओझा 'मुक्त'***

रेडियो-प्रसारण के माध्यम से परम आदरणीय, हितैषी मित्रवर श्रीशास्त्रीजी के असामयिक निधन का मर्म-विदारक समाचार मिला। हम सभी अपार दुःख से दुःखी है और परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह शास्त्रीजी की आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

महावीर कुटीर, भागलपुर (बिहार) — ***प्रो. योगानन्द दास***

श्रीशास्त्रीजी के आकस्मिक निधन का हृदयविदारक समाचार पत्रों में पढ़कर हृदय को एक असह्य आघात पहुँचा। सर्वशक्तिमान् से प्रार्थना है कि वह दिवंगत शास्त्रीजी की महान् आत्मा को शान्ति दें।

चौराहा गली, मुरादाबाद (उ० प्र०) — ***महेशचन्द्र आर्य***

आदरणीय शास्त्रीजी के निधन से साहित्यिक मित्रवर्ग को आघात पहुँचा है। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दें।

बम्बई — ***विद्यावागीश आचार्य वसुमित्र शास्त्री***

शास्त्रीजी के निधन से आर्यजगत् एक अपूरणीय रिक्तता का अनुभव करता है। प्रभु आप सबको धैर्य दे और उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

प्राचार्य रमेशचन्द्र
सम्पादक : 'आर्यमित्र', लखनऊ (उ० प्र०)

आदरणीय श्रद्धेय शास्त्रीजी का निधन राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है ! हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूँ।

भारतेन्द्र नाथ
दयानन्द-संस्थान, नई दिल्ली

श्रीशास्त्रीजी आर्यसमाज के सच्चे सेवक एवं वैदिक विद्वान् थे। उनके निधन से आर्यसमाज का एक महारथी सदा-सदा के लिए हमसे छूट गया। परम पिता परमात्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रार्थना है कि दिवंगत शास्त्रीजी की आत्मा को सद्गति और उनके शोकाहत परिवार को धैर्य प्रदान करें।

सच्चिदानन्द शास्त्री

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

नई दिल्ली

पं. रामनारायण शास्त्रीजी के निधन का शोकपत्र पाकर कुछ क्षणों के लिए हतप्रभ हो गया। मैं सोच भी नहीं पा रहा हूँ कि ऐसा हुआ होगा। वह बड़े जीवट के व्यक्ति थे। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत शास्त्रीजी आत्मा को शान्ति दें और उनके शोकाकुल परिवार को धीरज प्रदान करें।

डॉ. मुरारिलाल उप्रेती

बाग मुजफ्फर खाँ, आगरा

यह जानकर अपार दुःख हुआ कि मेरे दुलारे शिष्य शास्त्रीजी का आकस्मिक देहावसान हो गया। सुनते ही हृदय विह्वल हो गया। मेरा हृदय तो उनके लिए रोता ही रहेगा। प्रभो ! आप उनके परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें, यही मेरी उनसे प्रार्थना है।

शान्तिप्रकाश

व्यायामाचार्य, खगड़िया (मुँगेर)

मुझे प्रिय रामनारायण शास्त्रीजी के निधन का समाचार आमरण अनशन में बैठे हुए ही मिला है। मुझे उनके निधन से बड़ा दुःख हुआ है। आर्यजगत् को उनके निधन से बड़ी क्षति हुई है। परमात्मा उन्हें सद्गति प्रदान करें और उनकी शोकाकुल पत्नी तथा बच्चों को इस महान् वियोग को धैर्यपूर्वक सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

रामगोपाल शालवाले

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

नई दिल्ली

श्रीशास्त्रीजी के पदभार-ग्रहण का समाचार सुनकर मुझे अपार हर्ष हुआ था। मैंने और प्रतापजी (श्रीप्रताप साहित्यालंकार) ने एक ही पत्र द्वारा बधाई भेजी थी, लेकिन कई दिनों के पश्चात् ही यह क्या सुनने को मिला ? मर्माहत हो उठा हूँ। छोटा भाई रामनारायण अब कहाँ मिल पायेगा ? आयु में छोटा होने पर भी गुणों में महान् था वह !

रामचरित्र सिंह

लक्ष्मीपुर (पूर्णिया)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरामनारायण शास्त्रीजी की दुःखद मृत्यु का समाचार पा मैं अचम्भित रह गई। हठात् ऐसा होगा, ऐसी कभी उम्मीद भी नहीं थी। लेकिन दैवी शक्ति के समक्ष कभी किसी का नहीं चला। इन्सान खड़ा-खड़ा रह जाता है। मैं भगवान् से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करती हूँ।

नई दिल्ली *कृष्णा शाही*

भाई श्रीरामनारायण शास्त्रीजी के असामयिक निधन के समाचार से हार्दिक आघात पहुँचा। वेदना के इन दाहक क्षणों में मेरी हार्दिक सहानुभूति स्वीकार करें। हरेरिच्छा बलीयसी !

अजय निवास, शाहदरा, दिल्ली *क्षेमचन्द्र सुमन*

आज समाचार-पत्र में यह पढ़कर अत्यन्त शोक हुआ कि हमारे अभिन्न साथी सरस्वती के वरदपुत्र पं. श्रीरामनारायण शास्त्रीजी का अकस्मात् निधन हो गया।

प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा उनके समस्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

पन्नालाल पीयूष

व्यवस्थापक, प्रकाश साहित्य-प्रकाशन

अजमेर

पूज्य शास्त्रीजी के देहान्त का समाचार २६.१.७८ के समाचार-पत्र में पढ़कर दुःसह दुःख का अनुभव किया।

वह देवरिया आर्यसमाज के वार्षिक अधिवेशन में सन् १९७४ ई० में आये थे। मैं उनकी चर्चा सुन चुका था। उन्हें अपने यहाँ लिवा लाया। तीन दिन यहाँ रहे। श्रुत परिचय प्रगाढ़ मित्रता में परिवर्तित हो गई।

वह विलक्षण विद्वान् थे। अद्भुत ओजस्वी वक्ता थे। तब भी कितने सरल थे। अब तो स्मृतिशेष हैं। हम सब दुःखी हैं। जिसका सर्वस्व चला गया है, उस परिवार के सदस्यों को किस प्रकार किन शब्दों में सान्त्वना दूँ, समझ में नहीं आता। वह अब भी अपने यशःशरीर से विद्यमान हैं। ईश्वर उन्हें चिरशान्ति दें।

राजेन्द्र किशोर शाही

राघवनगर, देवरिया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं. रामनारायण शास्त्रीजी के निधन से मैं मर्माहत हूँ। मेरी दिवंगत के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित है।

मन्त्री, बालकन जी बारी — *एस. आर. पत्रकार*

शास्त्रीजी राष्ट्रभाषा-परिषद् के लिए अपनी जिन्दगी समर्पित कर गये, उनके कण-कण में राष्ट्रभाषा जकड़ गई थी और उसी में उन्होंने अपने को समर्पित कर दिया। उनकी कल्पना को साकार करने का ही दूसरा नाम उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

शिक्षा-मन्त्री, बिहार — *ठाकुरप्रसाद सिंह*

स्वर्गीय पण्डित श्रीरामनारायणशास्त्रीजी ऊँचे आदर्श के मानव थे। वे सनातन आर्य-संस्कृति के महान् भाष्यकार और उन्नायक थे। वह हिन्दी और संस्कृत में वर्चस्वी वक्ता थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं के सेतु-सूत्र थे। मेरे साथ उनका परिवारवत् सम्बन्ध था। ऐसे निःस्वार्थ और समाजसेवी ऋषिकल्प आत्मा को भगवान् शान्ति दें, यही मेरी प्रार्थना है।

अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, पटना कॉलेज — *निशान्तकेतु*

मेरा शास्त्रीजी से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। आर्यसमाज, बालकन जी बारी, सरस्वती शिशुमन्दिर आदि संस्थाओं में उनके साथ कार्य करने का अवसर मिला। मैं उनकी संगठन-कुशलता और कार्यक्षमता का कायल हूँ। उनका निधन बिहार के बौद्धिक-सांस्कृतिक जगत् की भयंकर दुर्घटना है। आर्य-जगत् उन्हें खोकर मर्माहत है।

आर्यसमाज के प्रमुख नेता — *विष्णुदेव नारायण*
कैलाश भवन, डाक बँगला रोड, पटना

पं. श्रीरामनारायण शास्त्रीजी हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान् और ओजस्वी वक्ता थे। आर्य-संस्कृति के सन्देशवाहक के रूप में वह राष्ट्रीय महत्त्व के अधिकारी थे। उनका निधन सारस्वत जगत् की अपूरणीय क्षति है।

पटना (बिहार) — *प्रो० मुरलीधर श्रीवास्तव*

श्रीशास्त्रीजी परिषद् के लिए अमूल्य निधि थे। उनसे राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रभाषा-परिषद् को बहुत अधिक सम्भावनाएँ थीं, लेकिन काल ने उन्हें अचानक हम लोगों के बीच से उठा लिया, जिसके लिए हम मर्माहत हैं।

अनुसन्धान-पदाधिकारी — *विक्रमादित्य मिश्र*
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरामनारायण शास्त्रीजी का जीवन समाज, राष्ट्र और राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए समर्पित था। वे अन्त तक इस कार्य में तल्लीन रहे। निदेशक-पद का प्रभार लेकर परिषद् के जीवन में क्रान्तिकारी मार्ग स्थापित किया था। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

प्रभारी निदेशक, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना *श्रुतिदेव शास्त्री*

श्रीरामनारायण शास्त्रीजी के निधन से हिन्दी की अपूरणीय क्षति हुई है। वे हिन्दी के एक प्रभावी पक्षधर और कर्मठ नेता था।

हिन्दी-विभाग, पटना विश्वविद्यालय *प्रो० केसरी कुमार*

स्वर्गीय पं. रामनारायण शास्त्री का अभाव अत्यन्त दुःखद है। कल जिनसे भेंट हुई थी, वह चले गये। स्तब्ध हूँ और जीवन की क्षणभंगुरता का गहरा अहसास हो रहा है।

पटना (बिहार) *नवल किशोर गौड़*

श्रीरामनारायण शास्त्रीजी कर्मठ और मनस्वी साहित्यकार थे। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक के पद पर उनकी नियुक्ति के उपलक्ष्य में लोग उनको बधाई ही दे रहे थे कि दुनिया से ही उनकी विदाई हो गई ! मेरा सारस्वत सखा सदा के लिए तिरोहित हो गया !

सम्पादक : 'परिषद्-पत्रिका' *श्रीरंजन सूरिदेव*
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् पटना,

शास्त्रीजी के साथ अपने सम्बन्ध को परिभाषित करना कठिन है। मैं उनके मानवीय गुणों के प्रति सदैव श्रद्धावनत रहा हूँ। वह राष्ट्र, राष्ट्रीय और राष्ट्रभाषा के अनन्य पुजारी थे। उन्हें खोकर हिन्दी-जगत् दरिद्र हुआ है। वे परिषद् में कार्य करनेवाले पहले व्यक्ति थे, जो निदेशक-पद पर पहुँचे। भारतीय जनसंघ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदि संगठनों से वे आजीवन सम्बद्ध रहे। दिवंगत शास्त्रीजी की महान् आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि !

१० ई, राजेन्द्रनगर, पटना *शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव*

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरामनारायण शास्त्रीजी आदर्श स्वयंसेवक थे। उनके रूप में वैदिक संस्कृति का एक महान् प्रचारक उठ गया।

रा. स्वयंसेवक संघ के सह प्रान्त संघ-संचालक *भोलानाथ झा*

संस्कृतियाँ रामनारायण शास्त्री जैसे लोगों का निर्माण करती हैं और उन जैसे लोग संस्कृतियों का। उनके निधन की क्षति इसी रूप में है रामनारायणजी राम में मिलें, यही श्रद्धांजलि होगी।

हिन्दी-विभाग, *अमरनाथ सिन्हा*
बी० एन० कॉलेज, पटना

पं. रामनारायण शास्त्रीजी का इतनी अल्पायु में अकस्मात् निधन होना मेरे सम्पूर्ण आर्यजगत् के लिए बहुत बड़ी क्षति है। आज ही की तारीख में २४ जनवरी, १९२५ ई० को इनका जन्म हुआ था तथा २४ ही जनवरी, १९७८ ई० में इनका निधन हुआ। मेरे हिन्दू-समाज में धार्मिक दृष्टिकोण से बड़ी महान् आत्माओं का ऐसा ही निधन होता है। इनके निधन से न केवल आर्यजगत् की महान् क्षति हुई है, बल्कि हिन्दी-भाषाभाषी क्षेत्रों के लिए महान् विपत्ति का समय आ गया। इनकी विद्वत्ता, इनकी वाक्पटुता और इनकी समाज के प्रति लगन अत्यधिक थी, जिसे निकट भविष्य में बिहार-राज्य में पूरा करना कठिन है।

संरक्षक, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना *दुखन राम*

यह शोक-संवाद पाकर कि मेरे प्रिय एवं पूज्य पुरोहित एवं मित्र श्रीरामनारायण शास्त्रीजी अब हमारे बीच नहीं रहे, मेरे दुःख का पारावार नहीं। भगवान् से प्रार्थना है कि वह शास्त्रीजी की आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

इंगलैण्ड *डॉ. श्यामनारायण आर्य*

आज सुबह बाहर से लौटने पर श्रद्धेय शास्त्रीजी के आकस्मिक निधन का दुःखद समाचार मिला। हमें हार्दिक दुःख है कि अन्तिम समय में उनके दर्शन नहीं कर सका। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा उनके परिवार को धीरज रखने की शक्ति दें।

भारतीय वस्त्रालय, पटना *एस. एल. चौधरी*

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरामनारायण शास्त्रीजी के एकाएक देहावसान का समाचार भयंकर वज्राघात के समान है। परम कृपालु परमात्मा दिवंगत शास्त्रीजी की आत्मा को शाश्वत शान्ति प्रदान करें।

प्रधान, सान्ताक्रूज, बम्बई — ***नवीनचन्द्र ज. पाल***

पं० रामनारायण शास्त्रीजी के निधन पर मैं सपरिवार अपनी गहरी शोक-संवेदना व्यक्त करता हूँ। हम सभी उनके काफी नजदीक रहे हैं और हम उनके लम्बे साथ को नहीं भूल सकते।

हमारी हार्दिक सहानुभूति उनके समस्त परिवार के साथ है।

आयकर-अधिवक्ता, कलकत्ता — ***राजकुमार महतो***

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक-प्रस्ताव

[१]

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के प्रभारी निदेशक पं० रामनारायण शास्त्री दिनांक २३ जनवरी, ७८ को रात्रि के लगभग दो बजे हृदय-गति रुक जाने के कारण अकस्मात् दिवंगत हो गये। वह लगभग ५२ वर्ष के थे। उनका जन्म आज से ५२ वर्ष पूर्व आज ही के दिन हुआ था। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक-पद का प्रभार उन्होंने १६ जनवरी, ७८ को लिया था।

स्वर्गीय शास्त्रीजी गुरुकुल, देवघर के एक तेजस्वी छात्र थे। वह संस्कृत की परीक्षाओं में शास्त्री और भारतीय संस्कृति के विशिष्ट उन्नायकों में थे। बिहार के जनसंघ एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापकों में उनका नाम आदर के साथ लिया जाता रहा है। आर्यवीर के संस्थापकों में भी उनका नाम अग्रगण्य था। बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री और उपप्रधान के पदों को भी उन्होंने अलंकृत किया था। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (विश्वस्तर) के वे उपमन्त्री थे। बिहार राज्य बालकन जी बारी के महामन्त्री थे। उनके साथ सरस्वती शिशुमन्दिर, विद्यार्थी परिषद् जैसी अनेकानेक संस्थाएँ सम्बद्ध थीं।

उन्होंने अनेक स्मारिकाओं, पत्र-पत्रिकाओं और परिपत्रों का सम्पादन-प्रकाशन किया। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के तो वह अभिन्न अंग थे। प्राचीन हस्तलिखित शोध-विभाग के प्रभारी के रूप में उनकी सेवाएँ स्मरणीय रहेंगी। उक्त पद पर रहते हुए उन्होंने छह खण्डों में प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के विवरण, हरिचरित, रामजन्म, सन्तकवि दरिया-ग्रन्थावली, सन्तमत का सरभंग-सम्प्रदाय आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का लेखन-सम्पादन किया। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से बारह खण्डों में प्रकाशित होनेवाले बिहार के साहित्यिक इतिहास के निर्माण में भी उनका सहयोग भुलाया नहीं जा सकता।

स्वर्गीय शास्त्री अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों के यशस्वी नियामक थे। उनकी वाग्मिता लोकप्रिय थी। एक ओजस्वी वक्ता के रूप में उन्हें अखिलभारतीय ख्याति प्राप्त थी। उनके व्यक्तित्व का सर्वोपरि गुण था—मनुष्यता और सहृदयता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के विकास के सम्बन्ध में उनके हृदय में अनेकानेक कल्पनाएँ थीं, जिन्हें वह अपने साथ लेकर चले गये !

(आकाशवाणी, पटना से प्रसारित)

डॉ० बजरंग वर्मा

[२]

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के कार्यकारी निदेशक पं० रामनारायण शास्त्री का दिनांक २४ जनवरी, १९७८ ई० की रात्रि में लगभग दो बजे, अकस्मात् हृदय-गति रुक जाने से, असामयिक देहावसान हो गया। परिषद्-परिवार इस अप्रत्याशित दारुण आघात से मर्माहत है। यह अद्‌भुत संयोग है कि शास्त्रीजी ने जिस दिन जन्म ग्रहण किया, उसी दिन मृत्यु का भी वरण किया।

पुण्यश्लोक शास्त्रीजी आर्यभारतीय संस्कृति के उन्नायकों में धुरिकीर्त्तनीय थे। वे स्वयं अपने-आपमें एक संस्था थे। सामाजिक, शैक्षिक और साहित्यिक अनुष्ठानों के प्रति वे निरन्तर आत्मार्पित रहते थे। शास्त्रीजी शोध और सम्पादन के क्षेत्र में क्रोशशिला के संस्थापक थे। पत्रकारिता-कला भी उनके वैदुष्यपूर्ण सम्पादन से विमण्डित हुई थी। परिषद् के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग के प्रभारी के रूप में उनकी शाश्वत सेवाएँ शोध-जगत् में बारबार आवृत्त होती रहेंगी। बिहार के साहित्यिक इतिहास के निर्माण में उनका नामोल्लेख अनिवार्य माना जायेगा।

प्रसिद्ध स्वतन्त्रता-सेनानी स्व० शास्त्रीजी कर्म-सातत्य और मनस्विता के पर्याय थे। समाज के लिए आवश्यक मानवता, सहृदयता, आचारिक भद्रता और वैचारिक उदात्तता आदि गुण उनके शीलवान् व्यक्तित्व में भरे हुए थे। वर्चस्वी विद्वान् और ओजस्वी वक्ता के रूप में उन्होंने अखिलभारतीय लोकप्रियता आयत्त की थी।

स्वर्गीय शास्त्रीजी के मन में परिषद् के विकास और उत्थान के सम्बन्ध में अनेक मूल्यवान् योजनाएँ थीं, किन्तु वे इनके क्रियान्वयन की कल्पनाओं के साथ ही सहसा लोकान्तरित हो गये ! सचमुच, उनके निधन से परिषद् की अपूरणीय वैयक्तिक क्षति हुई है।

परिषद् की यह शोकसभा स्वर्गीय शास्त्रीजी की महान् आत्मा की शान्ति और उनके शोक-सन्तप्त परिवार के धैर्य के लिए परम पिता परमात्मा से श्रद्धा-सहित प्रार्थना करती है।

निदेशक, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना *श्रुतिदेव शास्त्री*

दि. २५.१.७८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३]

आज दिनांक २५.१.७८ को अपराह्ण बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, मुनीश्वरानन्द भवन, पटना-४ में आर्यजगत् के महान् नेता, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री एवं भूतपूर्व उप-प्रधान, सार्वदेशिक सभा के भूतपूर्व उप-मन्त्री एवं बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक श्रीरामनारायण शास्त्रीजी के असामयिक निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के संरक्षक डॉ० 'दुखन रामजी की अध्यक्षता में एक शोकसभा आयोजित की गई, जिसमें आर्यजगत् के ओजस्वी नेता के प्रति शोकोद्गार प्रकट करने के लिए आये सज्जनों ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की शान्ति तथा परिवार को धैर्य-धारण करने की शक्ति प्रदान करने की परमात्मा से प्रार्थना की।

रमेन्द्र कुमार

कृते-प्रधानमन्त्री
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा,
मुनीश्वरानन्द भवन, पटना-४

[४]

आर्यसमाज, मीठापुर के सदस्यों ने पं० रामनारायण शास्त्री के असामयिक निधन पर शोकसभा की तथा निम्नलिखित शोक-प्रस्ताव पास किया।

आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान्, समाजसेवी, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक एवं दयानन्द विद्यालय, मीठापुर, पटना के भूतपूर्व सचिव पं० रामनारायण शास्त्रीजी के आकस्मिक निधन से आर्यसमाज मीठापुर के सदस्यों को हार्दिक दुःख है। सच्चिदानन्द परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत शास्त्रीजी की आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं शोक-सन्तप्त परिवार के सदस्यों को इस विपत्ति को सहने की शक्ति दें।

मन्त्री, आर्यसमाज, मीठापुर, पटना-१ *रामकिशुन सिंह*

[५]

सभा को जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि बिहार आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध आर्यनेता सफल वक्ता और प्रमुख कार्यकर्त्ता पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री का निधन हो गया है। यह सभा अनुभव करती है कि श्रीशास्त्रीजी का निधन आर्यजगत् की महान् क्षति है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा इस दुःख में सहभागी है और समवेदना प्रकट करती है। साथ ही परमात्मा से प्रार्थी है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति और उनके परिवारीय जनों को धैर्य प्रदान करें।

संयोजक, तदर्थ समिति *कृष्ण दत्त*
आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य दक्षिण

[६]

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० रामनारायणजी शास्त्री के असामयिक निधन से आर्यसमाज, राँची के सदस्यों को गहरा दुःख हुआ है। यह आर्यजगत् की अपूरणीय क्षति है।

यह सभा दिवंगत शास्त्रीजी की आत्मा की सद्गति एवं शोक-सन्तप्त परिवार के सदस्यों को धैर्य प्रदान करने के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

आर्यसमाज, स्वामी श्रद्धानन्द पथ, राँची *ज्वालाप्रकाश आर्य*

[७]

आर्यसमाज, नयाबाँस, दिल्ली की साधारण सभा दि० २९.१.१९७८, रविवार को आर्यजगत् के मूर्द्धन्य विद्वान् पं० श्रीरामनारायणजी शास्त्री के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत की आत्मा को सद्गति और शान्ति प्रदान करें और उनके शोक-सन्तप्त परिवार एवं सम्बन्धियों को धैर्य प्रदान करें।

मन्त्री, आर्यसमाज, नयाबाँस, दिल्ली *नन्दकिशोर आर्य*

[८]

आर्यकन्या विद्यालय की छात्राओं एवं शिक्षिकाओं ने आर्यसमाज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता पण्डित रामनारायण शास्त्रीजी के आकस्मिक निधन पर शोकसभा कर, उनकी आत्मा की शान्ति के लिए मौन प्रार्थना की। विद्यालय-परिवार अपने परम शुभचिन्तक के चले जाने पर अत्यन्त दुःखी है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे शास्त्रीजी के शोक-सन्तप्त परिवार के साथ-साथ हम सभी को उनके वियोग का दुःख सहन करने की शक्ति दें।

नीलिमा बोस

आर्यकन्या विद्यालय की
छात्राएँ एवं शिक्षिकाएँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[९]

आज ता० २९ जनवरी, ७८ के रविवासरीय साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर एकत्रित समस्त आर्यजन आर्यजगत् के प्रकाण्ड विद्वान्, प्रखर निष्ठावान् प्रचारक एवं सुयोग्य नेता श्रीरामनारायण शास्त्री के आकस्मिक निधन, जो कि ता० २४ जनवरी, ७८, दिन मंगलवार को प्रातः अपने राजेन्द्रनगर, पटना स्थित निवासस्थान पर ५२ वर्ष की आयु में हो गया है, पर हार्दिक शोक प्रकट करते हैं एवं परमपिता परमात्मा से दिवंगत शास्त्रीजी की आत्मा की सद्गति और शोक-सन्तप्त परिवार को कष्ट सहन करने के निमित्त शक्ति देने की प्रार्थना करते हैं।

आर्यसमाज, १९, विधान-सरणी, कलकत्ता *श्रीदासगुप्त*

[१०]

आज दिनांक २९.१.१९७८, दिन रविवार, खिदिरपुर आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर उपस्थित सभी आर्यजन पं० रामनारायणजी शास्त्री के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हैं।

पं० शास्त्रीजी आर्यजगत् के देदीप्यमान नक्षत्र थे। उनकी मृत्यु से आर्यजगत् ने एक मूर्धन्य विद्वान् एवं ओजस्वी वक्ता खो दिया। वे महान् विद्वान् और हिन्दी-भाषा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ही आर्यसमाज की सेवा में अर्पित कर दिया। उनके आकस्मिक निधन से आर्यजगत् की जो क्षति हुई है, वह अपूरणीय है।

परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि दिवंगत की आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं उनके परिवारवालों को शोक सहन करने की शक्ति दें।

आर्यसमाज, खिदिरपुर, कलकत्ता ***प्रधान***

[११]

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के संचालक-मण्डल की यह सभा परिषद् के भूतपूर्व क्षेत्रीय अनुसन्धान-पदाधिकारी एवं प्रभारी निदेशक, श्रीरामनारायण शास्त्री के आकस्मिक एवं असामयिक निधन पर शोक प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को वे शान्ति प्रदान करें, साथ ही यह सभा उनके शोक-सन्तप्त परिवार के प्रति अपनी समानुभूति एवं सहानुभूति व्यक्त करती है।

अध्यक्ष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारवाड़ी कॉलेज, भागलपुर (भागलपुर विश्वविद्यालय) के हिन्दी-विभाग के रीडर एवं भागलपुर जिला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रधान मन्त्री डॉ० बेचन ने बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना के निदेशक पं० रामनारायण शास्त्री के असामयिक निधन पर निम्नांकित शोक-संवेदना व्यक्त की है :

पं० रामनारायण शास्त्री के असामयिक निधन से हम सबको गहरा धक्का लगा है। उनकी मृत्यु से दो दिन पूर्व मैं परिषद्-कार्यालय में उनके साथ था। उनके सामने परिषद् के विकास की कई व्यापक योजनाएँ थीं। विशेष रूप से परिषद् में संकलित हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के शोध और प्रकाशन के लिए वे व्याकुल थे। विमर्श के क्रम में उन्होंने भगवान पुस्तकालय, भागलपुर में संकलित पाण्डुलिपियों के प्रकाशन, उसके व्यवस्थापन और सुरक्षा के लिए अपनी हार्दिक अभिरुचि व्यक्त की थी। यह उल्लेखनीय है कि स्वयं शास्त्रीजी के प्रयत्न से ही भगवान पुस्तकालय में संकलित पाण्डुलिपियों का पहली बार मूल्यांकन हो सका। इसीलिए जब इन पाण्डुलिपियों पर शोधकार्य हुआ, तब उसके परीक्षक स्व० शास्त्रीजी ही नियुक्त हुए थे। उन्होंने अपने परीक्षण-प्रतिवेदन में इन पाण्डुलिपियों का समुचित मूल्यांकन किया था। हम सबके लिए दुर्भाग्य का विषय है कि ऐसा कर्मठ अन्वेषक विद्वान् हमारे बीच से उठ गया। भगवान् से प्रार्थना है कि दिवंगत की आत्मा को शान्ति प्रदान करें और शोक-सन्तप्त परिवार को इस कठोर वज्राघात को सह लेने की शक्ति दें।

जिला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, भागलपुर *डॉ० बेचन*

[१३]

हिन्दी-साहित्य-परिषद् के तत्त्वावधान में मगध महिला कॉलेज की प्राचार्या, आचार्याओं एवं छात्राओं की दिनांक २८.१.७८ की यह सभा बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना के निदेशक श्रीरामनारायण शास्त्री के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए हृदय से प्रार्थना करती है। ईश्वर उनके शोक-सन्तप्त परिवार को इस दैवी आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

प्राचार्या

[१४]

प्रसिद्ध आर्यसमाजी पं० रामनारायण शास्त्रीजी के असामयिक निधन पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विद्यालय-परिवार हार्दिक शोक व्यक्त करता है और ईश्वर से उनकी आत्मा की शान्ति और शोक-सन्तप्त परिवार के लिए सान्त्वना की प्रार्थना करता है।

प्राचार्या

दयानन्द कन्या विद्यालय, मीठापुर, पटना

[१५]

खगड़िया आर्यसमाज के तत्त्वावधान में दिनांक २४.१.७८ को एक शोकसभा आयोजित हुई। स्वर्गीय श्रीरामनारायण शास्त्रीजी की आकस्मिक मृत्यु समाज की अपूरणीय क्षति है। सभा में दिवंगत की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई एवं शोक-सन्तप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट की गई।

वीरप्रकाश

मन्त्री, आर्यसमाज, खगड़िया

[१६]

आज ता० २९.१.७८ को आर्यसमाज तथा श्रीदयानन्द वैदिक गुरुकुल विद्यालय की सम्मिलित बैठक हुई, जिसमें निम्नांकित प्रस्ताव स्वीकृत किया गया !

आर्यसमाज, गढ़वा तथा श्रीदयानन्द वैदिक गुरुकुल विद्यालय के अध्यापकों तथा छात्रों की यह शोकसभा आर्यसमाज के अनन्य विद्वान् तथा समाजसेवी स्व० पं० रामनारायणजी शास्त्री, निदेशक राष्ट्रभाषा-परिषद्, बिहार के असामयिक एवं आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत की आत्मा को शान्ति प्रदान करे। यह सभा दिवंगत शास्त्रीजी के परिवार के दुःख के साथ अपनी समवेदना प्रकट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि शोक-सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

सत्यलाल आर्य

मन्त्री, आर्यसमाज, गढ़वा,
प्राचार्य, श्रीदयानन्द वैदिक गुरुकुल विद्यालय
गढ़वा (पलामू)

[१७]

आर्यसमाज, आरा की अन्तरंग सभा की दिनांक २८.१.७८ को बैठक हुई, जिसमें आर्यजगत् के देदीप्यमान नेता पण्डित रामनारायण शास्त्री, निदेशक, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, बिहार एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता की असामयिक निधन पर, जो दिनांक २३ जनवरी, १९७८ की रात्रि में हृदयगति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुक जाने से हो गया, हार्दिक क्षोभ प्रकट किया गया एवं सभी सदस्यों एवं आगन्तुक व्यक्तियों ने मौन खड़े होकर परमपिता परमात्मा से स्वर्गीय पण्डित रामनारायण शास्त्रीजी की आत्मा की शान्ति और उनके सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की ।

यह भी स्वीकृत हुआ कि इस प्रस्ताव की प्रतिलिपि उनकी पत्नी श्रीमती ईश्वरी आर्या को उनके निवासस्थान के पते से भेजा जाय।

प्रधान, आर्यसमाज, आरा (बिहार) *डॉ. इन्द्रदेव नारायण*

[१८]

आज दिनांक २५.१.७८ को सन्ध्या ५.३० बजे स्थानीय श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, दानापुर में दानापुर आर्यसमाज की ओर से श्रीकाशीनाथ साह प्रधान की अध्यक्षता में एक शोकसभा का आयोजन किया गया। इस सभा में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर आर्यजगत् की महान् विभूति, अद्वितीय संगठनकर्त्ता, वैदिक विद्वान्, असाधारण वक्ता एवं लेखनशैली के धनी, मूर्द्धन्य नेता पं० रामनारायण शास्त्री के असामयिक निधन पर शोक प्रकट किया गया तथा उनकी आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। ईश्वर से प्रार्थना की गई कि उनके शोक-सन्तप्त परिवार को कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

अन्त में एक मिनट तक मौन धारण कर एवं खड़े होकर दिवंगत नेता की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

काशीनाथ साह
प्रधान, आर्यसमाज, दानापुर

[१९]

आर्यसमाज, देवरिया की आकस्मिक बैठक, सत्संग के पश्चात् आ० स० मन्दिर, देवरिया में दिनांक २९.१.७८ ई० को प्रातः १०.३० बजे हुई। इस बैठक में बिहार प्रान्त के तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार के प्रमुख नेता, विद्वान् वक्ता पं० श्रीरामनारायण शास्त्रीजी के आकस्मिक निधन पर समाज के सदस्यों ने दो मिनट मौन रहकर शोकातुर परिवार के धैर्य हेतु तथा दिवंगत की आत्मा की शान्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

श्रीकृष्ण धर्मालंकार
मन्त्री, आर्यसमाज, देवरिया (उ० प्र०)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२०]

गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथधाम की यह शोकसभा अपने गुरुकुल के स्नातक, गुरुकुल-सभा के भूतपूर्व सभासद एवं आर्यजगत् के प्रख्यात नेता पं० श्रीरामनारायण शास्त्री विद्यारत्न के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है और दिवंगत की आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करती हुई उनके शोक-सन्तप्त परिवार के प्रति समवेदना प्रकट करती है।

गुरुकुल महाविद्यालय,
वैद्यनाथधाम (स० प०)

हम हैं गुरुकुलवासी सभी सदस्य

[२१]

आर्यसमाज, बक्सर के तत्त्वाधान में बक्सर के नागरिकों की एक शोकसभा श्रीसत्यमन्दिर पर श्रीमदनप्रसाद, प्रधान, आर्यसमाज के सभापतित्व में हुई, जिसमें आर्यसमाज के महान् नेता स्व० रामनारायण शास्त्री को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर उनकी आत्मा की शान्ति के लिए मौन रहकर ईश्वर से प्रार्थना की गई और शोक-सन्तप्त परिवार के लिए धैर्य की कामना की गई।

कृष्णनाथ आर्य

[२२]

श्रीरामनारायण शास्त्रीजी के निधन को सुनकर अपार दुःख हुआ। शास्त्रीजी एक महान् आर्यसमाजी नेता, साहित्यकार एवं निष्ठावान् समाजसेवी व्यक्ति थे। मैं अपनी और बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स की ओर से समवेदना प्रकट करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनके परिवार को इस अपार दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

अध्यक्ष, बिहार चैम्बर भवन, पटना ***जी० एस० डालमिया***

[२३]

हिलसा आर्यसमाज के तत्त्वावधान में आज दिनांक २६.१.७८, दिन बृहस्पतिवार को रात्रि ७ बजे पं० रामनारायण शास्त्री के निधन पर आर्य-समाज-मन्दिर में हिलसा के नागरिकों की एक शोकसभा का आयोजन हुआ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रीजी आर्यजगत् के एक कर्मठ नेता, हिन्दी के अनन्य भक्त, सामाजिक कार्यकर्त्ता, ओजस्वी वक्ता, क्रान्तिकारी, लगनशील, नवयुवकों के प्रेरणा-स्रोत एवं अद्‌भुत संगठनकर्त्ता थे। उनके निधन से आर्यसमाज एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी की महती क्षति हुई है। विशेषतः प्रादेशिक आर्यजगत् में जो स्थान रिक्त हुआ, निकट भविष्य में उसकी पूर्त्ति सम्भव नहीं है।

हिलसा के नागरिकों की यह सभा सर्वसम्मति से इस शोक-प्रस्ताव को पारित करती है तथा ईश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत की आत्मा को शान्ति मिले तथा उनके शोक-सन्तप्त परिवार को धैर्य धारण करने तथा कष्ट सहने की शक्ति प्राप्त हो।

आर्यसमाज, हिलसा (नालन्दा)

मन्त्री

[२४]

पटना के राजेन्द्रनगर में आर्यसमाज के विद्वान् वक्ता और वरिष्ठ नेता श्रीरामनारायण शास्त्री का २४ जनवरी, १९७८ ई० के प्रातःकाल एकाएक देहावसान हो गया। यह समाचार आर्यसमाज, सान्ताक्रूज के सदस्यों ने बड़े ही दुःख के साथ सुना। श्रीरामनारायणजी का ५२ वर्ष की अधूरी आयु में इस प्रकार सदा के लिए इस संसार से चला जाना भारी आघातजनक घटना है।

श्रीरामनारायणजी बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के आजीवन निदेशक एवं सेवक बने रहे। वे राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल प्रचारक और आर्यसमाज के उत्कृष्ट कार्यकर्त्ता थे। वैदिक धर्म, संस्कृति और वाङ्मय के प्रति उनकी प्रखर निष्ठा थी। वे अपनी ओजस्वी और मधुर वक्तृत्व-शैली से आर्य-जनता को मन्त्रमुग्ध कर देते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संगठन और प्रगति में उनका अपूर्व हिस्सा था।

श्रीरामनारायणजी शास्त्री आर्य-संसार के एक उदीयमान प्रवक्ता थे। उनके एकाएक चले जाने से आर्यसमाज को अपूरणीय क्षति पहुँची है, किन्तु प्रभु की महती इच्छा के आगे हम सिर झुकाते हैं और प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत शास्त्रीजी की आत्मा को सद्गति प्राप्त हो और परिवार के सदस्यों को उनके वियोग का दुःख सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

प्रधान, आर्यसमाज, सान्ताक्रूज ***नवीनचन्द्र ज० पाल***

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२५]

आल इण्डिया बालकन-जी-बारी (भारतीय बाल-कल्याण-परिषद्) की कार्यकारिणी परिषद् पं० रामनारायण शास्त्रीजी के निधन पर गहरी संवेदना प्रकट करती है, जो बिहार राज्य बालकन-जी-बारी के मुख्य सचिव थे और उनके शोक-सन्तप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत को सद्गति प्राप्त हो और परिवार के सदस्यों को विछोह का दुःख सहन करने की शक्ति मिले।

मन्त्री

बालकन-जी-बारी, सान्ताक्रूज, बम्बई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-यात्रा की क्रोशशिलाएँ

जन्म : २४ जनवरी, १९२६ ई० (माघ कृष्ण चतुर्दशी : संवत् १९८३ वि०)

जन्मस्थान : चिन्तामणिचक, मोकामा (पटना)।

निधन : २४ जनवरी, १९७८ ई० (माघ कृष्ण चतुर्दशी : संवत् २०३५ वि०)।

प्राथमिक शिक्षा : गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथधाम, देवघर (विहार)।

गुरुकुलीय शिक्षा : चित्तरंजन आश्रम, लखीसराय एवं स्वामी सहजानन्द आश्रम, बिहटा (पटना)।

१. उच्चतर शैक्षिक योग्यता :

(क) **विद्यारत्न** : सन् १९४२ ई० में, गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथधाम से।

(ख) **साहित्यभूषण** : सन् १९४२ ई० में हिन्दी विद्यापीठ, देवघर से।

(ग) **काव्यतीर्थ** : सन् १९४३ ई० में बंगाल संस्कृत एसोसियेशन से।

(घ) **साहित्याचार्य** : सन् १९४६ में से बिहार संस्कृत समिति, पटना से।

(ङ) **साहित्यरत्न** : संन् १९५० ई० में अखिलभारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा संचालित हिन्दी-विश्वविद्यालय, प्रयाग से।

(च) **पाली-आचार्य** : सन् १९६२ ई० में कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत-विश्वविद्यालय से।

अन्य प्रशिक्षण-योग्यता :

(छ) **हिन्दी-प्रशिक्षण :** सन् १९६३ ई० में, पटना-प्रमण्डल के आयुक्त द्वारा आयोजित प्रशिक्षण-केन्द्र से।

(ज) **भाषा-सर्वेक्षण एवं ध्वनि-विज्ञान-प्रशिक्षण :** सन् १९६९ ई० में भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

(झ) **विशिष्ट :** भागलपुर विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के शोध-प्रबन्ध के परीक्षक। डॉ० बेचन झा द्वारा २३.६.७४ को पत्र लिखने पर श्रीशास्त्रीजी ने पी-एच० डी० उपाधि के शोध-प्रबन्ध को जाँचकर प्रतिवेदन भेजा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. सरकारी सेवा में नियुक्ति-तिथि :

(क) परिषद् में प्रथम नियुक्ति पारिश्रमिक के आधार पर सन् १९५१ ई० की ९ फरवरी से।

(ख) सरकारी सेवा में सन् १९५२ ई० की १ जुलाई से (सरकारी पत्र) सं० २५६८७ से स्वीकृत स्थायी पद पर परिषद् के ११.३.५३ के १४३२ संख्यक पत्र द्वारा नियुक्ति। पदनाम क्षेत्रीय कार्यकर्त्ता ।

३. बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के क्षेत्रीय अनुसन्धान-पदाधिकारी श्रीरामनारायण शास्त्री द्वारा अनुष्ठित कार्य :

(क) संग्रह-कार्य :

१. संगृहीत हस्तलिखित पोथियाँ लगभग २८७४
२. " दुर्लभ-पत्र-पत्रिकाएँ ४७१
३. " अलभ्य मुद्रित पुस्तकें २७२
४. " अप्राप्य पंचांग १५
५. प्राचीन पाण्डुलिपियों का अध्ययन एवं पाठानुशीलन
६. स्कन्ध-पंजीकरण
७. पाठ-संशोधन
८. भाषा-परिमार्जन
९. प्राचीन पाण्डुलिपियों का सम्पादन

(ख) परिषद् में संगृहीत सामग्री का विवरण-लेखन और सम्पादन :

१. हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थ ५६८ से अधिक।
२. संस्कृत के हस्तलिखित ग्रन्थ २५० से अधिक।
३. श्रीमन्नूलाल पुस्तकालय, गया में संगृहीत हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण १०६ से अधिक ग्रन्थ।
४. श्रीचैतन्य पुस्तकालय, पटना सिटी में संगृहीत हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण ५० से अधिक।
५. बिहार रिसर्च सोसायटी, पटना द्वारा खोज में उपलब्ध पोथियों का विवरण १०० से अधिक।
६. श्रीभगवान पुस्तकालय, भागलपुर में लगभग १०८।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. डुमराँव राज्य के सरस्वती भवन में लगभग ५९७।
८. 'हफीजुल्लाह खाँ का हजारा' की अप्राप्य प्रति से २१८४ पद।
९. 'नखशिख हजारा' की अप्राप्य प्रति।
१०. 'शिवसिंहसरोज' के १६५ पद का प्रतिलिपीकरण।

४. ग्रन्थ-सम्पादन (प्रकाशित) :

१. 'रामजन्म' : गोस्वामी तुलसीदास से पूर्ववर्ती सन्त सूरजदास-रचित।
२. 'हरिचरित' : गोस्वामी तुलसीदास से दो सौ वर्ष पूर्व के कवि, सन्त लालचदास-रचित।
३. 'दरिया-ग्रन्थावली' (खण्ड २) : बिहार के सन्त कवि दरियादास-रचित पाँच ग्रन्थ।
४. प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण छह खण्डों में।

५. ग्रन्थ-सम्पादन (अप्रकाशित) :

१. 'दरिया-ग्रन्थावली' : बिहार के सन्तकवि दरियादास-रचित आठ खण्ड (तीन ग्रन्थों में)।
२. 'हरिचरित' दूसरा खण्ड।
३. 'पोथी विद्याधर' : बिहार के पूर्णिया-निवासी किफायतुल्लाह-रचित सूफी प्रेमाख्यान-काव्य।
४. 'उदवन्तप्रकाश' : बिहार के जगदीशपुर (भोजपुर) के महाराजा उदवन्तसिंह के आश्रित कवि चन्द्रमौलेश्वर-रचित, रामगढ़-राज्य में।
५. 'पाण्डवचरितार्णव' : सन् १६८१ ई० के कवि देवीदास द्वारा रचित।
६. 'पदुमनदास-ग्रन्थावली' : रामगढ़-राज्य के आश्रित सत्रहवीं शताब्दी के कवि।
७. 'जयरामदास-ग्रन्थावली' (बारह ग्रन्थ)।
८. 'सुदामाचरित' : हलधरदास, मुजफ्फरपुर जिले के सत्रहवीं शती के कवि।

६. निम्नलिखित ग्रन्थों के सम्पादन में महत्त्वपूर्ण योगदान :

१. 'हिन्दी- साहित्य और बिहार' (पहला, दूसरा और तीसरा भाग)।
२. 'सन्तमत का सरभंग-सम्प्रदाय' : इस ग्रन्थ के लिए सामग्री प्रस्तुत करने के निमित्त चम्पारन, सारन, बलिया, देवरिया, गोरखपुर, बस्ती, गाजीपुर, (वाराणसी) और मुजफ्फरपुर जिलों के शताधिक औघड़ साधुओं के मठों में जाकर शोध-कार्य।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. आचार्य नलिनविलोचन शर्मा-लिखित 'साहित्य का इतिहास-दर्शन' के लिए 'शिवसिंहसरोज', 'हफ़ीजुल्ला खाँ का हजारा' और 'नख-शिखहजारा' के कवियों के इतिवृत्त की सामग्री की प्रस्तुति।

७. परिषद् के अतिरिक्त अन्य अनुसन्धान-ग्रन्थों के अनुसन्धान में योगदान :

१. मध्यकालीन हिन्दी (खण्डकाव्य) : डॉ० सियाराम तिवारी, मगध-विश्वविद्यालय।

२. सुदामाचरित (हलधरदास) : डॉ० सियाराम तिवारी, मगध-विश्वविद्यालय।

३. हिन्दी-साहित्य की बिहार को देन : प्रो० कामेश्वर शर्मा, बिहार वि० वि०।

४. 'चम्पारन की साहित्य-साधना' : श्रीरमेशचन्द्र झा।

८. परिषद्-पदाधिकारियों की अनुशंसाएँ

आचार्य शिवपूजन सहाय

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् की ओर से समस्त बिहार राज्य में हस्तिलिखित प्राचीन पोथियों और दुर्लभ मुद्रित पुस्तकों की खोज कराई जाती है। खोज का काम सर्वत्र भ्रमण करके श्रीरामनारायण शास्त्री करते हैं और फिर सभी संगृहीत पोथियों का परिचयात्मक विवरण तैयार करते हैं।

पुस्तकों में प्रकाशित विवरणों के तैयार करने में विभागीय अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने बड़ा परिश्रम किया है। उनके द्वारा विभागीय संग्रह के जो विवरण तैयार होकर प्रकाशित हुए हैं, उनकी उपयोगिता हिन्दी-जगत् के शोधकर्त्ता विद्वानों ने स्वीकार की है।

अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने प्राचीन हस्तलिखित पोथियों (खण्ड ३, ४) के विभागीय विवरण तैयार करने में बड़े मनोयोग से परिश्रम किया है।

—प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण (चौथा खण्ड)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने 'गंगालहरी' का रचनाकाल सं० १९२२ वि० मानते हुए उसे हिन्दी की मौलिक रचना कहा है।

(हिन्दी-साहित्य और बिहार, दूसरा खण्ड)

डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री

प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के संग्रह को तैयार करने तथा सामग्री जुटाने में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे शोधकर्ता श्रीरामनारायण शास्त्री ने जिस तत्परता तथा लगन से कार्य किया है, वह अभिनन्दनीय है। (प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण पहला खण्ड)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के तत्त्वावधान में हस्तलिखित ग्रन्थों के स्थायी अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने जिस निष्ठा तथा तल्लीनता के साथ सहयोग दिया और सामग्री एकत्र करने की चेष्टा की है, वह प्रशंसनीय है। (सन्तमत का सरभंग-सम्प्रदाय) ।

डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'

'हरिचरित' के सम्पादन और पाठभेदों के अध्ययन में परिषद् के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग के प्रधान अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री का परिश्रम प्रशंसनीय है। (हरिचरित)

इस महत्त्वपूर्ण विवरण-ग्रन्थ के सम्पादक स्व० आचार्य नलिनविलोचन शर्मा के तत्त्वावधान में अनुशीलन-कार्य में संलग्न श्रीरामनारायण शास्त्री को हम धन्यवाद देते हैं, जिनकी योग्यता, लगन और शोध-कुशलता का यह प्रसून है। (प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, पाँचवाँ खण्ड)

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग के प्रधान अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने इसके लेखन में योग्यता, लगन और शोधकुशलता का परिचय दिया है। (प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, छठाँ खण्ड)

आचार्य नलिनविलोचन शर्मा

पाण्डुलिपियों के संग्रह, वर्गीकरण, विवरण-लेखन आदि कार्यों में परिषद् के विभागीय शोधसहायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने उत्साह, तत्परता और योग्यता का परिचय दिया है। (प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, चौथा खण्ड)

श्रीरामनारायण शास्त्री ने विवरण की प्रेस-कॉपी तैयार करने में जो श्रम किया है, उसका उल्लेख भी आवश्यक है। (प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, पाँचवाँ खण्ड)

परिषद् के शोधसहायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने इसे प्रस्तुत करने में पर्याप्त परिश्रम तथा अपनी अनुसन्धान-प्रवीणता का परिचय दिया है। (प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, छठाँ खण्ड)

'हरिचरित' के पाठ-सम्पादन तथा भूमिका की अनेक सूचनाओं के संकलन में मुझे बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग के योग्य शोधसहायक श्रीरामनारायण शास्त्री से बहुमूल्य सहायता प्राप्त हुई है। शास्त्रीजी ने बड़े

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

अध्यवसाय से प्रसिद्ध संग्रहालय के लिए उपर्युक्त प्रतियाँ संगृहीत की थीं। वे पाठ-सम्पादन के लिए श्रीमन्नूलाल पुस्तकालय की महत्त्वपूर्ण प्रति लाये थे। (हरिचरित)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के सम्पादन में डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री की सबसे अधिक सहायता प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग के प्रभारी श्रीरामनारायण शास्त्री ने की है। इस विभाग का श्रीगणेश ही शास्त्रीजी के कार्यों द्वारा हुआ था और आजतक वे तत्परतापूर्वक इस विभाग का कार्य सँभालते रहे हैं।

९. राजपत्रित पद :

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में क्षेत्रीय अनुसन्धान-पदाधिकारी के पद पर नियुक्ति-तिथि २५ जुलाई, १९६९ ई० एवं बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक पद पर नियुक्ति-तिथि १६ जनवरी, १९७८ ई०।

१०. आर्यसमाज-सेवा : समाज-सेवा

१. प्रधानमन्त्री, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना, बिहार,
सन् १९५७-५८ ई०।

२. उप-प्रधान, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना बिहार,
सन् १९५९-६० ई०, पुनः सन् १९६२ ई०।

३. उपमन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली,
सन् १९६५ ई०।

४. मन्त्री, आर्यवीर दल, बिहार पटना।

५. मन्त्री, दयानन्द विद्यालय, मीठापुर, पटना।

६. सयोजक, आर्य-महासम्मेलन, गान्धी मैदान, पटना
सन् १९६२ ई०।

७. संयोजक, आर्य-महासम्मेलन, मोकामा, बिहार, सन् १९६८ ई०।

८. संयोजक, आर्य-महासम्मेलन, बरौनी, बिहार, सन् १९७४ ई०।

९. मन्त्री, बालकन जी बारी, बिहार, पटना, सन् १९६५ ई०।

१०. मन्त्री, सरस्वती शिशुमन्दिर, बिहार, पटना, सन् १९६६ ई०।

११. साहित्य-सम्पादन :

१. 'संस्कृति' (हिन्दी-मासिक), पटना।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा का इतिहास (प्रकाशक बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना)।

पुण्यश्लोक शास्त्रीजी ने हिन्दीसेवियों में भी अपनी पांक्तेयता आयत्त की थी। उन्होंने बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रचार-मन्त्री के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह किया था। मित्र पुस्तकालय, पटना के अन्तर्गत संचालित 'शरदिन्दु साहित्यगोष्ठी' को उनकी गौरवमयी अध्यक्षता की गरिमा से अलंकृत होने का अवसर मिला था। इसके अतिरिक्त वह और भी अनेक साहित्यिक, सामाजिक और शैक्षिक संघटनों से जुड़े हुए थे। आर्यसमाज के सिद्धान्तों के धुरन्धर व्याख्याता के रूप में उन्हें महारथ हासिल थी। भाषण-कला से सम्बद्ध प्रखर वाग्मिता के कारण उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई थी। आर्यसमाज के मंच से अपनी भावनाओं के प्रचार-प्रसार में आपको जो अद्वितीय सफलता मिली थी, उससे आप सार्वदेशिक आर्यनेताओं में धुरिकीर्त्तनीय माने जाते थे। आपके लोकान्तरित हो जाने से आर्यसमाज में अपूरणीय रिक्तता तो आई ही है, हिन्दी-जगत् की भी विशिष्ट क्षति हुई है !

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशेष

धुन के धनी आचार्य रामनारायण शास्त्री

□ क्षेमचन्द्र 'सुमन'

श्रीरामनारायण शास्त्री मेरे जीवन में इतने घुल-मिल गये थे कि मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि वे इस प्रकार अचानक बिना किसी पूर्वसूचना के महापथ के पथिक बन जायेंगे और मुझे उनके सम्बन्ध में 'स्वर्गीय' शब्द का प्रयोग करना पड़ेगा।

शास्त्रीजी के प्रथम दर्शन मुझे उस समय हुए थे, जब मैं अक्तूबर, १९५९ ई० में बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के अष्टम वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए साहित्य अकादमी की ओर से पटना गया था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने की थी और राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को उनकी 'बापू के कदमों में' नामक कृति पर एक सहस्र रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। पाँच तथा छः अक्तूबर को यह उत्सव था, अतः, परिषद् के सभी कार्यकर्त्ता उसमें पूर्ण तत्परता से संलग्न थे। श्रीरामनारायण शास्त्री भी उन कार्यकत्ताओं में थे, जिनकी कर्मठता और कुशलता की छाप मेरे मानस पर अमिट रूप से अंकित हो गई थी। आचार्य शिवपूजन सहाय जैसे ऋषितुल्य निदेशक के तत्त्वावधान में परिषद् के सारे कार्यकर्त्ता इस प्रकार जुटे हुए थे, मानो उनके अपने परिवार का ही कोई धार्मिक अनुष्ठान हो। वास्तव में यह तन्मयता और एकात्मकता ही इस अनुष्ठान की सात्त्विकता की परिचायिका थी।

उत्सव की समाप्ति पर शास्त्रीजी चुपचाप मेरे पास आये और सहज मुद्रा में बोले—'भाईजी, मैंने कल सायंकाल ज्ञानपीठ प्रा० लि० के कार्यालय में 'अनुरक्त' नामक संस्था की ओर से आपके सम्मान में एक गोष्ठी आयोजित कर ली है, आप अपना अन्य कार्यक्रम न रखें।' मैं उनके चेहरे को देखता रह गया। ऐसे में मैं करता भी क्या? हाँ, मैंने संकोचपूर्वक इतना अवश्य कहा—'भाई, मुझसे पूछ तो लेते। उत्सव की व्यस्तता और साहित्यकारों की गहमागहमी में आपने मुझ अकिंचन को इतना महत्त्व नाहक ही दे डाला।' बात वास्तव में यह थी कि उत्सव में पधारे हुए अनेक साहित्यकारों के आतिथ्य और निवास आदि की देखभाल का दायित्व भी परिषद् की ओर से उनपर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। लेकिन वे न माने और पूर्वनिश्चयानुसार अगले दिन वह गोष्ठी खूब धूमधाम से हुई।

इस गोष्ठी की अध्यक्षता बिहार के वयोवृद्ध साहित्यकार पं० छविनाथ पाण्डेय ने की थी और उसमें सर्वश्री रामधारी सिंह 'दिनकर', केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', नलिनविलोचन शर्मा तथा रामवृक्ष बेनीपुरी आदि शीर्षस्थ साहित्यकारों के अतिरिक्त सर्वश्री रामदयाल पाण्डेय, रामेश्वर सिंह काश्यप, हिमांशु श्रीवास्तव, रामचन्द्र भारद्वाज, सिद्धनाथ कुमार, रामप्रिय मिश्र 'लालधुआँ', श्रीरंजन सूरिदेव, हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' प्रभृति अनेक ख्यातिप्राप्त कवियों और साहित्यकारों ने भाग लिया था। भाई रामनारायण शास्त्री ने बिना किसी पूर्व परिचय के मेरे सम्बन्ध में जो उद्गार प्रकट किये थे, वे आज भी मेरे मानस को आलोड़ित-विलोड़ित कर रहे हैं।

इस प्रकार, मुझे उस समय उनका जो सहज स्नेह और अपार आदर मिला, उससे हम दिनानुदिन निकट-से-निकटतर आते गये। यह निकटता विशुद्ध भावनात्मक स्तर पर थी। यदि ऐसा न होता तो बिना किसी पूर्वसूचना के वे गुपचुप मेरे नाम पर किसी समय भी अनेक गोष्ठियाँ और सम्मेलन कैसे आयोजित कर सकते थे। ऐसे अनेक प्रसंग उन्होंने मेरे सामने प्रस्तुत कर दिये, जब मुझे बिना किसी ननु-नच के उनके आगे हार माननी पड़ी थी।

शास्त्रीजी का व्यक्तित्व इतना दुर्धर्ष था कि वे स्वयं तो किसी-न-किसी ऐसे व्यूह में फँसे ही रहते थे कि जिसे देखकर आश्चर्य होता था, साथ ही दूसरों को भी चैन से नहीं बैठने देते थे। दिसम्बर, १९६४ ई० में एक बार जब मैं बिहार राज्य पुस्तक-व्यवसायी संघ द्वारा आयोजित पुस्तक-प्रदर्शनी में सम्मिलित होने के लिए पटना गया, तब भी बिना मुझे बताये उन्होंने बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से बच्चन देवी साहित्य-गोष्ठी में 'हिन्दी का संस्मरण-साहित्य' विषय पर मेरा भाषण आयोजित कराया था। वह भी संयोगवश अभूतपूर्व रहा था। सारगर्भ भाषण किया गया था। खेद है कि सम्मेलन के तत्कालीन अधिकारियों से अनेक बार अनुरोध करने पर भी मैं अपने उस भाषण की टंकित प्रति प्राप्त नहीं कर पाया। इस गोष्ठी की भी अध्यक्षता बिहार के पुराने साहित्यकार और सम्मेलन के अध्यक्ष पं० छविनाथ पाण्डेय ने की थी। मुझे यह लिखते हुए गौरव अनुभव होता है कि मेरे इस भाषण को भी पटना के सभी सुधीजनों ने सराहा था। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के तत्कालीन निदेशक डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' के वे शब्द मुझे अभी तक याद हैं, जब उन्होंने यह कहा था, 'आपने तो अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो अपने भाषण में हमारे बिहार के साहित्यकारों के विषय में इतना कुछ कह दिया कि लगता है, जैसे आप यहाँ वर्षों तक रहे हों।'

इस अवसर की एक और घटना की याद आ रही है। बिहार राज्य पुस्तक-व्यवसायी संघ के उत्सव में दिये गये मेरे भाषण की रिपोर्ट जब पत्रों में छपी, तब उसे पढ़कर भाई श्रीरामवृक्ष बेनीपुरीजी ने कवि श्रीराजेन्द्रप्रसाद सिंह को मुजफ्फरपुर से मुझे पकड़ने के लिए पटना भेजा। बेनीपुरीजी उन दिनों गम्भीर रूप से अस्वस्थ थे। मेरी विवशता यह थी कि अगले दिन शाम को असम मेल से मुझे दिल्ली लौटना था और ट्रेन में मेरा आरक्षण हो चुका था। लेकिन मुझे मुजफ्फरपुर जाना ही पड़ा।

मुझे ऐसा कोई अवसर याद नहीं आता, जब मैं पटना जाकर शास्त्रीजी से मिले बिना लौटा होऊँ, लेकिन वे इस सम्बन्ध में पूरे घाघ थे। उन्होंने मुझे अनेक अवसरों पर चरका दिया था। वैसे उनकी इस आँखमिचौनी में कोई दुर्भावना या कुटिलता न होकर उनका औघड़पन ही अधिक होता था। वैसे अनेक प्रसंग आज मेरे सामने चित्रपट की तरह एक के बाद एक आ रहे हैं, जबकि मैंने उन्हें रँगे हाथों पकड़ा था। सन् १९६७ ई० के आम चुनावों में एक बड़ी मनोरंजक घटना घटी। शाहदरा (दिल्ली) में लोकसभा के काँगरेसी और जनसंघी प्रत्याशियों के समर्थन में होनेवाली सभाएँ एक दिन थोड़ी-थोड़ी दूरी पर आमने-सामने आयोजित थीं। काँगरेसी प्रत्याशी के समर्थन में मैं बोल रहा था और जनसंघी प्रत्याशी का समर्थन सामने की सभा में बन्धुराज रामनारायण शास्त्री कर रहे थे। मैंने जब सभा की समाप्ति पर उनको वहाँ ही जाकर धर दबोचा, तो वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। थोड़ी देर इधर-उधर की बातें करने पर जब उन्होंने सभा के आयोजकों से मेरे साथ ही रात्रि-विश्राम की इच्छा प्रकट की, तब वे आश्चर्यचकित रह गये। शायद उनकी दृष्टि में उत्तरी दिशा और दक्षिणी ध्रुवों का इस प्रकार सम्मिलन कोई अनहोनी बात थी। शाहदरा के सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में अब भी इस घटना की यदा-कदा चर्चा हो जाती है। वास्तव में, शास्त्रीजी न तो काँगरेसी थे और न जनसंघी, आर्यसमाज के सांस्कृतिक प्रभाव ने उन्हें दक्षिणपन्थी बना दिया था। वे एक साथ साहित्य-शोधक तथा सामाजिक तथा साहित्यिक चेतना के ऐसे पुरोधा थे, जिसके उदाहरण विरले व्यक्ति ही होते हैं।

ऐसी ही एक और घटना याद आ रही है। सन् १९७६ ई० की १४, १५ तथा १६ मई को अखिलभारतीय हिन्दी संस्था-संघ और हिन्दी विद्यापीठ, देवघर के संयुक्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्त्वावधान में नई दिल्ली के मावलंकर सभागार में जो द्वितीय राजभाषा सम्मेलन हुआ था, उसकी एक गोष्ठी में वे चुपचाप आकर पीछे बैठ गये। समारोह के सचिव के नाते मैं मंच पर बैठा था। वहाँ पर बैठे-बैठे ही मैंने उन्हें सभागार में प्रविष्ट होते हुए देख लिया था। जिस समय गोष्ठी समाप्त हुई, मैंने उन्हें बहुत ढूँढ़ा, परन्तु वे हाथ से निकल चुके थे। इस घटना की कैफियत पश्चिम बंगाल नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा कलकत्ता में आयोजित पत्रकार अभिनन्दन-समारोह से लौटते हुए जब मैंने १ दिसम्बर, १९७६ ई०, को अपने पटना-प्रवास में उनसे माँगी, तब अत्यन्त भोलेपन से उन्होंने कहा—'मुझे एक आवश्यक कार्य से जल्दी पटना लौटना था, अतः इच्छा होते हुए भी आपसे न मिल सका था।' यही मेरी और उनकी अन्तिम भेंट थी। पत्र लिखने की शायद उन्हें आदत ही नहीं थी। मुझे ऐसा कोई अवसर याद नहीं आता, जबकि उन्होंने मुझे कोई पत्र लिखा हो। लेकिन यह आश्चर्य की बात है कि जो व्यक्ति पत्राचार में ही इतना उदासीन और निरपेक्ष रहा हो, प्रत्यक्ष रूप से मिलते ही वह आदर और स्नेह का अतिशय उदात्त आदर्श प्रस्तुत कर दे।

शास्त्रीजी के व्यक्तित्व की इस उलझन-भरी प्रवृत्ति का एकमात्र कारण उनका वह बहुमुखी जीवन था, जिसमें वे अहर्निश खोये-खोये रहते थे। मुझे उनसे सदा सर्वदा यही शिकायत रही कि वे कोई भी काम बिना किसी पूर्वसूचना के सहसा इस प्रकार करने के आदी क्यों हैं कि दूसरे उनकी ओर अवाक् और निस्तब्ध भाव से देखते रहें। विगत २३ जनवरी, १९७८ ई० की बात है, जब भाई हंसकुमार तिवारी श्रीराधाकान्त भारती के साथ साहित्य अकादमी के कार्यालय में पधारे थे। उस समय उनसे ही मुझे यह समाचार मिला था कि अब परिषद् के निदेशक के पद से वे निवृत्त हो गये हैं और श्रीरामनारायण शास्त्री इस कार्यभार को सँभालेंगे। मैंने मन-ही-मन अपने इस स्नेहीजन की पदोन्नति पर प्रसन्नता अनुभव की थी। किसे पता था कि जब हमलोग उनकी इस पदोन्नति का जिक्र कर रहे थे, उस समय वे कहीं ऐसे दूसरे लोक में जाने की तैयारी कर रहे थे, जहाँ निदेशक से ऊँचा पद उनकी प्रतीक्षा में आतुर-उत्सुक था। इस प्रकार बिना कहे चुपचाप उनका हमारे बीच से उठ जाना नियति का क्रूर व्यंग्य ही है ! □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रीजी : मेरे जीवन की अविस्मरणीय धरोहर

□ डॉ० सी० पी० ठाकुर, सांसद

मैं चन्द दिनों के लिए पटना से बाहर गया था। लौटने पर अपने स्वजनों की खोज-खबर लेने पर शास्त्रीजी के आकस्मिक निधन की बात सुनी। कुछ क्षणों के लिए मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। पटना से बाहर जाने से पूर्व मैंने शास्त्रीजी को बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् का निदेशक होने की खुशी में बधाई दी थी और साथ ही यह उलाहना भी कि बहुत प्रयास के बाद उनसे टेलीफोन पर बात हो पाई थी। शास्त्रीजी ने अपनी सहज मृदुभाषा में उत्तर दिया था कि शुभचिन्तकों की कृपा है कि वे लगातार बधाई दे रहे हैं। निदेशक होने पर कुछ काम करने की उनकी अलग कल्पना थी, लेकिन ईश्वर को यह मंजूर न था और वे अपनी इच्छा साकार न कर पाये।

शास्त्रीजी से मेरा परिचय वर्षों का था। जब मैं मेडिकल छात्र था, तभी वे मेरे एक सहपाठी के पास आते थे और वहीं उनसे मेरी जान-पहचान हुई। उनकी सादगी और सरल स्वभाव ने मुझे आकृष्ट किया। हमारी मित्रता बढ़ती गई। शास्त्रीजी से हमलोग घण्टों हिन्दी-साहित्य, आर्यसमाज और वेद-वेदान्त पर बातें करते।

आर्यसमाज के वे न केवल कट्टर समर्थक थे, वरन् उनके सिद्धान्त पर अमल भी किया करते थे। जब मैं हाउस सर्जन था, उस समय वे बहुत बीमार थे। उस अवधि में हम उनके और नजदीक आ गये। मधुमेह के कारण शास्त्रीजी परेशान रहते थे। सामाजिक व्यस्तता के कारण वे संयम पूरी तरह नहीं कर पाते थे। मधुमेह ऐसी बीमारी है, जो जीवनपर्यन्त रहती है। नित्यप्रति का संयम रखना बहुत कठिन है और शास्त्रीजी के साथ भी यही होता था।

शास्त्रीजी हिन्दी और संस्कृत के निष्णात विद्वान् थे, साथ ही समर्थ वक्ता भी। आर्यसमाज के मंच से शास्त्रीजी ने मुझे भी एक बार बोलने को आमन्त्रित किया। मैं घबरा गया। कहाँ शास्त्रीजी जैसे ओजस्वी वक्ता और कहाँ मैं मेडिकल कॉलेज के व्याख्यान-कक्ष में पढ़ानेवाला! उन्होंने अपने भाषण में आर्यसमाज के मूल सिद्धान्तों की व्याख्या की और वेद-वेदान्तों के उद्धरण दिये। मैंने अपने भाषण में दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुषों के जन्म की एक अलग व्याख्या करते हुए उसे सामाजिक आवश्यकता बताई। शास्त्रीजी मेरे विचार से सहमत थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा हिन्दी को वे समृद्ध और समर्थ भाषा के रूप में देखना चाहते थे। मैंने एक बार उन्हें सुझाव दिया कि विश्वविद्यालयों में शोधकर्त्ता अपना शोध-प्रबन्ध हिन्दी में ही प्रस्तुत करें, चाहे उनका विषय कुछ भी हो। इससे निश्चय ही आगामी दस वर्षों में यह कहने का साहस किसी को न होगा कि मेडिकल, इंजीनियरिंग, विज्ञान आदि की पढ़ाई हिन्दी में सम्भव नहीं। उन्होंने इस सुझाव का समर्थन किया था और बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से इस तरह की योजनाओं को कार्यान्वित करने की इच्छा प्रकट की थी। काश, वे कुछ दिन और रहते, तो अपनी आकांक्षाओं को पुष्पित-पल्लवित देख पाते। जीवन में कोई परिचय क्षणिक होते हुए भी सुखद हो, तो उसकी स्मृति बार-बार आती है। शास्त्रीजी जैसे सहृदय और एक अच्छे मित्र के साथ वर्षों का परिचय मेरे लिए जीवन की मधुर एवं अविस्मरणीय धरोहर है।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रीजी को अँगरेजी में प्राप्त पत्र

Dated 8th May 1974

My dear Shastriji,

Your letter of 25th to hand to-day. I had replied your earlier letter on 18th April.

Now, from to-day is the rail strike and I do not know when this will reach you.

God alone knows which way we are leading and what will happen. Things are really causing hardship to all and a way has to be found. But violence may well lead to a revolution which in turn can cause only greater hardship and new enormous burden. The best way to my mind is a very disciplined movement to force immidiate corrective steps. It appears that to cleanse society it is imperative to lay a good base for political reforms, or we face doom.

More when we meet. Take care.

with regards,

Sincerely,

C. Lakhotia

●

Dated 16-5-74

My Dear Shastriji,

Many thanks for your letter of 2nd May to-day.I am grateful for your kind sentiments, which I hardly deserve.

You must certainly visit us next month.I shall see what can be done.

In my opinion, you should devote yourself entirely toyour research work and to building up charactor of persons through your lectures and preachings.The latter is most important and valueable and I am sure, you will be highly satisfied. Politics to-day is a dirty game and your entering it is undesirable because the

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

thereby purpose itself is defeated. You wish to bring in reforms and the best way is to purify and lead thinking of the countrymen. Give them ideals for which we can live and if you want that black-marketing should be stopped, it is useless to appeal to the big ones but you direct yourself to the small colloborators without whose co-oparation it is not possible and if they are made to know the truths. I am sure they at least will not be willing because their share is very small and in turn they have themselves to pay many times more for same articles. In 1930s there was a movement against purdah in our society and at that time I have told the best way to remove it was to spread education and if this was done, the evil would just disappar. I was proved right. I say to-day that much evil is due to attaching all importance to wealth without caring how it is ammased. How can one blame if this is the yardstick. Everyone appears to win applause and respect and he tries without knowing what he is undoing. Means must always determine ends. so please ponder well. Let society again adopt proper measurements and much misery of today will disappear. You can rely on me but remember I am a person of very small resources.

With highest personal regards,
yours very sincerely,
C. Lakhotia.

1.11.1972

My Dear Shastriji,

I have been thinking about writing to you but as I am I always due to some trivial excuse, could not write. I wonder myself how I started this letter.

You must be wondering or rather many people must be saying many things about my tour of America. I think the adden mystery was the consultation with the astrologers. I do not think

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

you will be able to solve those misteries. So let it be where it is.

The flight from India to U.S.A. gave me a mixed experience. On leaving Bombay an Indian who was also coming to U.S.A. and who claimed to have sore sort of relation with the pilot told me that some girl has telephoned the Air India that one of the Air India plane is going to be hijacked. Since the threat had come just before our plane landing at Bombay therefore the authorities thought this plane is going to be Hijacked. So there was added securities. I do not know the truth but we were not allowed to down at Kuweit and Paris airport.

The Presidential election as it is called here was very peaceful without any incident of disturbance. But the election compaign was done with real vigour. there were 5 candidates for presidency including a communist party of America. But the real contest was between the Govern Democrat and Pr. Nixon-Republican. Both sides effically spent about 40 millions each. Anyway as was pridicted by all the leading papers and television net working and also Radio, the Communists got less than 1% of the votes polled. The membership of this party is fast falling. The maximum membership was 1,25,00 just before the election of Late President John F. Kennedy.

Well, when we meet we will talk more about the people as they are and as it is projected to other countries. At present the topmost political question here is the vietnam war. May god halt the mad war as early as possible before more people die due to national egos of the countries involved. In one of the articles I read that India is an ally of North Vietnam and now after ceasefire in Vietnam India will be in great difficulty with the Nixon Administrator about this question.

We are allright here and I have increased weight by 4 lbs.
With regards to Bhabhiji and love to youngsters.
Your's affectionately,
Sd. S. K. Narayan.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

My dear Shastriji,

14.12.72.

I shall be leaving U.S.A. in a couple of days. A few days back I wrote a letter to you but unfortunately I can't find the same. Chachaji has kept it but has forgotten it. I wanted to tell you th there is one language which is under making. That is the ...eri n language. This is getting daily more different than the ... nguage. I think you will be interested in as a linguistic ... . The Americans are discording the peculiar spellings of ... h words. they, the Americans are trying the phonetic ... For example, Socks is spelled as sox, says is spelled as ... colour as color, programe as program, school as skool so on so forth. With regard to the pronounciation is the same story. ...y pronounce Semi (सेमी) as 'सेमाई' and schedule (शीड्यूल) as ...ुल'. They have not completed this process but it is under fast ...nge. Even the dictionery has changed. You get American (En- ...) and English are separately. There is one thing very distinct ...t the people here. They are all charged with superiority com- ... All of them want to be the best in world. Every action is aimed to-wards it.

On 6th night at 12.33 A.M. the last Appollo 17 was fired for the moon. After this America is not going to launch any manned flight to the moon in the next 20 or 30 years.

The weather is here very chilly. Every now and then there is snow. The driving becomes very difficult and risky too. The roads are cleared by heavy vehicles.

Here you get all the varieties vegetables, dals, rice and even the masalas.

We are in good health. You meet so many Indians here that you don't much feel that you are away from India. there are about 30/40 thousand indian in Michigan State itself. On every sunday for two hours on F.M. 98 a programme for Indians is broadcast. It is very interesting to hear it.

Rest when we meet,

Your's afftly, sd. sudhir.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Revered Shastriji,

My best and sincere Bengali New year's humble good wishes to you, Sir, and the other respected members of the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha. With great regards I am in receipt of your letter dated 28-3-65.

I am and shall be always sympethic to the Institution to Rev. Sadashiv Sharma from Baloniya. The present gentleman, incharge of Arya Samaj Ashram here probably does not link the co-operation of the people of the locality also, because he never calls and seeks any help like that of the previous Rev. Panditji in connection with programmes and other affairs. To speak the truth, he is not also in good terms with the old broyher, Shri Sachindra Datta. The person concerned and his wife is very much working in evil manners, as the neighbourers (Male & Female) are much annoyed with their rough behaviour of which they occasioally complain. Desiring important in the affairs of the Ashram.

I remain,

Sarada Prasad Chakravarty

Baloniya-Tripura Rajya

27.4.65.

My dear Shastriji,

Your letter dt. 28-3-65, just reached me. Though it is too late you could not forget me however. Thank you for your kind letter. You want to know of my opinion regarding the present activities of the Seva Kendra of Arya Samaj at Baloniya, future, I could not understand. However I advise you to do something here for future and to start an infant school in the shade of trees in the morning by the wife of Shri Bhuban Mohan Sharma, with some monthly allowance.

Shri Bhuban Mohan Sharma is an expert Homeopath if you

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

want to utilise him you should give him an allowance per month with the normal cost of medicine. Thus, the activities of the Seva Kendra of Arya Samaj at Baloniya will remain well which will also attract the people.

For future, Some more plantation of Jute trees, Canes, Bamboo clusters may be taken to reap least result after 6 to 8 years for making the Seva Kendra a self supporting one.

Thanking you. No more now. More when you and I meet together again.

Yours truly,

Sarada Prasad Deb Sharma.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रावली

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृतिशेष आर्यपुरुष शास्त्रीजी

किशोरावस्थामें (खड़े दायें) पं० रामनारायण शास्त्री
अपने युवा मित्रों के साथ.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

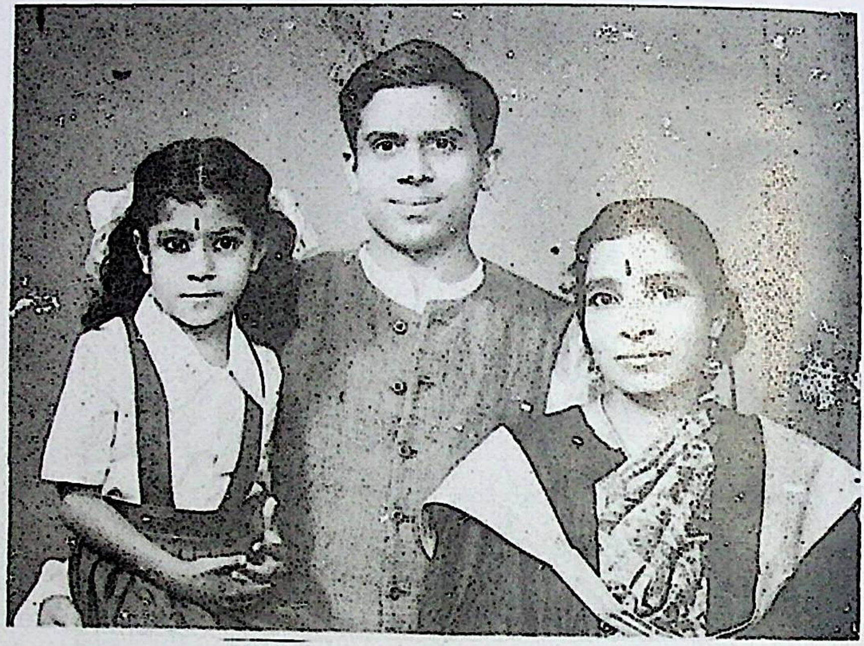

पं० रामनारायण शास्त्री और उनकी स्नातक पराक्षोत्तीर्ण (सन् १९५५ ई०)
पत्नी श्रीमती ईश्वरी आर्या (बाईं ओर) सुपुत्री अलका

पं० रामनारायण शास्त्री के सुपुत्र (दायें) अभिजित काश्यप (बायें)
अमिताभ काश्यप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृतिशेष आर्यपुरुष शास्त्रीजी

उपनयन संस्कार के समय ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी के वेश में पं० रामनारायण शास्त्री जी के ज्येष्ठ पुत्र अभिजित काश्यप तथा पुत्री अलका शर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

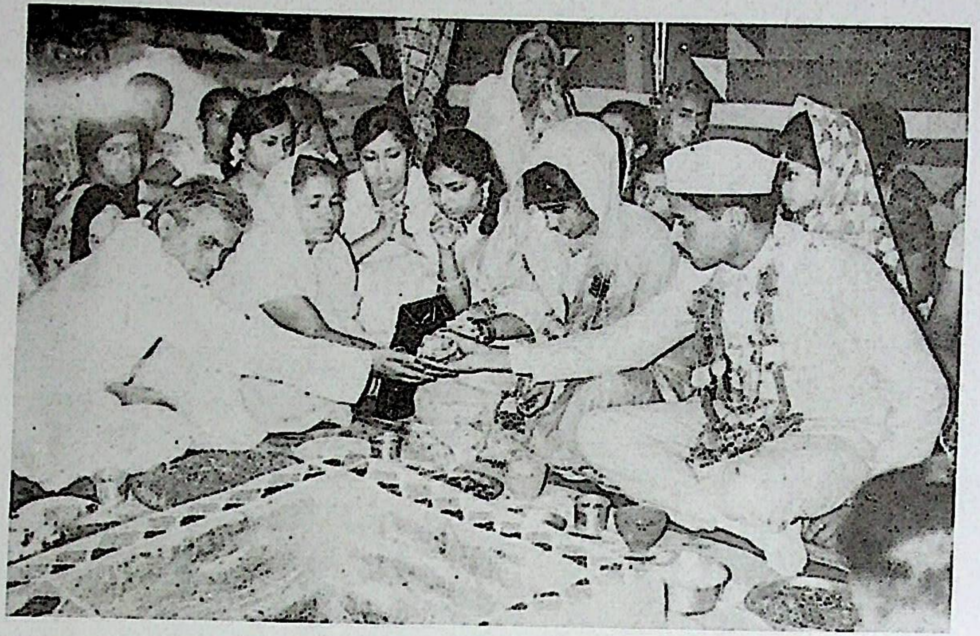

पं० रामनारायण शास्त्री और पत्नी श्रीमती ईश्वरी आर्या अपनी कन्या कुमारी अलका का अपने जामाता अनिल रंजन के साथ परिणय-विधि सम्पन्न करते हुए
(२५ अप्रैल, १९७० ई०)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृतिशेष आर्यपुरुष शास्त्रीजी

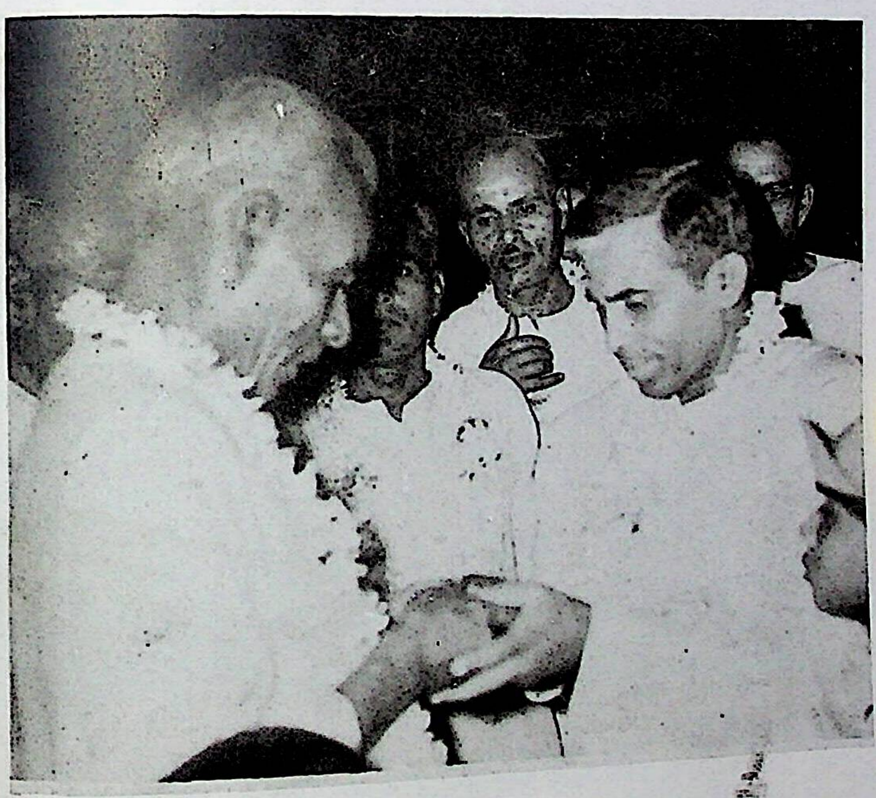

अपने समधी श्री के०एन० शाण्डिल्य स्वतन्त्रता सेनानी
के साथ समधी-मिलन करते हुए पं० रामनारायण शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० रामनारायण शास्त्री अपने समधियों के साथ (बायें से) श्रीहरिद्वार शर्मा (सगे समधी), पं० रामनारायण शास्त्री, श्रीभद्रकाली मिश्र, श्रीदामोदरप्रसाद शर्मा (बड़े समधी), पं० लक्ष्मणकुमार शास्त्री, कानपुर : विवाह-विधि के अनुष्ठाता पुरोहित (सन् १९७० ई०)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृतिशेष आर्यपुरुष शास्त्रीजी

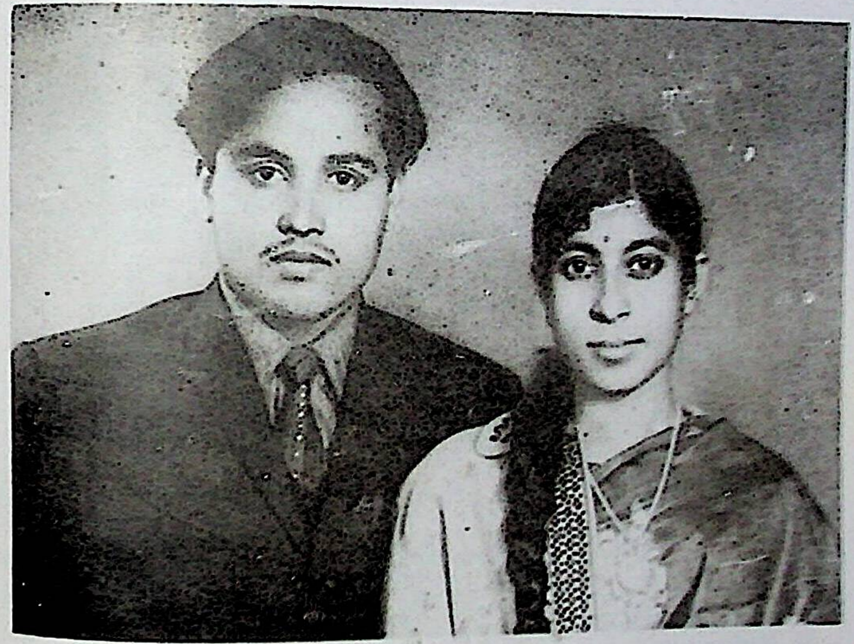

पं० रामनारायण शास्त्री की सुपुत्री श्रीमती अलका शर्मा और जामाता अनिल रंजन
(सन् १९७२ ई०)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

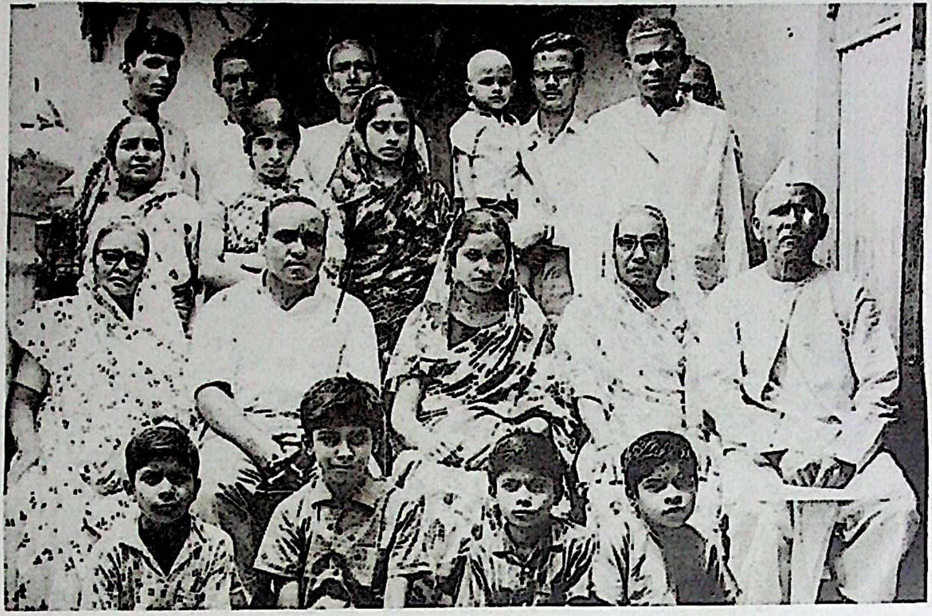

पं० रामनारायण शास्त्री अपने आयुष्मान् भ्रातृज (साले के पुत्र) के मुण्डन-संस्कार
की शुभ घड़ी में एकत्रित परिवार के बीच

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

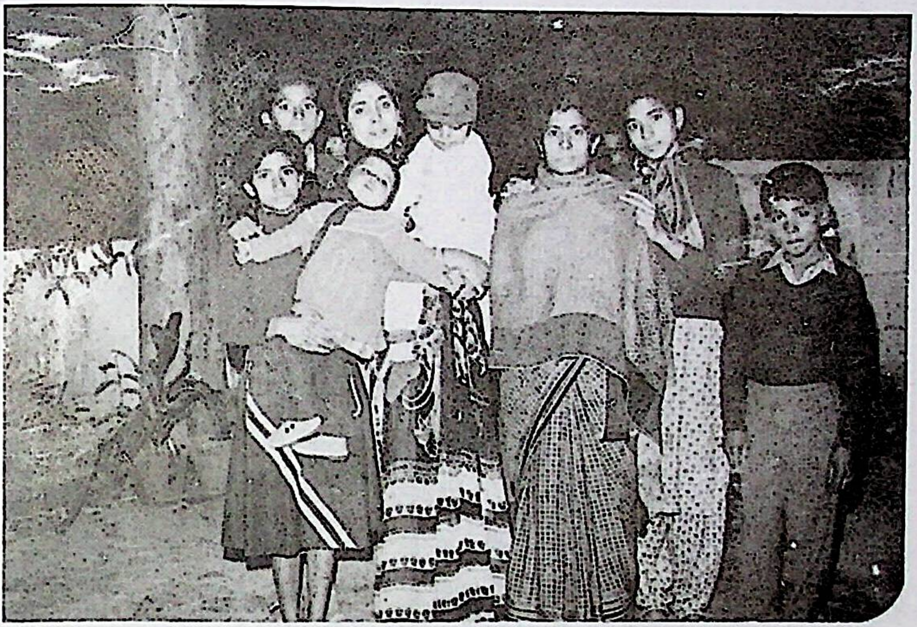

पं० रामनारायण शास्त्री की ज्येष्ठ पुत्रवधू रेणु काश्यप और पुत्री अलका शर्मा अपने बच्चों के साथ

पं० रामनारायण शास्त्री की कनिष्ठ पुत्रवधू सरिता सिन्हा एवं कनिष्ठ पुत्र अमिताभ काश्यप अपने बच्चों के साथ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृतिशेष आर्यपुरुष शास्त्रीजी

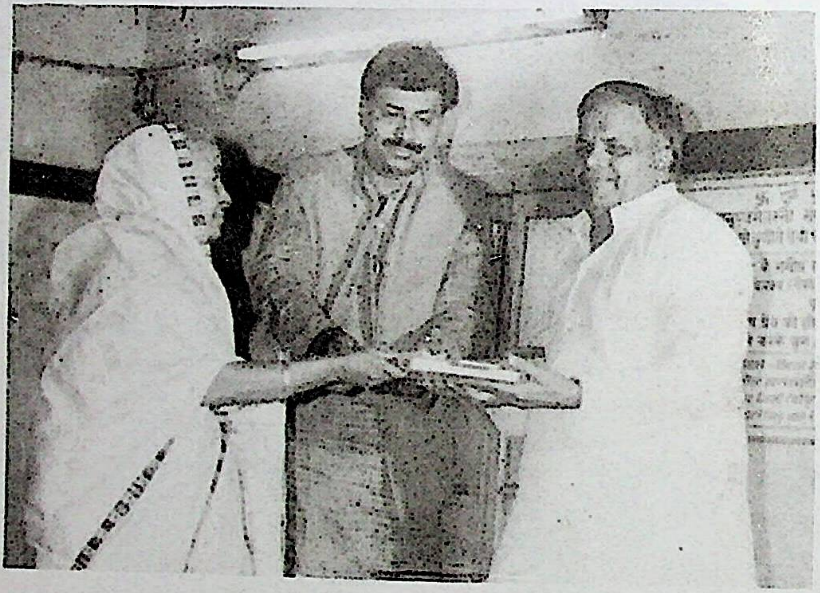

पुण्यश्लोक पं० रामनारायण शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती ईश्वरी आर्या शास्त्रीजी के पास सुरक्षित महर्षि दयानन्द सरस्वती के मूलपत्रों का समर्पण श्रीगजानन्द आर्य, मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर को करती हुई
(बीच में शास्त्रीजी के ज्येष्ठ पुत्र श्रीअभिजित काश्यप)
स्थान : आर्यसमाज, विधान सरणी, कलकत्ता, तिथि : १४ अप्रैल, १९९६ ई०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृतिशेष आर्यपुरुष शास्त्रीजी

पं० रामनारायण शास्त्री आर्यसमाज के नेता पं० प्रकाशवीर शास्त्री के साथ (कुरसी पर बैठे बायें से) श्रीओमप्रकाश त्यागी, पं० प्रकाशवीर शास्त्री, श्रीमती ईश्वरी आर्या, (खड़े बायें से) श्रीतारिणीप्रसाद सिंह (शास्त्रीजी के अग्रज), श्रीजवाहरलाल आर्य (शास्त्रीजी के साले), पं० रामनारायण शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० रामनारायण शास्त्री भाजपा के शीर्षस्थ नेता श्रीअटलविहारी वाजपेयी के सम्मान
में आयोजित प्रीतिभोज में अतिथियों का स्वागत करते हुए
स्थान : श्रीविष्णुदेव नारायण, अधिवक्ता
के डाक बँगला मार्ग पर स्थित 'कैलाश भवन'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

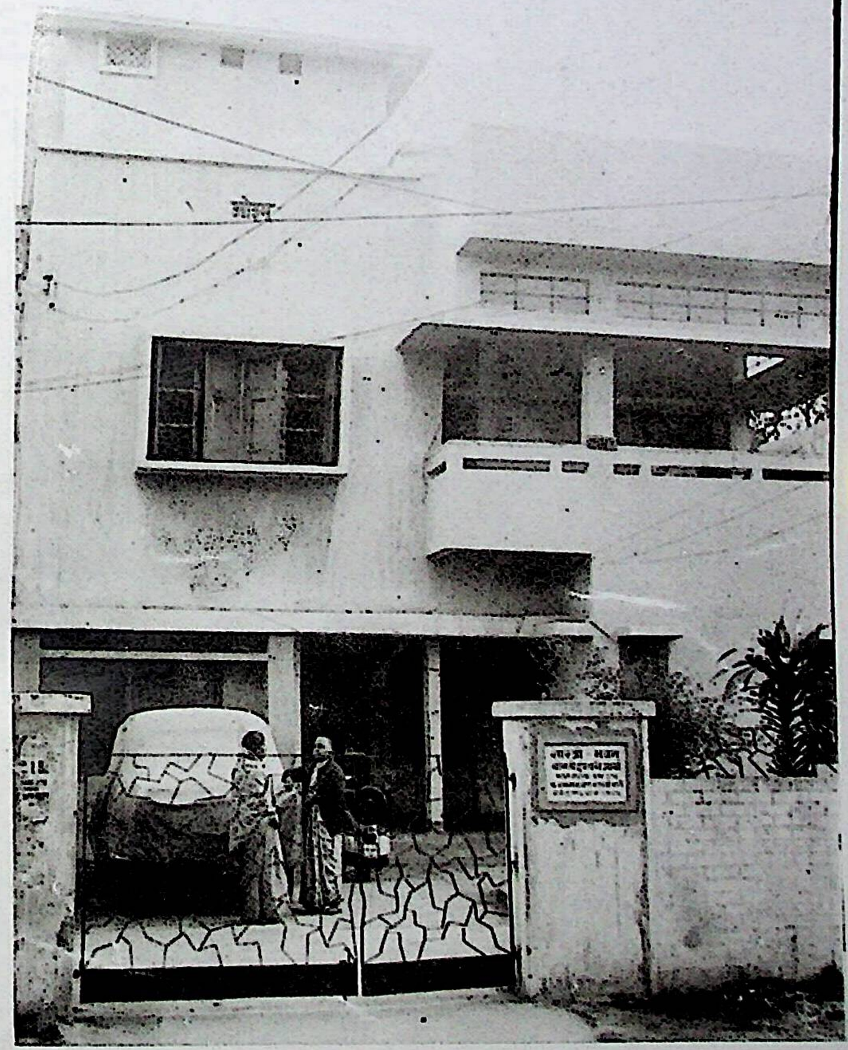

पं० रामनारायण शास्त्री का राजेन्द्रनगर, पटना के उनके ही नाम से आख्यापित मार्ग पर स्थित आवास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेन्द्रनगर, पटना, स्थित पं० रामनारायण शास्त्री मार्ग, पथ-सं० ११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

आर्यसमाज, जलालपुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर लिया गया सामूहिक चित्र (कुरसी पर बैठे बायें से तीसरे) पं० रामनारायण शास्त्री

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

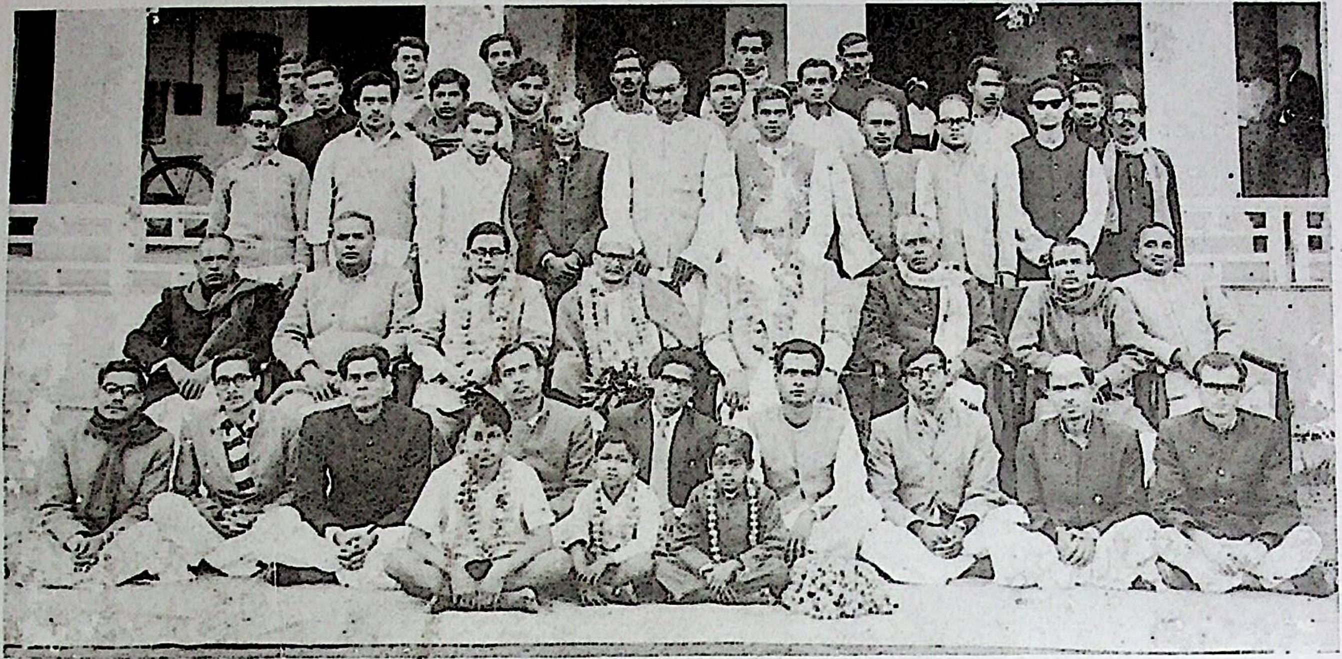

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के दशम वार्षिकोत्सव के अवसर पर लिया गया परिषद्-परिवार का सामूहिक चित्र, (कुरसी पर बैठे, पाँचवें) आचार्य नलिनविलोचन शर्माजी के पीछे खड़े पं० रामनारायण शास्त्री

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र
तिथी.........
पु०सं०.........
2817
भारती पुस्तकालय

स्मृतिशेष आर्यपुरुष शास्त्रीजी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के नवनिर्मित भवन में गृहप्रवेश-संस्कार (१९६२ ई०) कराते हुए पं० रामनारायण शास्त्री; यजमान श्रीअनूपलाल मण्डल; मण्डलजी के बायें क्रमशः (गान्धी टोपी पहने हुए) आचार्य शिवपूजन सहाय, डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, पं० हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृतिशेष आर्यपुरुष शास्त्रीजी

बिहार राज्य 'बालकन जी बारी' के वार्षिक समारोह में आचार्य बदरीनाथ वर्मा, शिक्षा मन्त्री, बिहार (उद्घाटन भाषण देते हुए), (बैठे हुए बायें से) पं० रामनारायण शास्त्री (मन्त्री, बि० रा० 'बालकन जी बारी')

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र
तिथी
पु०सं० 2817
भारती पुस्तकालय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

. . . . एक ऐसे व्यक्तित्ववाले कर्मशील पुरुष की दिनचर्या को आकलित करना, जिसका समग्र जीवन यायावर हो, बड़ा ही श्रमसाध्य था। उनके बिखरे कागजों एवं फाइलों का अम्बार था। उनमें से चुनकर आकाशवाणी–वार्त्ता, निबन्ध, मित्रों के पत्र आदि को मैंने एकत्रित किया है। उनका जीवन–वृत्त भी उनके सुहृज्जनों एवं गुरुजनों से पूछ–पूछकर प्राप्त इतिवृत्तों के आधार पर लिखा है। . . . .

– ईश्वरी आर्या

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.